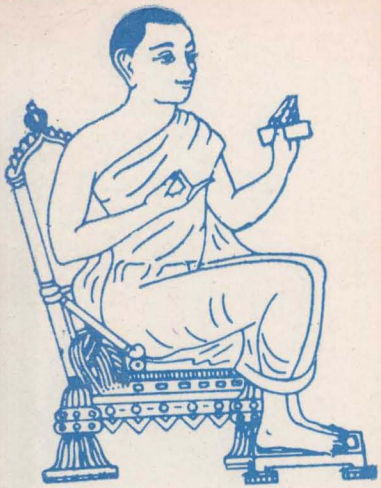

શ્રી હેમચંદ્રાચાર્ય

हेमचन्द्राचार्य-विरचित

छन्दोनुशासन

(अध्याय ४ थी ७)

प्राकृत-अपभ्रंश-विभाग

अनुवादक :
हरिवल्लभ भायाणी

कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचंद्राचार्य नवम जन्मशताब्दी
स्मृति संस्कार शिक्षणनिधि
अमदावाद

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हेमचन्द्राचार्य-विरचित

छन्दोनुशासन

प्राकृत-अपभ्रंश-विभागनो अनुवाद

(अध्याय ४, ५, ६, ७)

अनुवादक :
हरिवल्लभ भायाणी

कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचंद्राचार्य नवम जन्मशताब्दी
स्मृति संस्कार शिक्षणनिधि
अमदावाद

१९९६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हेमचन्द्राचार्य-विरचित

छन्दोनुशासन

प्राकृत-अपभ्रंश-विभागनो अनुवाद

(अध्याय ४, ५, ६, ७)

अनुवादक :
हरिवल्लभ भायाणी

कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचंद्राचार्य नवम जन्मशताब्दी
स्मृति संस्कार शिक्षणनिधि
अमदावाद

१९९६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Hemacandrācāya-Virachit Chandonuśāsana : Prakrit-Apabhraṁśa- Vibhāg - no Anuvād

[A Gujarati Translation of the Prakrit and Apabhraṁśa Sections, i.e. Chapters 4, 5, 6, 7 of Hemacandra's Chandonuśāsana]

by H. C. Bhayani

© हरिवल्लभ भायाणी

२५\२, विमानगर, सेटेलाईट रोड,
अमदावाद-३८००१५

प्रथम अवृत्ति १९९६ प्रत : ५००

किंमत : रू. ८०-००

प्रकाशक : कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य
नवम जन्मशताब्दी स्मृति संस्कार शिक्षणनिधि, अमदावाद
पंकज सुधाकर शेठ
२७८, माणेकबाग, आंबावाडी, अमदावाद-३८००१५

प्राप्तिस्थान :

सरस्वती पुस्तक भंडार
११२, हाथीखाना, रतनपोळ,
अमदावाद-३८०००१

पार्श्व प्रकाशन
झवेरीवाडना नाके, रतनपोळ,
अमदावाद-३८०००१

मुद्रक : हरजीभाई एन. पटेल
क्रिश्ना प्रिन्टरी
९६६, नारणपुरा जूना गाम, अमदावाद-३८००१३
(फोन : ७४८४३९३)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशकीय

कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्रचार्यनी नवम जन्मशताब्दीना उपलक्ष्यमां आचार्य श्री विजयसूर्योदयसूरिजी महाराजनी प्रेरणा तेम ज मार्गदर्शन अनुसार स्थापवामां आवेला आ ट्रस्टना उपक्रमे थई रहेलां समृद्ध प्रकाशनोनी शृंखलामां एक वधु अने श्रेष्ठ ग्रंथनो उमेरो थई रह्यो छे ते अमारा माटे अनहद आनंद तथा गौरवनो विषय छे.

कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्यनी विद्वन्मान्य प्रशिष्ट रचना 'छंदोनुशासन'नां प्राकृत-अपभ्रंश भाषानां प्रकरणो, जिज्ञासुओ माटे अने विशेषतः संस्कृत भाषाना अभ्यासी विद्वानो तेम ज विद्यार्थीओ माटे दुरूह अने कठिन प्राय गणाय तेवां छे. आ प्रकरणोनो गुजराती अनुवाद थाय तो आ कठिनाई सहेजे निवारी शकाय–तेवो विचार आपणा मूर्धन्य भाषाविद डॉ. हरिवल्लभ भायाणीने आव्यो. आ. श्री शीलचन्द्रसूरिजीए आ महत्त्वनुं कार्य करी आपवा माटे तेओने ज आग्रह कर्यो. सद्भाग्ये भायाणीसाहेबे, अनेकानेक अने वळी अतिमहत्त्वपूर्ण एवां अन्य सर्जन-संशोधन-संपादन कार्यो अंगेनी पोतानी व्यस्तता तेम ज पोतानी नादुरस्त तबियत छतां आ अनुवाद-कार्यने अग्रिमता आपी वहेलासर ते कार्य करी आप्युं, अने तेना प्रकाशन माटे अमारा ट्रस्टने हर्षपूर्वक ते सोंपीने अमोने आवा कार्य माटे योग्य तथा विश्वस्त गण्या, जे अमारा ट्रस्ट माटे अत्यंत गौरवप्रद घटना छे.

समग्र विद्याजगत, आवा यशस्वी अने महत्त्वपूर्ण अनुवाद-कार्य बदल भायाणीसाहेबनुं ऋणी थवानुं छे तेमां तो शंका नथी ज, परंतु अमारुं ट्रस्ट पण तेओनुं आ माटे सदैव ऋणी छे अने रहेशे, अने अमोने आशा तथा श्रद्धा छे के श्री भायाणीसाहेब अमोने हंमेशां आ ज प्रमाणे तेओश्रीना ऋणी बन्या करवानी तक आपतां ज रहेशे.

विद्वज्जगत् आ ग्रंथनो खूब खूब लाभ ले तेवी अभ्यर्थना साथे,

लि.

क. स. हेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी
स्मृति शिक्षण संस्कारनिधि,
अमदावादनो ट्रस्टीगण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुक्रम

अनुवाद 1-135

चोथो अध्याय : आर्या-गलितक-खंजक शीर्षक-वर्णन

आर्या-प्रकरण

विषय	पृष्ठांक
आर्यो के गाथा	
आर्याना प्रकारो	1
पथ्या	2
विपुला	2
चपला	3
गीति	5
उपगीति	6
उद्गीति	6
रिपुच्छंदा	7
भद्रिका	8
ललिता	8
विचित्रा	8
स्कंधक	8
उपस्कंधक	9
अवस्कंधक	9
उत्स्कंधक	9
संकीर्ण स्कंधक	9
जातिफल	10
गाथ उदगाथ, विगाथ,	10
अवगाथ, संगाथ, उपगाथ	11
गाथिनी	12
मालागाथ	12
उद्दाम, विदाम, अवदाम, संदाम	
उपदाम, दामिनी, मलादाम	13

गलितक-प्रकरण

विषय	पृष्ठांक
गलितक	16
उपगलितक	16
अंतरगलितक	16
विगलितक	17
संगलितक	17
शुभगलितक	18
समगलितक	18
मुखगलितक	18
मालागलितक	19
मुग्धगलितक	20
उग्रगलितक	20
सुंदरगलितक	21
मालागलितक	21
भूषणागलितक	21
मालागलिता	21
विलंबितागलितक	22
खंडोद्गत	22
प्रसृतागलितक	23
लंबितागलितक	23
ललितागलितक	24
विषमगलितक	24
भुक्तावलिगलितक	25
रतिवल्लभगलितक	25
हीरावलीगलितक	26

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खंजक प्रकरण

खंजक 27
महातोणक 27
सुमंगला 27
खंड 28
उपखंडक 28
खंडिता 28
अवलंबक 29
हेला 29
आवली 29
विनता 30
विलासिनी 30
मंजरी 31
शालभंजिका 31
कुसुमिता 31
द्विपदी 32
रचिता 32
आरनाल 33
कामलेखा 33
चंद्रलेखा 33
क्रीडनक 34
अरविंदक 34
मागधनर्कुटी 35
नर्कुटक 35
समनर्कुटक 35
तरंगक 36
पवनोद्धुत 36
निध्यायिका 37
अधिकाक्षरा 38
मुग्धिका 38
चित्रलेखा 38
मल्लिका 39
दीपिका 39
लक्ष्मिका 40
मदनावतार, मधुकरी, नवकोकिला, कामलीला, सुतारा, वसंतोत्सव 40

शीर्षक प्रकरण

द्विपदी-खंड 43
द्विभंगिका 43
गाथा+भद्रिका 44
वस्तुनदनक+कर्पूर 44
वस्तुवदनक + कुंकुम 45
रासावलय+कर्पूर 45
रासावलय + कुंकुम 46
वस्तुवदनक+रासावलयार्ध+कर्पूर 46
वस्तुवदनक+रासावलयार्ध+कुंकुम 47
रासावलयार्ध + वस्तुवदनकार्ध+ कर्पूर 47
वदनक+ कर्पूर 48
वदनक + कुंकुम 48
षट्पद के सार्ध छंद 49
त्रिभंगिक्राः
द्विपदी+अवलंबक + गीति 49
मंजरी + खंडिता+भद्रिका 50
समशीर्षक 51
विषमशीर्षक 52

पांचमो अध्याय उत्साहादि वर्णन

रासकादि प्रकरण

रासक-1 54
रासक-2 54

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवतंसक 55
कुंद 55
करभक 56
इंद्रगोप 56
कोकिल 56
दर्दुर 57
आमोद 57
विद्रुम 57
मेघ 58
विभ्रम 58
कुसुम 59
रासा 59

मात्रा प्रकरण

मात्रा 59
मात्राना प्रकारो :
मत्तबालिका 60
मत्तमधुकरी 61
मत्तविलासिनी 62
मत्तकरिणी 63
बहुरूपा 64
रड्डा के वस्तु 64
वस्तुक 65
वस्तुवदनक 65
रासावलय 66
वस्तुवदनक + रासावलय 67
रासावलय + वस्तुवदनक 67
वदनक 68
संकुलक 68
उपवदनक 68
अडिला 68
मडिला 69
उत्थक्क/अवस्थितक 69
धवल 69
धवलना प्रकारो :
श्रीधवल 70
यशोधवल 70
कीर्तिधवल 71
गुणधवल 71
भ्रमरधवल 71
अमरधवल 72
मंगल 72
फुल्लडक 73
झंबटक 73

छठ्ठो अध्याय : ध्रुवा-ध्रुवक:धत्ता-चतुष्पदी-षट्पदी-वर्णन

ध्रुवाना प्रकारो

छड्डुणिका 74
(गणनियम 74
प्रासनियम 75)

षट्पदी ध्रुवा

षट्पद-जाति 75
षट्पद-अवजाति 76

चतुष्पदी ध्रुवा के वस्तुक

प्रकारो 76
अंतरसमा चतुष्पदीना प्रकारो 77
चंपककुसुम 78
सामुद्गक 79
मल्हणक 79
सुभगविलास 79
केसर 79
रावणहस्तक 80
सिंहविजृंभित 80

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मकरंदिका	80
मधुकरविलसित	80
चंपककुसुमावर्त	81
मणिरत्नप्रभा	81
कुंकुमतिलक	81
चंपकशेखर	81
क्रीडनक	82
बकुलामोद	82
मन्मथतिलक	82
मालाविलसित	82
पुण्यामलक	83
नवकुसुमितपल्लव	83
मलयमारुत	83
मदनावास	83
मांगलिका	84
अभिसारिका	84
कुसुमनिरंतर	84
मदनोदय	84
चंद्रोद्योत	85
रत्नावली	85
भ्रूवक्रणक	85
मुक्ताफलमाला	85
कोकिलावलि	86
मधुकरवृंद	86
केतकीकुसुम	86
नवविद्युन्माला	86
त्रिवलीतरंगक	87
अरविंदक	87
विभ्रमविलसितवदन	87
नवपुष्पंधय	87
किन्नरमिथुनविलास	88
विद्याधरलीला	88
सारंग	88
कामिनीहास	88
अपदोहक	89
प्रेमविलास	89
कांचनमाला	89
जलधरविलसित	89
अभिनवमृगांकलेखा	90
सहकारकुसुममंजरी	90
कामिनीक्रीडनक	90
कामिनीकंकणहस्त	90
मुखपालनतिलक	91
वसंतलेखा	91
मधुरालापिनीहस्त	91
मुखपंक्ति	92
कुसुमलतागृह	92
रत्नमाला	92
सुमनोरमा	93
पंकज	93
कुंजर	93
मदनातुर	94
भ्रमरावली	94
पंकजश्री	94
किंकिणी	94
कुंकुमलता	95
शशिशेखर	95
लीलालय	95
चंद्रहास	95
गोरोचना	96
कुसुमबाण	96
मालतीकुसुम	96

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नागकेसर 96
नवचंपकमाला 97
विद्याधर 97
कुब्जककुसुम 97
कुसुमास्तरण 97
मधुकरीसंलाप 98
सुखावास 94
कुंकुमलेखा 98
नवकुवलयदाम 98
कलहंस 99
संध्यावली 99
कुंजरललित 99
कुसुमावली 99
विद्युल्लता 100
पंचाननललिता 100
मरकतमाला 100
अभिनववसंतश्री 100
मनोहरा 101
आक्षिप्तिका 101
किन्नरलीला 101
मकरध्वजहास 101
कुसुमाकुलमधुकर 102
भ्रमरविलास 102
मदनविलास 102
विद्याधरहास 102
कुसुमायुधशेखर 103
उपदोहक 103
दोहक 103
चंद्रलेखा 104
सुतालिंगन 104
कंकेल्लिलताभवन 104
कुसुमितकेतकीहस्त 104
कुंजरविलसित 105
राजहंस 105
अशोकपल्लवच्छाया 105
अनंगललिता 105
मन्मथविलसित 106
ओहुल्लणक 106
कज्जललेखा 106
किलिंकिंचित 107
शशिर्बिबित 107

अर्धसमा-चतुष्पदी

चंपककुसुम (अर्धसम) 108
मुखपंक्ति (अर्धसम) 108
संकीर्णा चतुष्पदी 108

सर्वसमा चतुष्पदी

ध्रुवक 109
शशांकवदना 109
मारकृति 110
महानुभावा 110
अप्सरोविलसित 110
गंधोदकधारा 111
पारणक 111
पद्धडिका 111
रगडाध्रुवक 112

सातमो अध्याय : द्विपदी-वर्णन

कर्पूर 113
कुंकुम 113
लय 113
भ्रमरपद 114
गरुडपद 114

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपगरुडपद	115
हरिणीकुल	115
गीतिसम	115
भ्रमररुत	116
हरिणीपद	116
कमलाकर	116
कुंकुमतिलकावली	116
रत्नकंठिका	117
शिखा	117
छड्डिणिका	118
स्कंधकसम	118
मौक्तिकदाम	118
नवकदलीपत्र	118
स्कंधकसमा, मोक्तिकदाम्नी, नवकदलीपत्रा	119
आयामक	119
कांचीदाम	120
रसनादाम	120
चूडामणि	120
उपायामक, उपकांचीदाम, उपरसनादाम, उपचूडामणि	120
स्वप्नक	121
भुजंगविक्रान्त	121
ताराध्रुवक	121
नवरंगक	122
स्थविरासनक	122
सुभग	122
पवनध्रुवक	123
कुमुद	123
भाराक्रान्त	123
कंदोट्ट	124
भ्रमरद्रुत	124
सुरक्रीडित	124
सिंहविक्रान्त	125
कुंकुमकेसर	125
बालभुजंगमललित	125
उपगंधर्व	126
संगीत	126
उपगीत	126
गोंदल	126
रथ्यावर्णक	127
अभिनव	127
चपल	128
अमृत	128
सिंहपद	128
दीर्घक	129
कलकंठीरुत	129
अतिदीर्घ	130
मत्तमातंगविजृंभित	130
मालाध्रुवक	131
ध्रुवा तथा द्विपदी	131
लघुद्विपदी	
विजया	131
रेवका	131
गणद्विपदी	132
स्वरद्विपदी	132
अप्सरा	132
वसुद्विपदी	132
करिमकरभुजा	132
लवली	133
अमरपुरसुंदरी	133
कांचनलेखा	134
चारु	134
पुष्पमाला	134
अन्य द्विपदीओ	134
गाथा	135

*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भूमिका

१. 'छंदोनुशासन'नो व्याप अने स्वरूप

हेमचंद्राचार्ये जे भगीरथ ज्ञानयज्ञनुं (जो हिंसक अभिधेयार्थने बाद करीने कहीए तो 'अश्वमेध'नुं) अनुष्ठान आदर्युं हतुं, तेमां तेमणे समग्रपणे भाषानो समावेश कर्यो हतो : 'वचस्'नो, एटले के व्यवहार अने शास्त्रनी भाषानो अने 'उक्ति'नो, एटले के काव्यभाषानो । काव्य, दर्शन अने शास्त्रनां क्षेत्रोने आवरी लेतो ए शकवर्ती पुरुषार्थ हतो । शास्त्रमां व्याकरण, कोश, छंद अने अलंकारना विषयो तेमणे आवरी लीधा । 'छंदोनुशासन'मां संस्कृत अने प्राकृत छंदोनुं निरूपण कर्युं छे । (१) संज्ञा, (२) समवृत्त, (३) अर्धसम-विषम-वैतालीय-मात्रासमक आदि, (४) आर्या-गलितक-खंजक-शीर्षक, (५) उत्साह आदि, (६) षट्पदी-चतुष्पदी, (७) द्विपदी, (८)प्रस्तार आदि—ए प्रमाणे आठ अध्यायो, ७४६ सूत्रो, तेमना परनी पोतानी 'छंदश्चूडामणि'वृत्ति अने स्वरचित १००० जेटलां संस्कृत-प्राकृत-अपभ्रंश उदाहरणो—एवा स्वरूपनो, त्रण हजारथी पण वधारे श्लोकप्रमाण धरावतो ए एक प्रमाणभूत, अनन्य पिंगळग्रंथ छे ।

ह. दा. वेलणकर वडे संपादित (सिंघी जैन ग्रंथमाला, ग्रंथांक ४९, १९६१) आवृत्तिमां (१) अगियार हस्तप्रतोने आधारे मूळ पाठ, वृत्ति अने पाठांतरो, (२) 'पर्याय'नामनुं अज्ञातकर्तृक संस्कृत टिप्पणक, (३) 'जानाश्रय' छंदोग्रंथमांथी प्राकृतवृत्त-विभाग, (४) विस्तृत भूमिका, (५) सूत्रो, छंदो, उदाहरणोनी विविध सूचिओ आपेल छे । अने मात्रागणोनां स्वरूप अने नामकरण, केटलाक प्राकृत अने अपभ्रंश छंदोनो इतिहास, प्राकृत-अपभ्रंश पिंगळकारोनां निरूपणोनी ऐतिहासिक दृष्टिए तुलना वगेरे छंद-शास्त्रने लगता विषयोनी ऊंडाणथी चर्चा करी छे । 'छंदोनुशासन'ना प्राकृत-अपभ्रंश विभाग विशे तेमणे कह्युं छे के हेमचंद्राचार्ये पोताना पुरोगामीएना कार्यनी बधी महत्त्वनी सामग्री उपयोगमां लईने ए छंदोनुं प्रमाणभूत, व्यवस्थित अने यथाघटित निरूपण कर्युं छे. विरहांक अने स्वयंभूना ग्रंथथी तेओ परिचित छे अने संस्कृत, प्राकृत अने अपभ्रंश छंदोनुं तेमणे स्पष्टपणे विषयविभाजन कर्युं छे. 'स्वयंभूछंद' अने 'छंदोनुशासन' वच्चे केवो संबंध छे तेनी में नीचे सामान्य विचारणा करी छे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्तुत अनुवादमां वेलणकरना संपादनमां आपेला सूत्रपाठ, वृत्ति अने 'पर्याय' टिप्पणकनो साभार आधार लीधो छे । हस्तप्रतोनी दुर्लभता, कंठस्थ करवाथी अध्ययन-अध्यापनमां सरळता वगेरे कारणे शास्त्रकारो सूत्रपद्धतिए रचना करता हता । सूत्र अने वृत्तिमां सहेजे पुनरुक्ति होईने, अनुवादमां वृत्तिने अनुसरवानुं राख्युं छे । संदर्भ माटे उपयोगी थाय ए दृष्टिए सूत्रपाठ अंते आप्यो छे । प्राकृत अने अपभ्रंश साहित्यकृतिओना संपादन अने समजण माटे ए भाषाना छंदोना स्वरूप, बंधारण अने प्रयोगनी जाणकारी अनिवार्य होवाथी ए माटे आ अनुवाद गुजराती वाचकोने उपयोगी थशे ।

★

२. हेमचंद्र अने स्वयंभूनुं प्राकृत-अपभ्रंश छंदोनुं निरूपण (तेनां केटलांक महत्त्वनां पासां)[१]

(१)

१. हेमचंद्राचार्ये रचेला विविध शास्त्रग्रंथोमां तेमनुं 'छंदोनुशासन' (=छंशा.) पण घणुं महत्त्व धरावे छे अने समग्रपणे प्राचीन भारतीय छंदः-शास्त्रना साहित्यमां ये तेनुं ऊंचुं स्थान छे । ते बारमी शताब्दीथी पिंगळशास्त्रना सर्वाश्लेषी अने सुव्यवस्थित ग्रंथ लेखे घणो उपयोगी अने प्रभावक रह्यो छे । अहीं हुं तेना प्राकृत-अपभ्रंश-विभागनी चर्चा करीश अने तेनां पण अनेक महत्त्वनां पासांओमांथी थोडांकनां ज विवरण अने समीक्षानो समावेश थई शकशे ।

२. ईसवी सन पूर्वे लगभग पांचमी शताब्दीथी प्राकृतमां औपदेशिक अने पछीथी काव्यनाटकनुं पद्यसाहित्य खेडातुं रह्युं छे । ईसवी पांचमी-छट्ठी शताब्दीथी अपभ्रंश पद्यसाहित्यनो उदय थयो छे । ए पाकृत-अपभ्रंश साहित्यना विविध प्रकारोमां विविध छंदो प्रयोजाता हता, एटले सर्जको अने भावकोना उपयोग माटे छंदोग्रंथ रचवानी प्रणाली स्थपाई होय ए स्वाभाविक छे । पहेली-बीजी शताब्दी लगभग प्रतिष्ठानना राजा सातवाहन (के हाल) द्वारा कोईक प्राकृत छंदःशास्त्रमां रचायुं होवाना थोडाक संकेत मळे छे । ते पछी दक्षिणना जनाश्रयना

१. 'हैमवाङ्मय-विमर्श' (१९९०) पृ. ३१६-१२१ पर प्रकाशित अहीं पुनर्मुद्रित.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संस्कृत पिंगळना ग्रंथ 'जानाश्रयी' नो समय छठ्ठी शताब्दीनो अंत भाग छे। तेना आधार तरीके देखीतां ज कोईक प्राकृत पिंगल होवुं जोईए। ते पछी सातमी शताब्दी लगभगनुं विरहांककृत 'गाथालक्षण' मळे छे, पण विरहांकना पिंगलने बाद करतां (जेमां विशिष्टपणे अपभ्रंश एवा मात्र पांचछ छंदोनो समावेश थयो छे), नवमी शताब्दीनुं स्वयंभूकृत 'स्वंयभूच्छंद' (=स्वछं.), एक ज पिंगल आपणी पासे छे, जे छंशा.नी पूर्वे विस्तारपूर्वक अने सोदाहरण प्राकृत-अपभ्रंश छंदोनुं निरूपण करे छे।

३. सूत्रो अने ते उपरनी स्वोपज्ञ वृत्ति रूपे रहेला छंशा.मां आठ अध्याय छे, तेना चोथाथी सातमा सुधीना चार अध्यायोमां प्राकृत-अपभ्रंश छंदो निरूप्या छे। तेमां चोथा अध्यायमां प्राकृत छंदो छे, अने बाकीना त्रणमां अपभ्रंश छंदो। विगतो जोईए तो, (चोथा अध्यायमां आर्या, गलितको, खंजक अने शीर्षक वर्गना प्राकृत छेदो, पांचमा अध्यायमां उत्साह, विविध रासक, मात्रा, रड्डा, वस्तुक, वस्तुवदन, रासावलय, अडिल्ला अने उत्थक्क ए छंदोनुं तथा धवल, मंगल, फुल्लड अने झंबटक ए छंदप्रकारोनुं, छठ्ठामां षट्पदी अने चतुष्पदीनुं अने सातमामां द्विपदीनुं वर्णन छे। सर्वत्र हेमचंद्रे छंदोनां स्वरचित उदाहरणो आपेलां छे। पोताना बीजा शास्त्रग्रंथोनी जेम छंशा.मां पण हेमचन्द्रे पूर्ववर्ती पिंगलोनुं संकलन करीने एक सुव्यवस्थित, सविस्तर, प्रमाणभूत, छंदोग्रंथ तैयार कर्यो छे। हेमचंद्रे पोते ज आ स्पष्टपणे कह्युं छे : छंदोनुं अनुशासन एटले पूर्वाचार्योना शासनने अनुसरीने करेलुं शासन। तेमां स्वछं. मुख्य आधार तरीके होवानुं आपणे जोई शकीए छीए।

४. प्राकृत-अपभ्रंश[२] छंदोना अध्ययनना मुख्यत्वे त्रण पासां छे : वर्णन, प्रयोग अने इतिहास। ते ते छंदना चोक्कस स्वरूपनुं अने पेटाप्रकारोनुं चोक्कस बंधारण आपवुं अने तेमनी स्वरूपगत समानता अने कार्यगत समनताने आधारे वर्गीकरण करवुं ते वर्णन नीचे आवे। छंदोनुं गेय स्वरूप तपासवुं अने ए छंदो प्राप्त साहित्यमां केवी रीते वपराया छे ते तपासवुं ते प्रयोग नीचे आवे। प्राकृत-अपभ्रंश छंदो परत्वे अत्यार सुधी थयेलुं संशोधन मुख्यत्वे वर्णन पूरतुं मर्यादित रह्युं छे। प्रयोगना विषयमां भाग्ये ज कशुं थयुं छे, अने इतिहासना विषयमां पण घणुं ओछुं। प्राकृत-अपभ्रंश छंदोना घणाखरा पिंगलग्रंथोनुं शास्त्रीय संपादन करी तेमनी सामग्रीने व्यवस्थित अने वर्गीकृत रूपे रजू करी ए पिंगलोनो समयनिर्णय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अने आंतरसंबंध निश्चित करवानुं तथा ए सामग्रीने व्यापक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यमां तपासवानुं पायानुं कार्य कर्यानो यश सद्‌गत प्रा. वेलणकरने घटे छे । ए संपादनोनी भूमिकामां तथा अंते आपेला अनेक परिशिष्टोमां वेलणकरे प्राकृतअपभ्रंश छंदो विशे अने छंदोरचना विशे घणी हकीकतो तारवी आपी छे तथा तेने लगता विविध प्रश्नोनो ऊहापोह कर्यो छे । अहीं प्राप्त अपभ्रंश कृतिओने अनुलक्षीने याकोबी, आल्स्डोर्फ वगेरे ए तथा में छंदस्वरूप अने छंदप्रकारनी दृष्टिए माहिती आपी छे । परंतु ते ते समयमां प्रचलित-प्रयुक्त अपभ्रंश छंदो ने समग्रपणे, परिवर्तननी दृष्टिए तथा अपभ्रंश पिंगळोना संदर्भमां तपासीने कशुं अन्वेषणकार्य भाग्ये ज थयुं छे । ते ज प्रमाणे भारतीय भाषासाहित्यने मळेला अपभ्रंश छंदोना वारसा विशे छूटकत्रूटक थोडुंक काम थयुं छे, पण अपभ्रंश छंदोना अने साहित्यना सघन परिचयने अभावे ते काम उपरचोटियुं के काचुं थयुं छे । जूनी गुजराती छंदोना इतिहासनी पोतानी विचारणामां सद्‌गत प्रा. रमनारायण पाठके अपभ्रंश छंदोनां गेय स्वरूपने ध्यानमां लीधुं छे खरुं [३], पण तेमनी विचारणा तालना तत्त्व पूरती ज मर्यादित छे, स्वरना तत्त्वनो तेमणे स्पर्श कर्यो नथी ।

५. अहींनुं मारुं प्रयोजन थई गयेला कार्यनुं पुनरावर्तन के दोहन करवानुं नथी । हुं आ विषयना अस्पृष्ट रहेला मुद्दाओमांथी मात्र बे-त्रणने ज स्पर्शवानो अने बीजा थोडाक मुद्दाओनी चर्चा आगळ चलाववानो प्रयास करीश । प्राकृत तथा अपभ्रंशना छंद:शास्त्रनी अत्यार सुधी जे कांई विचारणा थई छे, तेमां बे पायानी बाबतो गणतरीमां नथी लेवाई । एक तो ए के अपभ्रंश साहित्यप्रकारोना संदर्भे अपभ्रंश छंदोनो विचार करवो अनिवार्य छे । बीजुं, प्राकृत तथा अपभ्रंश छंदो मात्र तालबद्ध होवाथी संगीत, नाट्य अने नर्तननां क्षेत्रो साथे पण तेमनो गाढ संबंध हतो । आ बंने बाबतोने ध्यानमां न लईए तो मात्र छंदोनुं स्थूळ, अमूर्त माळखुं-तेमनुं हाडपिंजर आपणा हाथमां आवे, तेमनुं हार्द, तेमनुं सजीव के चेतनवंतु स्वरूप तद्दन अस्पृष्ट रहे ।

६. हेमचंद्रे मुख्यत्वे अपभ्रंश काव्योमां थयेला प्रत्यक्ष प्रयोगोने आधारे नहीं, पण पूर्ववर्ती अपभ्रंश पिंगळोने आधारे-तेमनुं संकलन करीने प्राकृत-अपभ्रंश छंदोनुं निरूपण करेलुं छे । बीजी बाजु स्वयंभू पोते अपभ्रंश साहित्यनो एक अग्रणी महाकवि हतो । ते सो-सो जेटला संधिओ (एटले के सर्गो)मां

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निबद्ध अने अनेकानेक मात्रावृत्तो अने अक्षरवृत्तो वापरतां महाकाव्योनो कर्ता हतो, एटले स्वछं. मांनुं तेनुं अपभ्रंश छंदोनुं निरूपण ए जीवंत परंपरामां सक्रिय रहेला-तथा तेने घडता-एक समर्थ कलाकारनुं छे । एटलुं ज नहीं स्वछं.मां स्वंयभूए पोताना समयमां प्रचलित विशाळ प्राकृत-अपभ्रंश साहित्यमांथी (तथा संभवत: पूर्ववर्ती पिंगळोमांथी) कविओना नाम साथे उदाहरणो टांक्यां छे । आथी देखीतुं छे के प्रामाण्यनी दृष्टिए तेना निरूपणनी कक्षाने पछीनां पिंगळो आंबी न शके । हेमचंद्रनो मुख्य आधार पण 'स्वयंभूछंद' होवानुं जणाय छे । आथी हुं अहीं स्वछं.ने केन्द्रमां राखीने चर्चा करीश । ते साथे जरूर प्रमाणे छंशा. ना समान्तर संदर्भो पण आपीश । वक्तव्य मुख्यत्वे अपभ्रंश छंदोने अनुलक्षीने रहेशे । प्राकृत छंदोनो अछडतो ज स्पर्श करवानुं बनशे ।

(२)

१. प्रशिष्ट अपभंश साहित्यना स्थूलमाने अने मुख्यत्वे छ प्रकार हता । (१) संधिबंध, (२) रासाबंध, (३) कथा, (४) चरित (५) प्रासंगिक गीत तथा चित्रकाव्यो अने (६) मुक्तको । आमांना छेल्ला बे प्रकार स्वतंत्रपणे तेम ज कोईक विस्तृत प्राकृत रचनामां प्रासंगिक अंश तरीके मळता हता । स्वछं.ना चौद प्रकरणमांथी[४] पहेला आठमां प्राकृत साहित्यमां वपराता छंदोनुं अने बाकीना छमां विशेष अपभ्रंश साहित्यमां वपराता छंदोनुं निरूपण छे । छंशा.मां ते ज प्रमाणे चोथा अध्यायमां प्राकृत छंदो अने पांचमा, छट्ठा अने सातमां अध्यायमां अपभ्रंश छंदो निरूपेला छे । तेमां अपभ्रंश छंदोनो विचार करतां स्वछं. प्रकरण १०,११,१२, अने १३ मां संधिबंधना लाक्षणिक अंगोमां विशिष्टपणे वपराता छंदोना विविध प्रकारोनुं वर्णन छे, ज्यारे १४मा प्रकरणना एक भागमां संधिना बंधारणनुं निरूपण छे । आ बाबतमां स्वछं. अने छंशा. वच्चे नीचे प्रमाणे साम्य छे ।

संधिनुं बंधारण	**स्वछं.**	**छंशा.**
संधिबंधना छंदो	प्रक. १४ (एकांश)	अध्या. ७
षट्पदी	प्रक. १०	अध्या. ६
चतुष्पदी	प्रक. ११	अध्या. ६
द्विपदी	प्रक. १२	अध्या. ७
शेषद्विपदी (लघुद्विपदी)	प्रक. १३	अध्या. ७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आमांनी लघुद्विपदीओनो संधिबंधमां कडवकनी आदिध्रुवा तरीके तथा क्वचित कडवकदेह माटे वपराती हती । ते उपरांत अन्य प्रकारनी रचनाओमां पण तेमनो प्रयोग थतो हतो ।

२. ए पछी रासाबंधनी वात करीए तो स्वछं. प्रक. १४मां तेना बंधारणनी विगतो आपी छे। हेमचंद्रे 'रासक' नामना छंदोना वर्ग छंशा.ना पांचमा अध्यायमां एक अलग विभागमां वर्णव्या छे । स्वंछ. प्रक. ९ मां तथा छंदो.ना अध्या.५ मां जे छंदोनुं निरूपण छे, तेमांथी पण केटलाक रासाबंधमां वपराता हशे एम आपणे तेना दर्शावेला लक्षणने आधारे अने पछीथी मळता 'संदेशरासक'ने आधारे कही शकीए ।

अपभ्रंश कथाप्रकारोमां वपराता छंदो विशे आपणने कशी चोक्कस माहिती नथी । पाछळनी परंपरा जोतां लागे छे के वदनक, पद्धडी, अडिल्ला अने पारणक जेवा १६ के १५ मात्राना छंद, अथवा तो वस्तुवदनक, षट्पद के दोहा जेवा छंद कथाकाव्यो माटे वपराता हशे । चरितकाव्यो माटे पण ए छंदो उपरांत रड्डानो उपयोग थतो होवानुं केटलाक पुरावाने आधारे स्वीकारी शकीए ।

धवल, मंगल, फुल्लड, झंबटक जेवा गीतो माटे अने प्रहेलिका तथा हृदयालिका जेवा चित्रकाव्यो माटे अपभ्रंशमां विविध छंदो वपराता हता । ए वात मुक्तकोने पण लागु पडे छे ।

सिंहावलोकन, विज्ञप्ति, मंगळ, संविधान वगेरे हेतुओ माटे लघुद्विपदीओ वपराती ।

घणुंबधुं अपभ्रंश साहित्य—विशेषे धार्मिकेतर, लौकिक रचनाओ—लुप्त थयेल होवाथी तेमना छंदोविधान विशे आपणे बहु ओछुं कही शकीए तेम छीए। मुख्यत्वे तो स्वंछ. अने छंशा.मांथी जे छूटकनूटक माहिती मळे छे तेने आधारे ज आपणे ते विशे अटकळो करवानी रहे छे ।

(३)

१. आ विषयमां ए पण खास ध्यानमां राखवानुं छे के अपभ्रंश कृतिओमां पण जेमने विशिष्टपणे प्राकृत छंदो कह्या छे तेमांथी केटलाकनो नियत करेला स्थाने, तथा अन्यथा वैविध्य खातर प्रयोग करवानी परंपरा हती, अने सामे पक्षे प्राकृत कृतिओमां विविध प्रसंग अने संदर्भनां अपभ्रंश भाषा अने छंदोमां

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निबद्ध होय तेवा खंडो के सुभाषितादि आपणने जोवा मळे छे ।[५]

२. स्वछं. अने छंशा. ना प्राकृत विभागना छंदोनी वात करीए तो, उपलब्ध संधिबद्ध अपभ्रंश महाकाव्यो जोतां आपणे कही शकीए के केटलाक प्राकृत छंदो नियत हेतु माटे संधिबंधमां लाक्षणिक रीते वपराता हता । उदाहरण तरीके स्वयंभूना 'पउमचरिय' मां निध्यायिका, मंजरी, हेला, शालभंजिका, कामलेखा, द्विपदी, आरनाल, मात्रा अने मंजरीनी द्विभंगी—एटला छंद कडवकोनी आधिध्रुवा तरीके केटलाक संधिमां वपराया छे ।[६] पुष्पदंतनुं 'महापुराण' अने एवा बीजा संधिबद्ध पौराणिक काव्योने आधारे आ यादी लंबावी शकाशे । हवे आ छंदोनुं निरूपण छंशा. ना चोथा अध्यायमां तथा स्वछं. ना त्रीजा प्रकरणमां एटले के तेमना प्राकृत विभागमां थयेलुं छे ।[७]

आ उपरांत संधिबंधमां अमुक संधिना कडवको विविध छंदोमां रचवानी प्रथाने अनुसरीने कविओ तेवे स्थाने द्विपदी वगेरे जेवा प्राकृत छंदो तथा मुख्यत्वे संस्कृत काव्योमां वपरातां मात्रावृत्तो अने अक्षरवृत्तोनो प्रयोग पण करता होवानां घणां उदाहरण आपणी सामे छे ।

३. स्वछं. अने छंदो. ना प्राकृत विभागमां गाथाप्रकरण अने स्कंधकप्रकरण उपरांत गलितक, खंजक अने शीर्षक नामनां छंदप्रकारोने अलग प्रकरण के पेटाविभागमां मूकेला छे । आमांना शीर्षकविभागमां विविध छंदोनां मिश्रणो के संयोजनोनुं निरूपण छे । द्विपदी के चतुष्पदी प्रकारना कोई जुदा जुदा बे के वधु छंदना, तेमना स्वरूप अनुसार बे के चार चरणना एकमोने जोडीने एक पछी एक एम मूकीने बे के वधु घटकोनी एकात्मक रचनाओनुं—एकवाक्यता धरावती रचनाओनुं सामान्य नाम शीर्षक हतुं । बे छंदोनुं संयोजन द्विभंगी कहेवातुं, त्रण छंदोनुं संयोजन त्रिभंगी[८] । उपर नोंध्युं छे तेम अपभ्रंशमां प्रचलित मात्रा तथा प्राकृत मंजरी छंदनी द्विभंगी स्वंयभूए 'पउमचरिय' मां एक संधिमां आदिध्रुवा तरीके वापरी छे, अने मात्रा तथा दोहानी रड्डा नामे जाणीती द्विभंगी स्वतंत्रपणे महाकाव्यो के चरितकाव्यो माटे वपरावा उपरांत आदिध्रुवा तरीके वपराती होवानुं स्वयंभूए नोंध्युं छे । छंशा. मां अन्य प्रकारनी पण विविध द्विभंगीओनुं निरूपण मळे छे ।

४. छेवटे प्राकृत छंदोना जे एकबे महत्त्वनां पासां अत्यार सुधी घणुखरुं उपेक्षित रह्या छे तेमनो हुं स्पर्श करीश ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'विक्रमोर्वशीय'ना चोथा अंकमां उन्मत्त पुरूरवानी एकोक्तिओने अनुलक्षीने नाट्यकारे अभिनय माटेना जे विविध सूचनो आपेलां छे, तेमां अनेक परिभाषिक संज्ञाओ वपराई छे । द्विपदिका, जंभलिका, खंडधारा, चर्चरी, भिन्न खंडक, खुरक, वलंतिका, कुटिलिका, मल्लघटी, द्विलय, अर्धचतुरस्रक, स्थानक, गलितक। आमांनी केटलीक संज्ञाओ विविध नर्तनप्रकारनी गतिओने लगती छे ए तो देखीतुं छे, परंतु घणी संज्ञाओ पुरूरवा वडे के अन्य कोई वडे गवाता प्राकृत, अपभ्रंश के संस्कृत पद्यना संदर्भमां वपरायेली छे । वेलणकरे द्विपदिका चर्चरी, खंडक, खंडिका, खंडधारा, गलितक, भिन्नक जेवी संज्ञाओने हेमचंद्र वगेरे प्राकृत पिंगळकारोए वर्णवेला एवां के एने मळतां नामवाळा छंदो साथे सांकळी शकाय के केम तेनी चर्चा करी छे[१०]। आ संदर्भमां रंगनाथ अने कोणेश्वरनी 'विक्रमोर्वशीय' उपरनी टीकाओमां प्राप्त माहितीनो वधु ऊहापोह आवश्यक छे। उपरांत विरहांकना 'वृत्तजातिसमुच्चय'मां जे विशिष्ट स्वरूपनी द्विपदीओनुं निरूपण छे अने जे 'जानाश्रयी' ने पण परिचित छे,[११] तेने पण गणतरीमां लेवुं अनिवार्य छे । आ उपरथी ए स्पष्ट थाय छे के घणी वार एकनी एक संज्ञा अमुक छंद माटे अने ते छंदमां रचेला पद्यनी साथे संकळायेला नृत्यविशेष माटे पण वपराती । आ उपरांत 'चर्चरी' जेवी संज्ञा उपरथी जोई शकाय छे के छंद, गीत, ताल, अने नृत्य तथा उत्सव माटे एकनी एक संज्ञा केटलीक वार प्रचलित बनती । संगीतशास्त्रना 'बृहद्देशी', 'संगीतरत्नाकर' वगेरे जेवा ग्रंथोमां अमुक प्राकृत छंदमां रचायेला गीतना राग, स्वरो अने तालनुं जे निरूपण मळे छे, तेमां जे नाम छंदनुं होय छे ते ज नाम तेनी साथे संकळायेला गेयप्रबंधने आपेलुं जोवा मळे छे ।[12] आ उपरथी समजी शकाशे के प्राकृत-अपभ्रंश छंदो, नर्तनप्रकारो अने संगीतप्रबंधोनुं अध्ययन केटलुं बधुं अन्योन्य साथे संकळायेलुं छे । परिणामे ए पण स्पष्ट छे के तेमांथी कोई एकना अध्ययन माटे बीजां बंने शास्त्रो घणां उपकारक थई पडे । परंतु आ विषय स्वतंत्रपणे तपासवा योग्य होईने अहीं ते विशे चर्चा करवी इष्ट गणी नथी ।[१३]

टिप्पण

१. राजशेखरनुं 'छंदःशेखर', जेना मात्र प्राकृत-अपभ्रंश छंदोने लगतो पांचमो अध्याय ज मळे छे, ते 'स्वंयभूच्छंद' ना मूळ ग्रंथनो संस्कृत अनुवाद ज छे ।

2. अहीं पालि अन अर्धमागधी साहित्यमां मळता छंदोने बाद राखी, प्रशिष्ट साहित्यना छंदोनी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज वात करी छे ।

३. जुओ तेमनां 'प्राचीन गुजराती छंदो' (१९४८) अने 'बृहत्पिंगल' (१९५५ १९९२) ए पुस्तको ।

४. वेलणकरने स्वछं. नी पहेलां मळेली हस्तप्रतमां शरुआतनो भाग खूटतो हतो, जेनी पूर्ति घणे अंशे, पछीथी मळेली हस्तप्रतने आधारे करी शकाई हती । आथी तेमणे खूटतो भाग 'स्वयंभूच्छंद-पूर्वभाग' एवा शीर्षकथी संपादित करीने खंडित भागनी पाछळ मूक्यो । तेथी तेमणे आपेलो प्रकरणोनो क्रमांक (१ थी ८ अने पूर्वभागना १ थी ६, तेमां आगळनो १ अने पाछळनो ६ एक ज प्रकरणने लगता छे, ज्यारे तेमना आगळना छठ्ठा प्रकरणमां खामीवाळी हस्तप्रतने कारणे द्विपदीनुं अलग गणवुं जोईतुं प्रकरण साथे गणाई गयुं छे, एटले तेने जुदुं गणतां प्रकरण-संख्यामां एकनो वधारो थाय छे) भेळवी देतां पूर्वभाग अने उत्तरभागनां मळीने कुल १४ प्रकरण थाय छे ।

५. जुओ ह.भायाणी, 'वर्धमानसूरिझ अपभ्रंश मिटर्झ', संबोधि, ग्रंथ १३, १९८४-१९८५, पा. १०१-१०९.

६. स्वयंभूकृत 'पउमचरिय' अने 'रिट्ठणेमिचरिय' (मात्र अमुक अंश प्रकाशित) मां प्रयुक्त बधा छंदोना सर्वेक्षण माटे जुओ मारुं 'पउमचरिय' नुं संपादन, खंड त्रीजो, १९६०, भूमिका, पृ. २३-३५.

७. स्वछं. नुं त्रीजुं प्रकरण त्रूटक मळे छे, पण छंशा. नी साथे सरखावतां ए बधा छंदो तेमां पण निरूपाया होवानो पूरतो संभव छे ।

८. स्वछं. अने छंशा. ना शीर्षकवर्गना छंदोना निरूपणने पूर्ववर्ती 'जानाश्रयी' अने 'वृत्तजातिसमुच्चय' ना तथा अनुगामी 'कविदर्पण' वगेरेना निरूपण साथे सरखावतां आ प्रकारनां छंदोमिश्रणोना इतिहासनी थोडीक झांखी थाय छे। पण ए अलग तपासनो विषय छे । ए पछीनुं कार्य भाषासाहित्यना प्राचीन तबक्कामां प्रचलित रहेला मिश्र छंदोनी तपासनुं छे ।

९. जुओ वेलणकरनुं 'विक्रमोर्वशीय' नुं संपादन, १९६१, भूमिका, पृ. ७४ ९०.

१०. जुओ तेमनो लेख 'म्युझिक एन्ड डेन्स इन विक्रमोर्वशीय एक्ट ४', एनल्झ ओव ध भांडारकर ओरिएन्टल इन्स्टिट्युट, १९८३, पृ. ५९-७५.

११. आ 'द्विलय' साथे 'जानाश्रयी'मां 'त्रिभंगी' ने माटे वपारायेली संज्ञा 'त्रिकलय' सरखावी शकाय ।

१२. आ संबंधमां जुओ, ह. भायाणी, 'ओन सम स्पेसिमेन्झ ओव चर्चरी'– मुंबई युनिवर्सिटी द्वारा आयोजित 'सेमिनार ओन प्राकृत स्टडिझ'मां प्रस्तुत निबंध १९७१, जर्नल ओव ध बोम्बे युनिवर्सिटी, पृ.३६; 'इन्डोलिजिकल स्टडीझ-१' (१९९२)मां पृ. ३४ ५३ उपर पुनर्मुद्रित ।

१३. सोमेश्वरकृत 'मानसोल्लास' ना वीशमां प्रकरण 'गीतविनोद'मांना संगीत प्रबंधोना छंदो वगेरेनी चर्चा माटे जुओ ह.भायाणी, 'ध प्राकृत एन्ड देशभाषा पेसेजीझ इन सोमेश्वरझ मानसोल्लास', के. के. हन्दिकी फेलिसिटेय्श वोल्युम', पृ. १६७ १७७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. मुक्तक-कवि हेमचंद्र*

१. 'छंदोनुशासन'नां उदाहरणोने आधारे

'छंदोनुशासन'मां हेमचंद्रे जे संस्कृत, प्राकृत अने अपभ्रंश छंदोनी व्याख्या आपी छे तेमनां उदाहरण घणुंखरुं तो तेमणे पोते रचीने आपेलां छे। ए उदाहरणोमां तेमणे व्याख्याप्राप्त छंदनुं नाम सर्वत्र गूंथी लीधुं छे। ए रीते जुदाजुदा छंदोमां हेमचंद्रे रचेलां सो जेटलां प्राकृत अने दोढ सो जेटलां अपभ्रंश मुक्तको 'छंदोनुशासन'मां मळे छे। अहीं मुख्यत्वे तेमना आ अपभ्रंश मुक्तकोनो अने थोडांक प्राकृत मुक्तकोनो परिचय आप्यो छे। प्राकृत उदाहरणो चोथा अध्यायमां छे। अपभ्रंश उदाहरणोमांथी दसेक चोथा अध्यायमां अने बाकीनां पांचमा अने छठ्ठा अध्यायमां छे. एमांथी पांच अपभ्रंश उदाहरण हेमचंद्रे बीजेथी लीधां होवानुं चोक्कसपणे कही शकाय छे। (६.११६ अने ६.११८ 'स्वयंभूछंद'मांथी लीधेल छे, ज्यारे ६.११७, ६.११९ अने ६.१२० मुंजरचित कोईक लुप्त थयेल दोहासंग्रहमांथी लीधेल छे)। बाकीनां उदाहरणोमां कोईक स्वयंभूए आपेलां उदाहरणमां थोडोक फेरफार करीने बनावेल छे। शेष हेमचंद्रे पोते रचेलां छे। विषयनी दृष्टिए जोईए तो आमां घणां मुक्तको शृंगाररसनां छे। केटलांक वीररसनां, राजचाटु एटले के राजवीनी प्रशस्तिरूपे छे। प्राकृत विभागनां एवां उदाहरणोमां सिद्धराज, कुमारपाल अने मूलराजनां पराक्रम अने कीर्ति वर्णवायां छे। आ उपरांत देवतास्तुति, वैराग्यबोध के हितोपदेश अने पौराणिक पात्रविशेषनां गौरववर्णननो पण समावेश थयेलो छे। स्वभावोक्तिओमां ऋतुवर्णन (वसंत, वर्षा वगेरे) अने नारीरूपवर्णन मळे छे। उत्प्रेक्षा, रूपक, उपमा, दृष्टांत, समासोक्ति, अपह्नुति, श्लेष जेवा अलंकारोनो विनियोग छे। भावभंगि, शैली अने पदावलिमां प्राकृत-अपभ्रंश कवितानी परंपरानुं अनुसरण छे। ए पद्धतिए अनायास काव्यो रचवानी ('कुमारपालचरित'मां पण जोवा मळती) हेमचंद्रनी असाधारण शक्ति तेमांथी प्रतीत थाय छे। एमांनां थोडांक आस्वाद्य मुक्तको उदाहरण लेखे जोईए।

★ 'हेम-वाङ्मय-विमर्श' (१९९०), पृ. ३३७-३४८ पर प्रकाशित। अहीं पुनर्मुद्रित।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऋतुवर्णन

वसंत

जुओ, वसंतवालमना मिलने आ वनश्री किंशुकनो कसुंबो सजीने मंगळ मनावी रही छे । (६.२५)

उपवनमां पुष्पित थयेलो नागकेसर एवो शोभी रह्यो छे, जाणे के वसंते वनश्रीने पहेरावेलो खूंप । (६.७३)

मलयानिले कंपती वेलडीने जोईने पोतानी गोरडीने संभारता पथिको मरणशरण थया ।

[देक्खिवि वेल्लडी, मलय-मारुअ-धुअ
सुमरिवि गोरडी, पंथिअ-सत्थ-मुअ (६.२३)]

पुष्पित बनेली लताने जोईने भ्रमरवृंदे एवो गीतगुंजारव कर्यो के प्रवासे नीकळनारानी आंखे आंसु उभरायां अने तेओ एक डगलुं पण भरी न शक्या । (६.३४)

पुष्पित पलाश एटले प्रज्वलित बनेल मदनाग्नि, खीलेली मल्लिका एटले मदननुं हास्य । (६.९३)

आ हृष्टपुष्ट मलयानिल, भ्रमरनी जेम, चंदनलताना पलंगमां आळोटतो, लवंगलताना झूंडने भेटतो, रमणीय कदलीओ आगळ खंचकातो, नागरवेल पासे ऊछळतो, सरल, कंकोल अने लवलीनी पासे घुमरातो, माधवीलतानुं चुंबन पामतो, कामीओने पुलकित करतो, संचरी रह्यो छे ।

[लुढिदु चंदण-वल्लि-पल्लंकि
संमिलिदु लवंग-वणि, खलिदु वत्यु-रमणीय-कयलिहि ।
उच्छलिदु फणिलयहिं, धुलिदु सरल-कंक्कोल-लवलिहिं ॥
चुंबिदु माहवि-वल्लरिहिं, पुलईद-कामि-सरीरु ।
भमर-सरिच्छउ संचरइ, रड्डउ मलय-समीरु ॥ (५.३२)

वर्षा

धरतीतळ पर अरुणरंगी इंद्रगोप एवा लागे छे, जाणे के वर्षालक्ष्मीए चरण मांडतां पगलांमां पडेलां अळतानां टपकां, अने आ झबूकती, झळहळती वीजळी एटले वर्षालक्ष्मीनी सोनानी कंठी । (५.८)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हाय हाय, मित्र ! जो तो, गगनरूपी विपुल सरोवरना बहोळा जळमां सेलारा देता, घोर निनाद करता, भीषण विद्युत्‌रूपी जीभ लबकारता, लांबालच, आ नवा मेघरूपी मगरमच्छोए क्रीडा करी रहेला चंद्ररूपी राजहंसने ग्रसी लीधो। (४.४८) (प्राकृत)

मालतीमाळा उपर मकरंद-पिपासु भ्रमर एवा शोभे छे, जाणे के पर्जन्य-प्रियतमे इंद्रनीलजडी रत्नावलि भेट दीधी न होय। (६.३०)

आ झबुक झबकती विद्युत्-लेखा (विरहिणीने) मेघराक्षसनी लांबीलच, कराळ जीभ जेवी भासे छे। (६.३६)

शरद :

नाचता शुकयुगलनो कलरव शालिक्षेत्रने भरी दे छे। खीलेला सप्तपर्णनी उत्कट सौरभ चोदिश मघमघी रही छे, ग्रामीणोने दूध जेवा धवळ लागतां ढगलाबंध काशतृणनुं हास्य स्फुरी रह्युं छे-आवी शरदऋतु आवी पहोंची छे, तो हे प्रिय सखी, तारा प्रियतम उपर कोप करवानुं तुं मांडी वाळजे। (४.९७) (प्राकृत)

आ गोळमटोळ चंद्र एटले रजनी रमणीनो क्रीडाकंदुक। (६.१७)

चंद्र :

उदय पामती पिंगळवर्णी चंद्रलेखा एवी भासे छे, जाणे के आकाशरूपी वराहनी दाढ, जाणे के कंदर्परूपी सुभटे भट्टीमांथी बहार काढेलुं क्षुरप्रबाण, जाणे के ऐंद्री दिशाए पहेरेलुं किंशुकनुं कर्णाभरण। (४.२०.४)

आने तारावलि न समजशो : ए तो चंद्र अने रजनीना प्रेमकलहमां तूटी गयेली मुक्तावलि छे। (६.८६), अथवा तो चंद्रे ऊछाळेली घूघरीओ छे। (६.६५)

प्रभात :

आ कमलिनीनी पासे जे भ्रमरगण रमेभमे छे, ते तो कलरवने मिषे सूर्य आवी रह्यो होवानी कमलिनीने वधाई दई रह्यो छे। (६.२०)

नारीरूपवर्णन :

गौरांगीना अंगनी सुंदरता आगळ चंपाना फूल शोभे खरां ? (६.४)

आ उत्कंठित रमणी ज्यारे बोलती होय, त्यारे कलकंठीए पोतानुं मों

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीडी राखवुं । (६.५)

आ रमणीनी लीलागति आगळ हंसीनी सरवरक्रीडा टके खरी ? (६.६)

आ रमणीना त्रिवलीतरंग एटले त्रिभुवनविजय करीने कामदेवे खेंचेली त्रण रेखा । (६.३७)

चंचळ नयनरूपी भ्रमरे अने दन्तकान्तरूपी केसरे शोभतुं आ रमणीनुं मुखारविंद लक्ष्मीनुं विलासभवन छे । (६.३८)

हे गोरोचना शी गौर रमणी, लोलुप चंद्र तारा गालमां प्रतिबिंबित थईने तने चूमी रह्यो छे । (६.७०)

आ रमणीनां मीन समां चंचळ नयन-कहोने के फरकता मीन-ध्वज, स्तनतंबुमां मदननो मुकाम होवानुं सूचवे छे । (६.२४)

आ युवतीओनी सहजसलूणी, प्रशस्य नेत्रलक्ष्मीने क्यांक नजर न लागी जाय, ते कारणे सखीओए तेने काजळ लगाड्युं छे । मेशनी लीटी ताणी छे ।) (४.३२) (प्राकृत)

तारां अधरोष्ठ-दल एटले जासुदनां फूल, दांत एटले कुंद-कुसुम, हाथ, पग, नयन अने वदन एटले विकसित अरविंद : आम, हे सुंदरी, तारो देह 'कुसुमपुर' होवा छतां तुं उत्तम 'मध्यदेश'ने पण धारण करी रही छे ए एक भारे मोटी विपरीतता छे । (५.६)

स्नान करी पाणीमांथी बहार नीकळेली गोरीनो केशपाश मोटां मोटां टीपां टपकावतो जाणे के रडी रह्यो छे-कुसुममाळाना विरहदुःखे । (४.४१) (प्राकृत)

हे हंसी, तारो गतिविलास ठालो-नकामो लागे छे; हे कोयल, तारो खंठ बोदो-बेसूरो बनी रहे छे, कारण के अत्यारे विरहीवृक्ष अने अशोकतरुनां दोहद पूरती आ कुवलयनयना गीत गाती भ्रमण करी रही छे । (५.९)

हजी नयनोए चंचळता नथी प्राप्त करी, हजी वदन परथी भोळपण नथी हट्युं, हजी स्तननो उभार नथी प्रगट्यो, अने तो पण आ मुग्धाने जोई लोको मुग्ध बनी जाय छे । (५.३९)

कंकण अने नुपूरनी किंकिणी रणके छे, पवनमां फरफरती साडी अवकाशने रमणीयता अर्पे छे, ऊंची हीलोळा लेवानी क्रीडामां देह डोलंडोल थई

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रह्यो छे। केवी शोभी रही छे आ झूला पर झूलती बाला ! (४.१०१) (प्राकृत)

विरह :

ए एकनी एक विलासिनी गाममां अने पत्तनमां, हाटमां अने चौटामां, राजकुलमां, देवळमां अने नगरमां सर्वत्र मने देखाय छे : विरहरूपी इन्द्रजालिके एने बहुरूपिणी बनावी दीधी छे। (५.३१)

तारा विरहे ए रमणी दूबळी अने फिक्की थई गई छे, जेवी सूर्यकिरणे छवायेली चंद्रलेखा। (६.१०२)

आनंद सुधारस पमाडतो ए दिवस क्यारे आवशे, ज्यारे मारा नयनचकोर प्रियनी मुखचंद्रिका वडे पारणुं करशे ? (६.१२७)

हे मन्मथ, अतिसुंदर मारा वालमे तारो रूपगर्व भांग्यो तेथी तुं मने तेनी विरहवेळाए शा माटे त्रास आपे छे ? ( )

दिनप्रतिदिन आंगळीओ वती प्रवासदिवस गणती आ रमणी जाणे के वालमनुं आकर्षण साधवा एकचित्ते मंत्राक्षरनो जप करी रही छे। (४.३१) (प्राकृत)

ए विरहिणी मुग्धा बोलती नथी। एनुं कारण मने एम लागे छे के कलहंसना जेवो पोतानो कंठ मधुर होई, तेने कोयलनो पंचम सूर सांभळवानो डर छे; दर्पणमां मुख जोती नथी, कारणके पोते चंद्रवदना होई, चंद्रनुं दर्शन ते सही शकती नथी; कामदेवने वेरी मानीने ए क्षणे क्षणे त्रास पामे छे, तेम छतां अचरज ए छे के, हे रूपनिधि कामदेव, ए तारां दर्शन झंखी रही छे। (४.१२९)

मिलन :

पुलकावलिना जवथी अने हास्यना श्वेतकुसुमथी रमणीए वालमनो मांगलिक सत्कार कर्यो। (६.२७)

अन्योक्ति :

भलेने परम सुगंधी पाटला खीले, भलेने खीचोखीच माधवी मघमघे, भलेने नवमालिकाना दलेदल ऊघडे, भलेने मल्लिका फूलभारे लची पडे, भलेने सरोवर, तळाव, तळावडी अने वावमां कमळो विकसे। तो पण चमेलीना सहज गुणोना स्मरणमां तल्लीन बनेला भ्रमरना चित्तनो कदी ध्यानभंग थाय खरो ? (४.१३५)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हे मदमत्त मेघ, धरती पर भरपूर वरसीने तें शुं सिद्ध कर्युं ते सांभळ : जे सरोवर हंसोना कलरवे मनोहर हतुं, तेने तें देडकाओना ड्राउं ड्राउंथी भरी दीधुं । (५.१०)

पौराणिक :

परपुरुष पर दृष्टिपात न करती सीता पोतानां चरणनी उज्ज्वळ नखपंक्तिमां प्रतिबिंबित थतां रावणना दश मुख भय, विस्मय अने हास्यना मिश्रभावे निहाळी रही । (६.५६) ।

प्रकीर्ण :

प्राज्ञजन सागरने रत्नाकर कहे छे ते साचुं छे, केम के तेमांथी चंद्र अने कौस्तुभमणि जेवां बे रत्न नीकळ्यां छे : एमांनुं एक श्रीकंठनुं (शिवनुं) शिरोभूषण बन्युं, तो बीजुं श्रीवल्लभनुं (विष्णुनुं) झळहळतुं उर-आभरण बन्युं । (५.५)

ज्यां 'जल'ने (एटले के 'जळने' अथवा 'जडमतिने') माटे स्थान नथी एवो, अने जेनुं मध्य 'विबुधो' (एटले के 'देवो' अथवा 'प्राज्ञजनो') पण कदी तागी शक्या नथी एवो प्राचीन कविओनो वाणी-गुंफ कोईक अनन्य सागर छे, जेनुं अवगाहन करतां निरंतर अमृतरसनो आस्वाद मळे छे । (४.४४) (प्राकृत)

आ दृष्टांतो परथी पण हेमचंद्रनो अपभ्रंश अने प्राकृतना एक अग्रणी मुक्तक कवि तरीकेनो कांईक परिचय मळशे ।

वळी 'छंदोनुशासन'ना प्राकृतविभागमां गलितक वर्गना छंदोनां उदाहरणोमां हेमचंद्रनी चरणांत यमको रचवानी शक्तिनां, तो समशीर्षक अने मालागलितक छंदोनां उदाहरणोमां गौडी शैली परना तेमना प्रभुत्वना दर्शन करी शकीए छीए । समशीर्षकना उदाहरणनां चार चरणोमां एवा पांच समास छे जेमां १५थी मांडीने ४० सुधीनां पदो छे, तो मालागलितकनां चार चरणोमां वीशेक पदोनां त्रण समास प्रयोजाया छे । संस्कृत काव्यपरंपरानी जेम प्राकृत अने अपभ्रंश काव्यपरंपरा हेमचंद्रे केटली आत्मसात् करी हती तेनां आ द्योतक उदाहरण छे ।

२. 'देशीनाममाला'नां उदाहरणोने आधारे

हेमचंद्रनी 'देशीनाममाला'मां जे आठ वर्ग-एटले के प्रकरणो छे, तेमां नोंधेला देश्य शब्दोना प्रयोगना उदाहरण लेखे (तेम ज तेमना निर्दिष्ट अर्थनी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चोक्कस सीमा सूचववा) हेमचंद्रे पोते रचीने सवा छसो उपरांत प्राकृत गाथाओ आपी छे । प्रकरणवार तेमनी संख्या आ प्रमाणे छे : १ (१२३), २(९०), ३(५१), ४(४६), ५(५०), ६(१२३), ७(७६), ८(६५), कुल ६३४ । आ उदाहरणोनी रचना माटे हेमचंद्रे लीधेलो बौद्धिक परिश्रम, तेमां व्यक्त थती परंपरागत काव्यसाहित्यनी तेमनी पारंगतता अने स्वभावसहज होय तेवी काव्यनिर्माणशक्ति (जे तेमनी बीजी पण घणी रचनाओमां आपणने पूरेपूरी प्रतीत थाय छे), आ क्षेत्रमां पण हेमचंद्र केटला प्रतिभाशाली हता तेनां द्योतक छे । 'देशीनाममाला'मां शब्दोनी गोठवणी वर्णानुक्रमे अने शब्दनी अक्षरसंख्याना क्रमे करेली छे । अमुक एक गाथामां जे चारपांच (के वधताओछा) देश्य शब्द तेमना अर्थ साथे आप्या होय, ते ज शब्दोना अर्थ जोडीने एक सुसंगत अर्थवाळुं अने काव्यना स्पर्शवाळुं मुक्तक रचवुं ए असाधारण विकट काम छे । वर्णानुक्रमे शब्दो आपता शब्दकोशमांथी कोई पण कटारमांथी पासेपासेना चारपांच शब्द लईने (जेमना अर्थो वच्चे घणुंखरुं बादरायण-संबंध ज होवानो) काव्य बनाववानी आ वात थई । शीघ्र रचनाशक्ति, कल्पनाशक्ति, अने परंपरा परनुं प्रभुत्व होय त्यारे ज आवा काममां सफळता मळे । अहीं काव्यरचनानुं लक्ष्य प्रधान नथी । सामग्रीनुं जे प्रकारनुं नियंत्रण छे तेने कारणे केटलीक कृत्रिमता, दूराकृष्टता, कोणी मारीने कूलडुं करवानो आयास केटलेक अंशे अनिवार्य होवानुं देखीतुं छे । आश्चर्य ए वातनुं छे के आवी विषम परिस्थितिमां पण हेमचंद्रे ठीकठीक प्रमाणमां कविता सिद्ध करी छे, अने एक समर्थ मुक्तककवि तरीके तेओ आ उदाहरणोमांथी पण प्रगट थाय छे ।

'देशीनाममाला'नां बधां उदाहरणोनो पहेली वार अनुवाद करवानो एक समर्थ प्रयास सद्गत पंडित बेचरदास दोशीए तेमना 'देशीनाममाला'ना संपादन-संशोधनना पुस्तकमां करेलो छे । पिशेले तो ए उदाहरणोने तद्दन कृत्रिम, आयाससिद्ध अने निकृष्ट कविता तरीके साव उतारी पाडेलां । पंडितजीना प्रयास द्वारा आपणने तेमनी भारे मूल्यवत्ता समजी शकीए छीए । केटलेक स्थळे तेमणे करेलो अर्थ चिंत्य के खामीवाळो छे, परंतु एम थवुं आवा विकट काममां कोईने माटे पण सहज गणाय । में तेमना अनुवादनो घटतो लाभ लीधो छे । अहीं नमूनारूपे चाळीशेक मुक्तकोनो परिचय आप्यो छे ।

मुक्तकोना विषयो सुभाषितसंग्रहोमां जोवामां आवता विषयोने मळता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छे। शृंगाररसना (अनुराग, विरह, मान, अभिसार, प्रवास, दूतीकर्म, असती, वेश्या वगेरे); वीररसना (सुभटनुं शौर्य, राजचाटु के राजप्रशस्ति-तेमां जयसिंह सिद्धराज, कुमारपाल अने सामान्यपणे चौलुक्य राजवीने नामे के अनामिक); बोधक (धर्म के नीतिना उपदेशक); सुभाषित (कहेवतो), स्वभावोक्ति; अन्योक्ति—ए रीते साधारणपणे उदाहरणरूप मुक्तकोनो विषयनिर्देश करी शकाय। अहीं केटलेक अंशे विषयने ध्यानमां राखीने परिचय आप्यो छे। प्रारंभ थोडांक शृंगारिक मुक्तकोथी कर्यो छे।

मधुमासमां भ्रमरावलीओ एटले मन्मथवीरना धनुष्यनी पणछ, अने आम्रमंजरी एटले तेनुं पुंखवाळुं बाण। (६.१४)।

जेमनी अनुरागनी उत्कटता ओसरी गई छे तेवां प्रेमीयुग्मोनो (फरी) रतिसज्ज बनीने सुशोभित तरुशाखा हेठळ थतो संगम कोईक अभूतपूर्व अभ्युदय समो भासे छे। (१.११९)

प्रियना हमणां ज मळेला समाचारना भावावेगमां ओढणुं सरी पडतां तेने जोवा जवानी उतावळमां, तेणे ओढवानुं पहेरी लीधुं ने पहेरवानुं ओढी लीधुं! (१.१५५)

कंकणप्रेमी एवी तारा हाथमां एरंडपल्लव जेवां श्यामळ कंकण, कमळ पर भ्रमर समां शोभे छे। (१.१२०)

हे भासपंखी! तुं ऊडीने तेने मारा निसासाना पिंडनी, हथेळीने वळगी रहेती हडपचीनी, विरहे भ्रमित अने गूमसूम बनी गई होवानी वात करजे। (२.९२) (ते ज प्रमाणे ३.४७ अने ५.१८मां प्रियने संदेश पहोंचाडवा विरहिणी चातकने कहे छे।)

(रात्रे) चित्तमां तारी छबी प्रतिबिंबित थतां, ते वाडामांथी आवती चांदनीने जे आडपडदो करे छे ते अश्रुने लीधे बेवडाय छे, ज्यारे दिवस तेने ब्रह्मानो दिवस लागे छे। (६.२२)

(प्रवासेथी) प्रिय आवी पहोंचतां, निरंतर विरहथी ढीलीदूबळी अने आंसु नींगळती बापडी वधू ओवारणुं लईने जतां लथडी पडी अने पोते ज ओवारणुं बनी गई। (४.४०)

अरे शठ! प्रेम नामशेष थया पछी, तुं देवांगनाना जेवुं अम्लान पुष्पोनुं कर्णाभरण पहेरीने आव्यो तेथी य शुं? (१.९०)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नित्यना सामान्य गृहजीवननी वास्तविक परिस्थितिनो स्पर्श नीचेनी रचनाओमां माणी शकाशे :

हांसीठट्ठामां रचीपची रहेती तुं (तारा वरनी साथेनी) गम्मत अने संताकूकडी रमवी छोड, अने घरने साफसूफ कर। ओलामां ऊधईनां पोडां जोईने तारी नणंद तारी हांसी उडावशे । (१.१५३)

वलोणुं करवा बेठेली नववधू हरणांने हांकलो करता वरना मेघगर्जना समा घेरा होकाटाने सांभळवा, वलोणानो घरघराट धीमो करे छे । (२.८८)

आंबलीवाडमां छोकराने आंबली पर चढेलां जोईने माता दळवारांधवानां काम पडतां मूकीने दोडी । (३.१०)

तमिस्रनो चंदरवो ज्यारे गगने छवाई गयो त्यारे अडदना जेवी काळी डिबांग बिलाडीओनुं रूप धरेली डाकणो छींपावाडमां भमवा मांडी । (१.९८)

हेमचंद्रे उद्धृत करेली एक सुंदर उदाहरण गाथानो पण आपणे अस्वाद लईए :

गृहिणी, तूंबडीने बेठेला, सहेज नमेला दींटावाळा पहेला काचा फळनी, दीकरीना प्रथम गर्भ प्रत्ये रखाता आदर जेवी संभाळ ले छे । (३.३६ नीचे उद्धृत)

अन्योक्तिनां बे त्रण उदाहरण जोईए :

छोकरी, तुं छाण अने अडायां लेवा परोढिये शेरीमां भटकती नहीं; शेरीनो कोईक सांढ तने कचरी नाखशे । (२.९६)

हे धवल, ज्यां ऊंट आरडता होय छे एवा रणप्रदेशमां तुं न जतो । त्यां शेरडीनुं खाण तो रह्युं, घासनुं खाण पण तने नहीं मळे । (२.८२)

(३.२९नुं उदाहरण पण एक धवलान्योक्ति छे ।)

पौराणिक विषयोमां कृष्णनुं बालचरित्र, हालाप्रिय बलभद्र अने शिवनुं तांडव स्थान पाम्यां छे :

हे हरि, घडा जेवडा स्तनवाळी, बंधूकपुष्प समा होठवाळी, कसूंबो पहेरेली, हाथे रवैयो फेरवती (गोप)कुमारीनी अभिलाषा करतो तुं क्यांक रांढवाथी बंधाई जईश । (७.३) ।

६-५५नुं उदाहरण कृष्ण-उत्कंठित विरहतप्त राधाने लगतुं छे।

जेने जेनी आसक्ति होय ते तेने कदी अबखे पडतुं नथी । बलभद्रनो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हाथ कदी मद्यपात्र विनानो होय छे खरो ? (१.११८)

जेमां गणपतिना गर्जने नाची रहेला कार्त्तिकेयना मोरना केकारवे कंठे वींटळायेलो नाग त्रस्त बन्यो छे एवुं रुद्रनुं तांडवनृत्य चाले छे । (३.५)

आमां ध्वनित थती विनोदवृत्ति नीचेनां मुक्तकमां प्रकटरूप धरे छे :

शंखोज्ज्वल दुकूल पहेरीने जतो गामना मुखीनो जुवान दीकरो माथा पर कागडो चरकतां काकीडानी जेम ऊंची डोके जोई रह्यो छे । (३.४१)

नीचेनुं मुक्तक फटाणुं होवानो पूरो संभव छे :

बनेवी वरराजा ! तुं गर्भस्थ बच्चानी जेम कशो आचार जाणतो नथी अने कोई कंजूस चमारनी जेम शेकवाने सळिये सहेज चोंटी रहेलुं मांस पण चाटी रह्यो छे । (७.४४)

जयसिंह सिद्धराजना 'बर्बरकजिष्णु' बिरुदना आधारभूत प्रसंगनो निर्देश नीचेना मुक्तकमां थयेलो छे :

हे सिद्धराज, तारी तीक्ष्ण कटारीथी जेनुं कपाळ चीराई गयुं छे एवो, हांडा जेवडी फांदवाळो बाबरो गळिया बळदनी जेम कांटाळी रींगणीथी छवायेला नदीना पाणीमां आळोटे छे । (२.४)

पतित भिक्षु ए भाण अने प्रहसननो कविप्रिय विषय हतो । हेमचंद्रे तेनुं पण एक आस्वाद्य चित्र आप्युं छे :

जवना ढगनी कांति धरती, रथचक्रसमी श्रोणीवाळी, मन्मथना दुर्ग समी शयनगत गणिकाने संभारीने द्राक्षनी माळा फेरवतो भिक्षु मूर्छा पामे छे । (२.८१)

नीचेनां जेवां सुभाषितो शामळभट्टनी तथा गई काल सुधी चारणोनी रचनाओमां मळतां रह्यां छे । हेमचंद्रनी पूर्वेथी आ परंपरा चाली आवे छे :

घोडा शोभे जीनथी, गामो शोभे गोचरथी, कण शोभे तुषथी (एटले डूंडांरूपे), महिला शोभे नीवीबंधथी अने घरो शोभे घरडाथी । (३.४०)

दहीं शोभे तरे, तलवार शोभे मूठे, कूवा शोभे अथाग जळे, (संग्रामनी) विकट वेळा शोभे भडे, गाम शोभे धणे । (५.२४)

दरिद्रनुं कशुं मान नथी, उखडेलानुं गौरव नथी, षंढने लिंग नथी, ने स्थापना विनाना पत्थरने पूजा नथी । (४.५)

पोताना अवाजथी घुवड प्रसन्न थाय, श्राद्धपक्षथी ब्राह्मण प्रसन्न थाय,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अने सुंदरीओ नवी अंकोडाबंध हांसडीथी प्रसन्न थाय । (६.१२७)

छसोथी य वधारे संख्यानी रचनाओमां कहेवतोने पण स्थान मळ्युं ज होय । तो एवी थोडीक कहेवतो पण नोंधीए :

माटीथी बनावेला शेरीना यक्षने बेचार फूलनी माळा ज होय । (३.३१)

सरखावो : 'छाणना देवने कपासियानी आंखो ।'

हंमेशां कांई दरमां घो ज न होय (४.२३)

सरखावो : 'बिलि बिलि हुंति न गोहडिय' ('भरहेसर-बाहुबलि-घेर', २.१८) तथा 'बिलि बिलि न गोह नीसरइ, कहिं नीसरइ साप' ।

मरुभूमिमां कदी वृक्षावलि पांगरे ? (४.२३)

एक तो ताव, अने एमां ऊपडी हेडकी । (६.१३४)

'तूटेलो प्रेम सूतरना तांतणाथी संधातो नथी' (१.९२) एवां सुवाक्यो, के रस्ते चालता अने कोईक रूपाळीने टीकीने जोता पतिनी कोईए करेली टकोर 'संभाळ, ऊधईना जेवा वेधक मोंवाळी ('उद्देही-तीक्ष्ण-तुंडा') तारी पत्नी तारी पाछळ ज छे,' (१.९३) अथवा तो अत्यंत कृश थई गयेली विरहिणी बलोयां सरी पडवाने डरे हाथ ऊंचा राखीने चालती होवानुं चित्र (१.१४१)—'वलय-पतन-भयेन ऊर्ध्वकरा'—आमां हेमचंद्रे अपभ्रंश व्याकरणमां उद्धृत करेला एक उदाहरणनो ज पडघो छे : 'वलयावलि-निवडण-भएण धण उद्धबाहुअ धाइ' (८.४४४.३) (परंतु त्यांनी उत्प्रेक्षा घणी सुंदर छे) ।

आवी हीराकणीओ पण हेमचंद्रनी उदाहरणरूप मुक्तकरचनाओमां ओछी नथी ।

हेमचंद्रे उदाहरणरूपे रचेलुं एक मुक्तक एवुं छे जेने कारणे, आपणी मुक्तकरचनानी परंपराथी जे अजाण होय ते तेमना पर अश्लीलतानो उतावळियो आक्षेप मूकी दे । ए मुक्तक द्वि-अर्थी छे अने तेनो गूढार्थ निःशंक लिंगनिर्देशक छे । ए मुक्तकनो अनुवाद आ प्रमाणे छे :

'एय सरस चोटी वाळा ! मत्र त्राक जेवडी कोश चास न ज पाडी शके, माटे बराबर चास पाडी शके तेवी कोश मने घडी आप, (नहीं तो) हुं तारी चोटी तोडी नाखीश ने चाडवाथी तने झूडीश' । (३.१)

मराठीमां 'चोट' पुरुषलिंग माटेनो अश्लील शब्द छे । चास पडे तेम कोशथी भोंय खेडवानो इंगितार्थ पण तरत पकडी शकाय तेम छे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आवी ज गाथाओ 'वज्जालग्ग'मां पुरोगामी कविओमांथी उद्धृत करेल छे, जे सूचवे छे के एवी रचनाओनी एक दीर्घकालीन परंपरा हती ।

आ बाबतमां जे केटलीक हकीकतो आपणे ध्यानमां लेवी जोईए ते ए छे के 'वज्जालग्ग' नामनो सुभाषितसंग्रह जयवल्लभ (के जगद्वल्लभ) नामना श्वेतांबर जैन कविए अटकळे दसमी अगियारमी शताब्दी लगभग संपादित करेलो छे । तेमां जोशी, पुस्तकलेखक, वैद्य, साधुसंन्यासी, कोलु पीलनार, सांबेलुं अने दोशीने लगती गाथाओ-मुक्तको द्विअर्थी छे, अने बीजो अर्थ सर्वत्र आपणी अत्यारनी रुचिनी दृष्टिए अश्लील छे—संभोगशृंगारना स्थूळ संकेतोवाळो छे । तेमां ध्वनि के व्यंग्य अर्थ होवाथी चातुर्यनी दृष्टिए तेवां मुक्तको आस्वाद्य गणातां । चार पुरुषार्थमां काम पुरुषार्थमां स्थूळसूक्ष्म सर्व प्रकारना शृंगारनो समावेश थतो । उदाहरण तरीके विपरीत सुरतने लगती संस्कृत-प्राकृत रचनाओनो खासो मोटो संग्रह थाय । आ प्रकारना मुक्तको रचवानी परंपरा हती, अने युवानवर्ग बधी संस्कृतिओनी साहित्यपरंपराओमां आ प्रकारनी कवितानो चाहक रह्यो छे । परंपरानुं अनुकरण एकाद मुक्तकमां हेमचंद्रे कर्युं ते तेमना माटे तद्दन स्वाभाविक हतुं । युगयुगनी रुचि अने अश्लीलता अंगेना धोरणमां सारो एवो फरक होवानुं पण आपणे जाणीए छीए ।

छेवटे कविविषयक एक मुक्तकथी आपणे समापन करीशुं :

जे कविओ नवीन अर्थनुं निर्माण करवा असमर्थ छे, अने चर्वितचर्वण कर्या करे छे, ते बापडा वागोळ्या करतां पशुओ जेवां ज छे । (७.८२) ।

आशा छे आ उदाहरणो परथी मुक्तक-कवि तरीकेनी हेमचंद्राचार्यनी ऊंची प्रतिभानी कांईक झांखी थशे, अने केटलांक मुक्तको संस्कृत-प्राकृत कविताना रसिकोनुं मस्तक प्रशंसामां अवश्य डोलावशे ।

'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित'मां ख्यात इतिवृत्तनी सामग्री होवा छतां महाकाव्यनो आदर्श होवाथी प्रसंगवर्णनो अने भावनिरूपणोमां काव्यत्व माटे पूरो अवकाश हतो । 'द्व्याश्रय'नुं नाम दर्शावे छे तेम व्याकरणना नियमोने उदाहृत करवाना लक्ष्यनी साथोसाथ महाकाव्य रचवानुं लक्ष्य पण हतुं; अने तेमां 'भट्टिकाव्य' जेवानुं अनुसरणीय दृष्टांत पण हतुं । 'छंदोनुशासन'मां छंदनुं नाम गूंथवाना नाना नियंत्रण सिवाय मुक्तक रचवा माटे कल्पनाने पूरतो अवकाश हतो । ज्यारे 'देशीनाममाला'नां उदाहरणोमां उदाहरणीय शब्दसामग्रीथी हेमचंद्रना हाथ बंधायेला

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होवाथी, कल्पनाने माटे घणो ओछो अवकाश हतो, अने शब्दोनी उपस्थिति काव्येतर हेतु उपर निर्भर होवाथी मात्र अर्थसंदर्भे ज सर्जक कल्पना काम करी शके तेम हती । आवी प्रतिकूळ परिस्थितिमां पण हेमचंद्रे जे गणनापात्र व्युत्पत्तिमूलक कवित्व दर्शाव्युं छे ते कोई पण रचनाकारने गौरव अपावे तेवी सिद्धि छे ।

४. आभारदर्शन

श्री हेमचंद्रार्य नवम जन्मशताब्दी स्मृति शिक्षण-संस्कार निधिनो अने तेना प्रेरक आचार्य श्रीशीलचंद्रसूरिनो आ अनुवादनुं प्रकाशन करवा माटे हुं आभार मानुं छुं । जो सूरिजीनो आग्रह न होत अने जो श्रुतलेखन करवानुं काम बहेन इंदिरा शाहे न स्वीकार्युं होत तो, मारां बीजां कामोनी वच्चे आ काम तरतमां न थई शक्युं होत । एटले तेमना प्रत्ये पण हुं आभारी छुं । अनुवादमां जे ऊणपो रही गई होय, ते तरफ ध्यान दोरवा वाचकोने नम्र विनंती छे ।

अमदावाद
महा सुद १४, २०५२ **हरिवल्लभ भायाणी**
(शीलचंद्रविजयजीनो आचार्य-पद-प्रदान-दिन
३, फेब्रुआरी १९९६)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चोथो अध्याय

आर्या-गलितक-खंजक-शीर्षक-वर्णन

आर्या प्रकरण

आर्या के गाथा

जेना प्रत्येक अर्धमां सात चतुष्कल अने एक गुरु होय ते आर्या ।

आमां एटलो अपवाद छे के, पूर्वार्धमां छठ्ठो चतुष्कल जगण अथवा चार लघु होय छे । उत्तरार्धमां छठ्ठा चतुष्कलने स्थाने मात्र एक लघु होय छे ।

आर्यामां चरणविभाग होतो नथी । आथी नीचेना जेवां उदाहरणोमां, 'द्वीपादन्यस्मादपि' एमां, अंत्य लघु विकल्पे गुरु गणी शकाय छे' ए नियमनो आधार लईने 'पि'ने गुरु गणी न शकाय । ए उदाहरण नीचे मुजब छे :

द्वीपादन्यस्मादपि, मध्यादपि जलनिधेर्दिशोऽप्यन्तात् ।
आनीय झटिति घटयति, विधिरभिमतमभिमुखीभूतः ॥ १

'जो विधाता अनुकूळ थयेलो होय तो इष्ट वस्तु, द्वीपान्तरमांथी, समुद्रनी वच्चेथी-अरे दिशाओने छेक छेवाडेथी पण झटपट लावीने उपलब्ध करे छे ।'

नोंध : संस्कृत सिवायनी भाषाओमां 'आर्या' 'गाथा' कहेवाय छे ।

आर्यानुं उदाहरण :

उपदिश्यते तव हितं यदि वाञ्छसि कुशलमात्मनो नित्यम् ।
मा जातु दुर्जन-जने' -ष्वार्या- 'चरितं प्रपद्यस्व ॥ २

'जो तुं सर्वदा पोतानुं कुशळ वांछतो होय तो दुर्जनोनी वच्चे तुं कदी पण आर्यजननुं आचरण न आदरतो - एवो अमारो तने हितोपदेश छे ।'

प्राकृत भाषामां पण :

कलसभव-तवस्सि-चुलुअ-पूरण-मेत्ते-वि मुणिअ-मज्झाण ।
जलहीण कहं सरिसा, सया अ'गाहा' महप्पाणो ॥ ३

'सदा ये अगाध एवा महात्माओनी, अगस्त्यनी मात्र अंजलिने भरतां जेमनुं मध्य जणाई आव्युं छे (= हृदय प्रकट थई गयुं छे) तेवा समुद्रो साथे तुलना कई रीते करी शकाय ?'

पैशाची भाषामां पण :

पनमध पनय-पकुप्पित-गोली-चलनग्ग-लग्ग-पतिबिंबं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तससु नख-तप्पनेसुं एकातस-तनु-धलं लुद्दं ॥ ४

'प्रणयरुष्ट गौरीने (मनाववा तेने) पगे लागेला अने तेथी (चरणनां) दस नखदर्पणमां जेमनां प्रतिबिंब पड्यां छे तेवा एकादश मूर्तिधारी रुद्रने प्रणाम करो' ।

ए ज प्रमाणे, बीजी भाषाओनां उदाहरण पण जाणवां ।

आर्याना स्वरूपनी बाबतमां एवो पण नियम छे के ज्यारे तेना पूर्वार्धमां छठ्ठो चतुष्कल चार लघुनो बनेलो होय त्यारे पद बीजा लघुथी शरू थतुं होवुं जोईए । एनो अर्थ ए के छठ्ठा चतुष्कलना पहेला लघु पछी यति होय । ते ज प्रमाणे सातमा चतुष्कलमां चार लघु होय त्यारे पद पहेला लघुथी शरू थतुं होवुं जोईए । एटले के छठ्ठा गणने अंते यति होवो जोईए । उत्तरार्धमां ज्यारे पांचमो चतुष्कल चार लघुनो बनेलो होय त्यारे पहेला लघुथी पद शरू थतुं होवुं जोईए । एनो अर्थ ए के चोथा चतुष्कलने अंते यति होवो जोईए । जेम के

चतुरम्बुराशि-मुद्रित-भू-भारोद्धार-चतुर-भुज-परिघः ।
एकाङ्ग-वीर-तिलकः श्रीमानिह जयति सिद्धेशः ॥ ५

'चार समुद्र साथेनी धरित्रीनो भार ऊंचकवामां जेनी भुजार्गला दक्ष छे एवा वीरशिरोमणि श्रीमान सिद्धराज विजयी वर्ते छे ।'

आर्याना प्रकारो

पथ्या

जेना बन्ने अर्धमां पहेला त्रण चतुष्कल पछी यति होय ते पथ्या । जेम के

ने पथ्या नि निरस्यति, संत्रस्यति मत्त-कोकिला-नादात् ।
निन्दति चेन्दुमयूखांस्, त्वद्विरहे नः सखी सुभग ॥ ६

'हे सुंदर, तारा विरहे अमारी सखी वस्त्रो दूर करी दे छे, कोयलना टहुकारथी त्रासे छे, अने चंद्रकिरणोने निंदे छे ।'

विपुला

बन्ने अर्धमां पहेला त्रण चतुष्कल पछी जेमां यति न होय ते विपुला । तेना त्रण भेद छे । मात्र पूर्वार्धमां ए रीते यति न होय ते आदिविपुला के मुखविपुला । उत्तरार्धमां ते रीते यति न होय ते अंतविपुला के जघनविपुला । बन्ने अर्धमां तेवो यति न होय ते सर्वविपुला के महाविपुला । जेम के

'मुख-विपुलाः' पर्यन्ते च लघीयांसो भवन्ति नीचानाम् ।
वर्षासु ग्राम-पयः-प्रवाह-वेगा इव स्नेहाः ॥ ७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'नीच लोकोना स्नेह, वर्षाऋतुमां गामडामां वहेता वहेळाना वेगनी जेम, आरंभे विपुल पण अंते स्वल्प होय छे ।'

नाभी-निम्ना कुच-तट-तुङ्गा 'जघन-विपुला'थ मध्य-कृशा ।
भ्रू-कुटिलाशय-सरला, च मानसं हरति सा बाला ॥ ८

'ऊंडी नाभिवाळी, उत्तुंग कुचोवाळी, विपुल जघनवाळी, कृश कटिवाळी, कुटिल भमरवाळी अने सरळ हृदयनी ए बाळा चित्त हरी ले छे ।'

शस्त्राभ्यासे रतिवल्लभस्य मन्ये खलूरिका रम्या ।
तव कमलदलाक्षि नितम्ब-भूमिरेषा 'महा-विपुला' ॥ ९

'हे कमलदल शां नेत्रवाळी, तारो अतिविपुल आ नितम्बप्रदेश कामदेवना शस्त्राभ्यास माटेनुं रमणीय चोगान होय एम मने लागे छे ।'

चपला

जेमां बीजो अने चोथो चतुष्कल जगण होय ते चपला । तेना त्रण भेद छे। ज्यारे पूर्वार्धमां एवुं स्वरूप होय त्यारे आदिचपला के मुखचपला । उत्तरार्धमां होय त्यारे अंतचपला के जघनचपला अने बन्ने अर्धमां होय त्यारे सर्वचपला के महाचपला ।

जे पथ्या होय तेवी मुखचपलानुं उदाहरण :

एकोऽपि बाल-चूतः, शिखोद्गमैरभिनवैर्मनो दहति ।
एतत् पुनरधिकं सखि, कलकण्ठी तत्र 'मुख-चपला' ॥ १०

'हजी तो कुमळुं एवुं आ आम्रवृक्ष एकलुं ज, तेना पर फूटेलां कूंपलियांने लीधे, मारा मनने दझाडे छे । तेमां वळी आ कलकंठी, बोलका मोंनी कोयल, हे सखी, ए दाहने वधारी रही छे ।'

जेमां पूर्वार्धमां विपुला होय तेवी मुखचपला :

मृदु वाच्य एष नैणाक्षि वल्लभस्ते शठोऽन्य-विवश-मनाः ।
तर्जय परुषैर्वचनैर्, 'मुख-चपला'नामयं विषयः ॥ ११

'हे मृगाक्षी, आ तारा शठ वालमनुं चित्त बीजीमां आसक्त होईने, तेने नरम वचन कहेवाथी कशुं नहीं वळे । एने कठोर वचनोथी धमकावजे । वाणीनी चपळता वाळा ज एने पहोंची शके ।'

उत्तरार्धमां विपुला होय तेवी मुखचपला :

दयितस्तवानुनीतो, मया सखि त्वां किलानुनेष्यति सः ।
तं पादानतमालोक्य मा कटु ब्रूहि 'मुख-चपले' ॥ १२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'हे सखी, में तारा वालमने मनावी लीधो होईने हुं मानुं छुं के ते हवे तने मनाववानो छे। तो तारा पगमां पडेला तेने जोईने हवे तुं छूटे मोंए कडवां वेण बोलती नहीं ।'

ए ज प्रमाणे जे महाविपुला पण होय तेवी मुखचपलानुं उदाहरण जाणवुं।

जे पथ्या पण छे तेवी जघनचपला :

तस्या नितान्त-'चपला'न्, नेत्र-विलासान् विलोक्य बालायाः ।
को वर्णयेदमुग्धः, कुरङ्गिका-दृष्टि-ललितानि ॥ १३

'ए बालाना अतिशय चंचळ नेत्रविलासोने जोया पछी क्यो चतुरजन कुंरगीओनी ललित दृष्टिने वखाणे ?'

जे जघनविपुला छे तेवी जघनचपला :

उद्दाम-मारुत-हत-ध्व'ज-घन-चपला'नि जीवितव्यानि ।
जानन् जनः कथं नाम जातुचित् प्रीयते तत्र ॥ १४

'जीवतर झंझावातना माराथी फडफडती धजा जेवुं अने वादळां जेवुं चंचळ होवानुं जे माणस जाणे छे ते, कहोने, खरेखर तेमां कई रीते आसक्ति राखे ?'

जे महाविपुला छे तेवी जघनचपला :

कस्य कृते कृत-पुण्यस्य दृष्टिरियमनिमिषा त्वया ध्रियते ।
यासीत् पुरा कुरङ्गाक्षि नित्यम'त्यन्त-चपले'व ॥ १५

'हे मृगाक्षी, आ तारी दृष्टि जे पहेलां हंमेशां अत्यंत चंचळ हती तेने हवे तुं क्या पुण्यशाळीने माटे अनिमिष राखी रही छे ?'

ए ज प्रमाणे, जे मुखविपुला छे तेवी जघनचपलानुं उदाहरण जाणवुं ।

जे पथ्या छे तेवी महाचपला :

'चपलं' न कस्य चेतो, नरस्य जायेत पश्यतस्तन्वीम् ।
नृत्य-क्षणेऽत्र नव्याङ्गहार-लीला-महाचपलाम् ॥ १६

'नृत्योत्सवमां नवनवी अंगहारलीला करती आ अत्यंत चपळ कृशांगीने जोईने क्या नरनुं चित्त चंचळ न बने ?'

जे महाविपुला छे तेवी महाचपला :

युगपत्-प्रफुल्ल-कङ्केल्लि-मल्लिका-बकुल-चम्पकान् दृष्ट्वा ।
जाता मधूत्सवे षट्पदावलीयं 'महा-चपला' ॥ १७

'वसंतोत्सवमां एक साथे खीली ऊठेला अशोक, मल्लिका, बकुल अने चंपाने जोई आ भ्रमरगण अतिशय चंचळ बनी ऊठ्या छे ।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ए ज प्रमाणे, जे मुखविपुला छे अने जे जघनविपुला छे तेवी महाचपलानां उदाहरण जाणवां । ए ज प्रमाणे गाथानां पण उदाहरण जाणवां ।

आ रीते, पथ्यानो एक भेद, विपुलाना त्रण भेद अने चपलाना बार भेद मळीने गाथाना कुल सोळ भेद थशे ।

नोंध : केटलाक पिंगळकारो, ओछामां ओछा त्रण लघुथी शरू करीने बब्बे लघु वधारतां जतां गाथाना जे छव्वीस भेद थाय छे तेमने कमला, ललिता वगेरे नामे ओळखावे छे । परंतु गाथाना प्रस्तारमां ते सर्वनो समावेश थई जतो होईने तेमनां जुदां जुदां लक्षण आपवा जरूरी नथी ।

गीति

जेमां गाथाना पूर्वार्धना लक्षण प्रमाणे तेनुं उत्तरार्ध पण होय ते गीति ।

पथ्यागीतिनुं उदाहरण :

विरचित-कुसुमाभरणा, तन्वाना 'गीति'मलि-कुल-निनादैः ।
अभ्यागच्छति चैत्रे, वासकसज्जेव संप्रति वनश्रीः ॥ १८

'कुसुमरूपी / कुसुमनां आभरण धरी, भ्रमरगणना गुंजनो वडे गीत प्रसारती वासकसज्जा समी वनश्री अत्यारे चैत्रमासमां आवी रही छे ।'

महाविपुला-गीतिनुं उदाहण :

मत्त-द्विरेफ-पुंस्कोकिल-वैतालिक-'महाविपुल'-गीत्या ।
क्रियते निर्भरमुन्निद्र एष यूनां मनःसु मनसिशयः ॥ १९

'मदमत्त भ्रमरो अने कोकिलोरूपी बंदीजनोनां अनेकाअनेक गीतो युवानोना मनमांना सुषुप्त कामदेवने पूरेपूरो जाग्रत करी दे छे ।'

पथ्या-महाचपला-गीतिनुं उदाहरण :

यावल्लुनामि चूताङ्कुरान् पुरोऽस्या मधुं व्यपह्नोतुम् ।
तावद् बभूव 'गीतिः', पिकाङ्गनानां प्रमोद-'चपला'नाम् ॥ २०

'आ बालाथी वसंतागमनने छुपाववा हुं ज्यां हजी आंबानां कूंपळियां तोडी काढुं छुं, त्यां तो आनंदे चंचळ बनेली कोकिलाओनो गीतरव ऊठ्यो !'

महाविपुला-महाचपला-गीतिनुं उदाहरण :

कष्टां जनस्त्वदालोकनादपि क्षणमिमां दशां लभते ।
'विपुला' तनोषि दीर्घाक्षि 'गीति'मेतां कुतो 'महा-चपले' ॥ २१

'तने क्षणएक जोनारनी पण जो आवी कष्टदशा थाय छे, तो पछी हे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दीर्घाक्षी, अति चंचला, आ गीतावलि तुं कां छेडी रही छे ?'

ए प्रमाणे बीजा भेदोनां पण उदाहरण जाणवां ।

उपगीति

जेमां उत्तरार्धना लक्षण प्रमाणे पूर्वार्ध पण होय ते उपगीति । पथ्या-उपगीतिनुं उदाहरण :

'उपगीति' कुरङ्ग-शिशो, मा गाः श्रुति-सुख-लव-स्पृहया ।
व्याधं किमिति न पश्यसि, चाप-न्यस्तेषुमिह पुरतः ॥ २२

'हे हरणबाळ, क्षणिक श्रवणसुख मळवानी लालसाथी तुं गीतनी निकट न जा; धनुष्य उपर बाण चडावी आगळ उभेला पारधिने तुं नथी जोतो ?'

महाविपुला-उपगीतिनुं उदाहरण :

संप्रति शिलीमुखाः पश्य 'महाविपुलोपगीति'-रवैः ।
सौख-प्रसुप्तिकाः पङ्कजिनीः प्रीत्योपतिष्ठन्ते ॥ २३

'जो, भ्रमरो अतिशय मोटो गुंजारव करता प्रेमपूर्वक कमलिनीओनी पासे आवीने, ''तमे निद्रा सुखे तो करीने ?'' एम पूछी रह्या छे ।'

पथ्या-महाचपला-उपगीतिनुं उदाहरण

'उपगीति'-गन्ध-रूपादि याति चेतो 'महा-चपल'म् ।
तेभ्यो निवर्तयैतत्, समीहसे चेत् परां सिद्धिम् ॥ २४

'गीत, गंध अने रूपनी निकटता होय त्यारे चित्त अत्यंत चंचळ बनी जाय छे । जो तुं परम सिद्धि इच्छतो होय तो तेनाथी विमुख बनजे ।'

महाविपुला-महाचपला-उपगीतिनुं उदाहरण :

चूताङ्कुराः स्मरास्त्राणि 'चापला'त् कोकिलैर्ढौकाः ।
'विपुलोपगीत'योऽस्त्राणि तेनिरे तेन तैस्तस्य ॥ २५

'कोकिलोए अळवीतरा थईने कामदेवनां अस्त्र समां आंबानां कूंपळियां चाख्यां । तेने लीधे तेमणे टहुकाररूपी पुष्कळ मदनास्त्र छोड्यां ।'

आ ज प्रमाणे बीजा भेदोनां उदाहरण जाणवां ।

उद्गीति

जेमां आर्यानां पूर्वार्ध अने उत्तरार्ध ऊलट्यां होय ते उद्गीति ।

पथ्या उद्गीतिनुं उदाहरण :

वीर-वरेण्य रण-मुखे, श्रुत्वा तव सिंह-नादमिह ।
सपदि भवन्त्यरि-करिणो, मधु'व्रतोद्गीति'-रिक्त-गण्ड-तटाः ॥ २६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'हे वीरश्रेष्ठ, अहीं संग्राममोरचे तारो सिंहनाद सांभळीने शत्रुओना हाथीनां गंडस्थळ एकाएक भ्रमरोना गुंजारवरहित बनी जाय छे ।'

महाविपुला उद्‌गीतिनुं उदाहरण :

'विपुलोद्गीति'-कुल-कोकिला-रवैः पल्लवाताम्रा ।
मत्तेव पुरस्तरु-पंक्तिरियं मधु-परिचयादितो भाति ॥ २७

'वसंतना स्पर्शे आ सामेनी वृक्षावलि कोकिलना मीठा टहुकाररूपी मुक्त गानने लीधे तथा रतूमडां पल्लवने लीधे मदमत्त बनी होय तेवी भासे छे ।'

पथ्या महाचपला उद्‌गीतिनुं उदाहरण :

चपले प्रयातु मानादयं वराकः किमाह्वयसि ।
प्रतिभूरमुष्य भूयः समागमे भाविनी पि'कोद्‌गीतिः' ॥ २८

'हे चंचला, मानना आवेशमां ए बिचारो भले चाल्यो जतो । शुं काम एने तुं बोलावे छे ? समागम माटे ए पाछो आववानो ज - एनो जामीन आ कोकिलोनो टहुकार बने छे ।'

महाविपुला महाचपला उद्‌गीतिनुं उदाहरण :

बाला कुतोऽपि सारङ्गिकेव सा विपुल-चपलाक्षी ।
श्रुत्वा तवाभि'धोद्‌गीति'माशु निष्पन्दिनी चिरं भवति ॥ २९

'दीर्घ, चंचळ नेत्रवाळी ए बाळा क्यांकथी तारो नामोच्चार सांभळतां ज, गीत सांभळती हरणीनी जेम, एकाएक लांबो समय निश्चल बनी जाय छे ।'

ए प्रमाणे बीजा भेदोनां उदाहरण जाणवां ।

रिपुच्छंदा

जो गीतिमां सातमो गण पंचकल होय तो जे छंद बने ते रिपुच्छंदा ।

नोंध : हवेना छंदोनो घणुंखरुं प्राकृत वगेरेमां प्रयोग थतो होवाथी प्राकृत उदाहरणो ज आपवामां आवशे ।

रिपुच्छंदानुं उदाहरण :

केलास-सेल-तुलणा-माणं मा वहसु संपयं दसमुह ।
उअ 'हरि-पुच्छंदो'लण-तोलिज्जंते महोअहिम्मि गिरिणो ॥ ३०

'हे रावण, तुं कैलास पर्वत ऊंचक्यानुं अभिमान न धरतो । जो, हनुमानना पुच्छमां झूलता पर्वतो ऊंचकीने समुद्रमां लई जवाय छे ।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ललिता

जो गीतिमां त्रीजो गण पंचकल होय तो जे छंद बने ते ललिता ।

ललितानुं उदाहरण :

अंगुलिआहिँ 'ललिअं'गी पवास-दिअहे गणंतिआणुदिणं ।
वल्लह-आयड्ढण-कए जवइ-व मंतक्खराइं एक्क-मणा ॥ ३१

'पति प्रवासे गयाना दिवसो आंगळीओ वडे गणती ललितांगी, जाणे के एकचित्ते वालमनुं आकर्षण करवा माटे मंत्राक्षरो जपी रही छे ।'

भद्रिका

जो गीतिमां त्रीजो अने सातमो गण पंचकल होय तो जे छंद बने ते भद्रिका । भद्रिकानुं उदाहरण :

जुवईण नयण-लच्छीए सहज-सलोणत्तणेण 'भद्दिआए' ।
चक्खु-भएण व दिण्णयं लक्खिज्जइ कज्जलं वयंसिआहिं ॥ ३२

'आ युवतीओनी नयनश्री स्वाभाविक लावण्यथी ज मांगलिक छे, तो पण जाणे के दृष्टिदोष निवारवा खातर ज तेनी सखीओए तेने काजळ लगाड्युं जणाय छे ।'

विचित्रा

जो गीतिमां छठ्ठो गण बाद करीने बाकीना गण यथेष्ट पंचकल होय तो जे छंद बने ते विचित्रा । विचित्रानुं उदाहरण :

भासासु 'विचित्ता'सु जुगवं सुर-नर-तिरिआण जीव-जाईण ।
संवादमणुहवंती जयइ वाणी भयवओ जिणिंदस्स ॥ ३३

'देवताओ, मनुष्यो अने पशुपंखीओ (तिर्यंचो)- ए प्राणीजातिओनी विविध भाषाओमां एक साथे संवादनो (समजणनो) अनुभव करावती जिनेन्द्र भगवाननी वाणीनो जय हो !'

केटलाकने मते विचित्रामां बधाये गण पंचकल होई शके ।

स्कंधक

जो गीतिना आठमा गणना गुरुने स्थाने चतुष्कल योजवामां आवे तो जे छंद बने ते स्कंधक । नागराज पिंगलने मते आ छंदनुं नाम आर्यागीति छे ।

स्कंधकनुं उदाहरण :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुह रिउराय-पुरेसुं तरुणी-जण-लालिअम्मि कंकेल्लि-वणे ।
संपइ अरण्ण-महिसाण 'खंध-कं'डूअणं पयट्टेइ दढं ॥ ३४

'तारा शत्रुराजाओना नगरोमां जे अशोक-वृक्षराजिनुं तरुणीओए लालन-पालन कर्युं हतुं त्यां अत्यारे जंगली पाडाओ पोतानी कांधनी चळ जोरथी घसी रह्या छे ।'

उपस्कंधक

स्कंधकना बन्ने अर्धमां छठ्ठा गणना स्थाने मात्र एक लघु होय तो जे छंद बने ते उपस्कंधक । उपस्कंधकनुं उदाहरण :

'उअ खंधा'हइ-तुट्टंत-बाहु-दंडो वि को वि सुहडओ ।
एसो सहि पर-जोहं पहरइ पाएण दट्ठाहरओ ॥ ३५

'हे सखी, जो तो, जेना खभा उपर प्रहार थवाथी बाहुदंड तूटी पड्यो छे तेवो आ कोईक सुभट शत्रुना योद्धाने होठ पर दांत भींसीने पगथी प्रहार करी रह्यो छे ।'

उत्स्कंधक

जो स्कंधकना पहेला अर्धना छठ्ठा गणना स्थाने लघु होय तो जे छंद बने ते उत्स्कंधक । उत्स्कंधकनुं उदाहरण :

जा बल-मडप्फरेणं निवाण 'उक्खंधया' आसि पुरा ।
सा तुह सासण-भारं ताण वहंताण संपयं कह-वि गया ॥ ३६

'पोताना बळना अभिमानथी जे राजाओ पहेलां उन्नत स्कंधवाळा हता ते राजाओ हवे तारा शासननो भार वहेता होईने तेनी ए उन्नतता क्यांक चाली गई ।'

अवस्कंधक

जो स्कंधकना पाछळना अर्धमां छठ्ठा गणना स्थाने एक लघु होय तो जे छंद बने ते अवस्कंधक । अवस्कंधकनुं उदाहरण :

पवण-पहल्लिर-धयवडमुल्लसिअ-कोइला-बंदि-रवं ।
'ओ खंधा'वारं चिअ पेच्छ वणं रइवइ-नरिंदस्स ॥ ३७

'ज्यां पवनथी फरकतां पल्लवरूपी ध्वजपट छे, कोकिलारूपी बंदीजनोनो गीतरव ऊठे छे तेवुं, अनंगराजना सैन्यना पडाव समुं, आ वन तुं जो ।'

संकीर्ण स्कंधक

जो पूर्वार्धमां स्कंधक होय अने उत्तरार्धमां गीति होय, अथवा तो पूर्वार्धमां

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गीति होय अने उत्तरार्धमां स्कंधक होय तो ए बंने प्रकारे जे छंद बने ते संकीर्ण स्कंधक ।

संकीर्ण स्कंधकनुं उदाहरण :

जह जह तुह पहु सेन्नं किज्जइ 'संकिण्णयं' मयगल-घडाहिं ।
तह तह रिउराय-घरेसु खलइ लच्छि त्ति पेच्छ अच्छरिअं ॥ ३८

'हे महाराज, जेम जेम तारुं सैन्य मदमत्त गजघटाथी संकीर्णं (१. भीडवाळुं, २. सांकडुं ।) थाय छे, तेम तेम तारा शत्रुओना घरोमां लक्ष्मी ठेस खाय छे । (स्खलित थाय छे) ।'

सा बाला तुह विरहे हिअए 'संकिण्णए' अमंताइं ।
नीसास-धूम-लहरि-च्छलेण दुक्खाइं सुहय उव्वमइ फुडं ॥ ३९

'हे सुभग, ए तरुणी तारा विरहमां तेना सांकडा हृदयमां दुःखो न माई शकतां होवाथी निसासा अने धुमाडा जेवा फुत्काररूपे ते बहार काढती प्रगट जोई शकाय छे ।'

जातिफल

जो गाथाना पूर्वधना अंत्य गुरुनी पहेलां एक वधारानो चतुष्कल आवे तो जे छंद बने ते जातिफल । तेमां उत्तरार्ध तो गाथानो ज होय छे ।

जातिफलनुं उदाहरण :

तुह रिउणो निवसंता अविरल-'जाईहले'सु जलहि-तड-वणेसु ।
वणवास-सुह-सइण्हा न रज्जमीहंति सिविणे-वि ॥ ४०

'समुद्रना कांठा परनां वनोमां सघन जायफळनी झाडी वच्चे वसता तारा शत्रुओने वनवासना सुखनी एटली बधी लालसा छे के तेओ स्वप्नमां पण पोतानुं राज्य पाछुं इच्छता नथी ।'

गाथ

जो गाथाना पूर्वार्धना अंत्य गुरुनी पहेलां बे वधाराना चतुष्कल होय तो जे छंद बने ते गाथ । गाथनुं उदाहरण :

गोरीइ चिहुर-भारो जल-'गाहो'त्तिण्णिआइ निवडंत-थोर-बिंदूहिं ।
विअलिअ-पसूण-माला-विरह-दुहेणं रुएइ-व्व ॥ ४१

'जळमां स्नान करीने बहार नीकळेली गोरीना केशपाशमांथी जे मोटां जळबिंदु टपके छे तेथी एवुं लागे छे के कुसुममाला दूर कर्याना विरहदुःखे केशपाश रडी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रह्यो छे ।'

उद्गाथ, विगाथ, अवगाथ, संगाथ, उपगाथ

गाथनी पछी (एटले के गाथाना पूर्वार्धना अंत्य गुरुनी पहेलां आवता वधाराना बे चतुष्कल पछी) उत्तरोत्तर बे बे चतुष्कल उमेरवाथी जे छंदो थाय छे ते अनुक्रमे उद्गाथ, विगाथ, अवगाथ, संगाथ अने उपगाथ । उद्गाथनुं उदाहरण :

सिरिवद्धमाण-जिणवर 'उग्गाहं'तो सुरहिवो तुज्झ अइसय-सिरिं परूढ-
रोमंचो ।
अहिलसइ मुह-सहस्सं ठाणे दिट्ठी-सहस्सस्स ॥ ४२

'हे जिनवर श्रीवर्धमान, तारा अतिशयोनी शोभानी स्तुति करतो, रोमांचित थयेलो देवराज इंद्र पोतानां हजार नेत्रोने स्थाने हजार मुख होय तो सारुं एवी अभिलाषा सेवे छे ।'

विगाथनुं उदाहरण :

सिरिकुमरवाल-भूवइ अच्चब्भुअ-चरिअ-वण्णणं तुज्झ जो किर
करेउमिच्छइ कुसग्ग-तिक्ख-बुद्धी-वि ।
बाहाहिं सो 'विगाहि'उमिच्छइ रयणायरं सयलं ॥ ४३

'हे महाराज कुमारपाळ, जे कोई कुशाग्र जेवी तीक्ष्ण बुद्धिवाळो पण तारा अद्भुत चरित्रनुं वर्णन करवा इच्छे ते पोतानी भुजाओथी आखो समुद्र तरवा इच्छे एवुं थाय ।'

अवगाथनुं उदाहरण :

सो जयइ अजल-ठाणं वाया-गुंफो पुराण-सुकईण को-वि अन्नो च्चिअ
सरि-नाहो अकलिअ-मज्झो सया-वि विबुहेहि ।
जो 'अवगाहि'ज्जंतो निरंतरं देइ अमय-रसं ॥ ४४

'प्राचीन सत्कविओना वाचागुंफनो जय हो ! ए वाचागुंफ एवो कोईक अनोखो सागर छे जे "अ-जल-स्थान" छे (१. जे जळ रहित छे, २. जेमां जडने कशुं स्थान नथी ।), अने विद्वानो जेनुं मध्य (मर्म) सदंतर कळी शक्या नथी ।' संगाथनुं उदाहरण : अने जेनुं अवगाहन करता निरंतर अमृतरसे सांपडे छे ।

नह-कोलस्स व दाढा तिक्ख-खुरुप्पं व जलण-उत्तिण्ण-अणंग-
महाभडस्स किंसुअवतंसउ व्व पुरुहूअ-वल्लह-दिसाइ एत्ताहे ।
कणय-पिसंगा हरिणंक-लेहिआ सहइ उअयंती ॥ ४५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'अत्यारे उदय पामती सोनावर्णी चंद्रलेखा केवी शोभे छे ? जाणे के आकाशरूपी वराहनी दंष्ट्रा, जाणे के महासुभट कामदेवनुं अग्निमांथी बहार काढेलुं तीक्ष्ण क्षुरप्र (=एक तीक्ष्ण धारवाळुं दातरडाना आकारनुं शस्त्र), जाणे के प्राचीनुं (=पूर्व दिशानुं) किंशुकनुं कर्णाभरण ।'

उपगाथनुं उदाहरण :

समरमहोअहिमुब्भड-करि-मयरं उच्छलंत-रुहिर-सलिलमसिवर-दाढिआइ
सहसत्ति मेइणिं उद्धरंतओ महिहराण आकंपणाइं विरइंतो ।
'उअ गाह'इ चोलुक्कस्स आइ-कोलु व्व भुअ-दंडो ॥ ४६

'जेमां प्रचंड हाथीओरूपी मगरमच्छो छे, लोहीरूपी जळ उछळे छे तेवा समरांगणरूपी महासागरमांथी पोताना खड्गरूपी दंष्ट्रा वडे सहसा पृथ्वीनो उद्धार करतो, पहाडोने कंपावतो, चौलुक्यराजनो, आदि वराह जेवो भुजदंड, जो, संग्रामसागरने पार करे छे ।'

गाथिनी

जो उपगाथ पछी बे चतुष्कल उमेरवामां आवे तो जे छंद बने ते गाथिनी । गाथिनीनुं उदाहरण :

सिरिमूलराय-भूवइ-कुल-गयण-मिअंक तिहुअण-ललाम जय-सिरि-
निवास जस-भर-भरिअ-दिअंत रिउ-भड-कयंत निव-कुमरवाल भणिमो
अइ-गहिराइं कह तुज्ज चरिआइं ।
सयल-गुण-'गाहिणी' जस्स न किर चउवयण-वाणी-वि ॥ ४७

'श्रीमूळराज भूपतिना कुलरूपी आकाशमां चंद्र समान, त्रण भुवनना भुषणरूप, विजयश्रीना निवासस्थानरूप, पोताना विशाळ यशथी दिगंतने भरी देनार, शत्रुना सुभटोना काळरूप, हे राजा कुमारपाळ, तारा अत्यंत गंभीर चरित्रने अमे कई रीते वर्णवी शकीए ?- जेना समग्र गुणोनुं ब्रह्मानी वाणी पण कदाच ग्रहण न करी शके ।

मालागाथ

जेमां गाथिनी पछी इच्छानुसार बब्बे चतुष्कल उमेरवामां आवे तेथी जे छंद बने ते मालागाथ ।

मालागाथनुं उदाहरण :

इह 'माला गाहा 'ण व वयंस पेच्छसु नवंबुवाहाण गयण-विउल-सरवरम्मि -
विमुक्क-घोर-घोर-साण विज्जु-जीहा-विहीसणाण बहल-वारि-निचय-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पमच्चिराण अइदीहगत्ताण ।

हद्धी गसइ मयंकं खेलंतं रायहंसं व ॥ ४८

'हे मित्र, जो तो, विशाळ गगनरूपी सरोवरमां नवा मेघोनी मगरमच्छो जेवी हारमाळा, अति घोर गर्जना करती, वीजळी रूपी जीभने लीधे भीषण, मोटा जळ समूहोथी मत्त बनेली, विशाळकाय एवी ते, अरेरे, क्रीडा करता चंद्ररूपी राजहंसने ग्रसे छे !'

उद्दाम, विदाम, अवदाम, संदाम, उपदाम, दामिनी, मालादाम

जातिफलना प्रथम अर्धमां अंतिम गुरुनी पूर्वे क्रमे क्रमे बे बे चतुष्कल उमेरवाथी गाथनी जेम उद्दाम, विदाम, अवदाम, संदाम, उपदाम, दामिनी अने मालादाम एवा छंदो बने छे ।

दामनुं उदाहरण :

जूहाउ व वूहाओ कड्ढिअ चोलुक्कराइणा दरिअ-वेरि-भूव-मयगलाण ।
कंठे पाएसु तहा ओ दीसइ घल्लिअं 'दाम' ॥ ४९

'जुओ, चौलुक्यराजे गर्विष्ठ (शत्रुराजाओना) हाथीओने जूथमांथी खेंची काढीने (जाणे के रणव्यूहमांथी खेंची काढ्या होय तेम) तेमना गळामां अने पगोमां दोरडानुं बंधन नाख्युं छे ।'

उद्दामनुं उदाहरण :

चालुक्क तुज्झ नयरी 'उद्दाम'-सुरालयण सिहरेसु पवण-तरलेहिं-दीहर-धयवड-करेहिं ।
देइ चविलापहारं किल कलिणो ओअरंतस्स ॥ ५०

'हे चालुक्य, तारी नगरी उन्नत देवालयोना शिखरो उपर पवनथी फरकता दीर्घ ध्वजपटरूपी हाथोवती, नीचे ऊतरी आवता कळियुगने जाणे के थपाटो मारे छे ।'

विदामनुं उदाहरण :

सिरिकुमरवाल मुच्चसि सर-जालं जत्थ जत्थ सुहडम्मि तत्थ तत्थ अणुमग्ग-लग्गो सयंवर-कए सहसत्ति ।
मेल्लइ सुर-कुसुममयं सुर-जुअइ-जणो-'वि दाम' नवं ॥ ५१

'हे श्रीकुमारपाळ राजा, ज्यारे ज्यारे तुं (शत्रुसेनाना) सुभटोनी उपर बाणावली छोडे छे त्यारे त्यारे तेनी पूंठे पूंठे तरत ज अप्सराओ स्वयंवर वरवानी दृष्टिए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कल्पवृक्षनां पुष्पोनो ताजो हार नाखे छे ।'

अवदामनुं उदाहरण :

'ओ दामाइं' रयंतीइ तीइ कामस्स पूअण-निमित्तमिह तुह-समागमूसवं
तद्दिअहमहिलसंतीए नव-कुवलयच्छीए ।
कुसुम-समिद्धि-विरहिअं उज्जाणं निम्मिअं सयलं ॥ ५२

'खीलेलां नीलकमल जेवां नेत्रवाळी तेणे, जे दिवसे तारा मिलननो उत्सव थवानो छे ते दिवसनी अभिलाषा राखीने, कामदेवनी पूजा निमित्ते फूलमाळाओ गूंथवा माटे आखा उद्यानने तेनी पुष्पसंपत्ति वगरनुं बनावी दीधुं ।'

संदामनुं उदाहरण :

अणुरयणि चंद-किरण-प्फंस-प्पसरंत-चंदकंत-सिला-नी संदाम 'य-रस-
सिंचिज्जमाण-तरुतल-निसण्ण-रइ-केलि-खिन्न-विज्जाहर-मिहुणो ।
जिण-चरण-रय-पवित्तो रेहइ सिरि-उज्जयंत-गिरी ॥ ५३

'ज्यां प्रत्येक रात्रे चंद्रकिरणना स्पर्शथी चंद्रकांत मणिनी शिलामांथी गळता अमृतरसे छंटाता वृक्षनी नीचे रतिक्रीडाथी थाकेलां विद्याधर युगलो बेठां होय छे एवो तीर्थंकरोनी चरणरजथी पवित्र श्रीऊर्जयंत पर्वत शोभी रह्यो छे ।'

उपदामनुं उदाहरण :

सिरिमूलराय भूवइ-कुल-गयण-मिअंक तुह दिस-जयम्मि दुद्धर-तुरंग-
खुर- पुडुक्खायमाण-मेइणी-बहल-धूलि-पडलेण पंकिलिज्जंत-सायर-
सलिल- सयणिज्जे ।
'उअ दामो 'अरमेणिंह लच्छी अइ-दुक्करं रमइ ॥ ५४

'हे श्रीमूळराज, राजकुळना गगनमां चंद्र समान, तारा दिग्विजय वेळा वेगथी दोडता घोडाओनी खरीना डाबलाथी खोदाती धरतीमांथी ऊडता धूळना जब्बर गोटाओने लीधे, सागरना जे जळ पर पोतानी शैया छे ते जळ डहोळाई जतां हवे दामोदर साथेनी लक्ष्मीनी क्रीडा घणी दुष्कर बनी गई छे ।'

दामिनीनुं उदाहरण :

सिरसिद्धराय-नंदण तुमयं आयंतमिक्खिउं झत्ति धाविरीए इमाइ
पज्जाउलत्त-वस-सिढिल-बद्ध-गंठि ल्हसिउण रमण-त्थलाउ
चरणग्गएसु रइअ-घणावेढं ।
मणि-कंचि-दाम निम्मिअ-गइ-वलणं 'दामिणी' होइ ॥ ५५

'हे श्रीसिद्धराजना पुत्र (कुमारपाळ), तने आवतो जोवा माटे दोडती आ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तरुणीनी मणिमय कटिमेखला, व्याकुळताने लीधे जेनी गांठ ढीली थई गई छे तेवी, तेना नितंब परथी सरी जईने पगने छेडे सखत वींटळाई जईने तेनी गतिने रूंधती (पशुने पगे बंधाती) नोंझणी बनी गई छे ।'

मालादामनुं उदाहरण :

हंहो जुआणय तुमं मा उज्जाणम्मि भमसु भुल्लो-वि अन्नहा इत्थ फुल्लिअ-
नवल्ल-मल्लिआवचय-कोउअ-परायणाण मय-भिभलाण कंदप्प-
विब्भमुब्भासिआण पोढ-महिलिआण ।
दूसह-कडक्ख-'माला-दामि'अ-हिअओ न नीहरसि ॥ ५६

'हे जुवान, भूले चूके पण तुं आ उद्यानमां भमतो नहीं, नहीं तो अहीं नव मल्लिकामां रसमग्न, कामविह्वळ, विविध कामचेष्टाओ प्रगट करती प्रौढ महिलाओना असह्य कटाक्षोमां तारुं हृदय बंदी बनी जतां, तुं बहार नीकळी ज नहीं शके ।'

नोंध : मात्राछंदोना मापमां जे रीते लघु अने गुरु वर्णोनी गणतरी करवामां आवे छे ते अनुसार आर्या छंदमां १९ गुरु अने १९ लघु वर्णो - एम बधी मळीने ५७ मात्रा थाय । उदाहरण :

जयति विजितान्य-तेजाः सुरासुराधीश-सेवितः श्रीमान् ।
विमलस्त्रास-विरहितस्त्रिलोक-चिन्तामणि-वीरः ॥ ५७

'जेनी देवेन्द्र अने असुरेन्द्र सेवा करे छे, जेमणे बीजा बधां तेजोने पराजित कर्यां छे, जे निर्मळ छे अने त्रास वगरना छे (१. निर्भय छे, २. त्रास नामना रत्नदोषथी रहित छे ।) तेवा त्रिभुवन-चिंतामणि श्रीमान् वीरजिननो जय हो !'

आर्या-प्रकरण समाप्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गलितक प्रकरण

गलितक

जेमां बे पंचमात्रिक, बे चतुर्मात्रिक अने एक त्रिमात्रिक गण होय, ते छंदनुं नाम गलितक । गलितकनां चरणो यमकबद्ध होय छे ।

गलितकनुं उदाहरण :

'गलिअं'जण-धवले वहइ नयण-पंकए,
सुहय चयइ कालागुरु-चंदण-पंकए ।
सहीअण-अप्पिअं दलइ-च्चिअ निद्दयं,
सा तुह विरहे मालइ-दाम विणिद्दयं ॥ ५८

'हे सुभग, तारा विरहमां तेनां नेत्रकमळ आंजण धोवाई गयुं होईने श्वेत बनी गयां छे, कृष्णागर अने चंदननो अंगलेप करवानुं तेणे तजी दीधुं छे अने सखीओने आपेली खीलेलां मालतीपुष्पनी माळा ते निर्दयपणे तोडी नाखे छे ।'

उपगलितक

जो गलितकमां त्रीजो अने छठ्ठो वर्ण लघु होय अने चरणो यमकबद्ध होय, तो ते छंदनुं नाम उपगलितक ।

उपगलितकनुं उदाहरण :

तुह विजय-पयाणय-भेरी-रव-डंबरं,
झत्ति निसुणिउण पडिरव-मुहलिअंबरं ।
सज्झसेण पकंपिरस्स हरिणो करओ,
'उअ गलिअ'मिमं खु धणुहं धरए सरओ ॥ ५९

'जो तो, तारा विजयप्रस्थाननी भेरीनो प्रचंड घोष-जेनो अंतरिक्षमांथी प्रतिघोष पडी रह्यो छे - ते एकाएक सांभळीने गभराटथी धूजता इंद्रना हाथमांथी सरी पडेलुं धनुष्य जाणे के शरदऋतु धरी रही छे.'

अंतरगलितक

जो मात्र समचरणोमां यमक होय तो ते छंदनुं नाम अंतरगलितक छे ।

अंतरगलितकनुं उदाहरण :

उअ वयंस वित्थरिअ-महूसव-लच्छिअं,
रणरणंत-भसलावलिअं वणराइअं ।

Jain Education International · For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कवलिअ-चिर-परूढ-माणंसिणि-माणिअं,

फुल्ल-वल्लि-कुसु'मंतर-गलिअ'-पराइअं ॥ ६०

'हे सखी, जेमां वनराजिमां भ्रमरगण गणगणे छे, जेमां विकसित वल्लरीओना पुष्पोमांथी पराग झरे छे, जेणे मानिनीओनुं लांबा समयथी दृढपणे पकडी राखेलुं मान हरी लीधुं छे एवी वसंतोत्सवनी विस्तरेली शोभा तुं जो ।'

बीजा मते, ज्यारे पहेलुं अने चोथुं चरण यमकबद्ध होय छे त्यारे ए छंद अंतरगलितक बने छे ।

आ प्रकारना अंतरगलितकनुं उदाहरण :

पत्तलच्छि सुहयं जण-मोह-पयासयं,

'गलिअ'-निद्द-इंदीवर-पत्त-सहोअरं ।

सहइ तुज्झ एअं तं लोअण-जुअलयं,

पत्तलच्छि सुहयंजण-मोह-पयासयं ॥ ६१

'हे अणियाळां नेत्रोवाळी, लोकोने मोहित करतुं, विकसित नीलकमलना दलसमुं आ तारुं सुंदर लोचनयुगल, सुंदर आंजणनी कांतिने प्रगट करतुं अने तेथी वधु रमणीय बनेलुं, शोभी ऊठे छे ।'

विगलितक

जेमां प्रत्येक चरणमां बे पंचकल, बे चतुष्कल अने एक पंचकल ए प्रमाणे मात्रागणो होय अने चरणो यमकबद्ध होय, ते छंदनुं नाम विगलितक ।

विगलितकनुं उदाहरण :

उअ महु-समओ मिउ-फुरिअ-मलय-पवमाणओ,

'विगलिअ'-चिर-परूढ-माणंसिणि-जण-माणओ ।

कोइलाहिं कय-कल-गीइहिं गिज्जमाणओ,

वम्महस्स विजयम्मि सहाओ असमाणओ ॥ ६२

'जेमां कोमळ मलयानिल फरकी रह्यो छे, जेनुं मधुर गीतथी कोयलो स्तुतिगान करी रही छे, जेमां मानिनीओए लांबा समयथी पकडी राखेलुं मान साव गळी गयुं छे, एवा आ वसंतसमयने- कामदेवना विजयना अनन्य सहायकने- तुंजो ।'

संगलितक

जेमां बे चतुष्कल अने एक पंचकल होय अने चरणो यमकबद्ध होय, ते छंदनुं नाम संगलितक ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संगलितकनुं उदाहरण :

वण-फलमर'सं गलिअयं',
जस्स य निव्वुइ-दाययं ।
तस्स सया वण-वासिणो,
किं वण्णामि महेसिणो ॥ ६३

'जे महर्षिओ सदा वनवासी छे अने जे नीचे पडेलां, नीरस वनफळथी संतुष्ट छे (तेमनी महत्तानुं) शुं वर्णन करुं ?'

शुभगलितक

जेमां एक षट्कल होय, चार त्रिकल होय, एक गुरु होय अने चरणो यमकबद्ध होय ते छंदनुं नाम शुभगलितक ।

शुभगलितकनुं उदाहरण :

पुणरवि निअ-रज्ज-सिरि-'सुह-गलिआ'सया,
पव्वय-कंदरेसु निवसंतया सया ।
पहु तुह रिउणो धरंतया मुणि-व्वयं,
पुणो पुणो वि हु उवालहंति दिव्वयं ॥ ६४

'हे महाराज, फरी पोतानी राज्यलक्ष्मीनुं सुख प्राप्त करवानी आशा ओसरी गई छे एवा तारा शत्रुओ सदाये मुनिव्रत धारण करीने पर्वतनी कंदराओमां निवास करता वारंवार पोताना भाग्यने उपालंभ दई रह्या छे ।'

समगलितक

जेमां प्रत्येक चरणमां एक चतुष्कल, बे पंचकल, बे चतुष्कल अने एक त्रिकल होय तथा चरणो यमकबद्ध होय, ते छंदनुं नाम समगलितक ।

समगलितकनुं उदाहरण :

दुद्धर-वारि-वुट्ठि-घोरा चल-विज्जुल-भीसणा,
सेल-गुहंतराल-पडिसद्दिअ-दुगुणिअ-नीसणा ।
जाव समुत्थरंति मेहा पिहिअंबर-देसया,
पहिआ ताव हुंति जंबू-फल-'सम-गलिआ'सया ॥ ६५

'ज्यारे दुःसह जळवृष्टिने लीधे घोर, चंचळ वीजळीने लीधे भीषण, जेनी गर्जनानो पर्वतोनी गुफानी अंदर पडघो पडतां ते बेवडाय छे, जेणे गगनप्रदेशने ढांकी दीधो छे एवा मेघो ऊमडे छे त्यारे प्रवासीओनी आशा (अथवा प्रवासीओनुं हृदय)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंदरथी गळी जईने नीचे पडतां जांबूनां फळनी जेम तूटी पडे छे ।'

मुखगलितक

जो समगलितकनां एकी चरणोमां एक चतुष्कल अने एक त्रिकल होय, तो ते छंदनुं नाम मुखगलितक ।

मुखगलितकनुं उदाहरण :

सयवत्तयं,

'मुह-गलिअ'-महुकर-सुरहिअ-जलमलि-सय-वत्तयं ।

तमणंगओ,

चावम्मि ठवेविणु कस्स व न हु हंत मणं गओ ॥ ६६

'जेमांथी झरेला पुष्कल मकरन्दने लीधे जळ सुगंधी बन्युं छे अने जे सेंकडो भ्रमरोने जीवाडनारुं छे तेवा शतदल कमळने पोताना धनुष्यनी उपर स्थापीने अहो, अनंग कोना हृदयमां प्रवेश करतो नथी ?'

मालागलितक

जेमां प्रत्येक चरणमां एक षट्कलनी पछी दस एवा चतुष्कल होय जेमां एकी स्थाने जगण न होय अने बेकी स्थाने जगण अथवा चार लघु होय, तथा चरणो यमकबद्ध होय, ते छंदनुं नाम मालागलितक ।

मालागलितकनुं उदाहरण :

खेलिर-कामिणी-कराहय-अविरल-विअसिअ-जलरुह-'माला-गलिअ'-पराय-सुरहिअ-सलिलयं,

तरल-तरंग-परिनच्चिर-कलहंस-मिहुणावलि-सरहस-किज्जमाण-कलयल-कलिलयं ।

अब्भंलिह-तड-परिरूढ-बहल-बउल-तिलय-तमाल-ताली-वण-पडिहय-खर-दिणयर-करयं,

पिच्छ सरोवरं इममणारयं पि विज्जाहर-सुरवर-किन्नराण एक्कं विलास-हरयं ॥ ६७

'क्रीडा करती कामिनीओना हाथना प्रहारथी, लगोलग विकसेलां कमळना झूंडमांथी खरेला पराग वडे जेनुं जळ सुगंधी बन्युं छे, चंचळ तरंगो उपर आनंदथी नाचतां कलहंसोनां अनेक युगलो वडे उमंगथी करता कलरवथी जे सभर छे, जेना कांठे ऊगेलां, आकाशने आंबतां पुष्कळ बकुल, तिलक, तमाल अने ताडनां वृक्षो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वडे सूर्यनां तीक्ष्ण किरणो अवरोधायां छे–एवुं आ सरोवर जो, जे देवो, विद्याधरो अने किन्नरोनुं एकमात्र सतत विलासगृह छे ।'

मुग्धगलितक

जेमां प्रत्येक चरणमां एक षट्कल पछी आठ चतुष्कल होय अने चरणांते एक गुरु होय, एकी स्थाने जगण न होय अने बेकी स्थाने जगण अथवा चार लघु होय, तथा चरणो यमकबद्ध होय, ते छंदनुं नाम मुग्धगलितक ।

मुग्धगलितकनुं उदाहरण :

नमिर-सुरासुरिंद-सिर-रयण-मउड-रुइ-भर-करंबिअ-चरण-कमल-नह-मणिं,
सयल-तिलोअ-लोअ-लोअण-विहुरण-मोहंधयार-निअर-विहडण-नह-मणिं ।
न नवसि जइ जुआइ-जिणइंदममल-केवल-सिरि-कुलहरमिह भव-भय-हणणं,
ता वयंस तुह रयणं चिअ कराउ 'मुद्ध गलिअं' किर विहलमिदं खु जणणं ॥६८

'जेनां चरणकमळना नखमणिओ, वंदन करता देवेन्द्र अने असुरेन्द्रनां मस्तक परनां मुकुटोनां रत्नो विपुल कांतिथी चित्रित थयेलां छे, जे त्रिभुवनना सर्व जनोनां नेत्रोने पीडता गाढ मोहरूपी अंधकारनो नाश करता सूर्यरूप छे, जे निर्मळ केवळ ज्ञानरूपी लक्ष्मीनुं पियर छे, जे भवना भयने हणनार छे एवा युगादि-जिनेन्द्रने (ऋषभदेव तीर्थंकरने) जो तुं अहीं वंदन नहीं करे, तो हे मित्र, तें जाणे के तारुं हस्तगत रत्न खोई नाख्युं अने तारो आ जन्म खरेखर निष्फळ गयो ।'

उग्रगलितक

जो प्रत्येक चरणमां षट्कल पछी छ चतुष्कल होय, प्रत्येक चरणने अंते गुरु होय, एकी स्थाने जगण न होय, बेकी स्थाने जगण अथवा तो चार लघु होय अने चरणो यमकबद्ध होय, तो जे छंद बने तेनुं नाम उग्रगलितक ।

उग्रतलितकनुं उदाहरण :

निम्मल-नाण-दिट्ठि-अवलोइअ-भुवणयलं विसुद्ध-चित्तं,
'उग्ग-गलिअ'-समग्ग-कम्मं निरवहि-नाण-रइअ-जग-चित्तं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीरं संभरामि तारण-तरंडयं सम-पसन्न-सोहं,
पडिओ दुत्तरस्स भव-सायरस्स लहरी-भरम्मि सोहं ॥ ६९

'जे पोतानी निर्मळ ज्ञानदृष्टिथी समग्र भुवनने जाणे छे, जेनुं चित्त विशुद्ध छे, जेमां सर्व उग्र कर्मो बळी गयां छे, जेणे पोताना अनंतज्ञानथी जगतना लोकोने चमत्कृत कर्या छे, जे मध्यस्थ छे अने प्रसन्न शोभा धारण करे छे, जे तारणहार त्रापारूप छे, एवा वीरजिनने, दुस्तर भवसागरना तरंगोमां पडेलो एवो हुं स्मरुं छुं ।'

सुंदरागलितक

जेमां प्रत्येक चरणमां बे पंचकल अने एक त्रिकल होय अने चरणो यमकबद्ध होय, ते छंदनुं नाम सुंदरागलितक ।

सुंदरागलितकनुं उदाहरण :

नरवरिंद तुह कित्तिआ, कत्थ कत्थ न पहुत्तिआ ।
भरिअ-गयण-महि-कंदरा, कुंद-संख-ससि-'सुंदरा' ॥ ७०

'हे नरेन्द्र, कुंद पुष्प, शंख अने चंद्र जेवी धवल तारी कीर्ति के जेणे आकाश अने पृथ्वीना अवकाशने भरी दीधो छे ते क्यां क्यां नथी पहोंची ?'

भूषणागलितक

जेमां प्रत्येक चरणमां बे पंचकल अने बे त्रिकल होय अने चरणो यमकबद्ध होय ते छंदनुं नाम भूषणागलितक ।

भूषणागलितकनुं उदाहरण :

पिच्छ पीवर-महा-पओहरा, कस्स कस्स न वयंस मणहरा ।
विप्फुरंत-सुर-चाव-कंठिआ, 'भूसणा' नह-सिरी उवट्ठिआ ॥ ७१

'हे मित्र, जो तो, पुष्ट, मोटा पयोधर (१. वादळां, २. स्तन)वाळी, जेणे झळहळता इंद्रधनुषनी कंठीनुं आभूषण पहेर्युं छे तेवी, आ आवी पहोंचेली श्रावण मासनी शोभा कोनुं कोनुं मन नथी हरी लेती ?'

मालागलिता

जेमां प्रत्येक चरणमां एक चतुष्कल, एक पंचकल, बे चतुष्कल, एक पंचकल, बे चतुष्कल अने एक एक लघु गुरु होय, ते छंदनुं नाम मालागलिता ।

मालागलितानुं उदाहरण :

न मुणिज्जइ गलाउ रयण-'माला गलिइआ' न गणिज्जइ भग्गओ,
मणि-वलय-निअरो न य जाणिज्जइ अंसु-अंचलो वि हु विलग्गओ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चोलुक्क-कुलंबर-दिणमणि तुह अवलोअण-निमित्त-धावंतिहिं,
मयरद्धय-बाण-धोरणि-विद्ध-हिअइहिं नारिहिं हरिसिज्जंतिहिं ॥ ७२

'हे चोलुक्यवंशना गगनमां सूर्यसमा (राजा कुमारपाळ), जेमनुं हृदय कामदेवनी बाणावलिथी वींधाई गयुं छे तेवी, तने जोवाने माटे हर्षावेशमां दोडती स्त्रीओने तेमना गळामांथी सरकी पडेली रत्नमाळानुं भान नथी रहेतुं, भांगी पडेला तेमना रत्नकंकणने ते गणकारती नथी, तेम तेमना (पगमां) अटवाता वस्त्रांचलनी तेमने खबर रहेती नथी ।'

विलंबितागलितक

जेमां प्रत्येक चरणमां एक षट्कल अने चार चतुष्कल होय, बेकी स्थानोमां जगण अथवा तो चार लघु होय, अने चरणो यमकबद्ध होय ते छंदनुं नाम विलंबिता-गलितक ।

विलंबितागलितकनुं उदाहरण :

मसि-सब्बंभयारि घण-तिमिर-मालिआओ,
उअह समुल्लसंति दुव्वारमालिआओ ।
वासय-पंजरेसु सुत्ताओ सारिआओ,
तह अ'विलंबिआ'ओ जंति अहिसारिआओ ॥ ७३

'हे सखीओ, जुओ तो मश जेवो क़ाळो गाढ दुर्वार अंधकार बधे व्यापी गयो छे, सारिकाओ एमना रहेवाना पांजरामां ऊंघी गई छे अने अभिसारिकाओ झडपथी जई रही छे ।'

खंडोद्गत

जेमां प्रत्येक चरणमां अंते एक गुरु होय तेवो चतुष्कल, एक पंचकल, पांच चतुष्कल अने एक पंचकल होय तथा बेकी स्थाने जगण के चार लघु होय ते छंदनुं नाम खंडोद्गत ।

खंडोद्गतनुं उदाहरण :

'खंडुग्गय'मिंदुबिंबमिणमज्ज-वि अहिणव-किंसुअ-कुसुम-सरिसयं,
न हु जा चंदिमाइ तिमिर-भरं किर परिदलिऊण पयडइ हरिसयं ।
वम्मीसर-भडस्स सर-निअरेहिं अइ-दूसहिहिं पहरिज्जंतओ,
अहिअं ता संपइ अहिसरणे पयट्टइ जुवइ-जणो-तुवरंतओ ॥ ७४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'आ ताजा केसूडाना फूल जेवुं चंद्रबिंब हजी अरधुं ऊग्युं छे (अने पूरुं बहार नीकळीने) ते पोतानी चांदनीथी अंधकारना समूहनो नाश करीने हर्ष प्रगट नथी करतुं, तेटलामां ज कामदेवरूपी सुभटनी अतिशय दुःसह बाणावलीथी जेमना पर प्रहार थई रह्यो छे तेवी आ युवतीओ अत्यंत त्वराथी अभिसारे नीकळी पडी छे ।'

प्रसृतागलितक

जेमां प्रत्येक चरणमां एक चतुष्कल, बे पंचकल, चार चतुष्कल अने एक पंचकल होय, ते छंदनुं नाम प्रसृतागलितक ।

प्रसृतागलितकनुं उदाहरण :

जं किर मुद्धिआइ तीए अहिणव-महु-समय-लच्छि-तुवरिज्जंतओ,
'पसरिअ'-मलय-मारुओ न हु सुहाइ तुह विरहम्मि सुरूव छिवंतओ ।
तस्स व चिंतिऊण पडिखलण-कारणं किरइ रुद्ध-नहयल-वहाओ,
किर उण्हुण्हिआओ घण-नीससिअ-समीर-लहरीओ अइ-दूसहाओ॥७५

'हे सुंदर, तारा विरहमां ए मुग्धाने वसंतलक्ष्मीना आगमने प्रबळपणे वाता मलयानिलनो स्पर्श सुखद नथी लागतो (पीडित करे छे), तेथी जाणे के तेनो प्रतिकार करवाने ते अति दुःसह अने अति उष्ण एवा भारे निसासानी लहरीओथी (मलयानिलना आगमनना) मार्गनो अवकाश रूंधी रही छे ।'

लंबितागलितक

जेमां प्रत्येक चरणमां पांच चतुष्कल अने एक द्विकल होय तथा एकी स्थाने जगण न होय, ते छंदनुं नाम लंबितागलितक ।

लंबितागलितकनुं उदाहरण :

कइलास-तुलण-पयडिअ-बहु-बाह-पएणं,
संजणिअ-तिअस-मंडल-वहुबाहु-पएणं ।
आ लंबिअ'-खय-कारण-दसासएण वणे,
नीआ सीआ तेणं दसासएण वणे ॥ ७६

'जेणे कैलासने उंचकीने पोतानुं बाहु बळ प्रदर्शित कर्युं छे, जेणे देवताओनी स्त्रीओनी आंखमांथी आंसु वरसाव्यां छे एवो रावण नक्की पोताना विनाशनी सेंकडो रीतोनो आश्रय लइने सीतानुं (हरण करीने) तेने (अशोक) वनमां लई आव्यो छे ।'

विच्छित्तिगलितक

जो लंबितागलितकमां प्रत्येक चरणमां एकी स्थाने पंचकल होय अने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चरणो यमकबद्ध होय, तो ते छंदनुं नाम विच्छित्तिगलितक ।

विच्छित्तिगलितकनुं उदाहरण :

रणरणंति जत्थ पमत्ता कुसुमेसु सिलीमुहा,
होंति जत्थ लोअ-दूसहा कुसुमेसु-सिलीमुहा ।
'विच्छित्ति'-परो तरुणिअणो विणा-वि हु महु समओ,
विब्भमइ जत्थ समुत्थरइ एस इह महु-समओ ॥ ७७

'आ वसंतऋतु अहीं विस्तरी रही छे, जेमां मदमत्त भ्रमरो पुष्पोनी उपर गणगणे छे, जेमां लोकोने माटे कामदेवना बाणो असह्य बन्यां छे, जेमां तरुणीओ पत्रलेखा वडे पोताने शणगारीने मद्यपान कर्या विना पण मदमत्त थइने भ्रमण करे छे ।'

ललितागलितक

जेमां प्रत्येक चरणमां बे चतुष्कल, एक पंचकल, एक चतुष्कल, एक पंचकल अने एक द्विकल होय तथा चरणो यमकबद्ध होय, ते छंदनुं नाम ललितागलितक ।

ललितागलितकनुं उदाहरण :

मत्त-मयर-पुच्छ-च्छडोह-भग्ग-वणराइअं ।
तीर-सहंत-लवंग-लवलि-कणइ-वण-राइअं ।
नह-मंडल-गरुअ-निरंतर-विविह-घण-वालयं,
उअहिं पेच्छ 'ललिअ'-गत्ति एअं घण-वालयं ॥ ७८

'हे ललित गतिवाळी, आ समुद्रने जो, जे मदमत्त मगरोनी पुच्छनी झपटथी वनराजिने तोडी पाडे छे जेने कांठे लविंग अने लवली लताओनी श्रेणी शोभे छे, जे आकाशमां निरंतर विचरता विविध प्रकारना मोटा मेघोनो पालक छे अने जेमां पुष्कळ जळचर सर्पो छे ।'

विषमगलितक

जेमां विच्छित्ति अने ललितागलितकनुं अथवा ललिता अने विच्छित्तिनुं मिश्रण होय तथा चरणो यमकबद्ध होय, ते छंदनुं नाम विषमगलितक ।

विषमगलितकनुं उदाहरण :

तरलं दीहत्तणेणं पाविअ-कण्ण-मग्गं,
'विसम'त्थ-मोह-सायरे करेइ कं ण मग्गं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एअं तुह नयण-जुअलयं सुंदरि कालसारं,
सोहा-विणिज्जिअ-लोअणं निंदइ कालसारं ॥ ७९

'हे सुंदरी, आ तारुं कृष्णश्वेत अने चंचळ नयनयुगल, जेणे काळियार हरणनी नयनशोभा उपर विजय मेळवीने एने निंद्य बनावी छे अने जेनी दीर्घता कान सुधी पहोंचेली छे ते, कामदेवना मोहसागरमां कोने न डुबाडी दे ?'

नोंध : अहीं पूर्वार्धमां ललितागलितक छे अने उत्तरार्धमां विच्छित्ति-गलितक छे।

मुक्तावलिगलितक

जेना प्रत्येक चरणमां चार त्रिकल अने एक चतुष्कल होय, ते छंदनुं नाम मुक्तावलिगलितक ।

मुक्तावलिगलितकनुं उदाहरण :

चंदणयं पि हु न हु सा सहए,
गंडयलं कर-कलिअं वहए ।
धरइ न 'मुत्तावलिअं' हिअए,
तुज्झ तणुं चिअ लिहिअं निअए ॥ ८०

'ते चंदनना लेपने पण बिलकुल सही शकती नथी, गालने पोताना हाथ पर ढाळेलो राखे छे, छाती पर मोतीनी माळा धारण करी शकती नथी, मात्र तारी देहाकृतिनुं चित्र नीरखी रही छे ।'

रतिवल्लभगलितक

जेमां प्रत्येक चरणमां त्रण पंचकल होय अने एक चतुष्कल होय, ए छंदनुं नाम रतिवल्लभगलितक ।

रतिवल्लभगलितकनुं उदाहरण :

दीसए एस तरुणिअण-दुल्लहओ,
पच्चक्ख-तणू चेव 'रइ-वल्लहओ' ।
जो भणइ मयणो हरेण परिअड्ढो,
सो मामि जणो निच्छइण अविअड्ढो ॥ ८१

'आ तरुणीओने दुर्लभ तरुण साक्षात् देहधारी कामदेव ज लागे छे । हे सखी, जे लोक एम कहे छे के कामदेवने शंकरे बाळी नाख्यो छे तेओ खरेखर मूर्खा छे ।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हीरावलीगलितक

जेमां प्रत्येक चरणमां बे पंचकल, एक चतुष्कल अने एक षट्कल होय ते छंदनुं नाम हीरावलीगलितक ।

हीरावलीगलितकनुं उदाहरण :

कुवलय-दल-नयणे पयावइणा कयं,
बहु-रयणमयं पिव तुह वयण-पंकयं ।
जस्सिं मणहर-दसणाहर-कुंतलया,
'हीरावलि'-विद्रुम-दल-इंदनीलया ॥ ८२

'हे नीलकमलनां पत्र समान नयनोवाळी तरुणी, लागे छे के प्रजापतिए तारुं वदनकमळ अनेक रत्नो वडे निर्मित कर्युं छे । केम के तेमां हीराकणीओ, परवाळा अने इन्द्रनील जेवा मनोहर दांत, होठ अने वांकडिया झुल्फा छे ।'

नोंध: केटलाकने मते जे छंद दंडको, आर्या वगेरेथी जुदो होय अने यमकबद्ध होय, ते छंद गलितक ।

गलितक - प्रकरण समाप्त ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खंजक-प्रकरण

उपर जेमनी व्याख्या आपी ए गलितको जो यमक वगरना पण अनुप्रासवाळा अने समान चरणवाळा होय, तो ते छंदो खंजक कहेवाय छे ।

हवे खंजकना विशिष्ट प्रकारो वर्णवीए छीए ।

खंजक

जेमां प्रत्येक चरणमां बे त्रिकल गणो होय, त्रण चतुष्कल होय, एक त्रिकल होय, एक गुरु होय तथा जेमां यमक न होय पण अनुप्रास होय ते छंदनुं नाम खंजक ।

खंजकनुं उदाहरण :

मत्त-महुअर-मंडल-कोलाहल-निब्भरेसुं,
उच्छलंत-परहुअ-कुडुंब-पंचम-सरेसुं ।
मलय-वाय-'खंजीक'य-सिसिर-वया घणेसुं,
विलसइ का वि चित्त-समयम्मि सिरी वणेसुं ॥ ८३

'जेमां मदमत्त मधुकरमंडळीनो कोलाहल थई रह्यो छे, जेमां कोकिलाओनो पंचम स्वर ऊछळी रह्यो छे, जेमां शिशिरऋतुनो व्यापार मलयपवने तिरस्कार्यो छे, तेवी चैत्र मासनी अवर्णनीय शोभा सघन वनोमां विलसी रही छे ।'

महातोणक

जेमां प्रत्येक चरणमां एक पंचकल, एक चतुष्कल, एक पंचकल, एक चतुष्कल अने एक पंचकल होय, ते छंदनुं नाम महातोणक ।

महातोणकनुं उदाहरण :

तुह पयावेण वि दव-दूसहेण महिलए,
दड्ढ-दरिअ-वेरि-मंडलेण इह पसाहिए ।
'महा-तूणय'-दरि-विवर-मज्झम्मि अहो-मुहा,
लज्जिअ-व्व ठिआ नरनाह तुज्झ सिलीमुहा ॥ ८४

'हे महाराज, दावानळ समा दुःसह तारा प्रतापथी जे गर्विष्ठ शत्रुवर्ग बळी गयो छे तेने लीधे पृथ्वीमंडळनी उपर तें तारुं शासन स्थापी दीधुं होवाथी तारां बाणो गुफा जेवा भाथामां जाणे के लज्जित थयां होय तेम नीचे मोढे पड्यां रह्यां छे ।'

सुमंगला

जेमां प्रत्येक चरणमां चार चतुष्कल अने एक गुरु होय, ते छंदनुं नाम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुमंगला ।

सुमंगलानुं उदाहरण :

चीणं चएसु निवसेसु कंबलं,
चालुक्कायमणुसर महाबलं ।
मूढ वहसु मा माण-विस-घंघलं,
अत्ताणयस्स चिंते'सु मंगलं' ॥ ८५

'हे मूढ, तुं बळवान चालुक्यराज कुमारपाळने वशवर्तीने रहे । रेशमी वस्त्रनो त्याग करीने तुं कामळो पहेर । तुं अभिमानरूपी विषना संकटोमां फसायेलो न रहे । तुं तारुं कल्याण शेमां छे तेनो विचार कर ।'

खंड

जेमां प्रत्येक चरणमां बे चतुष्कल होय अने एक पंचकल होय, ए खंजकनुं नाम खंड ।

खंडनुं उदाहरण :

नच्चाविअ-चंदण-वणो, मच्चाविअ-महु-महुअर-गणो ।
'खंडि'अ-माणिणि-माणओ, वाअइ दाहिण-पवणओ ॥ ८६

'चंदनवनने नचावतो, मधुकरोने मदमत्त करतो, मानने गळावी देतो दक्षिण पवन वाइ रह्यो छे ।'

उपखंडक

जेमां प्रत्येक चरणमां एक षट्कल, एक चतुष्कल अने एक त्रिकल होय, ते छंदनुं नाम उपखंडक ।

उपखंडकनुं उदाहरण :

साहीणो चित्तण्णुओ, पण'ओ खंडिअ'-मन्नुओ ।
माए पयरण-दुल्लहो, कत्तो लब्भइ वल्लहो ॥ ८७

'हे सखी, जे स्वाधीन छे, चित्तने जाणे छे, प्रणयी छे, मने रूठेलीने मनावतो होय छे, परंतु आ उत्सवसमयमां जे दुर्लभ बन्यो छे, ए प्रियजन क्यांथी मेळववो ?'

खंडिता

जेमां प्रत्येक चरणमां एक षट्कल अने बे चतुष्कल होय, ते छंदनुं नाम खंडिता ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खंडितानुं उदाहरण :

उज्जग्गर-कसाय-नयणं, हिअय-लग्ग-जावय-चलणं ।
'खंडिआ'इ दट्ठूण पिअं, मरणयम्मि हिअयं निहिअं* ॥ ८८

'जेनुं मान खंडित थयुं छे तेवी खंडिता नायिकाए, उजागराथी जेनी आंखोमां रताश छे, जेनी छाती पर अळताथी रंगेला चरणनुं निशान छे तेवा पोताना प्रियतमने जोईने मरवानुं मन कर्युं ।'

अवलंबक

आ खंड, उपखंड अने खंडिता ए खंजकना त्रणेय प्रकारोमांथी प्रत्येक अवलंबक कहेवाय छे । आगळ उपर द्विपदीखंडनी व्याख्या माटे आ संज्ञानो उपयोग छे ।

हेला

जेमां प्रत्येक चरणमां एक षट्कल अने चार चतुष्कल होय तथा बेकी स्थानमां जगण के चार लघु होय, ते छंदनुं नाम हेला ।

हेलानुं उदाहरण :

कोअंडं पसूण-रइअं गुणो महुअरा,
बाणा कामिणीण नयणा विलास-गहिरा ।
सयमतणू जडो सहयरो तुसार-किरणो,
'हेला'ए तहवि भुवणं जिणेइ मयणो ॥ ८९

'धनुष्य पुष्पनुं बनेलुं, पणछ भ्रमरोनी बनेली, कामिनीओना विलासप्रचुर नेत्रोनां बाण, पोते शरीर विनानो (अनंग) अने सहायक तरीके जड चंद्र, अने तो पण कामदेव लीलामात्रमां त्रण भुवन पर विजय मेळवे छे !'

आवली

हेलाना प्रत्येक चरणमां अंते बे मात्रा ओछी होय, तो ते छंदनुं नाम आवली ।

आवलीनुं उदाहरण :

---

* सरखावो टीकाकारे आपेलुं खंडिता नायिकानी व्याख्यानुं उदाहरण :

निद्राकषाय-मुकुलीकृत-ताम्र-नेत्रो, नारी-नख-व्रण-विशेष-विचित्रिताकः ।
यस्याः कुतोऽपि गृहमेति पतिः प्रभाते, सा खण्डितेति कथिता कविभिः पुराणैः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नव-घण-मालिअ त्ति कलिउं विहत्थओ,
सजल-विलोअणेहिं पहिआण सत्थओ ।
गिम्हे दव-हुआस-मसि-मलिण-सामलिं,
पेच्छइ हंत विंझ-सिहराण 'आवलिं' ॥ ९०

'अरेरे ! ग्रीष्मकाळमां ज्यां शाल्मली तरुओ दावानळने लीधे मश जेवां मलिन बनी गयां छे तेवी विंध्यपर्वतनी शिखरमाळाने, ते वर्षाऋतुनां पहेलां वादळ होवानुं मानी लईने विह्वळ बनेला प्रवासीओ सजळ नेत्रे जोई रह्या छे ।'

विनता

जेमां प्रत्येक चरणमां छ चतुष्कल, एक पंचकल अने एक गुरु होय तथा बेकी स्थाने जगण के चार लघु होय, ते छंदनुं नाम विनता ।

विनतानुं उदाहरण :

मुह-सिरि-कलाव-निज्जिअ-दिवायर-निसायरं तइलोक्क-वइं,
अक्खलिअ-सुद्ध-झाणाणलेण निद्दड्ढ-सयल-कम्मुग्गइं ।
'विणया'मरिंद-मणि-मउड-कंति-पब्भार-पल्लविअ-चरणयं,
तं अणुसरामि भव-जलहि-तारणं वद्धमाणमिह सरणयं ॥ ९१

'जेणे पोतानी अपार मुखशोभाथी सूर्य अने चंद्रने पराजित कर्या छे, जे त्रिभुवनपति छे, जेणे एकाग्र शुद्ध ध्यानरूपी अग्निथी बधा कर्मप्रकारोना उद्भवने बाळी मूक्यो छे, जेनां चरणो वंदन करता इंद्रोना मुकुटमणिनी अपार कांतिथी पल्लवारुण बन्यां छे तेवा, भवसागरने तरवा माटे शरणरूप वर्धमान तीर्थंकरनुं हुं स्मरण करुं छुं ।'

विलासिनी

जेमां प्रत्येक चरणमां बे त्रिकल, एक चतुष्कल अने बे त्रिकल होय, ते छंदनुं नाम विलासिनी ।

विलासिनीनुं उदाहरण :

मत्त-कोइला-महुर-भासिणी, हसइ किं पि सा जइ 'विलासिणी' ।
दोण्हि हुंति सोहग्ग-लण्हिआ, मल्लिआ तह य चंद-जोण्हिआ ॥ ९२

'ज्यारे ते मदमत्त कोकिलना जेवी मधुरभाषी विलासिनी सहेज स्मित करे छे, त्यारे मल्लिका अने चंद्रनी ज्योत्स्ना बंनेनी सुंदरता झांखी पडी जाय छे ।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मंजरी

जेमां प्रत्येक चरणमां बे त्रिकल, त्रण चतुष्कल अने एक त्रिकल होय, ते छंदनुं नाम मंजरी ।

मंजरीनुं उदाहरण :

चूअ-'मंजरिं' मंजु-कोइला-गीअयं,
मलय-मारुअं पुण्ण-बिंबयं चंदयं ।
पाविउण महु-मासि एत्थ विसमत्थओ
हवइ झत्ति तेलोक्क-निज्जय-समत्थओ ॥ ९३

'आम्रमंजरी, कोयलनुं मंजुल गीत, मलयपवन, पूर्ण चंद्रबिंब—ए बाणो प्राप्त करीने वसंतमासमां कामदेव त्रिभुवन उपर विजय मेळववा समर्थ बने छे ।'

शालभंजिका

जो मंजरीमां अंते एक त्रिकल वधारे होय, तो ते छंदनुं नाम शालभंजिका ।

शालभंजिकानुं उदाहरण :

चरण-कमल-लग्गे-वि हु पिअयमम्मि पकोविरी,
'सालभंजिअ'-व्व सहि कीस तुमं सि अजंपिरी ।
सुणसु समुल्लसंति पिअमाहवी-कुल-कलयला,
मयण-विजय-दुंदुहि-झुणी इव पूरिअ-नहयला ॥ ९४

'हे सखी, तारो प्रियतम तारा चरणकमळमां पड्यो छे तो पण तुं केम तेना प्रत्ये हजी रोष राखे छे अने शालभंजिका (पूतळीनी) जेम मौन ग्रहण करी रही छे ? आ कोयलोनो कलरव अवकाशने भरी देतो, जाणे के ते कामदेवना विजयदुंदुभिनो नाद ऊछळतो होय तेवो, तुं सांभळ ।'

कुसुमिता

जेमां मंजरीना प्रत्येक चरणमां, चरणनी शरूआतमां जो एक चतुष्कल वधारे होय, तो ते छंदनुं नाम कुसुमिता ।

कुसुमितानुं उदाहरण :

मय-परिपुट्ठ-घुट्ठ-कलयंठी-पंचम-निब्भरा,
विहडप्फड-भमंत-भसलावलि-कलयल-सुंदरा ।
घण-घोलंत-मलय-पवणोद्धुअ-'कुसुमिअ'-केसरा,
हिअयं निम्महंति न हु कस्स इमे महु-वासरा ॥ ९५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'जेमां मदमत्त कोयलोथी उद्घोषित थतो पंचम स्वर सभर छे, जे व्याकुळ बनीने भ्रमण करता भ्रमरोना गुंजनथी रमणीय छे, जेमां प्रबळपणे फूंकातो मलयानिल प्रफुल्ल केसरतरुओने धुणावी रह्यो छे एवा आ वसंतना दिवसो खरेखर कोना हृदयने क्षुब्ध नथी करता ?'

द्विपदी

जेमां एक षट्कल, पांच चतुष्कल अने एक गुरु होय तथा बीजा अने छठ्ठा चतुष्कलने स्थाने जगण के चार लघु होय, ते छंदनुं नाम द्विपदी ।

द्विपदीनुं उदाहरण :

मा रे वच्च पहिअ निअ-दइअं परिहरिऊण सव्वहा,
इह हि समुत्थरंत-कुसुमायर-मास-मुहम्मि अन्नहा ।
परहुअ-जुवइ-गीअ-हालाहल-विहलंघलिअ-चित्तओ,
चलसि न 'दुवइअं' पि वम्मीसर-सर-निउरंब-छित्तओ ॥ ९६

'अरे पथिक, तारी प्रियतमाने छोडी दईने आ सर्वत्र व्यापी रहेला वसंतमासने आरंभे, तुं प्रवासे नीकळ नहीं । नहीं तो, कोयलोना गीतरूपी हळाहळ झेरथी व्याकुळ चित्तवाळो बनीने कामदेवनी बाणावळीथी विंधायेलो तुं बे पगलां पण चाली शकीश नहीं ।'

नोंध : आ संदर्भमां बीजी केटलीक पण सुमना, तारा, ज्योत्स्ना, मनोवती वगेरे साडत्रीश गणसमा द्विपदीओ अने विपुला, चपला वगेरे बीजी आठ अर्धसमा द्विपदीओनुं केटलाके निरूपण कर्युं छे, परंतु ए छंदोनो अहीं निरूपित केटलाक छंदोमां समावेश थई जतो होवाथी तेमनुं अमे अलग निरूपण कर्युं नथी ।

रचिता

जो द्विपदीमां पहेला चतुष्कलने स्थाने चार लघु होय अने सात मात्रा पछी यति होय, तो ते छंदनुं नाम रचिता, अथवा तो केटलाकने मते रचिका ।

रचितानुं उदाहरण :

नच्चिर-कीर-मिहुण-कोलाहल-मुहलिअ-कलम-छेत्तओ,
दिम्मुह-महमहंत-गंधुक्कड-विअसिअ-सत्तवण्णओ ।
वि रइअ'-मुद्ध-दुद्ध-सुंदेरिम-अविरल-कास-हासओ,
पिअ-सहि मा पिअम्मि परिकुप्पसु जं सरओ समागओ ॥९७

'हे सखी, जेमां कलमशालिनां खेतरो नाचतां पोपटयुगलोना कलकलाटथी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुखर बन्यां छे, जेमां पोतानी उत्कट सुगंधथी दिशाओने मघमघावतां सप्तपर्ण खील्यां छे, जेणे पुष्कळ दूधना जेवा धवल काशना छोडोथी ग्रामजनोने हसता कर्या छे तेवी शरदऋतु आवी पहोंची होईने, हे प्रिय सखी, तुं तारा प्रियतम प्रत्ये रोष न कर ।'

आरनाल

जो द्विपदीना अंते एक गुरु वधारे होय, तो ते छंदनुं नाम आरनाल ।

आरनालनुं उदाहरण :

अविरल-बाह-वारि-धारावलि-विअलण-सोण-लोअणाए,
दारुण-पंचबाण-बाणाहय-हिअय-फुरंत-वेअणाए ।
तुह विरहम्मि चंद-मंदानिल-चंदण-ताव-जालिआए,
अहिणव-'मार नाल'-वणयं पि तीइ तं कुणसि बालिआए ॥ ९८

'हे कामदेवना नूतन अवतार समा, तारा विरहमां, सतत अश्रुधारा वहेवाथी जेनां लोचन रातां थई गयां छे, निष्ठुर कामदेवनां बाणोना प्रहारथी जेना हृदयमां वेदना प्रगटी रही छे, जे चंद्रना, धीमे वाता पवनना अने चंदनना तापथी बळी रही छे तेवी ते बाळा साथे तुं वात पण करतो नथी ?'

कामलेखा

जो द्विपदीना प्रत्येक चरणमां छेल्ला गुरुनी पहेलांनो एक लघु ओछो होय, तो ते छंदनुं नाम कामलेखा ।

कामलेखानुं उदाहरण :

राई चंद-किरण-धवला मणहरणा पुप्फ-माला,
नीलुप्पल-पसूण-परिवास-महग्घा जुण्ण-हाला ।
गेहं रयण-दीव-रुइ-रुइरं गीअं पंचमेणं,
तेण विणा असारमखिलं खु 'कामलेहा'-धरेणं ॥९९

'जेना हृदयमां कामदेव वस्यो छे तेने माटे ज्योत्स्नाथी धवल रात्रि, मनहर कुसुममाळा, नीलकमलना पुष्पनी सुगंधे मघमघती जूनी मदिरा, रत्नदीपथी अजवाळेलुं सुंदर घर अने पंचमराग—एना (= प्रियतमना) विना बधुं ज असार होय छे ।'

चंद्रलेखा

जेमां प्रत्येक चरणमां एक षट्कल, चार चतुष्कल अने एक द्विकल होय, ए छंदनुं नाम चंद्रलेखा ।

चंद्रलेखानुं उदाहरण :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मयण-विआर-समुद्द-लहरि-वित्थार-कारिणी,
जणिआणंद-चंदमणि-निज्झर-सार-सारणी ।
उच्छलंत-लायण्ण-मऊहावलि-पसाहिआ,
मज्झ नयण-कुमुआण इमा सा 'चंदलेहिआ' ॥ १००

'जे मदनविकाररूपी सागरलहरीने विस्तारे छे, जे चंद्रकांत मणिमांथी झरता प्रवाहीना सरस झरणा जेवो आनंद प्रगटावे छे, जे झळहळता लावण्यनां किरणे विभूषित छे तेवी आ मारी प्रियतमा मारा नेत्ररूपी कुमुदो माटे चंद्रलेखा समी छे।'

क्रीडनक

जेमां प्रत्येक चरणमां त्रण चतुष्कल, एक पंचकल अने एक त्रिकल होय तथा आठ मात्रा पछी यति होय, ते छंदनुं नाम क्रीडनक ।

क्रीडनकनुं उदाहरण :

कंकण-किंकिणि-नेउर-कलयल-मुहलं,
पवण-पहल्लिर-सिचयंचिअ-गयणयलं ।
दीहोच्छल्ल-खेल्लण-कय-लोलणयं,
सहइ इमाए अंदोलण-कीलणयं ॥ १०१

'जे कंकण अने नुपूरनी घूघरीओना रणकारथी मुखर छे, पवने जेनां फरकतां, वस्त्रो अवकाशमां ऊडे छे, जे ऊंचे सुधी ऊछळवानी रमतमां डोली रही छे तेवी आ बाळानी झूला पर झूलवानी क्रीडा शोभी रही छे ।'

अरविंदक

जेना प्रत्येक चरणमां एक षट्कल, एक पंचकल, एक चतुष्कल, एक त्रिकल अने अने एक द्विकल होय, ते छंदनुं नाम अरविंदक ।

अरविंदकनुं उदाहरण :

उअह तुज्झ विरहे इमाइ मुह-कमलं,
अविरल-बाह-धारा-विलुलिअ-कज्जलं ।
अब्भ-लेह-पिहिअं व पुण्णिम-चंदयं,
सेवल-संवलिअं व नवारविंदयं' ॥ १०२

'तुं जो तो, सतत वहेती अश्रुधाराथी जेनुं काजळ फेलाई गयुं छे तेवुं आ बाळानुं मुखकमळ मेघरेखाथी ढंकायेला पूनमना चंद्रसमुं के शेवाळथी छवायेला ताजा खीलेला अरविंद समुं दीसे छे ।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मागधनर्कुटी

जेमां प्रत्येक चरणमां एक षट्कल, एक लघु, एक द्विकल, एक लघु, एक चतुष्कल, एक द्विकल, एक गुरु अने ते पछी बे गुरु होय ते छेदनुं नाम मागधनर्कुटी।

मागधनर्कुटीनुं उदाहरण :

नव-मयरंद-पाण-पायड-मय-उत्ताला, भमरा रुणरुणंति कायलि-कय-सद्दाला।

पंचममुग्गिरंति एआ अविदिट्ठिओ, चूअंकुर-कसाय-कंठा कलयंठीओ ॥१०३

'ताजा मकरंदना पानथी जेनो मद ऊछळी रह्यो छे तेवा भ्रमरो काकली स्वरना नादे गूंजी रह्या छे अने आम्रमंजरीना आस्वादथी जेमनो कंठ कषाय बन्यो छे एवी आ मनहर नयनवाळी कोयलो पंचम स्वर उद्गारी रही छे।'

नर्कुटक

जेमां प्रत्येक चरणमां एक षट्कल, एक लघु, एक द्विकल, एक लघु, एक चतुष्कल, एक द्विकल एक गुरु अने पछी सगण (˘ ˘ –) होय ते छंदनुं नाम नर्कुटक।

नर्कुटकनुं उदाहरण :

परिमल-लुद्ध-लोल-अलि-गीअ-सणक्कुडयं',

जाव न जग्गवेइ विसमत्थ-महाभडयं।

माणं मोत्तुआण माणंसिणि सप्पणयं,

पेम्म-भरेण ताव अणुसर सहि वल्लहयं ॥ १०४

'हे मानिनी सखी, ज्यां सुधीमां परिमलमां लुब्ध बनी डोलता भ्रमरोनुं गूंजन जेना उपर थई रह्युं छे तेवां कुटजपुष्प कामदेवरूपी महान सुभटने जाग्रत न करे त्यां सुधीमां तुं तारुं मान मूकी दईने, प्रेमपूर्वक याचना करीने, तारा प्रियतमनुं शरण ले।'

समनर्कुटक

जेमां प्रत्येक चरणमां एक षट्कल, एक जगण अने त्रण सगण (˘ ˘ –) होय ते छंदनुं नाम समनर्कुटक।

समनर्कुटकनुं उदाहरण :

सयल-सुरासुरिंद-परिवंदिअ-पाय-तलो,

निरुवम-झाण-नाण-वस-नासिअ-कम्म-मलो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निवसउ मे मणम्मि भयवं सिरि-वीर-जिणो,
विलयं जंति काम-पमुहा जह ते अरिणो ॥ १०५

'जेना चरणना तळियाने सर्व असुरेन्द्र अने सुरेन्द्र वंदन करे छे, अनुपम ध्यान अने ज्ञानने बळे जेणे कर्मरूपी मळनो नाश कर्यो छे, तेवा भगवान श्रीवीरजिन मारा मनमां निवास करो, जेथी पेला काम वगेरे शत्रुओ नाश पामे ।'

नोध : जेमां प्रत्येक चरण न, ल, ग, ज, स, स, स – एवा, अनुक्रमे आवता गणोना माापवाळुं होय ते छंदनुं नाम समनर्कुटक, एवुं जे एक मते कहेवायुं छे तेनो संस्कृत नर्कुटक छंदमां समावेश थई जतो होईने अमे तेनुं निरूपण कर्युं नथी ।

तरंगक

जे छंदमां प्रत्येक चरणमां, मागधनर्कुटी, नर्कुटक, समनर्कुटक ए त्रणेय छंदोमांना छेल्ला चतुष्कलने स्थाने जो त्रिकल होय, तो ते छंदनुं नाम तरंगक ।

तरंगकनुं उदाहरण :

बहुविह-भाव-मुद्ध-महुरत्तण-मंदिरं,
पवणुद्धूअ-साम-सरसीरुह-सुंदरं ।
निम्मल-संति-पुंज-परिलद्धय-चंगयं,
सोहइ तीइ दीह-नयणाण 'तरंगिअं' ॥ १०६

'जे अनेक प्रकारना मुग्ध भावोनी मधुरतानो निवास छे, जे पवनथी डोलता नीलकमल जेवां सुंदर छे, निर्मळ क्रांति प्राप्त करवाने लीधे जे रमणीय छे तेवां ते तरुणीनां दीर्घ नयनोनी तरंग समी चंचळता शोभी रही छे ।'

पवनोद्धुत

जो तरंगक छंदना प्रत्येक चरणने अंते एक वधारे गुरु होय, तो ते छंदनुं नाम पवनोद्धुत ।

पवनोद्धुतनुं उदाहरण :

भसला दंसयंति महु-पाण-परव्वसाण,
उक्कंठा-तरलिअ-मणाण निअ-वल्लहाण ।
निब्भर-महुर-गीइ-रवमुच्चरिउं इमासु,
दोला-कीलणाइं 'पवणुद्धुअ'-वल्लिआसु ॥ १०७

'पवनथी डोलती आ वल्लरीओमां भरपूर मधुर गीतरवे गणगणता भ्रमरो, जे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मधपान करवाथी परवश बनी छे अने जेमनुं मन उत्कंठाथी चंचळ बन्युं छे, तेवी पोतानी प्रेयसीओनी झुलणलीला दर्शावी रह्या छे ।'

निध्यायिका

जेमां प्रत्येक चरणमां (१) बे चतुष्कल पछी त्रण त्रिकल होय, (२) बे पंचकल पछी त्रण त्रिकल होय, (३) एक पंचकल पछी त्रण त्रिकल होय - एम त्रणेय प्रकारे जे छंद बने, तेनुं नाम निध्यायिका ।

जेमां बे चतुष्कल पछी त्रण त्रिकल छे एवी निध्यायिकानुं उदाहरण :

हा खामोअरि कुरंग-नेत्तिए, वयण-मऊह-जिअ-चंद-कंतिए ।
'निज्झाइअ'-जीवाविअ-मणसिए, दुसहो तुज्झ विरहानलो पिए ॥ १०८

'जेणे पोताना वदननी कांतिथी चंद्रिकाने पराजित करी छे, जे दृष्टिरागथी काम प्रगटावे छे तेवी हे कृशोदरी, मृगनयना प्रिया, तारा विरहनो अग्नि अतिशय दुःसह छे ।'

जेमां प्रत्येक चरणमां बे पंचकल अने त्रण त्रिकल होय एवी निध्यायिकानुं उदाहरण :

'निज्झाइअइ' जत्थ मयमय-वल्लरी, ललिअ-कंति-चंगे कलंक-सोअरी ।
सेवंति तं तुह मुह-चंदयं सया, उब्बिब-बाल-हरिणच्छि चउ(ओ)रया ॥१०९

'जेनां नयन डरथी चकळवकळ थतां मृगबाळनां नयनो समां छे तेवी हे सुंदरी, जे ललित कांतिथी रमणीय छे अने जेना पर कलंकनो भ्रम करावती कस्तूरी वडे रचेली वेलनी भात देखाय छे, ते तारा वदनचंद्रने तारा केशनां झुल्फा (बीजो अर्थ : "चकोरो") सेवी रह्यां छे ।'

जेमां प्रत्येक चरणमां एक पंचकल पछी त्रण त्रिकल होय, एवी निध्यायिकानुं उदाहरण :

हरइ जम्म-सय-संचिआइं, भविआण असेस-दुरिआइं ।
तुह मुहं जणिअ-मयण-माह, 'निज्झाइअं' पि भुवण-नाह ॥ ११०

'कामदेवनो विनाश करनार हे त्रिभुवनना नाथ जिनदेव, तारा मुखनुं मात्र दर्शन पण भव्यजनोना सेंकडो जन्मथी संचित थयेलां सर्व पाप हरी ले छे ।'

जेमां प्रत्येक चरणमां एक पंचकल, एक चतुष्कल अने त्रण त्रिकल होय एवी निध्यायिकानुं उदाहरण :

वम्मीसर-कंचण-तोमर-ललिआ,
दिट्ठा छुडु सुंदरि चंपय-कलिआ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घुलिओ छुडु दक्खिणओ गंधवहो,
विअलिओ ता पहिआण मणोरहो ॥ १११

'हे सुंदरी, कामदेवना सुवर्णना बाण जेवी सुंदर चंपाकळीने जेवी जोई अने जेवो दक्षिणना पवनने घूमतो जोयो तेवो ज प्रवासीओनो (प्रवासे जवानो) मनोरथ गळी गयो ।'

अधिकाक्षरा

जेमां प्रत्येक चरणमां पांच चतुष्कल अने एक पंचकल होय अने बेकी स्थाने जगण न होय, ए छंदनुं नाम अधिकाक्षरा ।

अधिकाक्षरानुं उदाहरण :

उज्जागरओ कवोल-पंडुत्तणं तणुअत्तं,
दीहुण्हा सास-दंडया चित्तए विवसत्तं ।
'अहिअक्खर'-जंपिएण किं वा सुहय तुह विरहे,
सा एत्ताहे वराइआ निअयं मरणं लहे ॥ ११२

'हे सुभग, तारा विरहमां ते मुग्धा उजागरो, गालोनी फिकाश, कृशता, लांबा अने ऊना निःश्वासो, हृदयनी परवशता (ए बधुं वेठी रही छे)—अथवा तो वधु वचनो शुं कहुं ? (जो तुं नहीं आवे तो) ए बिचारी नक्की मरणने शरण थशे ।'

मुग्धिका

जो अधिकाक्षराना प्रत्येक चरणमां चोथो गण पंचकल होय, तो ते छंदनुं नाम मुग्धिका ।

मुग्धिकानुं उदाहरण :

जीए लग्गेइ चंदणं गरल-रसं व दूसहं,
अंगं पि अ जीए तावइ रस्सी अणंग-नीसहं ।
कयली-दल-मारुओ वि किरइ हुअवहं पिव जीए,
दाहो 'मुद्धाइ' एस कह समइ गुणालय तीए ॥११३

'जेने चंदननो लेप विष जेवो दुःसह लागे छे, मदन(पीडा)थी नखाई गयेलां जेनां अंगोने चंद्र तपावे छे, कदलीपत्रथी नखातो पवन जेने आग जेवो लागे छे ते मुग्धानो दाह हे गुणवंत, (तारा विना) कई रीते शमी शके ?'

चित्रलेखा

जो अधिकाक्षरानी शरूआतमां एक पंचकल वधु होय, तो ते छंदनुं नाम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्रलेखा ।

चित्रलेखानुं उदाहरण :

नहयलम्मि सयल-दिसा-मुहेसु गहणम्मि गिरिवरे,
सरि-पुक्खरिणिआसु देवउलएसु भित्तिसु नयरे ।
दूरम्मि-पासे घरम्मि अंगण-पएसए तुह,
'चित्तलिहिअं' पिव मयच्छि पेच्छामि सुंदरं मुहं ॥ ११४

'हे मृगनयनी, अवकाशमां, बधी दिशाओमां, वनमां, पर्वतमां, नदी अने वावोमां, देवळोमां, भींतो पर, नगरमां, दूर तेम ज निकट, घरमां तेम ज आंगणामां जाणे के चितर्युं होय एम सर्वत्र तारुं सुंदर मुख मने देखाय छे ।'

मल्लिका

जो अधिकाक्षरानी शरूआतमां बे पंचकल वधु होय, तो ते छंदनुं नाम मल्लिका ।

मल्लिकानुं उदाहरण :

उब्भिज्जउ मायंद-मंजरी पाडला दलउ चिरं,
सा पायड-विआस-सिरी अ नोमालिआ वि निब्भरं ।
विअसउ वसंतम्मि फुडं मणहरा असोअ-वल्लिआ,
एक्क च्चिअ भसलस्स माणसं हरइ हंत 'मल्लिआ' ॥११५

'वसंतऋतुमां भले आम्रमंजरी विकसे, पाटलापुष्प पूरेपूरुं खीले, नवमालिका लता पण भरपूर विकासनी रमणीयता प्रगट करे, मनहर अशोकवल्लरी पण पूरेपूरी विकसे, पण भ्रमरनुं हृदय तो मात्र मल्लिका ज हरे छे ।'

दीपिका

जो मल्लिकाना प्रत्येक चरणमां चोथो गण पंचकल होय तो ते छंदनुं नाम दीपिका ।

दीपिकानुं उदाहरण :

मत्त-वारिहर-पंति-रुद्ध-हरिणंक-मऊह-सोहए,
रोअसी-कंदरूससंत-घोर-अंधयार-वूहए ।
रमण-वास-भवणाहिसारिआण रुइर-विज्जु-लेहिआ,
कामिणीण अवलोअ-कारिणी हवइ इह कर-'दीविआ' ॥ ११६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'ज्यारे मदमत्त मेघमाला चंद्रकिरणोनी शोभाने रूंधी दे छे,ज्यारे घोर अंधकारनो समूह ऊछळीने आकाश अने पृथ्वीनां पोलाणोने भरी दे छे, त्यारे प्रियतमना वासभवन प्रत्ये अभिसार करती कामिनीओ माटे झबकती विद्युत्लेखा रस्तो बतावती करदीपिका बनी रहे छे ।'

लक्ष्मिका

जेमां अधिकाक्षरा वगेरेनुं मिश्रण होय ते छंदनुं नाम लक्ष्मिका ।

लक्ष्मिकानुं उदाहरण :

केसर-कुरबय-मायंद-तिलय-असोअ-कोरया,
विरहाणल-डज्झंत-निअंबिणि-जीविअ-चोरया ।
एदे किर दुप्पिच्छा विलसंति मणोहव-सरा,
जेसुं ते कह निग्गमिअव्वा महुं लच्छि'-वासरा ॥११७

'जेमां केसर, कुरबक, आम्र, तिलक, अने अशोकनी कुसुमकळीओ प्रगटे छे, जे बळबळता विरहाग्निथी कामिनीओना प्राणने हरी ले छे, जेमां जोवां दु:सह एवां कामदेवनां बाणो छूटी रह्यां छे—एवा आ वसंतऋतुना रमणीय दिवसो, हे सखी, (प्रियतम विना) कई रीते वितावबा ?'

नोंध : आ उदाहरणमां पहेलां त्रण चरण अधिकाक्षराना छे, चोथुं चरण मुग्धिकानुं छे । आ ज प्रमाणे बींजां मिश्रणोनां उदाहरणो आपवां । केटलाकने मते लक्ष्मिकामां बधा प्रकारना खंजकोनुं मिश्रण थई शकतुं होय छे ।

मदनावतार, मधुकरी, नवकोकिला, कामलीला, सुतारा, वसंतोत्सव

जेमां प्रत्येक चरणमां चार पंचकल होय ते छंदनुं नाम मदनावतार ।
जेमां प्रत्येक चरणमां पांच पंचकल होय ते छंदनुं नाम मधुकरी ।
जेमां प्रत्येक चरणमां छ पंचकल होय ते छंदनुं नाम नवकोलिला ।
जेमां प्रत्येक चरणमां सात पंचकल होय ते छंदनुं नाम कामलीला ।
जेमां प्रत्येक तरणमां आठ पंचकल होय ते छंदनुं नाम सुतारा ।
जेमां प्रत्येक चरणमां नव पंचकल होय ते छंदनुं नाम वसंतोत्सव
चार पंचकलवाळा मदनावतार छंदनुं उदाहरण :

गिज्जंति गीईओ पिज्जंति मइराओं, नच्चंति वेसाओं परिल्हसिअ-केसाओं ।
एवमन्नोन्न-परिरंभणा-सारए, कीलंति रामाओ 'मयणावयारए' ॥ ११८

'जेमां अरसपरसने आलिंगन अपातां होय छे, एवा वसंतऋतुना आगमने गीतो गवाय छे, मदिरा पीवाय छे, मोकळा थयेला केशपाशवाळी वेश्याओ नृत्य करे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छे अने एम सुंदरीओ क्रीडा करे छे ।' -(टीकाकार 'सारए' नो 'शारदे'- एटले के शरद्ऋतुमां, ज्यारे कामदेवनो प्रभाव प्रवर्तवा लागे छे त्यारे, ए प्रमाणे अर्थ करे छे) ।

पांच पंचकलवाळा मधुकरी छंदनुं उदाहरण :

चरणेण-वि नव-फुडिअ-कुडयमपरिघट्टयंतिआ,
पक्ख-वाएण वि विहसिअ-केअयमच्छिवंतिआ ।
ऊअह झत्ति एसा निम्मलयर-गुणाणुरंजिरी,
अहिसरइ विअसंत-जाइ-कुसुमं चेअ 'महुअरी' ॥ ११९

'पोतानां चरणथी नवविकसित कुटज, कुसुमने अथडावा न देती, विकसित केतक-पुष्पनो पांखनी झपटथी स्पर्श पण न करती, जुओ, आ मधुकरी, जे निर्मळ गुणोथी ज मन रंजित करती जाईना विकसता फूल प्रत्ये झडपथी अभिसार करी रही छे ।'

छ पंचकलवाळा नवकोकिला छंदनुं उदाहरण :

'नव-कोइल'-रवाउल-मंजरिअ-मायंद-तरु-कंतारए,
सच्छंद-मल्लिआ-मयरंद-रस-मत्त-घोलंत-छप्पए ।
जिंभंत-मलयद्दि-समीरण-लोल-नोमालिआ-वल्लिए,
संभरइ पंथिओ पिअयमं ओसहिं हिअयए सल्लिए ॥ १२०

'जेमां महोरेलां आम्रतरुओ, उपर आवी बेठेली कोयलोना कलरवे गूंजी रह्यां छे, जेमां मल्लिकाना मकरंदरसे मदमत्त बनीने भ्रमरो घूमी रह्या छे, जेमां प्रसरता मलयानिले नवमालिका लताओ डोली रही छे, तेवा वनमांथी पसार थतो पथिक पोताना वींधायेला हृदय माटे जाणे के औषधि होय तेम पोतानी प्रियतमानुं स्मरण करी रह्यो छे ।'

सात पंचकलवाळा कामलीला छंदनुं उदाहरण :

मत्त-पिअमाहवी-पंचमोग्गार-गुंजंत-चूअद्दुम-त्तंबओ,
मिउ-लय-मारुउद्धूअ-वल्लि-प्पसूणग्ग-घोलंत-रोलंबओ ।
चारु-कंकेल्लि-साहंत-दोला-समंदोलणासत्त-नारीअणो,
'कामलीला'-सहो संपयं विलसए एत्थ एसो वसंतक्खणो ॥ १२१

'जेमां आम्रतरुओनुं झुंड मदमत्त कोयलोना पंचम स्वरे गूंजी रह्युं छे, जेमां कोमळ मलयपवने डोलती लताओनां पुष्पो उपर भ्रमरो घूमी रह्या छे, जेमां सुंदरीओ रमणीय अशोकवृक्षनी शाखाए बांधेला झूला उपर उमंगथी झूली रही छे—एवो कामक्रीडाने अनुकूळ आ वसंतोत्सव अहीं अत्यारे पूरबहारमां उजवाई रह्यो छे ।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आठ पंचकलवाळा सुतारा छंदनुं उदाहरण :

पिअयम कहं जासि एआइणिं मं चइत्तूण देसंतरं पेच्छ निल्लज्ज,
सुरहि-मासो पयट्टो असेसाणं जणाणं विलासेक्कदिक्खा-गुरू अज्ज ।
एस सविसट्ट-कंदोट्ट-कंकेल्लि-मायंद-घोलंत-रोलंब-गीइ-स्सणो,
जं 'सुतारो' धणुट्टंड-टंकारओ इह निसामिज्जए सुहड-पंचेसुणो ॥ १२२

'हे प्रियतम, तुं मने एकली मूकीने केम अन्य देशे जइ रह्यो छे ? निर्लज्ज, जो तो खरो, अत्यारे सर्वजनो माटे विलासनो एकमात्र दीक्षागुरु एवो वसंतमास प्रवर्ते छे अने कामदेवसुभटनो, पूर्णपणे विकसेलां कमळ, अशोक अने आम्रतरुओ उपर घूमी रहेला भ्रमरोना गुंजनरूपी अत्यंत तीव्र धनुष्टंकार संभळाई रह्यो छे ।'

नव पंचकलवाळा वसंतोत्सव छंदनुं उदाहरण :

फुल्लिआणेअ-कंकेल्लि-महुपाण-मत्तालि-झंकार-कल-गीइ-गिज्जंत-कुसमाउहो,
मायंद-नव-मंजरी-कसाय-कंठ-कलयंठी-कोलाहलाउलिज्जंत-तरुसमूहो ।
पिअयम-परिरंभ-चुंबणाइ-प्पसंग-संगलिअ-रस-नीसुंदुद्धुसिअ-रोम-कूवओ,
हलहलिअ-तरुणिअण-हिअयओ पवंचिअ-पंचमो विलसिओ वणेसुं 'वसंतय-ऊसओ' ॥ १२३

'जेमां विकसित थयेला पुष्पोनो मकरन्द पीने मत्त बनेला भ्रमरोना मधुर गुंजारवरूपी गीतो वडे कामदेवनां गीत गवाय छे,

जेमां ताजी फूटेली आम्रमंजरीना स्वादथी जेमनो कंठ कषाइत थयो छे तेवी कोयलोना कलरवथी वृक्षो छवाई गयां छे,

जेमां प्रियतमने आलिंगन, चुंबन वगेरे करवाने लीधे झरता प्रेमरसथी रूंवाडां खडां थाय छे,

जेमां तरुणीओनुं हृदय आकुळव्याकुळ बने छे,

जेमां पंचमरागनो आलाप थई रह्यो छे,

तेवो वसंतोत्सव वनोमां विलसी रह्यो छे ।'

खंजक-प्रकरण समाप्त ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शीर्षक-प्रकरण

खंजकने विस्तृत करवाथी जे छंदो बने तेमनुं नाम शीर्षक । केटलाक विशिष्ट शीर्षकोनुं निरूपण करीए छीए ।

द्विपदी-खंड

जो गीतिनी पछी बे अवलंबको होय तो ते छंदनुं नाम द्विपदी-खंड । जेम के 'रत्नावलि'मांथी द्विपदी-खंडनुं उदाहरण :

कुसुमाउह-पिअ-दूअयं, मउलावंतो चूअयं ।
सिढिलिअ-माण-ग्गहणओ, वाअइ दाहिण-पवणओ ॥
विअलिअ-बउलामेलओ, इच्छिअ-पिअयम-मेलओ ।
पडिवालण-असमत्थओ, तम्मइ जुअइ-सत्थओ ॥
इअ पढमं महु-मासओ जणस्स हिअयाइं कुणइ मउआइं ।
पच्छा विंधइ कामओ लद्धावसरेहिं कुसुम-बाणेहिं ॥ १२४

'ज्यारे कामदेवना प्रिय दूत जेवा आम्रतरुने मुकुलित करतो, ग्रहण करेला मानने शिथिल करतो दक्षिणनो पवन वाय छे, अने ज्यारे जेमनो बकुलनो पुष्पमुकुट ढीलो पडी गयो छे अने जे पोताना प्रियतम साथे मिलन माटे प्रतीक्षा करी रही छे तेवी युवतीओनो समूह तडपे छे, तेवो आ वसंतमास पहेलां लोकोना हृदयने नरम करी दे छे, अने पछी कामदेव लाग जोईने पुष्पबाणोथी तेमने वींधे छे ।'

द्विभंगिका

जो द्विपदी पछी गीति होय तो ते छंदप्रकारनुं नाम द्विभंगिका । तेमां बे भंग के वळांक होवाथी ते द्विभंगिका कहेवाय छे ।

द्विभंगिकानुं उदाहरण :

दारुण-देह-दाह-पविअंभण-फुड-फुट्टंत-हारए,
हिअय-त्थल-निहित्त-घण-चंदण-पंकुच्चोड-कारए ।
दीहर-सास-दड्ढ-सहि-करयल-धुअ-विअणारविंदए,
तिणयण-तइअ-नेत्तानल-जाल-कराल-चंदए ॥
विरहम्मि तुज्झ एरिसे तह झीणा कुवलयच्छ स दुहंगिआ' ।
जह सण्ह-लक्ख-हणणयं तीए अंगम्मि सिक्खइ अणंगओ ॥ १२५

'जेमां शरीरमां दारुण दाह प्रसर्यो होवाथी हार एकाएक तूटी पडे छे, जे वक्षःस्थळ पर रहेला चंदनना गाढ लेपने सूकवी नाखे छे,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जेमां सखीओना हाथे वींझातो कमलनो वींझणो लांबा निसासाथी बळी जाय छे,

जेमां चंद्र महादेवना त्रीजा नेत्रनी अग्निज्वाळा जेवो कराळ लागे छे,

एवा तारा विरहमां अंगेअंग दुःखी थती ए नीलकमळ जेवां नेत्रवाळी एटली कृश थई गई छे

के कामदेव सूक्ष्म लक्षने केम वींधवुं ते तेना अंग परथी शीखे छे ।'

नोंध : आ सिवाय बीजा पण बब्बे छंदोने जोडीने द्विभंगी बनती होवानुं केटलाक पिंगळकारोए कह्युं छे । जेम के गाथानी साथे भद्रिकाने जोडवाथी ।

गाथा + भद्रिकानी द्विभंगीनुं उदाहरण :

उद्धाइअ-झंझानिल-झडप्प-झंपण-पडंत-विडवोहे,
अविरल-बहल-झलक्कंत-विज्जुला-वलय-लल्लक्के ॥
सरहस-रडंत-दद्दुरे कणंत-मोरे पडंत-जल-निवहए,
गज्जंत-मेह-मंडले को जिअइ विणा पिअह पाउसम्मि ॥ १२६

'जेमां वेगथी फुंकाता वंटोळनी झापटथी ऊछळीने डाळो तूटी पडे छे,
जे वारंवार झबक्या करती वीजळीना वलयोने लीधे भीषण छे,
जेमां देडका जोरशोरथी ड्रांउं ड्रांउं करी रह्या छे,
जेमां मोर किंगारव करी रह्या छे,
जेमां जळनो धोध पडी रह्यो छे,
जेमां मेघमंडळी गर्जना करे छे,
तेवा वर्षाकाळमां प्रियतम विना कोण जीवती रही शके ?'

वस्तुवदनक+कर्पूरनी द्विभंगीनुं उदाहरण :

निक्कंदल कय कच्छ नलिणि-वज्जिअ कय सर-सरि,
निच्चंदणु किउ मलउ तुहिण-वज्जिउ किउ हिम-गिरि ।
निप्पल्लव किअ करि पयत्तु कंकेल्लि-विडवि-सय,
पत्त-चत्त कय बाल-कयलि अकुसुम कय तरुलय ॥
सिसिरोवयार-किहिं परिअणिहिं निम्मुत्ताहल कय भुवण ।
तो-वि हु न तीइ तुह विरह-भरि खसइ दाह-दारुण-विउण ॥ १२७

'सखीओए तेना शीतोपचारने माटे नदीना तटने कूमळा घास विनाना करी दीधा,
सरोवरो अने नदीओने कमळ विनानां करी दीधां,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मलयगिरिने चंदन वगरनो करी दीधो,
हिमालयने हिम वगरनो करी दीधो,
सेंकडो अशोकवृक्षोने प्रयत्न पूर्वक पल्लव वगरनां करी दीधा,
कोमळ केळोनां बधां पत्र तोडी लीधां,
तरुलताओने पुष्प विनानी बनावी दीधी,
अने जगतने मोती वगरनुं करी मूक्युं,
तो पण हे निर्गुण, असह्य विरहना दाहथी थयेली ए तरुणीनी दारुण वेदना फीटती नथी ।'

वस्तुवदनक+कुंकुमनी द्विभंगीनुं उदाहरण :

गयणुप्परि कि न चडहि कि न रि विक्खरहि दिसिहि वसु,
भुवण-त्तय-संतावु हरहि कि न किरवि सुहा-रसु ।
अंधयारु कि न दलहि पथडि उज्जोउ गहिल्लउ,
कि न धरिज्जहि देवि सिरहं सइं हरि सोहिल्लउ ॥
कि न तणउ होहि रयणायरह, होहि कि न सिरि-भायरु ।
तु वि चंद निअवि मुहु गोरिअहि, कु-वि न करइ तुह आयरु ॥ १२८

'तुं ऊंचे आकाशमां केम न चडे ? चारे दिशाओमां तारी संपत्तिनो झळहळतो प्रकाश प्रकटावीने अंधकारनो नाश केम न करे ? स्वयं महादेव शोभा माटे तने शिर पर केम धारण न करे ? रत्नाकरनो पुत्र तुं केम न हो ? लक्ष्मीनो तुं भाई केम न हो ? आ बधुं होय तो पण हे चंद्र ! ए गोरीनुं मुख जोया पछी कोई पण तारो आदर न करे ।'

रासावलय+कर्पूरनी द्विभंगीनुं उदाहरण :

परहुअ-पंचम-सवण-सभय मन्नउं स किर,
तिंभणि भणइ न किं पि मुद्ध कलहंस-गिर ।
(पाठांतर : कलकंठि-गिर)
चंदु न दिक्खण सक्कइ जं सा ससि-वयणि,
दप्पणि मुहु न पलोअइ तिंभणि मय-नयणि ॥
वइरिउ मणि मन्नवि कुसुमसरु खणि खणि सा बहु उत्तसइ ।
अच्छरिउ रूव-निहि कुसमसर तुह दंसणु जं अहिलसइ ॥ १२९

'मने लागे छे के कोकिलाना जेवा स्वरवाळी ए मुग्धा कोयलनो पंचम सूर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सांभळवाथी पोते डरे छे ते कारणे कशुं पण बोलती नथी । ए चंद्रवदना चंद्रने जोई शकती नथी, ते कारणे ए मृगनयनी दर्पणमां पोतानुं मुख जोती नथी । कामदेवने पोताना मनमां वेरी मानीने ए क्षणे क्षणे त्रास पामे छे । तेम छतां हे रूपनिधि कामदेव, ए मोटुं आश्चर्य छे के ते तने जोवाने झंखी रही छे ।'

रासावलय+कुंकुमनी द्विभंगीनुं उदाहरण :

जइअ झलक्कहिं नयण दीह-नयणिअहि खणु,
केअइ-कुसुम-दलम्मि भसलु विलसइ त जणु ।
जइ तीए मुहि हावि मंदु हासउ चडइ,
ता जणु हीरय-पउमराय-संचउ झडइ ॥
जइ तीए महुर-मिउ-भासिणिहि वयण-गुंफु निसुणिज्जइ ।
तावह करेप्पि जणु अमय-रसु कण्ण-पण्ण-पुडि पिज्जइ ॥ १३०

'जेवां ए दीर्घनेत्रवाळी तरुणीनां नयन क्षणिक चमके छे त्यारे एवुं लागे छे के केतकीपुष्पनी पांखडीओमां भ्रमर विलसी रह्यो छे । तेना मुख पर हावभावमां जेवुं मंदस्मित फरके छे त्यारे एवुं लागे छे के हीरा अने पद्मराग वरसी पडे छे । ज्यारे ते मधुर अने मृदु भाषिणीनी वचनरचना संभळाय छे, त्यारे श्रोता पोताना काननो पडियो बनावीने जाणे के अमृतरस पी रह्यो छे ।'

वस्तुवदनक+रासावलयार्ध+कर्पूरनी द्विभंगीनुं उदाहरण :

अविरह-अवरुप्पर-परूढ-गुण-गंठि-निबद्धउ,
एआरिण हलि गलइ पिम्मु सरलिम-वस-लद्धउ ।
माण-मडप्फरु तुह न जुत्तु उत्तिम-रमणि,
तिंभणि वारउं वार-वार वारण-गमणि ॥
अह करिहि कलहु वल्लहिण सहुं, इच्छि मयच्छि उ पणय-सुहु ।
माणिक्कि-मणंसिणि करि ठवलु, हेल्लि खेल्लि ता जूउ तुहुं ॥ १३१

'हे सखी, परस्परना गुणोनी छूटी न शके तेवी गांठथी गाढपणे गूंथायेलो सरळताने लीधे प्राप्त थयेलो प्रेम पण अहंकार करवाथी गळी जाय छे । हे उत्तम रमणी, मान अने अहंकार तुं करे छे ते योग्य नथी ते कारणे हे गजगामिनी, हुं तने वारंवार वारुं छुं । एटले हे मृगनयनी, जो तारा प्रियतम साथे कलह करीश तो पछी मनगमता प्रणय सुखनी आशा तुं न राखीश । (माटे) हे मनस्विनी सखी, तारा मानने दावमां मूकीने तुं जुगार खेल ।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वस्तुवदनक+रासावलयार्ध+कुंकुमनी द्विभंगीनुं उदाहरण :

पंडि-गंडयल-पुलय-पयर-पयडण-बद्धायरु,
कंचिवाल-बाला-विलास-बहलिम-गुण-नायरु।
दविडि-दिव्व-चंपय-चय-परिमल-ल्हसडउ,
कुंतलि-कुंतल-दप्प-झडप्पण-लंपडउ ॥
मरहट्ठि-माण-निट्ठाह-वय-विहव-विहंसण-सक्कउ ।
कसु करइ न मणि हल्लोहलउ मलयानिलहु झुलक्कउ ॥ १३२

'जे पांड्यदेशनी सुंदरीओना गालने पुलकित करवा माटे तत्पर छे,
जे कांचीदेशनी बालाओना विलासोने समृद्ध करवामां दक्ष छे,
जे द्राविडदेशनी सुंदरीओनां चंपककुसुमोना दिव्य परिमलनो लूंटारो छे,
जे कुंतलदेशनी सुंदरीओना केशकलापना दर्पनुं हरण करवामां लंपट छे,
जे महाराष्ट्रनी सुंदरीओना दृढ व्रतरूप मानवैभवने नष्ट करवाने तत्पर छे,
तेवा मलयानिलनी लहरी कोना चित्तमां सानंद उत्कंठा न जन्मावे ?'

रासावलयार्ध+वस्तुवदनकार्ध+कर्पूरनी द्विभंगीनुं उदाहरण :

तरुणि-हूणि-गंड-प्पह-पुंछिअ-तिमिर-मसि,
उक्क-झुलुक्कावडणु दुसहु मा करउ ससि ।
मलयानिलु मय-नयणि धुणिअ-कप्पूर-कयलि-वणु,
संधुक्किअ-मयणग्गि सहि इ मा तुज्झ तवउ तणु ॥
तणुअंगि म खडहडि पडहि तुहुं, मयण-बाण-वेअण-कलहि ।
चय माणु माणि वल्लहिण सहुं, चडि म शवसंसय-तुलहि ॥ १३३

'जेणे हूण तरुणीओना गाल प्रदेश परनी मेश जेवी काळाशने भूंसी काढी छे तेवो आ चंद्र रखे असह्य उल्कानो खंड फेंके ।

हे मृगनयनी, जे कपूर अने कदलीना तरुओने धुणावी रह्यो छे अने कामाग्निने प्रदीप्त करी रह्यो छे ते मलयानिल तारा शरीरने रखे बाळे ।

हे कृशांगी, तुं प्रेमकलह करीने कामदेवना बाणोनी वेदनामां लथडीने पड नहीं,

तुं मान तजी दे, तारा प्रियतम साथे भोग भोगव । प्राणना संशयनी तुला उपर तुं चड नहीं ।'

रासावलयार्ध+वस्तुवदनकार्ध+कुंकुमनी दिभंगीनुं उदाहरण :

सवण-निहिअ-हीरय-हसंत-कुंडल-जुअल,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थूलामल-मुत्तावलि-मंडिअ-थण-कमल ।
सेअंसुअ-पंगुरण-बहल-सिरिहंड-रसुज्जल,
बहु-पहुल्ल-विअइल्ल-फुल्ल-फुल्लविअ-कुंतल ॥
तो पयड धाइ दंसण-जणिअ-खलयण-डर-भर-भारिअ ।
अहिसरइ चंद-सुंदर-निसिहिं पइं पिअयम अहिसारिअ ॥ १३४

'जेणे पोताना कानमां झगमगती हीराना कुंडळनी जोड पहेरी छे,
जेणे पोताना स्तनकमळने मोटा निर्मळ मोतीनी माळाथी विभूषित कर्यां छे।
जेणे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां छे,
जेनुं शरीर श्वेत चंदनना लेपथी गौर बन्युं छे ।
जेना केश सुविकसित विचकिल पुष्पोथी शणगारेला छे,
तेवी आ अभिसारिका, चांदनीथी उज्ज्वळ रात्रिमां दुष्ट लोको तेने जोई जशे
अने ते खुल्ली पडी जशे एवा डरथी भयभीत बनेली,
हे प्रियतम तारा तरफ अभिसार करी रही छे ।

वदनक + कर्पूरनी द्विभंगीनुं उदाहरण :

किं न फुल्लइ पाडल पर-परिमल, महमहेइ किं न माहवि अविरल ।
नवमालिअ किं न दलइ पहिल्लिअ, किं न उत्थरइ कुसुम-भरि मल्लिअ ॥
दीहिअ-तलाय-सर-तल्लडिहिं, किं न पसाहि पउमिणि फुडइ ।
तु-वि जाइ-जाय-गुण-संभरणु, झाणु कि भसलहु मणि खुडइ ॥ १३५

'शुं भरपूर परिमलवाळी पाटला विकसित नथी ?
शुं माधवी अविरत मघमघती नथी ?
शुं डोलती नवमालिका खीलती नथी ?
शुं मल्लिका पुष्पसमूहे समृद्ध बनती नथी ?
शुं वाव, तळाव, सरोवर अने तळावडीमां कमलिनीनां दल विस्तरतां नथी ?
तेम छतांये जाईना गुणोनुं स्मरण करतां भ्रमरना चित्तनी एकाग्रता तूटती नथी ।'

वदनक + कुंकुमनी द्विभंगी नुं उदाहरण :

जइ तुहुं महु करयलु उम्मोडवि,
चल्लिअ चीरंचलु अच्छोडवि ।
माणिणि तु-वि पसाउ करि सुम्मउ,
पइं पिइ उत्तावलिअ म गम्मउ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जइ किवँइ-वि खंचह पय-जुयलु इहु विहि-वसिण विहट्टइ ।
ता तुज्झ मज्झु खीणउ खरउ, किं न खामोअरि तुट्टइ ॥ १३६

'हे मानिनी, तुं मारो हाथ मरडीने अने तारा चीरनो पालव छोडावीने भले चाली जती, तो पण तुं कृपा करीने मारुं कहेवुं सांभळ : हे प्रिया, तुं उतावळे चाल मा, केम के जो अकस्मात् खचको आवतां तारा बंने पग लथडशे तो हे कृशोदरी, तारी अतिशय कृश कटि तूटी तो नहीं पडे ?

नोंध : वस्तुवदनक, कर्पूर वगेरे छंदो जोडाईने बनती विविध द्विभंगीओ मागधोमां षट्पद के सार्धछंद एवा सामान्य नामे प्रसिद्ध छे । कह्युं छे के :

जइ वत्थुआण हेट्ठे उल्लाला छंदयम्मि किज्जंति ।
दिवढ-च्छंदय-छप्पय-कव्वाइं ताइं वुच्चंति ॥ १३७

'वस्तुकना प्रकारना छंदोनी पछी उल्लाल योजीने जे छंदो रचवामां आवे, ए छंदोने सार्ध छंद, षट्पद के काव्य एवी संज्ञाओ अपाय छे ।'

आ ज प्रमाणे मात्राछंदनी साथे द्विपदी अने उल्लाल ए छंदो जोडीने तथा वस्तुक वगेरे छंदोनी साथे दोहा वगेरे छंदो जोडीने द्विभंगीओ बनावाय छे ।

मान्य परंपरा अनुसार रड्डा छंदनुं (ते द्विभंगी होवा छतां पण) अलग निरूपण कर्युं छे तो तेमां कशो दोष नथी ।

त्रिभंगिका (त्रण छंदोनुं जोडाण)

द्विपदी + अवलंबक + गीतिनी त्रिभंगिकानुं उदाहरण :

निब्भर-दलिअ-सत्तदल-पायव-संकड-तडिणि-पुलिणिआ,
सेहालिअ-पसूण-पर-परिमल-पुण्ण-पहाय-पवणया ।
कुवलय-गंध-लुद्ध-फुल्लंधुअ-पत्थुअ-गी' ति-भंगिआ',
पंकय-वण-कणंत-कलहंसी-कुल-हुंकार-संगिआ ॥
ओहट्टिअ-चिक्खल्लया, निम्मल-जल-सोहिल्लया,
राय-रणूसव-दूअया, कलमामोअ-पसूअया ॥
तिहुअण-लच्छी-भवणया जोण्हा-जल-भरिअ-नहयलाभोअया,
कस्स न हरंति चित्तयं एए लोअम्मि सारया दिअहया ॥ १३८

'जेमां पूरेपूरा विकसित सप्तपर्णना तरुओथी नदीना तीरप्रदेशो खीचोखीच छे,
जेमां प्रभातनां पवनो शेफालिकाना पुष्पपरिमले सभर छे,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जेमां नीलकमळना परिमलमां लुब्ध बनेला भ्रमरोए विवध रीते गीत गावानुं आरंभ्युं छे,
जेमां कमळवनमां कलरव करती कलहंसीओना नाद प्रसरी रह्या छे,
जेमां कीचड सूकाई गयो छे,
जे निर्मळ जळथी शोभे छे,
जे राजवीओना संग्रामउत्सवना दूत छे,
जेमां कलमी चोखानी आछी सुगंध आवे छे,
जे त्रिभुवननी सुंदरताना आवास छे,
जेमां आकाशना विस्तारने ज्योत्स्नाजळ भरी दे छे,
तेवा आ शरदऋतुना दिवसो आ जगतमां कोनुं चित्त हरी लेता नथी ?'

आ ज प्रमाणे बीजा पण कर्णमधुर त्रण त्रण छंदोने जोडवाथी त्रिभंगिका बने छे ।

मंजरी+खंडिता+भद्रिकानी त्रिभंगीनुं उदाहरण :

उच्छलंत-छप्पय-कल-गीति-भंगि-धरे, विप्फुरंत-कलयंठि-कंठ-पंचम-सरे ।
गिज्जमाण-हिंदोलालवण-पसाहिए, चच्चरि-पडहोद्दाम-सद्द-संबाहिए ॥
विअसिअ-रत्तासोअ-लए, केसर-कुसुमामोअमए ।
पप्फुल्लिअ-मायंद-वणे, घण-घोलिर-दक्खिण-पवणे ॥
इअ एरिसम्मि चेत्तए जस्स न पासम्मि अत्थि पिअ-माणुसं ।
सो कह जिअइ वयंसिए विद्धो मयरद्धयस्य भल्लिआहिं ॥ १३९

'जेमां भ्रमरना मधुरगाननी भंगि ऊछळी रही छे,
जेमां कोयलना कंठमांथी पंचमस्वर स्फुरी रह्या छे,
जे गवाता हिंडोळरागना आलापथी विभूषित छे,
जेमां चर्चरीमां बजता मृदंगनो प्रबळ धमधमाट छे,
जेमां रक्त अशोकनी लता विकसी छे,
जेमां केसर पुष्पनो परिमल मघमघे छे,
जेमां अमराई महोरी छे,
जेमां दक्षिणानिल वेगथी घूमी रह्यो छे,
तेवा चैत्रमासमां जेना संगमां पोतानुं प्रियजन नथी ते माणस,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हे सखी, कामदेवनां बाणोथी वींधायेलो कई रीते जीवी शके ?'

समशीर्षक

ज्यारे गाथ छंदना पहेला अर्धना छेल्ला गुरुनी पहेला बेकी संख्याना चतुष्कल गण उमेरवामां आवे, अने छेल्ला गुरुने स्थाने एक त्रिकल योजवामां आवे, त्यारे ए रीते बनेलां चार चरणोनो जे छंद बने, तेनुं नाम समशीर्षक ।

समशीर्षक छंदनुं उदाहरण :

सरसयर-सुरहि-सुस्साय-तरुण-मायंद-मउल-मंजरि-दलोह-कवलण-कसाय-संसुद्ध-कंठ-कलयंठि-निअर-कंठोच्छलंत-पंचम-पलाव-वोल्लालयम्मि रुंदारविंद-मयरंद-बिंदु-संदोह-पाण-साणंद-भमर-निउरंब-बहल-झंकार-मुहलिउज्जाण-चारु-लच्छीए तिहुअण-मणहरे,

दक्खिण-समुद्द-कल्लोल-मालिआ-तरण-संग-निव्वविअ-मलय-मारुअ-झडप्प-हल्लंत-विविह-बहु-वेल्लि-गहण-घण-कुसुम-गोच्छ-उच्छलिअ-पउर-पिंजर-पराय-पडिहत्थ-दह-दिसा-चक्क-दंसणुप्पण्ण-पिअयमा-भरण-मिलिअ-मुच्छा-पहार-निवडंत-पहिअ-संघाय-रुद्ध-मग्गंतर-दूसंचर-धरे ।

पप्फुडिअ-सघण-किंसुअ-समूह-कणिआर-कुंज-वर-कंचणार-केसर-लवंग-चंपय-पिंअंगु-मल्ली-महल्ल-माहवि-विआण-कंकेल्लि-तिलय-कुरुबय-पिआल-पुन्नाग-नागकेसर-सुवण्ण-केअइ-कुडंग-पाडल-तमाल-नोमालिउल्ल-पसरंत-परम-परिमल-थवक्क-महमहिअ-समत्त-वणंतरे,

मा वच्च कंत चत्तूण मं इमं मयण-पीडिअं तरुणि-सत्थ-चच्चरि-विणोअ-'समसीस'-नट्ट-दंडाहिघाय-सद्दंतराल-तालाणुलग्ग-घुम्मंत मद्दलोल्लसंत-सर-भेअ-साहण-ट्ठाण-सहम्मि वसंतए ॥ १४०

'हे कान्त, मदनथी पीडित एवी मने त्यजी दईने तुं आ वसंतऋतुमां प्रवासे न जा ।

केवी छे ए वसंतऋतु ?

जे सरस, सुगंधी, स्वादिष्ठ ताजी विकसेली कोमळ, आम्रमंजरीनी पांदडीओ खावाथी जेमनो कंठ कषायित अने शुद्ध बन्यो छे तेवी कोयलोना कंठमांथी ऊछळता पंचम सूरोना कोलाहलनो निवास छे,

जे ऋतुमां विकसेलां कमळोनां मकरन्दबिंदुओनुं पान करवाथी आनंदित बनेला भ्रमरवृंदना प्रबळ गुंजारवथी मुखरित बनेला उद्यानोनी रमणीय शोभाथी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्रिभुवन मनोहर बन्युं छे,

जे ऋतुमां दक्षिणसमुद्रनी तरंगमाळाना स्पर्शे शीतळ बनेला मलयानिलनी लहरीओथी डोलती जातजातनी अनेक वल्लरीओना भरपूर अने सघन कुसुमगुच्छोमांथी ऊछळता परागथी रक्तवर्ण बनेल दशे दिशाओना समूहने जोईने प्रियतमानुं स्मरण थवाथी मूर्छाविवश बनीने नीचे पडेला प्रवासीओने लीधे मार्गो आवजा माटे मुश्केल बन्या छे;

जे ऋतुमां विकसित बनेल घाटा किंशुकतरुओ, करेणनी कुंजो, सुंदर कांचनार, बोरसल्ली, लविंग, चंपक, प्रियंगु, मल्लिका, विस्तृत माधवीमंडपो, अशोक, तिलक, कुरबक, प्रियाल, पुन्नाग, नागकेसर, सोनेरी केवडानी कुंजो, पाटल, तमाल, नवमालिका—एमना प्रसरता प्रचुर भीना परिमलना गुच्छोथी समस्त वनांतराल मघमघी रह्युं छे;

अने जे ऋतु तरुणीओना स्पर्धायुक्त चर्चरीनृत्यना उत्सवमां दांडियाओना तालबद्ध ठपकारानी वच्चे जोरथी वगाडाता मृदंग साथे गवाता मधुर हिंडोळरागना आलापनी सुंदर छटाओ साथे वांसळीनां छिद्रोमांथी ऊछळता विविध स्वरोना सुमेळथी संपन्न छे ।'

नोंध :- आ छंदमां बेकी स्थाने जगण अथवा चार लघु होवा जोईए अने छेल्ला चतुष्कलनी पहेलाना एक चतुष्कलने स्थाने जगण के चार लघु न होवा जोईए एवी प्रथा छे ।

विषमशीर्षक

जो मालागलितक छंदना प्रत्येक चरणने अंते एकी संख्यानी चतुष्कलनी जोडीओ उमेरवामां आवे तो जे छंद बने तेनुं नाम विषमशीर्षक । मालागलितक छंदनी जेम आ छंदमां पण बेकी स्थाने जगण के चार लघु होवा जोईए अने एकी स्थाने जगण न होवो जोईए ।

विषमशीर्षकनुं उदाहरण :

हयवर-खुर-खणिज्जमाण-महि-रेणु-पडल-बहलिज्जमाण-गयणं-गणुत्थरिद-अविरलंधार-पुंज-संवलण-रुद्ध-लोअण-विलोअण-पवंच-मच्छरिअ-पर-वसो अवयइ समंतदो तुरिदममर-निसरो,

निब्भर-संचरंत-चउरंग-सेन्न-पब्भार-चलिर-नीसेस-भू-वलय-खडहडंत-मंदर-सुमेरु-कइलास-विंझ-गिरिनार-पभुदि-गिरि-सिहर-निवडणाइ-भर-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भंगुरिद-कंधराइ तम्मइ वराह-पवरो ।

धाणुक्कावमुक्क-नाराय-विद्ध-करडि-घड-कुंभ-तड-निवडिदाविरल-रंध-निज्झर-झरंत-सोणिद-तरंगिणी-रइअ-बहल-पंक-खुप्पंत-चक्क-रह-संचराओ एआओ भीसणाओ समरवसुहाओ,

सु'विसम-सीसयाइ' निवडंति हुंकरंताइं पिच्छ निसिद-करवाल-धाराहिघाय-घुम्मंतयाइं संपइ इमाओ नच्चंति बहुविह-सुहड-कबंध-पंतीओ सुरवहु-मुक्क-पारिजाय-विडवि-कुसुमाओ ॥ १४१

'आ संग्रामभूमिमां

घोडाओनी खरीओथी खोदाती भोंयनी धूळना गोटाथी भराई जता आकाशमांथी प्रसरतो गाढ अंधकार आंखो पर छवाई जतां दृष्टि रूंधाई जवाथी जे आश्चर्यथी वशीभूत बनी गयुं छे तेवुं देवोनुं वृंद उतावळे चोतरफ नीचे ऊतरी रह्युं छे;

विशाळ तुरंगसेनाना समुदायनी कूचथी खखडी जतां समग्र पृथ्वीमंडळ परनां मंदर, सुमेरु, कैलास, विंध्य, गिरनार वगेरे पर्वतोनां शिखरो ढळी पडवाथी जेनी कांध भारने लीधे वांकी वळी गई छे तेवो धरणीवराह दु:खी थई रह्यो छे;

धनुर्धारीओए छोडेला बाणोथी गजघटाना वींधायेला कुंभस्थळोनां छिद्रोमांथी अविरत झरता शोणितप्रवाहथी बनेली नदीने लीधे थयेला कादवकीचडमां पैडा खूंपी जतां मुश्केलीथी फरी शकता रथोने लीधे भीषण बनेली आ संग्रामभूमिमां जेमनां हुंकार करतां मस्तक तीक्ष्ण तलवारनी धारना प्रहारथी घूमतां कपाईने पडी जाय छे,

तेवी सुभटोना धडोनी केटकेटली हारमाळा नाची रही छे ते तुं जो-जे सुभटोनी उपर अप्सराओए पारिजात वृक्षनां पुष्पोनी वर्षा करी छे ।'

हेमचंद्राचार्य-रचित वृत्तियुक्त छंदोनुशासननो
'आर्या-गलितक-खंजक-शीर्षक-वर्णन'
नामनो चोथो अध्याय समाप्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पांचमो अध्याय

उत्साहादि-वर्णन

मंगल

अवमन्निअदुट्ठ-चित्त-संगमय-चक्क-घाय
जे ते सोच्छाह नाह झायंति तुज्झ पाय ।
ते ते संसारि वीर कह-वि न लहंति दुक्खु,
जं किर वच्चंति झत्ति पहु निच्छएण मोक्खु ॥ १

'दुष्ट आशयवाळा (अधमदेव) संगमकना चक्र वडे करायेला प्रहारोने जेणे अवगण्या हता तेवा हे महावीर, जे लोको उत्साहपूर्वक तारा चरणनुं ध्यान धरे छे, तेओ संसारमां कोई पण प्रकारे दुःखी थता नथी; केम के ए लोको निश्चितपणे तरत ज मोक्ष पामे छे ।

सुर-रमणी-अण-कय-बहुविह-रासय-थुणिअ,
जोइ-विंद-विंदारय-सय-अमुणिअ-चरिअ ।
सिरि-सिद्धत्थ-नरेसर-कुल-चूला-रयण,
जयहि जिणेसर वीर सयल-भुवणाभरण ॥ २

'देवीओए रचेला अनेक विध रासमां जेमनुं स्तोत्रगान करायुं छे अने सेंकडो योगीवर्यो पण जेमना चरितनें पामी शक्या नथी, एवा त्रिभुवनभूषण अने सिद्धार्थ राजाना कुळना चूडमणि हे जिनेश्वर महावीर, तारो जय हो ।'

रासक (सामान्य संज्ञा)

केटलाकना मते जातिवर्गना बधा छंदो रासक कहेवाय छे । कह्युं छे के

सयलाओ जाईओ, पत्थाववसेण एत्थ बज्झंति ।
रासा-बंधो नूणं, रसायणं वेज्झ-गोट्ठीसु ॥ ३

'रासाबंधमां सर्व जातिछंदो प्रस्तुतता प्रमाणे योजवामां आवे छे । काव्यरसिकोनी गोष्ठीओमां रासाबंध खरेखर रसायणरूप छे ।'

रासक (विशेष)

अथवा तो पांच चतुष्कल अने एक लघु तथा एक गुरु जेनी प्रत्येक पंक्तिमां होय, तेवो छंद ते रासक । आ व्याख्या प्रमाणेना रासकमां चौद मात्रा पछी यति होवी जरूरी नथी ।

आ प्रकारना रासकनुं उदाहरण :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोवीअण-दिज्जंत-'रासय' निसुणंतहं,
वासारत्ति पहुच्चइ पहिअहं पवसंतहं ।
निअ-वल्लह तिवँ केवँइ हिअयंतरि निवडिअ,
जिवँ जंतह न वहंति चलण नावइ निअडिअ ॥ ४

'प्रवासे नीकळता प्रवासीओनो ज्यारे वर्षाकाळ आवी पहोंचे छे, त्यारे गोपीओ वडे रमाता रासोने सांभळतां पोतानी प्रियतमा तेमना हृदयनी भीतर कंईक एवी रीते आवी पडे छे, जेथी करीने तेमना चरण जाणे के बेडीमां बंधायां होय तेम प्रयाणवेळा चाली शकतां नथी' ।

अवतंसक

जेना प्रत्येक चरणमां एक चतुष्कल, एक पंचकल, बे जगण अने एक यगण (⏑ ⏑ –) होय, ते छंदनुं नाम अवतंसक ।

अवतंसकछंदनुं उदाहरण :

सायरु रयणायरु बोल्लहिं जें बुह-सत्थ,
तं सच्चु जि जाय निसायर-कुच्छुह जत्थ ।
जह एक्कु हूउ सिरिकंठ-सिरे 'अवयंसु',
अवरु सिरि-नाह-उरि भूसणु उल्लसिअंसु ॥ ५

'डाह्या लोको सागरने रत्नाकर कहे छे ते साचुं जे छे, कारण के सागरमांथी चंद्र अने कौस्तुभनो उद्‌भव थयो छे : तेमांथी एक (चंद्र) शंभुना मस्तकनुं आभूषण बन्यो छे अने चमकतां किरणोवाळो बीजो (कौस्तुभ) लक्ष्मीपति विष्णुना वक्षःस्थळनुं आभूषण बन्यो छे ।'

कुंद

जेना प्रत्येक चरणमां एक चतुष्कल, बे पंचकल, एक ज गण अने बे गुरु होय, ते छंदनुं नाम कुंद ।

कुंदछंदनुं उदाहरण :

अहरुट्ठ दलइ जवा-पसूण दंत 'कुंद',
पाणि-चरण-नयण-वयण विअसिआरविंद ।
कुसुमपुरु पच्चक्खु वि सुंदरि तुज्झ देहु,
तुहुं वरु मज्झु-देसु वहसि विवरीउ एहु ॥ ६

'हे सुंदरी, तारा अधरोष्ठ जासुदना फूलने, दांत कुंद पुष्पने अने तारा हाथ चरण, नयन अने वदन विकसित अरविंदने पराजित करे छे । आ रीते तारो देह प्रत्यक्ष

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"कुसुमपुर" (१. पुष्पसमूह, २. पाटलिपुत्र नगर) छे। तो पण तुं उत्तम "मध्यदेश" (१. कटिप्रदेश, २. मध्यदेश) धरी रही छे ए तो एक भारे विरोध छे।'

करभक

जेना प्रत्येक चरणमां बे पंचकल, बे चतुष्कल, एक जगण अने एक गुरु होय, ते छंदनुं नाम करभक।

करभकछंदनुं उदाहरण :

'कर-हय-'थणहर-गलिअ-लोल-मणोहर-हारय,
गंडत्थल-लुलिअ-मइल-जडिल-कुंतल-भारय।
अणवरय-बाह-निवडण-सूण-सोण-विलोअण,
तुहु हुअ नरवइ-तिलय संपय वेरि-वहुअण ॥ ७

'हे नृपतिओना तिलकरूप, हाथवती स्तनो पर प्रहार करवाथी जेमना डोलता सुंदर हार तूटी पड्या छे, जेमनो मेलो, गूंचवायेलो केशपाश गाल पर आळोटी रह्यो छे, जेमना लोचन सतत अश्रुपातथी सुझेलां अने लाल बनी गयां छे—एवी तारा शत्रुओनी स्त्रीओनी अत्यारे दुर्दशा थई छे।'

इंद्रगोप

जेना प्रत्येक चरणमां एक चतुष्कल, बे पंचकल, बे चतुष्कल अने एक गुरु होय, ते छंदनुं नाम इंद्रगोप।

इंद्रगोपछंदनुं उदाहरण :

रेहहिं अरुण-कंति धरणीअलि 'इंदगोवया',
पाउस-सिरिहि नाइ पय जावय-बिंदु-लग्गया।
एह-वि विज्जु-लेह झलकंतिअ बहल-कंतिआ,
लक्खिज्जइ जायरूव-निम्मिविअ-व्व कंठिआ ॥ ८

'धरणीतल उपर राता वर्णना इंद्रगोप जाणे के वर्षालक्ष्मीनां अळतानां टपकांवाळां पगलां होय तेवां शोभे छे, अने आ अतिशय प्रकाशे चमकती विद्युत्-रेखा वर्षालक्ष्मीनी सोनानी कंठी जेवी लागे छे'।

कोकिल

जेना प्रत्येक चरणमां एक चतुष्कल, बे पंचकल, बे चतुष्कल, एक लघु अने एक गुरु होय, ते छंदनुं नाम कोकिल।

कोकिलछंदनुं उदाहरण :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हंसि तुहारउ गइ-विलासु पडिहासइ रित्तओ,

'कोइल'-रमणिअ तुह-वि कंठु कुंठत्तणु पत्तओ ।

विरहय-कंकेल्लिहिं दोहल संपइ पूरंतिअ,

जं किर कुवलय-नयण एह हिंडइ गायंतिअ ॥ ९

'हे हंसी, तारो गतिविलास जाणे के शून्य समो लागे छे, हे कोयल, तारो कंठ जाणे के जड बनी गयो लागे छे, कारण के विरहकतरु अने अशोकना दोहदने पूरा करती आ नीलकमळ जेवां नयनवाळी सुंदरी गाती गाती भ्रमण करी रही छे ।'

दर्दुर

जेना प्रत्येक चरणमां एक चतुष्कल, बे पंचकल एक लघु अने एक गुरु होय, ते छंदनुं नाम दर्दुर ।

दर्दुरछंदनुं उदाहरण :

मत्तंबुवाह वरसंतिण पइं समहिउ,

आयण्णसु संपय महिअलि जं विरइउ ।

हंसहं कल-सद्दिण जं आसि मणोहरु,

'दद्दुर'-रडिआउलु निम्मिउ तं सरवरु ॥ १०

'हे मदमत्त जळधर, तें पुष्कळ वरसीने हवे धरती उपर केवी दशा करी छे ते सांभळ ! जे सरोवर हंसोना कलरवथी रमणीय हतुं, तेने तें देडकाओना ड्राउं ड्राउं-थी भरी दीधुं छे' ।

आमोद

जेना प्रत्येक चरणमां एक चतुष्कल, एक रगण (–⌣ –) एक जगण (⌣ – ⌣) , एक मगण (– – –) अने एक गुरु होय ते छंदनुं नाम आमोद।

आमोदछंदनुं उदाहरण :

असोअ-मंजरी-फुरंत-'आमोए'सुं, कल-रोलंब-वंद्र-कायली-सद्देसुं ।

अणवरयं वहंत-सारणी-तोएसुं, धन्ना के-वि जे रमंति उज्जाणेसुं ॥ ११

'जेमां अशोकमंजरीनो परिमल स्फुरी रह्यो छे, जेमां भ्रमरगणोनो मधुर गीतध्वनि संभळाय छे, जेनी नीकोमां सतत जळ वही रह्युं छे, तेवां उद्योनोमां जे कोईक लोक क्रीडा करता होय ते धन्य छे ।'

विद्रुम

जेना प्रत्येक चरणमां एक मगण (– – –), एक रगण (– ⌣ –), एक लघु, एक गुरु, बे पंचकल अने एक सगण (⌣⌣ –) होय, ते छंदनुं नाम विद्रुम।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विद्रुमछंदनुं उदाहरण :

भ्रू-वल्लि चावयं मणोहवस्स ससि-तुल्लं वयणं,
अंगं चामीअर-प्पहं अहिणव-कमल-दलं नयणं ।
तीए हीरावलिं व दंत-पंति 'विद्रुमं' अहरं,
पेच्छंताणं पुणो पुणो काण न हवइ मणं विहुरं ॥ १२

'तेनी कामदेवना धनुष्य जेवी भ्रूलता, चंद्र जेवुं वदन, सोनावरणुं अंग, विकसित कमळनी पांखडी जेवां नयन, हीरानी श्रेणी जेवी दंतपंक्ति अने परवाळां जेवो अधरोष्ठ—ए जोनारा कया लोकोनुं मन वारंवार आकुळव्याकुळ न बने ?'

मेघ

जेना प्रत्येक चरणमां एक रगण (- ˘ -), अने चार मगण (- - -) होय ते छंदनुं नाम मेघ ।

मेघछंदनुं उदाहरण :

'मेहयं' मच्चंतं गज्जंतं संनद्धं पेच्छंता,
उब्भडेहिं विज्जुज्जोएहिं धोरेहिं मुच्छंता ।
केअइ-गंधेणोद्दामेसुं मग्गेसुं गच्छंता,
ते कहं जीअंते कंताणं दूरेणं अच्छंता ॥ १३

'मदमत्त बनी गाजता घेरायला मेघोने जेओ जुए छे, वीजळीना प्रबळ, घोर झबकारथी जेओ मूर्छित बन्या छे, अने केवडानी उग्र सुगंधवाळा रस्ताओ उपर जेओ जई रह्या छे, ए लोको पोतानी प्रियतमाथी दूर रहेतां कई रीते जीवी शके ?'

विभ्रम

जेनी प्रत्येक पंक्तिमां एक तगण (-- - ˘), एक रगण (- ˘ -), एक यगण (˘ - -), एक लघु अने एक गुरु होय ते छंदनुं नाम विभ्रम ।

विभ्रमछंदनुं उदाहरण :

लायण्ण-'विब्भमं' तरंगंतिहिं, निद्दड्ढ-वम्महं जिआवंतिहिं ।
प्रेमिं प्रियाहिं जे पुलोइज्जइ, ता मत्त-लोइ सग्गु पाविज्जइ ॥ १४

'लावण्यना लीलाविलासनी लहरीओ जे रेलावे छे, दहन थयेला मन्मथने जे पुनर्जीवित करे छे तेवी प्रियतमाओ ज्यारे प्रेमदृष्टिथी जुए छे त्यारे मृत्युलोकमां ज स्वर्गनी प्राप्ति थाय छे ।'

नोंध :- मेघ अने विभ्रम छंद बंने वर्णवृत्त होवा छतां तेमनुं निरूपण त्रीजा अध्यायमां नथी कर्युं, कारण के पुरोगामीओए एमनो अपभ्रंश छंदोमां समावेश

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर्यो छे ।

कुसुम

जेना प्रत्येक चरणमां एक चतुष्कल, एक पंचकल, एक जगण (˘ – ˘) अने बे गुरु होय ए छंदनुं नाम कुसुम ।

कुसुमछंदनुं उदाहरण :

निच्छिउ करिवि चंदु दोण्णि खंड, तहि निम्मिअ मय-नयणाहि गंड ।
वर-'कुसुम' घडेविणुं गंध-चंगु, कोमलु तहि विरइउ एहु अंगु ॥ १५

'नक्की आ मृगनयनाना गाल चंद्रना बे भाग करी एना वडे निर्मित कर्या छे, अने पहेलां एक उत्तम सुंगधी पुष्प घडी काढीने तेनो आ देह रच्यो छे' ।

नोंध :- पुरोगामीओए अहीं चंद्रक, खंजकांत, चंचल, चलतनु, वीरप्रिय, कुपित, रुष्ट, कृष्ण, सित, दानद, कुरर, शिव वगेरे बीजा पण रासकप्रकारोनुं निरूपण कर्युं छे । परंतु तेमांथी केटलाकनो बीजा छंदोमां समावेश थई जतो होवाथी अमे तेमनुं निरूपण नथी कर्युं ।

रासा

जेनां एकी चरणोमां सात मात्रा अने बेकी चरणोमां तेर मात्रा होय ते छंदनुं नाम रासा ।

रासाछंदनुं उदाहरण :

सुणिवि वसंति, पुर-पोढ-पुरंधिहिं 'रासु' ।
सुमरिवि लडह, हुअ तक्खणि पहिउ निरासु ॥ १६

'वसंतुऋतुमां नगरनी प्रौढ रमणीओ वडे गवातो रास सांभळीने प्रवासीने पोतानी सुंदरीनुं स्मरण थई आवतां ते हताश बन्यो ।'

मात्रा

जेना पहेला, त्रीजा अने पांचमा चरणमां बे पंचकल, एक चतुष्कल अने एक द्विकल होय, बीजा अने चोथा चरणमां त्रण चतुष्कल होय, तथा त्रीजा अने पांचमा चरणमां जे चतुष्कल होय, तेमनुं स्वरूप जगणनुं (˘ – ˘) अथवा तो चार लघुनुं होय त्यारे, त्रण चरणथी जेनो पूर्वार्ध बन्यो छे अने बे चरणोथी जेनो उत्तरार्ध बन्यो छे तेवा पंचपदी छंदनुं नाम मात्रा ।

मात्राछंदनुं उदाहरण :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'मत्त'-कोइल-नाय-णंदीहिं,
सिंगार-रसोग्गमिण, नच्चमाण-मायंद-पत्तिहिं ।
अहिणिज्जइ मयण-जय-, नाडउ-व्व संपइ वसंतिण ॥ १७

'जेमां मदमत्त कोयलना कलरवनी नांदी छे, शृंगाररसनुं प्रकटन छे, आम्रतरुओनां पर्णोनुं नृत्य छे, तेवा वसंतकाळ वडे अत्यारे मदनविजय नाटक भजवाई रह्युं छे ।'

नोंध :- संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश वगेरे विभागमां निरूपित छंदोनो **घणुं खरुं** ते ते भाषामां प्रयोग थाय छे, एम अमे कह्युं होवाथी आ मात्राछंदनो संस्कृत भाषामां पण प्रयोग मळे छे । जेम के (धनपालकृत 'तिलकमंजरी' मां) :

शुष्क-शिखरिणि कल्प-शाखीव,
निधिरधन-ग्राम इव, कमल-खंड इव मारवेऽध्वनि ।
भव-भीष्मारण्य इह, वीक्षितोऽसि मुनि-नाथ कथमपि ॥ १८

'हे मुनिराज, निर्जळ पर्वत उपर कल्पवृक्षनी जेम, निर्धन गाममां धनभंडारनी जेम, मरूभूमिना मार्ग पर कमळसरोवरनी जेम केमे करीने आ संसाररूपी भयानक अरण्यमां तमारां दर्शन थयां छे ।'

मात्रा छंदना प्रकारो

मत्तबालिका मात्रा

जो मात्रा छंदना त्रीजा के चोथा चरणमां अथवा तो ए बंने चरणोमां, पहेला चतुष्कलने स्थाने पंचकल होय तो ते मात्रानुं नाम मत्तबालिका ।

जे मत्तबालिकामां बीजा चरणमां पहेलां चतुष्कलने स्थाने पंचकल होय तेनुं उदाहरण :

कुमुअ-कमलहं एक्क उत्पत्ति,
मउलेइ तु वि कमल-वणु, कुमुअ-संडु निच्चु-वि विआसइ ।
सच्छंद विआरिणिअ, चंद-जोण्ह किं 'मत्त-बालिअ' ॥ १९

'कुमुदनी अने कमळनी उत्पत्ति एक सरखी होवा छतां चंद्रनी ज्योत्स्ना कमळोने करमावे छे अने कुमुदोने विकसावे छे । जेणे मदपान कर्युं छे तेवी बालिकानी जेम ज्योत्स्ना स्वछंदपणे वर्ते छे ।'

जेना चोथा चरणमां पहेला चतुष्कलने स्थाने पंचकल होय तेवा मत्तबालिका-छंदनुं उदाहरण :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गहिरु गज्जइ धरइ मय-वारि,
विहलंधलु नहु कमइ, दुन्निवारु दिसि-दिसि पलोट्टइ ।
ओ 'मत्त-बालिअ'-सरिसु, विसम-चेट्ठु पाउसु पयट्टइ ॥ २०

'वर्षाऋतु घेरी गर्जना करे छे, अमृत जेवुं जळ धरावे छे, व्याकुळपणे आकाश पर आक्रमण करे छे, अने न निवारी शकाय एवी रीते ते दिशोदिश आळोटे छे : एम विचित्र चेष्टा करे छे— जेम कोई मदपान करेली बालिका मोटेथी बबडाट करे, व्याकुळ होईने चाली न शके, लाचारीथी आमतेम बधे आळोटे - एम अस्वस्थपणे वर्ते ।'

जेना बीजा तेम ज चोथा चरणना पहेला चतुष्कलना स्थाने पंचकल होय तेवा मत्तबालिकाछंदनुं उदाहरण :

पेच्छ पाउस-ल्लच्छि उच्छलइ,
मउलंति सव्वाउ दिस, धडहडंति घण-'मत्त वालिअ' ।
फुट्टंति केअइ-कुसुम, पिइ पउत्थि कह जिअइ बालिअ ॥ २१

'जो तो, बधी दिशाओने ढांकी देती वर्षालक्ष्मी प्रसरी रही छे । अत्यंत मत्त बनेला मेघो गडगडे छे । केतकीपुष्पो विकसे छे । जेनो प्रियतम प्रवासे गयेलो होय तेवी बाळा (आ ऋतुमां) कई रीते जीवन धारण करे ?'

मत्तमधुकरी मात्रा

जे मात्राछंदना बीजा के चोथा चरणमां, अथवा तो बंने चरणोमां त्रीजा चतुष्कलने स्थाने एक त्रिकल होय-त्यारे ते मात्रानुं नाम मत्तमधुकरी ।

जेमां बीजा चरणना त्रीजा चतुष्कल ने स्थाने त्रिकल होय तेवा मत्तमधुकरी-छंदनुं उदाहरण :

'मत्त-महुअरि'-तार-झंकार,
कलयंठि-कलयलहिं, मयण-धणुह-टंकार-सरिसिहिं ।
कह जीवहुं विरहिणिउ, दूर-देस-पवसंत-रमणिउ ॥ २२

'ज्यारे कामदेवना धनुष्यना टंकार जेवा मदमत्त भ्रमरोना उत्कट गुंजारव थता होय, कोयलोनो कलरव थतो होय, त्यारे जेमना प्रियतम दूर देशमां प्रवासमां होय, तेवी विरहिणीओ कई रीते जीवन धारण करी शके ?'

जेमां चोथा चरणमां त्रीजा चतुष्कलना स्थाने त्रिकल होय, तेवा मत्तमधुकरी-छंदनुं उदाहरण :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फुडिअ-केसर-तिलय-मायंदि,
पप्फुलिअ-कमल-वणि, सुरहि-मासि संपइ पयट्टइ ।
मत्त-महुअरि-रविण, मयण-चरिउ वण-लच्छि गायइ ॥ २३

'जेमां बोरसल्ली, तिलक अने आम्रतरु खील्यां छे, कमळवन विकस्युं छे तेवो वसंतमास अत्यारे प्रवर्ते छे, जेमां वनलक्ष्मी मदमत्त भ्रमरीओना गुंजारव मिषे कामदेवना चरित्रनुं गान करी रही छे' ।

जेमां बीजा अने चोथा ए बंने चरणोमां त्रीजा चतुष्कलने स्थाने त्रिकल होय एवा मत्तमधुकरीछंदनुं उदाहरण :

गुण-विवज्जिइ पुरिसि रच्चेइ,
गुणवंति परम्मुहि, तह य पंकउप्पन्नि निवसइ ।
'मत्त-महुअरि' कमलि, अहह लच्छि अविआर विलसइ ॥ २४

'निर्गुण पुरुषमां राचे छे, गुणवान पुरुषथी मोढुं फेरवी ले छे अने कादवमां उत्पन्न थता, मदमत्त मधुकरवाळा कमळमां निवास करे छे : अरेरे ! अविचारी लक्ष्मीनो आ केवो विलास छे !'

मत्तविलासिनी मात्रा

जे मात्राछंदमां त्रीजा अथवा पांचमा चरणमां, अथवा तो ते बंने चरणोमां रहेला बे पंचकलने स्थाने जो बे चतुष्कल होय, तो तेनुं नाम मत्तविलासिनी ।

जेमां त्रीजा चरणमां बे पंचकलने स्थाने बे चतुष्कल होय, तेवा मत्तविलासिनी छंदनुं उदाहरण :

समय-मयगल-गमण-रमणिज्जु,
मय-भिंभल-नयण-जुउ, आरत्त-कवोल-सोहिरु ।
'मत्त-विलासिणि'-निअरु, हरइ चित्तु लल्लुर-पयंपिरु, ॥ २५

'मदमत्त हाथीनी जेवी गतिने लीधे रमणीय, मदपानथी विह्वळ बनेल नयनयुगलवाळुं, रताशवाळा गालथी शोभतुं, तूटक तूटक वचनो बोलतुं एवुं मदमत्त विलासिनीओनुं वृंद चित्तने हरी ले छे ।'

जेमां पांचमा चरणमां रहेला बे पंचकलोने स्थाने बे चतुष्कल होय एवा मत्तविलासिनीछंदनुं उदाहरण :

मत्त-जलहर गहिरु गज्जंति,
केक्कारहिं मत्त-सिहि, मत्तु मयणु पहरेइ दुज्जउ ।
विणु 'मत्त-विलासिणिहिं', भणि संपइ काइं किज्जउ ॥ २६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'मत्त मेघो घेरी गर्जना करे छे, मत्त मोरो केकारव करे छे, मत्त अने दुर्जय मदन प्रहार करे छे । आवा समयमां, कहे, मत्तविलासिनी विना शुं करवुं ?'

जेना त्रीजा अने पांचमा चरणमां रहेला बे पंचकलने स्थाने बे चतुष्कल होय, एवा मत्तविलासिनीछंदनुं उदाहरण :

ते ज्जि पंडिअ ते ज्जि गुणवंत,
ते तिहुअण-सिर-उवरि, ताहं चिअ जम्मु जाणहु ।
जे 'मत्त-विलासिणिहिं', न वि खोहिअ सुद्ध-झाणहुं ॥ २७

'ते ज साचा पंडित, ते ज गुणवान, ते ज त्रिभुवनना मस्तक पर मुकुटरूप तेमनो ज जन्म सफळ जाणो, जेओनुं शुद्ध ध्यान मदमत्त विलासिनीओ क्षुब्ध करी शकती नथी ।'

मत्तकरिणी मात्रा -

जो मात्राछंदना त्रीजा अथवा पांचमा अथवा तो बंने चरणमां रहेला चतुष्कलने स्थाने पंचकल होय तो तेनुं नाम मत्तकरिणी ।

जेना त्रीजा चरणमां रहेला चतुष्कलने स्थाने पंचकल होय तेवा मत्तकरिणी-छंदनुं उदाहरण :

जासु अंगहिं घणु नसाजालु,
जसु पिंगलु नयण-जुउ, जासु दंत पविरल-विअडुन्नय ।
न धरिज्जइ दुह-करिणी, 'मत्त-करिणि' जिवँ घरणि दुन्नय ॥ २८

'जेना शरीर पर घणी नसोनी जाळ देखाती होय, जेनी बंने आंखो पीळाश पडती होय, जेना दांत छूटा छूटा, विकराळ अने आडाअवळा होय एवी मत्त हाथणी जेवी, दुर्मति, दुःखकारी स्त्रीनो गृहिणी तरीके स्वीकार न करवो ।'

जेना पांचमा चरणमां रहेला चतुष्कलने स्थाने पंचकल होय तेवा मत्तकरिणी-छंदनुं उदाहरण :

दिव्व कहिं ते 'मत्तकरि णीअ',
कहिं घल्लिअ भिच्च-भडा, कहिं निहित्त हयवर वहिल्लय ।
ढुंढोल्लिर गिरि-गहणि, इअ तुज्झ रिउ रोअहिं गहिल्लय ॥ २९

'हे दैव, ए अमारा मदमस्त हाथीओ तुं क्यां लई गयो ? अमारा सेवको अने सैनिकोने तें क्यां नाख्या ? अमारा घोडा अने रथने तें क्यां मूकी दीधा ? एम बोलता अने पहाडी जंगलोमां घेला बनीने भटकता तारा शत्रुओ रडी रह्या छे ।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जेना त्रीजा अने पांचमा चरणमां रहेला चतुष्कलने स्थाने पंचकल होय एवा मत्तकरिणीछंदनुं उदाहरण :

जेत्थु गज्जहिं मत्त-करि-णिवह,
रंखोलहिं जेत्थु हय, जेत्थु भिउडि-भीसण भमंति भड ।
तहिं तेहइ रणि वरइ, विजय-लच्छि पइं पर-समरोब्भड ॥ ३०

'जेमां मदमत्त हाथीओनो समुदाय गर्जना करे छे, घोडाओ घूमे छे, भीषण भ्रूकुटी ताणीने सुभटो भ्रमण करे छे, तेवा युद्धमां, हे शत्रुसंग्राममां वीर, मात्र तने ज विजयलक्ष्मी वरे छे ।'

बहुरूपा मात्रा

जे छंदमां उपर्युक्त लक्षणवाळा मात्राप्रकारोनुं मिश्रण होय तेनुं नाम बहुरूपा । बहुरूपा मात्रानुं उदाहरण :

गाविँ पट्टणि हट्टि चउहट्टि,
राउलि देउलि पुरि, जं दीसइ लडह-अंगिअ ।
विरहिंदजालिएण तं, सा एक्क वि कय 'बहु-रूव'-कलिअ ॥ ३१

'ए रमणीय अंगोवाळी गाममां, पट्टनमां, बजारमां, चौटामां, राजकुळमां देवळमां, नगरमां एम (जाणे) सर्वत्र देखाय छे । एथी लागे छे के विरहरूपी जादुगरे, ते एक ज होवा छतां एने बहुरूपिणी बनावी दीधी छे ।' -

नोंध :- आ उदाहरणमां पहेलुं चरण मात्रानुं छे, बीजुं चरण मत्तमधुकरीनुं छे, त्रीजुं चरण मत्तविलासिनीनुं छे, चोथुं चरण मात्रानुं छे अने पांचमुं चरण मत्तकरिणीनुं छे ।

रड्डा के वस्तु

जो उपर्युक्त मात्राछंदना प्रकारोना त्रीजा अने पांचमा चरण प्रासबद्ध होय अने तेमनी पछी दोहक, अपदोहक के अवदोहक छंद होय तो ते रीते बनता छंदनुं नाम रड्डा के वस्तु ।

रड्डा(वस्तु)छंदनुं उदाहरण :

लुढिदु चंदण-वल्लि-पल्लंकि,
संमिलिदु लवंग-वणि, खलिदु वत्थु-रमणीय-कयलिहिं ।
उच्छलिदु फणि-लयहिं, घुलिदु सरल-कक्कोल-लवलिहिं ॥
चुंबिदु माहवि-वल्लरिहिं, पुलइद-कामि-सरीरु ।
भमर-सरिच्छउ संचरइ, 'रड्डउ' मलय-समीरु ॥ ३२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'जे चंदनलताना पलंग पर आळोटी रह्यो छे, लवंगलताओने भेटी रह्यो छे, रमणीय केळोनी वच्चे लथडी रह्यो छे, नागरवेलोमां ऊछळी रह्यो छे, सरळ कंकोल अने लवली लताओमां धूमी रह्यो छे, जेने माधवीलताओ चूमी रही छे, जे कामीओना शरीरने पुलकित करी रह्यो छे ते, भ्रमर समो, प्रबळ मलयानिल वाई रह्यो छे ।'

मात्रा-प्रकरण समाप्त

वस्तुक

जेना प्रत्येक चरणमां बे चतुष्कल, जेने अंते एक लघु होय तेवा बे त्रिकल, बे चतुष्कल अने एक त्रिकल होय, एवां चार चरणोथी जे छंद बने तेनुं नाम वस्तुक ।

वस्तुक छंदनुं उदाहरण :

सुरवहु-महुअरि-पंति-पीअ-गुण-परिमल-जालहं,
नह-मणि-किरण-कलाव-चारु-केसर-निअरालहं ।
पत्थुअ-'वत्थुअ'-गीति-चारु-मुणि-निवह-मरालहं,
तिहुअण-सिरि-कुलहरहं नमहु जिण-पहु-पय-कमलहं ॥३३

'जेना गुणोरूपी प्रचुर परिमलनुं अप्सराओरूपी मधुकरीओए पान कर्युं छे, जेमां मणि जेवा नखोनी किरणावलिरूपी सुंदर केसरो रहेलां छे, मुनिओरूपी हंसोए वस्तुकछंद वडे जेमनुं गीत गावानुं आरंभ्युं छे, जे त्रण भुवननी सुंदरतानुं कुलगृह छे, तेवा जिनप्रभुना चरणकमळने प्रणाम करो' ।

वस्तुवदनक

जेना प्रत्येक चरणमां एक षट्कल होय, त्रण चतुष्कल होय अने एक षट्कल होय, ए छंदनुं नाम वस्तुवदनक । आमां बेकी स्थाने रहेल चतुष्कलनुं रूप जगणनुं न होय अने एकी स्थाने रहेल चतुष्कल जगण होय अथवा तो चार लघुनो बनेलो होय ।

वस्तुवदनक छंदनुं उदाहरण :

मायाविअहं विरुद्ध-वाय-वस-वंचिअ-लोअहं,
पर-तित्थिअहं असार-सत्थ-संपाइअ-मोहहं ।
को पत्तिज्जइ सम्म-दिट्ठि-जह-'वत्थुअ-वयणहं',
जिणहं मग्गि निच्चल-निहित्त-मणु करुणा-भवणहं ॥३४

'जेओनी दृष्टि सम्यक् छे, जेमना वचन यथार्थ छे, जेओ करुणाना भवन जेवा छे—एवा जिनदेवोना मार्गमां जेणे पोतानुं मन स्थिर राख्युं छे, एवो कयो माणस

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवा परधर्मीओनो विश्वास करे जे मायावी छे, असंगत वचनोथी जेओ लोकोने छेतरे छे अने जेओ नि:सार शास्त्रो द्वारा मोह फेलावे छे ?'

नोंध :- केटलाकने मते आ छंदनुं नाम वस्तुक छे ! केटलाक पिंगळकारो आ वस्तुकछंदना विविध प्रकारोनुं निरूपण करे छे. सोळ लघु वर्णोथी शरू करीने तेमां बब्बे लघु वधारतां जईने वस्तुकना जे प्रकारो बने तेमनां नाम नीचे प्रमाणे छे :

वंसो वित्तो बालो वाहो वामो बलाहओ विंदो ।
विद्धो विसो विसालो विसारओ वासरो वेसो ॥ ३५
तुंगो रंगो भिंगो भिंगारो भीसणो भवो भालो ।
भद्दो भग्गो भट्टो भीरू तत्तो भडो भसलो ॥३६
अलओ वलओ मलओ मंजीरो मयमओ मओ माणी ।
महणो मसिणो मउलो महो मुहो मइहरो मुहलो ॥३७
एए नामनिबद्धा चउवीस-कला हंवति वत्थुवया ।
सोलह-लहुआउ लहूहिं वड्ढमाणेहिं दो-दोहिं ॥३८

सोळ लघुवर्णथी शरू करीने बे बे लघु वधारतां जतां, चोवीस मात्रावाळा वस्तुवदनकना जे विविध प्रकारो बने छे एमनां नाम नीचे प्रमाणे छे :

'वंश, वित्त(वृत्त), व्याल, व्याध, वाम, बलाहक, वृंद, विद्ध(वृद्ध), विष(वृष), विशाल, विशारद, वासर, वेश, तुंग, रंग, भृंग, भृंगार, भीषण, भव, भाल, भद्र, भग्न, भट्ट, भीरु, तप्त, भट, भ्रमर, अलक, वलय, मलय, मंजीर, मृगमद, मृग, मानी, मथन, मसृण, मुकुल, उत्सव, मुख, प्रधान, मुखर ।

परंतु आ प्रकारोनो वस्तुवदनकना प्रस्तारमां समावेश थई जतो होवाथी अमे तेमनुं अलग निरूपण नथी कर्युं. वळी तेना प्रस्तारमां आठ करोडथी पण वधु प्रकारो बने छे तो तेमांथी केटला प्रकारोने अलगअलग वर्णववा ?

रासावलय

जेना प्रत्येक चरणमां एक षट्कल, जगण न होय तेवो एक चतुष्कल, एक षट्कल अने एक पंचकल होय, ते छंदनुं नाम रासावलय ।

रासावलय छंदनुं उदाहरण :

माणु म मेल्हि गहिल्लिए निहुइहोहि खणु,
उअयउ चंदु पयट्टउ 'रासावलय'-खणु ।
दिक्खिसु एहिं वि नयणिहिं पइं हलि मयण-हय,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वल्लह-पयहं पडंति भणंति अ वयण-सय ॥ ३६

'हे घेली, तुं माननो त्याग न कर, एक क्षण शांत रहे, चंद्रने ऊगवा दे। रासमंडळनो उत्सव शरू थवा दे। त्यारे हे सखी, हुं मारी आ ज आंखो वडे तने कामातुर थईने सेंकडो वचनो बोलता तारा प्रियतमना पगे पडती हुं जोईश।'

नोंध :- केटलाकने मते आ छंदनुं नाम चतुष्पदी अथवा वस्तुक एवुं छे।

वस्तुवदनक अने रासावलयनुं मिश्रण

जेमां अर्धो भाग (अेटले के बे पंक्ति) वस्तुवदनकछंदनो होय अने अर्धो भाग (अेटले के बे पंक्ति) रासवलयछंदनो होय त्यारे जे मिश्र छंद बने, तेमां ए बे छंदमांथी गमे तेनो पूर्वार्ध होय अथवा उत्तरार्ध होय।

जेमां वस्तुवदनकनो पूर्वार्ध छे अने रासावलयनो उत्तरार्ध छे तेवा मिश्र छंदनुं उदाहरण :

अविहड-अवरुप्पर-परूढ-गुण-गंठि-निबद्धउ,
अइआरिण हलि गलइ पेम्मु सरलिम-सय-लद्धउ।
माण-मडप्फरु तुह न जुत्तु उत्तिम-रमणि,
तिंभणि वारउं वारवार वारण-गमणि ॥ ३७

'हे सखी, जे दृढ अने न छूटी शके एवी गुणोनी गांठथी परस्पर साथे बंधायेलो छे, अने जे सेंकडो सरळताथी प्राप्त थयेल छे तेवो प्रेम अतिचार करवाथी गळी जतो होय छे। तो हे उत्तम सुंदरी, मान अने दर्प करवां तने घटतां नथी। ए कारणे ज हे गजगामिनी, हुं तने वारंवर वारुं छुं।'

रासावलय अने वस्तुवदनकना मिश्रणनुं उदाहरण :

सवण-निहिअ-हीरय-हसंत-कुंडल-जुअल,
थूलामल-मुत्तावलि-मंडिअ-थण-कमल।
सेअंसुअ-पंगुरण-बहल-सिरिहंड-रसुज्जल,
बहु-पहुल्ल-विअइल्ल-फुल्ल-फुल्लाविअ-कुंतल॥ ३८

'तेणे कानमां हीरानां झळहळतां कुंडळनी जोड पहेरेली छे, तेना स्तनकमळ मोटां, निर्मल मोतीओनी माळाथी भूषित छे, तेणे चंदनना रसथी भीनी अने मघमघती रेशमी साडी पहेरी छे, तेना वांकडिया केश अतिशय श्वेत, विचकिल पुष्पोथी शणगारेल छे।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वदनक

जेना प्रत्येक चरणमां एक षट्कल, बे चतुष्कल अने एक द्विकल होय ते छंदनुं नाम वदनक ।

वदनक छंदनुं उदाहरण :

अज्ज-वि नयण न गेण्हइ तरलिम,
अज्ज-वि 'वयणु' न मेल्लइ भोलिम ।
अज्ज-वि थणहरु भरु न पडिच्छइ,
तु-वि मुद्धहे दंसणि जगु मुज्झइ ॥३९

'हजी तो नयनोमां चंचळता आवी नथी, हजी तो वदन उपरथी भोळपण हट्युं नथी, हजी तो स्तन भरायां नथी—तेम छतां आ मुग्धाने जोईने लोको मुग्ध बनी जाय छे ।'

नोंध : केटलाक पिंगलकारो समचतुष्पदीना विभागमां एक षट्कल, बे चतुष्कल अने एक द्विकलथी बनता संकुलक छंदनुं निरूपण करे छे । परंतु तेनो आमां ज समावेश थई जाय छे ।

उपवदनक

जेना प्रत्येक चरणमां एक षट्कल, बे चतुष्कल अने एक त्रिकल होय ते छंदनुं नाम उपवदनक ।

उपवदनकछंदनुं उदाहरण :

आमूलु-वि बहु-पंकिण संवलिअ,
सव्व-वार-पडिबोह-सोह-रहिअ ।
कंटय-सय-संसेविअ जल-सयण,
जिण-'उववयणु' न सोहहिं कमल-वण ॥४०

'जेने मूळमांथी ज बधे पुष्कळ कादव वळगेलो छे, जेमां बधो समय विकसती शोभा होती नथी, जेमां सेंकडो कंटको होय छे अने जे "जलशयन" (जळ पर स्थित) होय छे तेवां कमळो जिनदेवना वदननी पासे सहेज पण शोभतां नथी । (केम के जिनदेवनुं वदन निर्मळ, लोकोने सर्वदा प्रतिबोध करनारुं, कंटकरहित अने "अजलशयन"- एटले के जेमां जडताने सहेज पण आश्रयस्थान नथी एवुं छे) ।

अडिला

जो वदनक अने उपवदनक ए छंदोनां चारेय चरणो अथवा तो बब्बे चरणो यमकथी जोडायेलां होय तो ते छंदनुं नाम अडिला ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जेमां चारेय चरणोमां अंते यमक छे तेवा अडिलाछंदनुं उदाहरण :

नव-घण-भम-भमंत-सारंगहं, कुंज-कुसुम-गुंजिर-सारंगहं ।
सुह-विलसंत-'अडिल'-सारंगहं, लीला-वणहं तरुणि सारं गह ॥ ४१

'हे तरुणी, जेमां नवा मेघोना भ्रमे मोरो (अथवा चातको) भ्रमण करी रह्या छे, कुंजोनां पुष्पोमां भमरा गुंजारव करी रह्या छे, जेमां हरण सुखेथी विलसी रह्या छे तेवां क्रीडा माटेनां उद्यानोनो उत्तम आनंद तुं माण ।'

मडिला

केटलाकने मते आ रीते चारेय चरणो जो यमकबद्ध होय तो ते छंदनुं नाम मडिला छे ।

जेमां बब्बे चरणो यमकबद्ध होय छे तेवा अडिलाछंदनुं उदाहरण :

जहिं छिज्जहिं नर-सीस भुअग्गल, तहुं नरयहुं जा दार-भुअग्गल ।
सा मइं सुअणहं कह पारद्धिअ, जं निसुणंत बुद्ध पारद्धिअ ॥४१

'जेमां माणसना मस्तक अने आगळा जेवी प्रचंड भुजाओ छेदी नाखवामां आवे छे तेवां नरकोना प्रवेशद्वारने भोगळ भीडी देती एवी धर्मकथा में श्रोताओ समक्ष कहेवानो आरंभ कर्यो छे, जे सांभळीने पारधीओ पण बोध पाम्या ।'

उत्थक्क/अवस्थितक

जेना प्रत्येक चरणमां त्रण पंचकल अने एक द्विकल होय अने यमकनी योजना होय ते छंदनुं नाम उत्थक्क । (केटलाकने मते 'अवस्थितक' एवुं नाम छे ।)

उत्थक्कछंदनुं उदाहरण :

निद्दड्ढ दड्ढ-विरहानलेण, संताव-तुलिअ-वडवाणलेण ।
मुच्छाविअ नव-घण-मंडलेण, 'ओ थक्क' पहिअ कय-घंघलेण ॥४२

'अरेरे, बळ्या विरहाग्निथी अतिशय दाझेला, वडवानल जेवा दाहथी मूर्छित बनेला, नवीन मेघमाळाथी भारे संकटमां पडेला पथिको (मार्गमां ज) अटकी पड्या छे ।'

धवल

धवल नामना छंदना त्रण प्रकार छे : ते आठ चरणनो होय, छ चरणनो अथवा चार चरणनो होय । कहेवायुं छे के :

धवल-निहेण सुपुरिसो वण्णिज्जइ जेण तेण सो धवलो ।
धवलो-वि होइ ति-विहो अट्ठपओ छप्पओ चउप्पाओ ॥ ४४

'कारण के तेमां कोई सत्पुरुषनुं धवल वृषभ तरीके वर्णन करवामां आवे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छे तेथी ते छंद धवल कहेवाय छे। धवलछंदना त्रण प्रकार होय छे : आठ चरणनो, छ चरणनो, अने चार चरणनो।'

नोंध :- धवलोनां उदाहरण सातवाहन कविनी काव्यरचनाओमां जोवा मळे छे. अहीं तो मात्र दिशा बतावबा पूरतां उदाहरण आपवामां आवशे।

श्रीधवल

जो आठ चरणना बनेला धवलमां एकी चरणोमां त्रण चतुष्कल अने एक द्विकल होय अने बेकी चरणोमां त्रण चतुष्कल होय, तो तेनुं नाम श्रीधवल। केटलाकने मते तेनु नाम वसंतलेखा छे।

श्रीधवलछंदनुं उदाहरण :

खीर-समुद्दिण लवण-जलहि, कुवलय कुमुइहिं।
कालिंदी सुरसिंधु-जलिण, महुमहणु हरिण॥
कइलासिण सरिसउ हूं किरि, सो अंजण-गिरि।
इह तुह जस-'सिरि-धवलि'उ पहु, किं पंडुरु नहु॥ ४५

'लवणसमुद्र जाणे के क्षीरसमुद्र बनी गयो, नीलकमळ श्वेतकमळ बनी गयां, यमुनानुं जळ गंगाजळ बनी गयुं, विष्णु शिव जेवा बनी गया, अंजनपर्वत कैलास जेवो बनी गयो—हे स्वामी, तारी कीर्तिलक्ष्मीथी धोळाईने कई वस्तु श्वेत नथी बनी गई ?'

यशोधवल

जो आठ चरणना धवलमां पहेला अने त्रीजा चरणमां त्रण चतुष्कल अने एक द्विकल होय, बीजा अने चोथा चरणमां त्रण चतुष्कल होय, अने बाकीनां चार चरणोमांथी पांचमा अने सातमा चरणोमां बे चतुष्कल अने एक त्रिकल होय, तथा छट्ठा अने आठमा चरणमां बे चतुष्कल अने एक द्विकल होय (अथवा तो बीजाने मते त्रण चतुष्कल होय), तो तेनुं नाम यशोधवल।

यशोधवलनुं उदाहरण :

जे तुह पिच्छहिं वयण-कमलु, ससहर-मंडल-निम्मलु।
जे-वि हु पालहिं भिच्च-कम्मु, थुणहिं जि निरुवमु विक्कमु॥
जे-वि हु सासणु धरहिं, पाय-कमलु जे पणमहिं।
ताहं न लच्छी विमुह, पहु 'जस-धवलिअ'-दिसि-मुह॥ ४६

'जेणे पोतानी कीर्तिथी दिशाओनां मुख उज्ज्वळ कर्यां छे तेवा हे प्रभु, जे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लोको चंद्रमंडळ जेवा निर्मळ तारा वदनकमळनां दर्शन करे छे, जे लोको तारा प्रत्ये सेवकवृत्ति सेवे छे, जे लोको तारा अतुल्य पराक्रमनी प्रशंसा करे छे, जे लोको तारुं शासन स्वीकारे छे, जे लोको तारा चरणकमळने प्रणाम करे छे, तेमनाथी लक्ष्मी कदी पण विमुख बनती नथी ।'

कीर्तिधवल

छ चरणना धवलमां जो पहेला अने चोथा चरणमां बे षट्कल अने एक द्विकल हो, बीजा अने पांचमा चरणमां बे चतुष्कल होय अने त्रीजा तथा छट्ठा चरणमां बे पंचकल अने एक चतुष्कल (अथवा तो एक पंचकल होय), तो तेनुं नाम कीर्तिधवल ।

कीर्तिधवलनुं उदाहरण :

उक्करडा खवलउ गज्जउ, चिरु जुज्झण-मणु,
उन्नामउ सिरु कसरु म लज्जउ ।
थक्कु महब्भरु तुहुं कड्ढहि, अन्नु न तिहुअणि,
'कित्ति धवल' विसाउ तुह वट्टइ ॥ ४७

'गळियो बळद भलेने ऊकरडा ऊखेळे, लडवा माटे भांभर्या करे ने माथुं ऊंचु करे, हे धवलवृषभ तुं लज्जित न था । वच्चे अटकी पडेलो भारे बोजो आ त्रण लोकमां तारा सिवाय बीजो कोई खेंची काढी शके तेम नथी । तुं शुं काम खिन्न थाय छे ?'

गुणधवल

चार चरणना बनेला जे धवलनां एकी चरणोमां एक षट्कल अने बे चतुष्कल होय, तथा बेकी चरणोमां एक षट्कल, बे चतुष्कल, एक द्विकल अथवा तो त्रिकल होय, ते धवलनुं नाम गुणधवल ।

गुणधवलनुं उदाहरण :

कद्दम-भग्गा मग्गुलया, वह-बहुला दुत्तर-जलुल्लया ।
तिवँ भरु वहसु 'गुण-धवलया', जिवँ केवँइ न हसंति पिसुणया ॥ ४८

'हे गुणधवल (गुणवान धवल वृषभ), रस्ताओ कादववाळा होवाथी दुर्गम बनेला छे, तेमां दुस्तर जळ भरेला घणा वहेळा छे, तेथी तुं बोज एवी रीते वहेजे जेथी दुर्जनो केमेय तारी हांसी न उडावे ।'

भ्रमरधवल

जेमां एकी चरणोमां एक षट्कल, एक चतुष्कल अने एक त्रिकल होय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अने बेकी चरणोमां एक षट्कल अने बे चतुष्कल होय तेनुं नाम भ्रमरधवल ।

भ्रमरधवलनुं उदाहरण :

कित्ति तुहारी वण्णविणु, कइ अन्नु न वण्णहिं ।
मालइ माणिवि किं 'भमर', धत्तूरइ लग्गहिं ॥ ४९

'कविओ तारी कीर्तिनुं वर्णन करीने पछी बीजा कोईनी कीर्तिनुं वर्णन करता नथी । शुं भमराओ मालतीने भोगव्या पछी धंतूरामां आसक्त बने खरा ?'

अमरधवल

जेना एकी चरणोमां एक षट्कल, एक चतुष्कल, एक त्रिकल होय अने बेकी चरणोमां एक षट्कल अने बे चतुष्कल होय तेनुं नाम अमरधवल ।

अमरधवलनुं उदाहरण :

इंदहु तुहुं गुणि अहिअउ, सग्गहु पहु मइं चाहिअउ ।
'अमर'-विलासिणिअ-गीअए, तुह पर कित्ति निसामिअए ॥ ५० ॥

'इंद्र करतां पण तारा गुणो अधिक छे, में तने स्वर्गना अधिपति तरीके जोयो छे, अप्सराओना गीतमां तारी महान कीर्ति (कीर्तिनुं गान) संभळाय छे ।'

मंगल

जेना पहेला अने बीजा चरणमां एक षट्कल अने त्रण चतुष्कल होय तथा ते पछी त्रिकल के द्विकल होय, अने त्रीजा अने चोथा चरणमां पांच चतुष्कल अने एक त्रिकल के द्विकल होय, ते छंदनुं नाम मंगलछंद, केम के ते मंगळ व्यक्त करवा माटे वपराय छे ।

मंगलछंदनुं उदाहरण :

तुह असि-लट्ठिहिं नरवइ 'मंगल'-कारिणि,
वित्थारिअ-निम्मलयर-सत्थिअ-धोरणि ।
संगर-रंगि विवाह-महूसवि जय-लच्छिहिं,
दारिअ-मयगल-कुंभत्थल-मोत्तिअ-गुच्छिहिं ॥ ५१

'हे नृपति, तारा दीर्घ खड्गो समरांगणरूपी मंडपमां, विजयलक्ष्मीना विवाहना महोत्सवमां, हाथीओनां कुंभस्थळ चीरीने काढेलां मोतीओना गुच्छोथी मंगळकारी उज्ज्वळ साथियाओनी श्रेणी रची छे ।'

नोंध :- धवल अने मंगल प्रकारनां भाषागीतो, हमणां रासावलय वगेरे जे छंदोनुं निरूपण कर्युं तेमां, ते पहेलां हेला वगेरे जे छंदोनुं निरूपण कर्युं तेमां, अथवा हवे पछी जेमनुं निरूपण करवामां आवशे ते दोहक वगेरे छंदोमां, जो रचायां होय,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तो ते ते छंदना नामनी संज्ञा तेमने अपाय छे : जेम के, उत्साहधवल, वदनधवल, हेलाधवल वगेरे । ते ज प्रमाणे उत्साहमंगल वगेरे । कहेवायुं छे के

उत्साह-हेला-वदनाडिलाद्यैर्, यद् गीयते मङ्गल-वाचि किञ्चित् ।
तद्रूपकाणामभिधान-पूर्वं, छन्दो-विदो मङ्गलमामनन्ति ॥ ५२
तैरेव धवल-व्याजात् पुरुषः स्तूयते यदा
तद्वदेव तदनेको धवलोऽप्यभिधीयते ॥ ५३

'मंगल अर्थनुं वाचक जे गीत उत्साह, हेला, वदन, अडिला वगेरे छंदमां होय, तेमनुं नामकरण ते ते छंदना नामनी पूर्वे 'मंगल' मूकीने करवानुं छंदः-शास्त्रीओए विधान कर्युं छे ।'

ज्यारे धवलवृषभने नामे ए छंदो वडे कोई विशिष्ट पुरुषनी प्रशंसा करवामां आवे, त्यारे ते ज प्रमाणे ए अनेक धवलोने नाम आपवामां आवे छे ।

फुल्लडक

उत्साह वगेरे छंदो वडे ज्यारे देवतानुं गीत रचवामां आवे छे, त्यारे एने फुलडक कहे छे ।

झंबटक

ज्यारे कोईने पण उद्देशीने, जेना प्रत्येक चरणमां त्रण चतुष्कल अने एक द्विकल होय तेवा मापना छंदमां गीत रचवामां आवे त्यारे तेने झंबटक कहे छे ।

झंबटकनुं उदाहरण :

पहु तुह वेरि अरण्णि गय, निच्चु-वि निवसहिं जिवँ ससय ।
घण-कंटय-दूसंचरणि, तहिं झंबडइ करीर-वणि ॥ ५४

'हे स्वामी, अरण्यमां नासी गयेला तारा शत्रुओ, ससलानी जेम, जेमां भरचक कांटाने लीधे हालचाल करवी मुश्केल छे तेवी केरडांनी झाडीमां निवास करी रह्या छे ।'

नोंध :- हकीकते आ झंबटक छंद, आगळ उपर जेनुं निरूपण करवामां आवशे ते गन्धोदकधारा छंद ज छे । पण ज्यारे तेनो गीत रचवामां उपयोग थाय छे, त्यारे तेने 'झम्बटक' एवुं नाम आपवामां आवे छे ।

हेमचंद्राचार्य-रचित वृत्तियुक्त छंदोनुशासननो
'उत्साहादि-वर्णन' नामनो
पांचमो अध्याय समाप्त थयो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छठ्ठो अध्याय

ध्रुवा-ध्रुवक-घत्ता-चतुष्पदी-षट्पदी-वर्णन

कडवकना समूहरूप जे संधि, तेना आदिमां; अने पद्धडिका वगेरेनी चार कडी रूप जे कडवक, तेने अंते, जे ध्रुवपणे होय -निश्चित रूपे होय- ते माटे ते 'ध्रुवा' कहेवाय छे. 'ध्रुवक' अने 'घत्ता' तेनां नामान्तर छे । (१)

ध्रुवाना प्रकार

ध्रुवा त्रण प्रकारनी छे : षट्पदी, चतुष्पदी अने द्विपदी । (२)

छड्डुणिका

'प्रारब्ध' एटले प्रस्तुत विषय अनुसार आवता अर्थने कडवकने अंते जुदी भंगीथी कहे त्यारे षट्पदी अने चतुष्पदी 'छड्डुणिका' पण कहेवाय । तेमनुं नाम मात्र 'ध्रुवा' वगेरे ज नहीं, 'छड्डुणिका' पण खरुं एम कहेवानुं छे । (३)

गणनियम

षट्पदी अने चतुष्पदी ध्रुवानां सात सात मात्राथी लईने सत्तर मात्रा सुधीना चरण होय छे, एटले तेमां गणनियम बतावाय छे :

सात मात्राना चरणवाळी ध्रुवामां चतुष्कल अने त्रिकल, अथवा तो पंचकल अने द्विकल एवा बे गण होय छे । (४)

आठ मात्राना चरणवाळी ध्रुवामां पंचकल अने त्रिकल, षट्कल अने द्विकल, अथवा तो बे चतुष्कल एवा बे गण होय छे । (५)

नव मात्राना चरणवाळी ध्रुवामां षट्कल अने त्रिकल, त्रण त्रिकल, अथवा तो पंचकल अने चतुष्कल एवा बे गण होय छे । (६)

दस मात्राना चरणवाळी ध्रुवामां बे चतुष्कल अने एक द्विकल, षट्कल अने चतुष्कल, अथवा तो बे पंचकल एवा गण होय छे । (७)

अगियार मात्राना चरणवाळी ध्रुवामां चतुष्कल, पंचकल अने द्विकल, पंचकल, चतुष्कल अने द्विकल अथवा तो षट्कल, द्विकल अने त्रिकल एवा गण होय छे । (८)

बार मात्राना चरणवाळी ध्रुवामां चतुष्कल, पंचकल अने त्रिकल, षट्कल, चतुष्कल अने द्विकल, बे पंचकल अने एक द्विकल अथवा तो त्रण चतुष्कल एवा गण होय छे । (९)

तेर मात्राना चरणवाळी ध्रुवामां बे पंचकल अने एक त्रिकल, बे चतुष्कल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अने एक पंचकल अथवा तो षट्कल, चतुष्कल अने त्रिकल एवा गण होय छे । (१०)

चौद मात्राना चरणवाळी ध्रुवामां त्रण चतुष्कल अने एक द्विकल, अथवा तो षट्कल अने बे चतुष्कल एवा गण होय छे । (११)

पंदर मात्राना चरणवाळी ध्रुवामां त्रण चतुष्कल अने एक त्रिकल, अथवा तो त्रण पंचकल एवा गण होय छे । (१२)

सोळ मात्राना चरणवाळी ध्रुवामां षट्कल, बे चतुष्कल अने एक द्विकल अथवा तो चार चतुष्कल एवा गण होय छे । (१३)

सत्तर मात्राना चरणवाळी ध्रुवामां एक षट्कल, बे चतुष्कल अने एक त्रिकल, अथवा तो त्रण चतुष्कलने अंते एक पंचकल एवा गण होय छे ।

प्रासनियम

आ प्रमाणे सात मात्राथी लईने सत्तर मात्रा सुधीनां (१) असमान, अने (२) समान अथवा तो (३) सर्वसमान--एवां चरणो जेना अर्धमां होय छे, तेवी विदग्धोनी गोष्ठीमां उत्तम षट्पदी ध्रुवा होय छे । षट्पदी ध्रुवामां पहेला चरणनो बीजा चरण साथे, त्रीजा चरणनो छठ्ठा चरण साथे अने चोथा चरणनो पांचमा चरण साथे प्रास होवो जोईए ।

चतुष्पदी ध्रुवामां पहेला चरणनो बीजा चरण साथे अने त्रीजा चरणनो चोथा चरण साथे प्रास होवो जोईए ।

अंतरसमा ध्रुवामां तथा संकीर्णा ध्रुवामां घणुंखरुं बीजा चरण साथे चोथा चरणनो प्रास होय छे ।

षट्पदी ध्रुवा : षट्पद-जाति

हवे षट्पदी ध्रुवाना प्रकारो वर्णवाय छे । जेनां त्रीजा अने छठ्ठा चरणमां दस मात्राथी शरू करीने एक एक मात्रा वधारतां जतां सत्तर सुधीनी मात्राओ होय छे, तथा बाकीनां चार चरणोमां सात सात मात्रा होय छे, तेवा प्रकारनी षटपदी ध्रुवानुं नाम षट्पद-जाति छे । दस मात्राथी शरू करीने सत्तर मात्रा सुधीनां चरणो अनुसार तेना आठ पेटाप्रकार होय छे ।

पहेला पेटाप्रकारनुं उदाहरण :

इअ नारिहिं, रससारिहिं, मुह-परिमल-लुद्धउ ।
ढुरुढुल्लइ, न हु मेल्लइ, 'छप्पय'-गणु मुद्धउ ॥ १

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'रसिक रमणीओना मुखनी सुगंधथी लोभायेलुं भोळुं आ भ्रमरवृंद एमनी आसपास भम्या करे छे, पासेथी खसतुं ज नथी ।'

ए प्रमाणे बाकीना पेटाप्रकारोनां उदाहरण जाणवां ।

षट्पद-उपजाति

जे षट्पदी ध्रुवामां त्रीजा अने छठ्ठा चरणमां दसथी शरू करीने सत्तर सुधीनी मात्राओ होय, अने बाकीनां चरणोमां आठ मात्राओ होय एवी ध्रुवानुं नाम उपजाति छे । तेना पण जातिनी जेम आठ पेटाप्रकार छे । (१६)

पहेला पेटाप्रकारनुं उदाहरण :

इअ 'उवजाइ'हिं, सुरहिअ-वाइहिं, गुंजिर-घण-छप्पउ ।
उववणु सारउ, केअइ-फारउ, कसु नवि रइ अप्पउ ॥ २

'जेनी समीपमां पवनने सुगंधित करी रहेली चमेली रहेली छे तेवुं, जेना उपर भ्रमरवृंद गुंजारव करी रह्युं छे तेवुं आ उत्तम केवडांनुं उपवन कोने आनंद आपतुं नथी ?'

ए प्रमाणे बाकीना पेटाप्रकारोनां उदारहण जाणवां ।

षट्पद-अवजाति

जे षट्पदी ध्रुवाना त्रीजा अने छठ्ठा चरणमां दसथी शरू करीने सत्तर सुधीनी मात्राओ होय छे, अने बाकीनां चरणोमां नव नव मात्राओ होय छे ते ध्रुवानुं नाम अवजाति छे । आगळनी जेम तेना पण आठ पेटाप्रकार छे । (१७)

पहेला पेटाप्रकारनुं उदाहरण :

इअ वण-राइहिं, अहिण'वजाइ'हिं, छप्पउ परिभमइ ।
मालइ-रत्तउ, महु-रस-मत्तउ, जलयागम-समइ ॥ ३

'जेमां चमेलीओ विकसी रही छे तेवी आ वनराजिओमां वर्षाऋतुना आगमन-काळे मधुरसमां मत्त बनेलो, मालतीमां आसक्त एवो भ्रमर चोतरफ भ्रमण करे छे ।'

ए प्रमाणे बाकीना पेटाप्रकारोनां उदाहरणो जाणवां ।

आ रीते षट्पद-जाति, उपजाति अने अवजाति ए प्रत्येकना आठ आठ पेटाप्रकारो अनुसार षट्पदी ध्रुवाना चोवीश पेटाप्रकार थाय छे ।

चतुष्पदी ध्रुवा / वस्तुक

चतुष्पदी ध्रुवानुं बीजुं नाम वस्तुक छे । तेना चार पेटाप्रकार छे :

एकी चरण सरखां होय तथा एकी चरण अणसरखां होय ते रीते (१) जेमां एकांतरे समानता रहेली छे ते अंतरसमा, (२) जेमां पहेलुं अने बीजुं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तथा त्रीजुं अने चोथुं चरण समान होय छे - एम अर्धो भाग सरखो होवाथी ते अर्धसमा, (३) जेमां समान अने असमान चरणोनुं मिश्रण होय छे ते संकीर्णा, (४) जेमां चारेय चरण एकसरखां होय छे ते सर्वसमा । (१८)

अंतरसमा चतुष्पदीओ आ प्रमाणे छे :

अंतरसमा चतुष्पदी : प्रकारो

जे अंतरसमा चतुष्पदीनां एकी चरणोमां सात मात्राओ होय अने बेकी चरणोमां आठ मात्राथी लईने एक एक मात्रा वधतां जतां सत्तर सुधीनी मात्राओ होय, तेना दस पेटाप्रकार छे । तेमनां नाम आ प्रमाणे छे :

१. चंपककुसुम, २. सामुद्गक, ३. मल्हणक, ४. सुभगविलास, ५. केसर, ६. रावणहस्तक, ७. सिंहविजृंभित, ८. मकरंदिका, ९. मधुकरविलसित, १०. चंपककुसुमावर्त ।

जे अंतरसमा चतुष्पदीनां एकी चरणोमां आठ मात्राओ होय अने बेकी चरणोमां नव मात्राथी लईने एक एक मात्रा वधतां जतां सत्तर सुधीनी मात्राओ होय तेना नव पेटाप्रकार छे । तेनां नाम आ प्रमाणे छे :

१. मणिरत्नप्रभा, २. कुंकुमतिलक, ३. चंपकशेखर, ४. क्रीडनक, ५. बकुलामोद, ६. मन्मथतिलक, ७. मालाविलसित, ८. पुण्यामलक, ९. नवकुसुमित-पल्लव.

जे अंतरसमा चतुष्पदीनां एकी चरणोमां नव मात्राओ होय अने बेकी चरणोमां दस मात्राथी लईने एक एक मात्रा वधतां जतां सत्तर सुधीनी मात्राओ होय तेना आठ पेटाप्रकार छे । तेमनां नाम आ प्रमाणे छे :

१. मलयमारुत, २. मदनावास, ३. मांगलिका, ४. अभिसारिका, ५. कुसुम-निरंतर, ६. मदनोदक, ७. चंद्रोद्योत, ८. रत्नावलि ।

जे अंतरसमा चतुष्पदीनां एकी चरणोमां दस मात्राओ होय अने बेकी चरणोमां अगियार मात्राथी लईने एक एक मात्रा वधतां जतां सत्तर सुधीनी मात्राओ होय तेना सात पेटाप्रकार छे । तेमनां नाम आ प्रमाणे छे :

१. भ्रूवक्रणक, २. मुक्ताफलमाला, ३. कोकिलावली, ४. मधुकरवृन्द, ५. केतकीकुसुम, ६. नवविद्युन्माला, ७. त्रिवलीतरंग ।

जे अंतरसमा चतुष्पदीनां एकी चरणोमां अगियार मात्राओ होय अने बेकी चरणोमां बार मात्राथी लईने एक एक मात्रा वधतां जतां सत्तर सुधीनी मात्राओ होय तेना छ पेटाप्रकार छे । तेमनां नाम आ प्रमाणे छे :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१. अरविंदक, २. विभ्रमविलसितवदन, ३. नवपुष्पंधय, ४. किन्नरमिथुन-विलास, ५. विद्याधरलीला, ६. सारंग ।

जे अंतरसमा चतुष्पदीनां एकी चरणोमां बार मात्राओ होय अने बेकी चरणोमां तेर मात्राथी लईने एक एक मात्रा वधतां जतां सत्तर सुधीनी मात्राओ होय तेना पांच पेटाप्रकार छे । तेमनां नाम आ प्रमाणे छे :

१. कामिनीहास, २. अपदोहक, ३. प्रेमविलास, ४. कांचनमाला, ५. जलधरविलसित ।

जे अंतरसमा चतुष्पदीनां एकी चरणोमां तेर मात्राओ होय अने बेकी चरणोमां चौद मात्राथी लईने एक एक मात्रा वधतां जतां सत्तर सुधीनी मात्राओ होय तेना चार पेटाप्रकार छे । तेमनां नाम आ प्रमाणे छे :

१. अभिनवमृगांकलेखा, २. सहकारकुसुममंजरी, ३. कामिनीक्रीडनक, ४. कामिनीकंकणहस्तक ।

जे अंतरसमा चतुष्पदीनां एकी चरणोमां चौद मात्राओ होय अने बेकी चरणोमां पंदर मात्राथी लईने एक एक मात्रा वधतां जतां सत्तर सुधीनी मात्रा होय तेना त्रण पेटाप्रकार छे । तेमनां नाम आ प्रमाणे छे :

१. मुखपालनतिलक, २. वंसतलेखा, ३. मधुरालापिनीहस्त ।

जे अंतरसमा चतुष्पदीनां एकी चरणोमां पंदर मात्राओ होय अने बेकी चरणोमां सोळ के सत्तर मात्राओ होय तेना बे पेटाप्रकार छे । तेमनां नाम आ प्रमाणे छे :

१. मुखपंक्ति, २. कुसुमलतागृह ।

जे अंतरसमा चतुष्पदीनां एकी चरणोमां सोळ मात्राओ होय अने बेकी चरणोमां सत्तर मात्राओ होय तेनो एक पेटाप्रकार छे । तेनुं नाम रत्नमाला छे ।

आ प्रमाणे अंतरसमा चतुष्पदीना कुल पंचावन पेटा प्रकारो छे । (१९)

तेमनां उदाहरणो नीचे प्रमाणे छे :

चंपककुसुम

जेनां एकी चरणोमां सात मात्रा छे, अने बेकी चरणोमां आठ मात्रा छे ते चंपककुसुम छंदनुं उदाहरण :

अंग-चंगिम, जइ गोरंगिहि ।
'चंपक़कुसुम', ता कह अग्घहिं ॥ ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'ए गौरांगीना अंगनी सुंदरता पासे चंपककुसुम कई रीते शोभे ?'

सामुद्गक

जेनां एकी चरणोमां सात मात्रा छे अने बेकी चरणोमां नव मात्रा छे ते सामुद्गक छंदनुं उदाहरण :

जइ बोल्लइ, धण उक्कंठिअ ।
'सा मुद्दउ', मुहु कलयंठिअ ॥ ५

'ज्यारे ए उत्कंठित विरहिणी बोलती होय त्यारे कोकिलाए पोतानुं मों बंध राखवुं जोईए' ।

मल्हणक

जेनां एकी चरणोमां सात मात्रा छे अने बेकी चरणोमां दस मात्रा छे ते मल्हणक छंदनुं उदाहरण :

कहिं हंसिहिं, तल्लोव्वेल्लणउं ।
जउ दीसइ, गउ तहि 'मल्हणउं' ॥ ६

'ए सुंदरीनी मलपती गति पासे तळावमां रमती (टळवळती) हंसी शी विसातमां ?'

सुभगविलास

जेनां एकी चरणोमां सात मात्रा छे अंते बेकी चरणोमां अगियार मात्रा छे तेवा सुभगविलास छंदनुं उदाहरण :

पइं विणु तहि, 'सुहय विलासु' कवणु ।
विणु चंदइ, मुहु जामिणिहि कृवणु ॥ ७

'हे सुभग, तारा विना एनो विलास केवो ? चंद्र विना निशानुं मुख कृपण (दयामणुं) ज दीसे ।'

केसर

जेनां एकी चरणोमां सात मात्राओ छे अने बेकी चरणोमां बार मात्रा छे ते केसर छंदनुं उदाहरण :

मेल्लि माणु, वल्लहि करि अणुराउ ।
ओ उड्डिउ, 'केसर'-कुसुम-पराउ ॥ ८

'हे सुंदरी तुं मान मूकी दईने तारा वालम प्रत्ये अनुराग व्यक्त कर । जो बोरसल्लीना पुष्पनो पराग ऊडी रह्यो छे ।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रावणहस्तक

जेनां एकी चरणोमां सात मात्रा छे अने बेकी चरणोमां तेर मात्रा छे ते रावणहस्तक छंदनुं उदाहरण :

लेहि वीण, करि धरि 'रावणहत्थउ' ।
जिण-मज्जणि, सुरहिं दिण्णु रावँण-हत्थउ ॥ ९

'तुं वीणा ले अने हाथमां रावणहत्थो राख । जिनभगवानना स्नानविधिमां देवो समहस्त(नी नृत्यमुद्रा) दई रह्या छे ।

सिंहविजृंभित

जेनां एकी चरणोमां सात मात्रा छे अने बेकी चरणोमां चौद मात्रा छे तेवा सिंहविजृंभित छंदनुं उदाहरण :

छुह-खामु वि, जं मय-जूहु न तिणु चरइ ।
तं अज्ज-वि, 'सीह-विअंभिउ' विप्फुरइ ॥ १०

'भूखथी दुबळुं पडी गयुं होवा छतां आ हरणोनुं टेळुं घास चरतुं नथी, केम के हजी पण तेमना मनमां सिंहना आक्रमणनो फडको छे.'

मकरंदिका

जेनां एकी चरणोमां सात मात्रा छे अने बेकी चरणोमां पंदर मात्रा छे तेवा मकरंदिका छंदनुं उदाहरण :

कुसुमंतरि, नवि लग्गइ अलि अवनिद्दिअइ ।
आसत्तउ, मालइहि बहल मयरंदिअ हि ॥ ११

'मकरंदथी सभर एवी विकसित मालतीमां आसक्त भ्रमर बीजां पुष्पो पर बेसतो नथी ।'

मधुकरविलसित

जेनां एकी चरणोमां सात मात्रा छे अने बेकी चरणोमां सोळ मात्रा छे तेवा मधुकरविलसित छंदनुं उदाहरण :

जं जाइहि, कित्ति दिअंतरु धवलइ सयलु ।
तं जाणसु, माणिणि 'महुअर-विलसिउ' पवलु ॥ १२

'हे मानिनी, चमेलीनी कीर्ति सकल दिशाओने धवलित करे छे तेनी पाछळ भ्रमरनी क्रीडानो प्रभाव छे ।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चंपककुसुमावर्त

जेनां एकी चरणोमां सात मात्रा छे अने बेकी चरणोमां सत्तर मात्रा छे तेवा चंपककुसुमावर्त छंदनुं उदाहरण :

निअइ झुणइ, परिरंभइ चुंबइ महु-सुंडउ ।
अलि मुज्झइ, 'चंपयकुसुमावट्टि' निबुड्डउ ॥ १३

'चंपाना फूलना वमळमां डूबेलो भ्रमर गुंजारव करे छे, रसमत्त बनेलो तेने जोया करे छे, चूमे छे, मुग्ध बनेलो तेने भेटे छे ।

नोंध :- आ प्रमाणे पहेला दस पेटाप्रकारनां उदाहरण थयां ।

मणिरत्नप्रभा

जेनां एकी चरणोमां आठ मात्रा छे अने बेकी चरणोमां नव मात्रा छे ते मणिरत्नप्रभा छंदनुं उदाहरण :

'मणिरयणपहा'-, पयडिअ-गिरि-गुहु ।
साहइ भरहु, सयलु-वि दिसि-मुहु ॥ १४

'जेमां मणिरत्नना प्रकाशथी गिरिगुफाओने प्रकाशित करतो भरत(चक्रवर्ती) समग्र दिग्विजय सिद्ध करे छे ।'

कुंकुमतिलक

जेनां एकी चरणोमां आठ मात्रा अने बेकी चरणोमां दस मात्रा छे तेवा कुंकुमतिलक छंदनुं उदाहरण :

रेहइ चंदो, नव-पयडिअ-कलओ ।
पुव्व-दिसाए, किर 'कुंकुम-तिलओ' ॥ १५

'नूतन कलाने प्रकट करतो चंद्र जाणे के पूर्व दिशानुं कुंकुमतिलक होय तेवो शोभे छे ।'

चंपकशेखर

जेनां एकी चरणोमां आठ मात्रा छे अने बेकी चरणोमां अगियार मात्रा छे तेवा चंपकशेखर छंदनुं उदाहरण ।

अलि-रव-गीई, कय-'चंपय-सेहर',
महु-समय-सिरी, उअ जणहु मणोहर ॥ १६

'जेमां भ्रमरोनां गीतगुंजन रूपी गीत गवाय छे अने जेणे चंपानां फूलनो मुकुट पहेरेलो छे तेवी लोकोने मनहर वसंतलक्ष्मीने तुं जो ।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रीडनक

जेनां एकी चरणोमां आठ मात्रा छे अने बेकी चरणोमां बार मात्रा छे तेवा क्रीडनक छंदनुं उदाहरण :

सहि वट्टुलउ, चंदुल्लउ पडिहाइ ।
रयणि-वहूए, 'कीलण'-गेंडुउ नाइ ॥ १७

'हे सखी, आ वर्तुळ चंद्र जाणे के रजनीरमणीनो क्रीडाकंदूक होय तेवो लागे छे ।'

बकुलामोद

जेनां एकी चरणोमां आठ मात्रा छे अने बेकी चरणोमां तेर मात्रा छे तेवा बकुलामोद छंदनुं उदाहरण :

मन्नावि प्रिउ, जइ-वि हु सो कय-दुन्नउ ।
जं महमहइ, दुसहउ 'बउलामोअउ' ॥ १८

'हे सखी, अपराध कर्यो होवा छतां तुं तारा प्रियतमने मनावी ले, केम के बोरसल्लीनी दुःसह सुगंध मघमघी रही छे ।'

मन्मथतिलक

जेनां एकी चरणोमां आठ मात्रा छे अने बेकी चरणोमां चौद मात्रा छे तेवा मन्मथतिलक छंदनुं उदाहरण :

निम्मलि गयणि, समुग्गउ चंदु विहावइ ।
रइए रइउ, 'वम्महतिलउ' नवु नावइ ॥ १९

'निर्मळ आकाशमां ऊगेलो चंद्र, रतिए जाणे के नवुं मन्मथतिलक कर्युं होय तेवो शोभे छे ।'

मालाविलसित

जेनां एकी चरणोमां आठ मात्रा छे अने बेकी चरणोमां पंदर मात्रा छे तेवा मालाविलसित छंदनुं उदाहरण :

कमलिणि-पासि, अलि माला विलसिअ' संपइ ।
कल-रव-मिसिण, किर मित्त-समागमु जंपइ ॥ २०

'अत्यारे कमलिनीनी पासे भ्रमरवृन्द विलसी रह्युं छे । ते जाणे के गुंजारवने बहाने "मित्रनो" (१ । सूर्यनो २ । प्रियतमनो) समागम थवानो होवानी जाण करे छे ।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुण्यामलक

जेनां एकी चरणोमां आठ मात्रा छे अने बेकी चरणोमां सोळ मात्रा छे तेवा पुण्यामलक छंदनुं उदाहरण :

मइं असरण तुहुं, अइ-निद्दय नडसि कुसुमाउह ।
जं किर 'पुण्णा, मलय'-समीरिण सयल वि कउह ॥ २१

'हे अतिशय निर्दय कुसुमायुध, अत्यारे ज्यारे बधी दिशाओने मलयपवने जाणे के भरी दीधी छे त्यारे तुं अशरण एवी मने त्रास आपी रह्यो छे ।'

नवकुसुमितपल्लव

जेनां एकी चरणोमां आठ मात्रा छे अने बेकी चरणोमां सत्तर मात्रा छे तेवा नवकुसुमितपल्लव छंदनुं उदाहरण :

कंपिअ निअवि, 'नव-कुसुमिअ-पल्लव' सललिअ लय ।
संभरि दइअ, पंथिअ-सत्थ तक्खणि गय विलय ॥ २२

'जेनां पर्णो उपर नवां पुष्पो खील्यां छे तेवी ललित लताने कंपती जोईने, पोतानी प्रियतमानुं स्मरण थतां तरत ज पथिको मरणशरण थया ।'

नोंध :- आ प्रमाणे एकी चरणोमां आठ मात्रावाळा नव पेटाप्रकारोनां उदाहरण आप्यां छे ।

हवे जेनां एकी चरणोमां नव मात्रा छे तेवा पेटाप्रकारोनां उदाहरण :

मलयमारुत

जेनां एकी चरणोमां नव मात्रा छे अने बेकी चरणोमां दस मात्रा छे तेवा मलयमारुत छंदनुं उदाहरण :

देक्खिवि वेल्लडी, 'मलय-मारुअञ्ज-धुआ ।
सुमरिवि गोरडी, पंथिअ-सत्थ मुआ ॥ २३

'मलयपवने कंपित थती वेलडीने जोईने गोरी सांभरी आवतां पथिको मरणशरण थया ।'

मदनावास

जेनां एकी चरणोमां नव मात्रा छे अने बेकी चरणोमां अगियार मात्रा छे तेवा मदनावास छंदनुं उदाहरण :

जं धण-लोअण, झस-झय-चल दीसहिं ।
'मयणावासउ', तं थण-गुडुरि सइं ॥ २४

'आ रमणीनां नयनो, कामदेवना मकरध्वज समां, चंचळ देखाय छे तेथी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लागे छे के तेना स्तनरूपी तंबूमां साक्षात् कामदेवे निवास कर्यो छे ।

मांगलिका

जेनां एकी चरणोमां नव मात्रा छे अने बेकी चरणोमां बार मात्रा छे तेवा मांगलिका छंदनुं उदाहरण :

प्रियअ-महु-संगमि, उअ 'मंगलिअ'इं करइ ।
किंसुअरूविण, वणसिरि घट्टइं धरइ ॥ २५

'जो, आ वनश्री पोताना प्रियतम वसंतना संगमां मांगलिक विधि करे छे : तेणे केसूडां रूपे घाटडी (=कसुंबल वस्त्र) पहेरी छे ।'

अभिसारिका

जेनां एकी चरणोमां नव मात्रा छे अने बेकी चरणोमां तेर मात्रा छे तेवा अभिसारिका छंदनुं उदाहरण :

काली रत्तडी, घणिहिं नहंगणु रुद्धउं ।
तो-वि न वट्टहिं, 'अहिसारिअ'जणु खुद्धउ ॥ २६

'रात घोर अंधारी (काळी) छे, आकाशनो पट वादळोथी ढंकाई गयो छे, तो पण रस्ते जतां अभिसारिकाओ गभराती नथी ।'

कुसुमनिरंतर

जेनां एकी चरणोमां नव मात्रा छे अने बेकी चरणोमां चौद मात्रा छे तेवा कुसुमनिरंतर छंदनुं उदाहरण :

सिद्धत्थ पुलय, 'कुसुम निरंतर' हसिउ सिउ ।
नव-दइआगमि, अंगि जि मंगलु धणइ किउ ॥ २७

'रोमांच थवाथी रूंवाडा ऊभां थयां (पुलकित थई) ए ज सिद्धार्थ (मंगल विधि माटेना सरसव) अने श्वेत (उज्ज्वळ) निरंतर हास्य ए ज पुष्पो : प्रियाए प्रियतमना प्रथम आगमने पोताना अंगथी ज मंगळविधि कर्यो ।'

मदनोदय

जेनां एकी चरणोमां नव मात्रा छे अने बेकी चरणोमां पंदर मात्रा छे तेवा मदनोदय छंदनुं उदाहरण :

घणरव दूसहा, दूहवइ 'मयणोदउ' हिअउ ।
पिअ-दूर-ट्ठिआ, पवसिअ-रमणिअणु कह जिअउ ॥ २८

'मेघनी गर्जना दुःसह छे, मदननो उदय हृदयने पीडे छे, प्रियतम दूर रहेलो छे, प्रवासीओनी पत्नीओ कई रीते जीवतर टकावी शके ?'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चंद्रोद्योत

जेनां एकी चरणोमां नव मात्रा छे अने बेकी चरणोमां सोळ मात्रा छे तेवा चंद्रोद्योत छंदनुं उदाहरण :

कोइल-कल-रवु, चंदणु 'चंदुज्जोअ'-विलासु ।
वल्लह-संगमि, अमय-रसु विरहि जलिउ हुआसु ॥ २९

'कोयलोनो कलरव, चंदन अने चंद्रनी ज्योत्स्नानो विलास - जो प्रियतम संगाथे होय तो ए अमृतरस समान छे, पण विरहमां तो ए धगधगता अग्नि समान छे ।'

रत्नावली

जेनां एकी चरणोमां नव मात्रा छे अने बेकी चरणोमां सत्तर मात्रा छे तेवा रत्नावलि छंदनुं उदाहरण :

मालइ-मालहिं; अलि सहहिं नव-मयरंद-सइण्ह ।
नं 'रयणावलि', नीलमय पाउस-दइइण दिण्ण ॥ ३०

'मालतीनी माळाओ उपर बेठेलो, नवा पुष्परसनी लालसावाळा भ्रमर एवो शोभे छे, जाणे के ते वर्षाऋतुरूपी प्रियतमे भेट आपेली इन्द्रनीलमणियुक्त रत्नावलि न होय !'

नोंध :- आ प्रमाणे एकी चरणोमां नव मात्रावाळा आठ पेटाप्रकारनां उदाहरण थयां ।

हवे जेनां एकी चरणोमां दस मात्रा छे तेवा पेटाप्रकारनां उदाहरण :

भ्रूवक्रणक

जेनां एकी चरणोमां दस मात्रा छे अने बेकी चरणोमां अगियार मात्रा छे ते भ्रूवंक्रणक छंदनुं उदाहरण :

रेहइ तरुणिअणु, 'भ्रूवंकण'-चंगउ ।
आणावइ नाइ, तिहुअण-जइ अंगउ ॥ ३१

'तरुणीओ तेमनी वांकी करेली भ्रमरथी एवी शोभे छे के जाणे ते लोकोने त्रिभुवनविजयी अनंगनी आण देती न होय !'

मुक्ताफलमाला

जेनां एकी चरणोमां दस मात्रा छे अने बेकी चरणोमां बार मात्रा छे ते मुक्ताफलमाला छंदनुं उदाहरण :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तारावलि भणि मा, भणि 'मुत्ताहल-माला' ।
रइ-कलहिण त्रुट्टी, ससि-रयणिहिं सुविसाला ॥ ३२

'एने तारावलि न कहे पण मोटा मोतीनी माळा कहे, जे चंद्र अने रजनी वच्चे थयेला प्रेमकलहमां तूटी पडी छे ।'

कोकिलावलि

जेनां एकी चरणोमां दस मात्रा छे अने बेकी चरणोमां तेर मात्रा छे ते कोकिलावलि छंदनुं उदाहरण :

'कोइलावलि'-कए, संगीअइ नच्चावउ ।
नव-लय-विलयाओ, मलयानिलु नट्टावउ ॥ ३३

'जेमां कोयलो संगीत आपे छे तेवा आ उत्सवमां नर्तनाचार्य मलयपवन विकसेली लतारूपी रमणीओने नृत्य करावो ।'

मधुकरवृंद

जेनां एकी चरणोमां दस मात्रा छे अने बेकी चरणोमां चौद मात्रा छे ते मधुकरवृंद छंदनुं उदाहरण :

फुल्लिअ-लय निअवि, 'महुअर-वंद्रिण' गीउ तह ।
बाहोल्लय-नयण, पयमवि पहिअ न दिंति जह ॥ ३४

'विकसेली लताने जोईने भ्रमरगणोए एवो गीतगुंजारव कर्यो, जेथी जेमनां नेत्रो आसुंभीनां थयां छे तेवा पथिको एक डगलुं पण दई न शक्या ।'

केतकीकुसुम

जेनां एकी चरणोमां दस मात्रा छे अने बेकी चरणोमां पंदर मात्रा छे ते केतकीकुसुम छंदनुं उदाहरण :

बिंबालिउ भुवणु, नव-'केअइ-कुसुम-'पराईण ।
नं अहिवासिअउं, मयरद्धय-कम्मण-जोइण ॥ ३५

'समग्र भुवन उपर विकसेलां केतकीकुसुमनो पराग एवो फेलाई गयो छे जाणे के तेना उपर कामदेवनुं कामण छवाई गयुं होय ।'

नवविद्युन्माला

जेनां एकी चरणोमां दस मात्रा छे अने बेकी चरणोमां सोळ मात्रा छे ते नव-विद्युन्माला छंदनुं उदाहरण :

ओ चलवलंतिआ, विप्फुरेइ 'नव-विज्जु-मालिआ' ।
मेह-रक्खसस्स, जिहिअ-व्व दीहर-करालिआ ॥ ३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'अरे ! नूतन वीजळीनी झबक झबक थती रेखा एवी लपके छे, जाणे मेघरूपी राक्षसनी लांबी भयंकर जीभ !'

त्रिवलीतरंगक

जेनां एकी चरणोमां दस मात्रा छे अने बेकी चरणोमां सत्तर मात्रा छे ते त्रिवलीतरंगक छंदनुं उदाहरण :

दिहरच्छिआए, पेच्छ सहए 'तिवली-तरंगयं' ।
कय-तिहुअण-विजए, लीह-तिअं पिव कामिण कड्ढिअं ॥ ३७

'आ दीर्घनेत्रोवाळी सुंदरीनी तरंगो जेवी त्रिवली एवी शोभे छे, जाणे के त्रिभुवन उपर विजय मेळव्या पछी कामदेवे त्रण रेखाओ न दोरी होय !'

नोंध :- आ प्रमाणे जेनां एकी चरणोमां दस मात्राओ छे तेवा सात पेटाप्रकारोनां उदाहरणो थयां ।

हवे जेनां एकी चरणोमां अगियार मात्रा छे तेवा पेटाप्रकारोनां उदाहरण :

अरविंदक

जेनां एकी चरणोमां अगियार मात्रा छे अने बेकी चरणोमां बार मात्रा छे तेवा अरविंदक छंदनुं उदाहरण

प्रिअहि मुहु 'अरविंदु', चल-नयण-इंदिंदिरु ।
दंत-कंति-केसरु, लच्छि-विलास-मंदिरु ॥ ३८

'जेमां चंचळ नयनरूपी भ्रमर छे अने दांतनी कांतिरूपी केसर छे, तेवुं प्रियतमानुं मुखारविन्द सुंदरताना विलासभवन जेवुं छे ।'

विभ्रमविलसितवदन

जेनां एकी चरणोमां अगियार मात्रा छे अने बेकी चरणोमां तेर मात्रा छे ते विभ्रमविलसितवदन छंदनुं उदाहरण :

कुइ धन्नु जुआणउ, विअसिअ-दीहर-नयणिए ।
माणिज्जइ तरुणिए, 'विब्भम-विलसिअ'-वयणिए ॥ ३९

'जेनां दीर्घ नयनो विकसेलां छे अने जेना वदन उपर विभ्रमनो विलास छे तेवी तरुणीने कोईक धन्य युवान ज भोगवे ।'

नवपुष्पंधय

जेनां एकी चरणोमां अगियार मात्रा छे अने बेकी चरणोमां चौद मात्रा छे ते नवपुष्पंधय छंदनुं उदाहरण :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहि पंकोप्पन्नु-वि, कमलु तं सलहिउ बुह-सइयहिं ।
जं रस-उद्धुसिअहिं, पिज्जइ 'नव-फुल्लुंधुअ' हिं ॥ ४०

'हे सखी, कादवमां उत्पन्न थयेलुं कमळ पण सेंकडो बुधजनोए वखाण्युं छे, एटले रसलोलुप भ्रमरो तेनुं रसपान करे छे' ।

किन्नरमिथुनविलास

जेनां एकी चरणोमां अगियार मात्रा छे अने बेकी चरणोमां पंदर मात्रा छे ते किन्नरमिथुनविलास छंदनुं उदाहरण :

अविरहिअहं मुइअहं, हरिणहं जि रइ-सुहु सलीसए ।
पर एवँइ केवँइ, जसु 'किं नर-मिहुण-विलासए' ॥ ४१

'जेओ आमरण अविरहित होय छे तेवा हरणमिथुननुं रतिसुख प्रशंसनीय छे, जेम तेम करता मनुष्यमिथुनोना विलासमां कशो जश बळ्यो छे ?'

विद्याधरलीला

जेनां एकी चरणोमां अगियार मात्रा छे अने बेकी चरणोमां सोळ मात्रा छे ते विद्याधरलीला छंदनुं उदाहरण :

मुद्धइ गिज्जंतउं, तुहुं कण्ण-रसायणु गीउ सुणि ।
जिण ओहामिज्जइ, 'विज्जाहर-लीला'-गीई-झुणि ॥ ४२

'आ मुग्धा कर्णने रसायणरूप जे गीत गाई रही छे ते तुं सांभळ । ए गीत विद्याधरो क्रीडा करतां जे गीत गाय छे तेना स्वरने पण झांखो पाडी दे छे ।'

सारंग

जेनां एकी चरणोमां अगियार मात्रा छे अने बेकी चरणोमां सत्तर मात्रा छे ते सारंग छंदनुं उदाहरण :

भीरु वि चंद-ट्ठिओ, वरि परिमुणिअ-नावुँ 'सारंगओ' ।
सीहु न सलहिज्जइ, जइ-वि हु दलिअ-मत्त-मायंगओ ॥ ४३

'हरण चंद्रमां रहेलुं होवाथी', भीरु होवा छतां पण तेनुं नाम प्रख्यात थयुं छे, ज्यारे मदमत्त हाथीओने चीरी नाखतो होवा छतां सिंह वखणातो नथी ।'

नोंध :- आ प्रमाणे जेना एकी चरणोमां अगियार मात्रा छे तेवा छ पेटाप्रकारोनां उदाहरण आप्यां ।

हवे जेनां एकी चरणोमां बार मात्रा छे तेवा पेटाप्रकारोनां उदाहरण :

कामिनीहास

जेनां एकी चरणोमां बार मात्रा छे अने बेकी चरणोमां तेर मात्रा छे ते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कामिनीहास छंदनुं उदाहरण :

मणहरु तुह मुह-सररुहु, रयणीअर-विब्भमु धरइ ।
'कामिणी हास'-विलासु-वि, जोण्हा-पसरहु अणुहरइ ॥ ४४

'हे सुंदरी, तारुं मनोहर मुखकमळ चंद्रनो भ्रम करावे छे, तारी हास्यलीला ज्योत्स्नाविलासनुं अनुकरण करे छे' ।

अपदोहक

जेनां एकी चरणोमां बार मात्रा छे अने बेकी चरणोमां चौद मात्रा छे ते अपदोहक छंदनुं उदाहरण :

एत्थु करिमि भणि काइं, प्रिउ न गणइ लग्गी पाइ ।
छड्डेविणु हउं मुक्की, 'अवदोहय' जिवँ किर गावि ॥ ४५

'हे सखी, कहे, हुं शुं करुं ? हुं प्रियतमने पगे पडी, तो पण ते मने अवगणे छे । मने तेणे छोडी दीधी छे, जेम दोह्या वगरनी गाय !'

प्रेमविलास

जेनां एकी चरणोमां बार मात्रा छे अने बेकी चरणोमां पंदर मात्रा छे प्रेमविलास छंदनुं उदाहरण :

कित्तिउ वण्णउं मयणु, किअउ जिण सो-वि नारायणु ।
तहु गोवालीअणहु, घण-'पिम्म-विलास'-परायणु ॥ ४६

'हुं कामदेवनो (प्रभाव) केटलो वर्णवुं, जेणे स्वयं नारायणने पण गोपीओनी प्रबळ प्रेमलीलाने वश कर्या ?'

कांचनमाला

जेनां एकी चरणोमां बार मात्रा छे अने बेकी चरणोमां सोळ मात्रा छे ते कांचनमाला छंदनुं उदाहरण :

दीसइ सुरधणु-लट्ठी, सावँल-गोर-वण्ण-सोहिल्ली ।
मरगय-'कंचण-माला', णं घण-लच्छिहि कंठि नवल्ली ॥ ४७

'श्यामल अने गौर रंगे शोभतुं इन्द्रधनुष जाणे मरकत अने सुवर्णनी नूतन माळा मेघलक्ष्मीना कंठमां होय तेवुं दीसे छे ।'

जलधरविलसित

जेनां एकी चरणोमां बार मात्रा छे अने बेकी चरणोमां सत्तर मात्रा छे ते जलधरविलसित छंदनुं उदाहरण :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पेक्खिऊण गयणयलि, नव-'जलहर-विलसिअ' चल-विज्जुल ।
संभरंति निअपिअहं, पहिअदइअ गलिअंसुअ-कज्जल ॥ ४८

'आकाशमां नवा मेघनी वच्चे विलसती चंचळ वीजळीने जोईने प्रवासे गयेला पतिओनी पत्नीओ अश्रुजळ वरसावती पोताना प्रियतमने संभारे छे' ।

नोंध :- ए प्रमाणे एकी चरणोमां बार मात्रावाळा पांच पेटाप्रकारोनां उदाहरण थयां ।

हवे एकी चरणोमां तेर मात्रावाळां पेटाप्रकारोनां उदाहरण ।

अभिनवमृगांकलेखा

जेनां एकी चरणोमां तेर मात्रा छे अने बेकी चरणोमां चौद मात्रा छे ते अभिनवमृगांकलेखा छंदनुं उदाहरण :

नहयल-वराह-दाढिआ, वारुणि-वहूइ णिडालिआ ।
'अहिणव-मिअंक-लेहिआ', उप्पइ पीइ निहालिआ ॥ ४९

'आ हमणां ज ऊगेली चंद्रलेखा, नभरूपी वराहनी दाढ जेवी, अथवा तो पश्चिम-दिशा-सुंदरीना भाल परना तिलक जेवी, जोतां ज प्रीति प्रगटावे छे ।

सहकारकुसुममंजरी

जेनां एकी चरणोमां तेर मात्रा छे अने बेकी चरणोमां पंदर मात्रा छे ते सहकारकुसुममंजरी छंदनुं उदाहरण :

वण-लच्छि-कणय-रसणिआ, कुसुमाउह-विजय-पडाइआ ।
'सहयार-कुसुममंजरी', उअह महु-समएण पयडिआ ॥ ५०

'जुओ तो, वनलक्ष्मीनी सोनानी कटिमेखला जेवी, अथवा तो कामदेवनी विजयपताका जेवी, वसंतऋतुमां विकसेली आ आम्रमंजरी शोभे छे ।'

कामिनीक्रीडनक

जेनां एकी चरणोमां तेर मात्रा छे अने बेकी चरणोमां सोळ मात्रा छे ते कामिनीक्रीडनक छंदनुं उदाहरण :

नह-लच्छि भाल-तिलअओ, दिसि-'कामिणि-कीलण'-गंडुअओ ।
रेहइ पुण्ण-मयंकओ, मयणाहिसेअ-अमय-कलसओ ॥ ५१

'आ पूर्णचंद्र नभलक्ष्मीना भाल उपरना तिलक जेवो, दिशासुंदरीना क्रीडा-कंदुक जेवो, कामदेवना अभिषेक माटेना अमृतकळश जेवो शोभे छे ।'

कामिनीकंकणहस्तक

जेनां एकी चरणोमां तेर मात्रा छे अने बेकी चरणोमां सत्तर मात्रा छे ते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कामिनीकंकणहस्तक छंदनुं उदाहरण :

कवणु सु धन्नउ जिण विणु, 'कामिणी-कंकण हत्थउ' विअलहिं ।
अन्न कि एवँइ ससि-मुहि, हिंडइ उन्नमिइहिं कर-कमलिहिं ॥ ५२

'एवो कोण ए धन्य छे जेना विरहे आ सुंदरीना हाथमांथी कंकण सरी पडे छे ? नहीं तो ते चंद्रमुखी शुं अमस्ती ज पोतानां करकमळ ऊंचां राखीने हरे फरे छे ?'

नोंध :- ए प्रमाणे जेनां एकी चरणोमां तेर मात्रा छे एवा चार पेटा प्रकारनां उदाहरण थयां ।

हवे जेनां चरणोमां चौद मात्र छे तेवा पेटाप्रकारोनां उदाहरण ।

जेनां एकी चरणोमां चौद मात्रा छे अने बेकी चरणोमां पंदर मात्रा छे ते मुखपालनतिलक छंदनुं उदाहरण :

मुखपालनतिलक

इह माहवि वम्मह-निलय, मलयानिल-हल्लि-किसलय ।
ओ दीसहिं कुसुमाउलय, कामिणिहु 'मुहवालण तिलय' ॥ ५३

'जुओ, आ वसंतऋतुमां कामदेवना आवासरूप, जेमनी कूंपळो मलयपवनथी फरके छे, जेने डोक पाछी वाळीने सुंदरीओ जोया करे छे, एवा पुष्पसभर तिलकतरुओ देखाय छे ।'

वसंतलेखा

जेनां एकी चरणोमां चौद मात्रा छे अने बेकी चरणोमां सोळ मात्रा छे ते वसंतलेखा छंदनुं उदाहरण :

कुविदो मयणो महाभडो, वणलच्छी अ 'वसंतरेहिआ' ।
कह जीवउ मामि विरहिणी, मिउ-मलयानिल-फंस-मोहिआ ॥ ५८

'ज्यारे कामदेवरूपी मोटो सुभट कोप्यो छे, वनलक्ष्मी वसंतनी शोभा धरी रही छे, तेवे समये हे सखी, मलयपवनथी मूर्छित बनेली आ विरहिणी केम जीवशे ?'

मधुरालापिनीहस्त

जेनां एकी चरणोमां चौद मात्रा छे अने बेकी चरणोमां सत्तर मात्रा छे मधुरालापिनीहस्त छंदनुं उदाहरण :

सुन्दरु तं किउ एउं सहि, पिउ जं मन्निउ विणय-निसण्णउ ।
तसु अवराहहं सव्वहं वि, 'महुरालाविणि हत्थु' विइण्णउ ॥ ५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'हे सखी, जेणे विनय दर्शाव्यो छे एवा तारा प्रियतमने तें मनावी लीधो अने तेना बधा अपराधोने तें मधुर वार्तालापथी तिलांजली दीधी ते घणुं सारुं कर्युं।

नोंध :- आ प्रमाणे जेनां एकी चरणोमां चौद मात्रा छे तेवा त्रण पेटाप्रकारोनां उदाहरण थयां ।

हवे जेनां एकी चरणोमां पंदर मात्रा छे तेवा पेटा प्रकारोनां उदाहरण ।

मुखपंक्ति

जेनां एकी चरणोमां पंदर मात्रा छे अने बेकी चरणोमां सोळ मात्रा छे ते मुखपंक्ति छंदनुं उदाहरण :

पर-नरमुह-पेच्छण-विरयए, पय-नह-मणि-पडिबिंबिअ जि परि ।
दहमुह-'मुह-पंति' पलोइआ सीअइ भय-विम्हय-हास-करि ॥ ५६

'जे परपुरुषनी सामे कदी जोती नथी तेवी सीताए मात्र पोताना चरणना मणि जेवा नखोमां जेनुं प्रतिबिंब पड्युं छे तेवी रावणना दस मुखोनी श्रेणी जोई, अने ते भय, विस्मय अने हास्यना भाव अनुभवी रही' ।

कुसुमलतागृह

जेनां एकी चरणोमां पंदर मात्रा छे अने बेकी चरणोमां सत्तर मात्रा छे ते कुसुमलतागृह छंदनुं उदाहरण :

जलइ जइ वि 'कुसुमलयाहरु', तवइ चंदु जह गिम्हि दिवायरु ।
तु-वि इसा-भर-परितरलिअ, पिअ-सहिययणु न मन्नइ बालिअ ॥५७

'पुष्पलतानो कुंज तेने दाह करे छे अने ग्रीष्मना सूर्यनी जेम चंद्र ताप करे छे, तो पण ईर्षाना भारे जेनुं मन अस्थिर बन्युं छे तेवी आ मुग्धा पोतानी वहाली सखीओनुं कह्युं मानती नथी ।'

नोंध :- आ प्रमाणे जेनां एकी चरणोमां पंदर मात्रा छे तेवा बे पेटा-प्रकारोनां उदाहरण थयां ।

हवे जेनां एकी चरणोमां सोळ मात्रा छे तेवा एक पेटाप्रकारनुं उदाहरण :

रत्नमाला

जेनां एकी चरणोमां सोळ मात्रा छे अने बेकी चरणोमां सत्तर मात्रा छे ते रत्नमाला छंदनुं उदाहरण :

करवाल-पहारिण उच्छलिअ, करि-सिर-मुत्ताहल-'रयण-माल' ।
रेहइ समरंगणि जय-सिरिए, उक्खिविअ नाइ सयंवर-माल ॥ ५८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'रणभूमिमां तलवारना प्रहारथी हाथीओनां मस्तकमांथी मोतीओनी श्रेणी ऊछळी : जाणे के विजयलक्ष्मीए स्वयंवरमाळा उपरथी नाखी होय तेवी शोभे छे'।

नोंध :- आ प्रमाणे जेना एकी चरणोमां सोळ मात्रा छे तेवा पेटाप्रकारनुं उदाहरण थयुं ।

आ प्रमाणे जेनां एकी चरणोमां सात मात्राथी लईने सोळ सुधीनी मात्राओ छे तेवी अंतरसमा चतुष्पदीना पंचावन पेटाप्रकार थया ।

जो अंतरसमा चतुष्पदीना उपर वर्णवेला पेटाप्रकारोनां चरणोने उलटावीए– एटले के तेनां एकी चरणो जे मात्रामापना छे, तेमने स्थाने अनुक्रमे बेकी चरणो जे मात्रामापनां छे तेमने मूकीए, अने तेवी रीते बेकी चरणोने स्थाने एकी चरणो मूकीए, तो अंतरसमा चतुष्पदीना बीजा पंचावन प्रकारो थाय छे । एमनी व्याख्या अने उदाहरणो नीचे प्रमाणे छे ।

सुमनोरमा

जेनां बेकी चरणोमां सात मात्रा छे अने एकी चरणोमां आठ मात्रा छे ते सुमनोरमा छंदनुं उदाहरण :

केआरावु, करि मोर मा ।
दूरि स गोरी, 'सुमनोरमा' ॥ ५९

'हे मोर, तुं केकारव न कर, ए अतिशय सुंदर गोरी अत्यारे मारायी दूर छे ।'

पंकज

जेनां बेकी चरणोमां सात मात्रा छे अने एकी चरणोमां नव मात्रा छे ते पंकज छंदनुं उदाहरण :

निअवि वयणु तहिं, विब्भमपउ ।
नं विहिण खित्तु, दहि 'पंकउ' ॥ ६०

'ते सुंदरीनुं भम्मरना विलासवाळुं वदन जोईने विधाताए कमळने धरामां नाखी दीधुं ।'

कुंजर

जेनां बेकी चरणोमां सात मात्रा छे अने एकी चरणोमां दस मात्रा छे ते कुंजर छंदनुं उदाहरण :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गज्जइ घणमाला, घण-घडहड ।
नं मयण-निवइणो, 'कुंजर'-घड ॥ ६१

'मेघमाळा घोर गगडाट करी रही छे, जाणे के मदनराजनी गजघटा न होय ।'

मदनातुर

जेनां बेकी चरणोमां सात मात्रा छे अने एकी चरणोमां अगियार मात्रा छे ते मदनातुर छंदनुं उदाहरण :

खलिअक्खरउं वयणु, मुहु पंडरु ।
तुह अक्खइ सहि मणु, 'मयणाउरु' ॥ ६२

'हे सखी, तुं तूटक तूटक वचन बोले छे, तारुं मुख फिक्कुं पडी गयुं छे, ते सूचवे छे के तारुं मन मदनथी उत्कंठित छे ।'

भ्रमरावली

जेनां बेकी चरणोमां सात मात्रा छे अने एकी चरणोमां बार मात्रा छे ते भ्रमरावली छंदनुं उदाहरण :

ओ रणझणंत भमइ, 'भमरावलि' ।
मयण-धणुह-गुण-वल्लि, णं सामलि ॥ ६३

'जुओ, गुंजारव करती भ्रमरनी हार भ्रमण करी रही छे, जाणे कामदेवना धनुष्यनी काळी दोरी ।'

पंकजश्री

जेनां बेकी चरणोमां सात मात्रा छे अने एकी चरणोमां तेर मात्रा छे ते पंकजश्री छंदनुं उदाहरण :

तहि भुमयहि पडिछंदुलो, धणु मयणहु ।
नव पंकयसिरि' सोअरी, तसु वयणहु ॥ ६४

'तेनी भम्मर ए कामदेवना धनुष्यनी प्रतिमा छे अने तेना वदननी सुंदरता खीलेला कमळनी सुंदरता जेवी छे ।'

किंकिणी

जेनां बेकी चरणोमां सात मात्रा छे अने एकी चरणोमां चौद मात्रा छे ते किंकिणी छंदनुं उदाहरण :

ससिणा रयणीए रइभरे, उल्लालिया ।
ओ 'किंकिणि'आउ न हु इमा, उडु-मालिआ ॥ ६५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'आ ताराओनी हार नथी पण चंद्रे रात्रि साथेनी प्रेमक्रीडामां ऊछाळेली घूघरीओ छे ।'

कुंकुमलता

जेनां बेकी चरणोमां सात मात्रा छे अने एकी चरणोमां पंदर मात्रा छे ते कुंकुमलता छंदनुं उदाहरण :

गोरडिअहि उवमिअइ त पर, अच्चब्भुअ ।
जइ किर हवइ फुल्लिअ फलिअ, 'कुंकुमलय' ॥ ६६

'जो केसरलता फूली फळीने अति अद्भुत बने, तो ज ते आ गोरीनुं उपमान बनी शके ।'

शशिशेखर

जेनां बेकी चरणोमां सात मात्रा छे अने एकी चरणोमां सोळ मात्रा छे ते शशिशेखर छंदनुं उदाहरण :

लंघइ सायर गिरि आरुहइ, तुह अहंग ।
'ससिसेहर'-हसिउज्जल नउखी, कित्ति-गंग ॥ ६७

'तारी अनोखी, अतूट अने महादेवना अट्टहास्य जेवी उज्ज्वल कीर्तिगंगा सागरने ओळंगी जाय छे अने पर्वत पर चडी जाय छे ।'

लीलालय

जेनां बेकी चरणोमां सात मात्रा छे अने एकी चरणोमां सत्तर मात्रा छे ते लीलामय छंदनुं उदाहरण :

जं सहि कोइल कलु पुक्कारइ, फुल्लु तिलउ ।
तं पत्तु वसंतु मासु कामहु, 'लीलालउ' ॥ ६८

'कोयलो कलरव करी रही छे । तिलक तरु विकस्युं छे । हे सखी, कामदेवना लीलानिवास जेवो वसंतमास आवी पहोंच्यो छे ।'

नोंध :- आ प्रमाणे जेनां बेकी चरणोमां सात मात्रा छे तेवा दस पेटाप्रकारोनां उदाहरण थयां ।

हवे जेनां बेकी चरणोमां आठ मात्रा छे तेवा पेटाप्रकारोनां उदाहरण ।

चंद्रहास

जेनां बेकी चरणोमां आठ मात्रा छे अने एकी चरणोमां नव मात्रा छे ते चंद्रहास छंदनुं उदाहरण :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रेहइ तुह करि, 'चंदहासउ' ।
नं रिउ-सिरीए, केस-पासउ ॥ ६९

'तारा हाथमां चंद्रहास खड्ग एवुं शोभे छे, जाणे शत्रुओनी लक्ष्मीनो चोटलो ।'

गोरोचना

जेनां बेकी चरणोमां आठ मात्रा छे अने एकी चरणोमां दस मात्रा छे ते गोरोचना छंदनुं उदाहरण :

'गोरोअण'-गोरी, तुज्झ कओलु ।
पडिमाइ चुंबइ, ससहरु लोलु ॥ ७०

'गोरोचनना वर्णवाळी हे गोरी, चंद्र लोल बनीने पोताना प्रतिबिंब वडे तारो गाल चूमे छे ।'

कुसुमबाण

जेनां बेकी चरणोमां आठ मात्रा छे अने एकी चरणोमां आगियार मात्रा छे ते कुसुमबाण छंदनुं उदाहरण :

जसु लोह-चक्किण-वि, न दलिउ झाणु ।
तहिं वीरि किं करउ, सु 'कुसुमबाणु' ॥ ७१

'लोखंडना चक्र(ना प्रहारथी) जेनुं ध्यान तूट्युं नहीं तेवा वीर जिनने पुष्पना धनुषवाळो कामदेव शुं करवानो छे ?'

मालतीकुसुम

जेनां बेकी चरणोमां आठ मात्रा छे अने एकी चरणोमां बार मात्रा छे ते मालतीकुसुम छंदनुं उदाहरण :

'मालइ-कुसुम' न लेइ, चंदणु चयइ ।
तुह दंसण-उम्माही, मग्गु जि निअइ ॥ ७२

'तने जोवाने उत्कंठित बनेली ते बाळा मालतीना पुष्पने आदरती नथी, चंदननो त्याग करे छे अने तारा मार्गनी प्रतीक्षा करी रही छे ।'

नागकेसर

जेनां बेकी चरणामां आठ मात्रा छे अने एकी चरणोमां तेर मात्रा छे ते नागकेसर छंदनुं उदाहरण :

दीसइ उववणि फुल्लिओ, 'नागकेसरो' ।
नं माहविण वण-सिरिहि, दिण्णु सेहरो ॥ ७३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'उपवनमां नागकेसर एवो खील्यो छे, जाणे वसंते वनश्रीने भेट करेलो शेखर !'

नवचंपकमाला

जेनां बेकी चरणोमां आठ मात्रा छे अने एकी चरणोमां चौद मात्रा छे ते नवचंपकमाला छंदनुं उदाहरण :

तणु 'नवचंपयमाल' जिण, कर-कम कमल ।
सहि तुहुं माहव-लच्छि तिण, परिमल-बहल ॥ ७४

'तारुं शरीर विकसेला चंपानां फूलोनी माळा जेवुं छे, तारा हाथपग कमळ जेवा छे, तेथी हे सखी, तुं भरपूर सुगंधवाळी वसंतलक्ष्मी जेवी छे ।'

विद्याधर

जेनां बेकी चरणोमां आठ मात्रा छे अने एकी चरणोमां पंदर मात्रा छे ते विद्याधर छंदनुं उदाहरण :

मुहि करिवि मयलंछणु गुलिअ, गुलिआ-सिद्धिं ।
'विज्जाहरि'ण जिवँ वम्महिण, जगु जिउ बुद्धिं ॥ ७५

'मृगलांछन (चंद्र) रूपी गुटिका मोढामां राखीने जेणे गुटिकासिद्धि प्राप्त करी छे तेवा विद्याधर जेवा जाग्रत थयेला कामदेवे जगतने जीती लीधुं ।'

कुब्जककुसुम

जेनां बेकी चरणोमां आठ मात्रा छे अने एकी चरणोमां सोळ मात्रा छे ते कुब्जककुसुम छंदनुं उदाहरण :

पेच्छंतहुं नवमालइ ललिअ, परिमल-असम ।
भमरहुं किवँ मणु रंजहि णवरि, 'कुज्जय-कुसुम' ॥ ७६

'असाधारण परिमलवाळी नवविकसित सुंदर मालतीने जोतां भमराओनां मननुं शुं करीने कुब्जकनुं फूल रंजन करी शके ?'

कुसुमास्तरण

जेनां बेकी चरणोमां आठ मात्रा छे अने एकी चरणोमां सत्तर मात्रा छे ते कुसुमास्तरण छंदनुं उदाहरण :

मलयानिलु मलयज-रसु ससहरु, 'कुसुमत्थरणु' ।
विरहानल-जलिअहि तसु सव्वु-वि, तणु-संतवणु ॥ ७७

'मलयपवन, चंदनना रस, चंद्र, पुष्पशय्या ए बधुं, जे विरहाग्निथी बळती होय, तेना शरीरने ऊलटो संताप जन्मावे ।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नोंध : आ प्रमाणे जेनां बेकी चरणोमां आठ मात्रा छे तेवा नव पेटा प्रकारोनां उदाहरण थयां ।

हवे जेनां बेकी चरणोमां नव मात्रा छे तेवा पेटाप्रकारोनां उदाहरण :-

मधुकरीसंलाप

जेनां बेकी चरणोमां नव मात्रा छे अने एकी चरणोमां दस मात्रा छे ते मधुकरीसंलाप छंदनुं उदाहरण :

निसुणिअ माइंदइ, 'महुअरि-संलावु' ।
ओ पवसिअ-तरुणिहिं, पत्थुअउ पलावु ॥ ७८

'आंबा उपर थतुं भ्रमरोनुं गुंजन सांभळीने जो, प्रवासीओनी तरुणीओ रुदन करवा लागी ।'

सुखावास

जेनां बेकी चरणोमां नव मात्रा छे अने एकी चरणोमां अगियार मात्रा छे ते सुखावास छंदनुं उदाहरण :

जइ वम्मह गोरडी, भलइ निहालसि ।
तुह 'सुहआवास'डी, ता किं जालसि ॥ ७९

'हे कामदेव, जो तने गोरी सुंदर लागे छे तो तारा ए सुखद आवासने तुं केम सळगावे छे ?'

कुंकुमलेखा

जेनां बेकी चरणोमां नव मात्रा छे अने एकी चरणोमां बार मात्रा छे ते कुंकुमलेखा छंदनुं उदाहरण :

फेडवि 'कुंकुम-लेह', रिउ-वहु-वयणहं ।
पंक-लेह निम्मविअ, पइं महि-सयणहं ॥ ८०

'तें तारा शत्रुओनी स्त्रीओ, जेमने भोंय पर सूवुं पडे छे, तेमनी तिलकरेखा भूंसी नाखीने त्यां माटीनी रेखा रची दीधी छे ।'

नवकुवलयदाम

जेनां बेकी चरणोमां नव मात्रा छे अने एकी चरणोमां तेर मात्रा छे ते कुवलयदाम छंदनुं उदाहरण :

जहिं घल्लइ उप्फुल्लिअ, धण चल-नयणइं ।
तहिं 'नव-कुवलय-दाम' इं, तक्खणि निवडइ ॥ ८१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'ज्यां ज्यां ते प्रिया पोताना विकसित चंचळ नेत्रोथी दृष्टि फेंके छे त्यां त्यां तरत ज ताजा नीलकमलनी माळा पडती होय छे ।'

कलहंस

जेनां बेकी चरणोमां नव मात्रा छे अने एकी चरणोमां चौद मात्रा छे ते कलहंस छंदनुं उदाहरण :

कामिणि-हिअय-सरोवरहं, तुहुं जि 'कलहंसु' ।
प्रिय रूविण मयणहु किअउ, तइं जि परहंसु ॥ ८२

'हे प्रिय, सुंदरीओना हृदयरूपी सरोवरमां तुं ज कलहंस छे । तें ज तारा रूप वडे कामदेवनो पराभव कर्यो छे ।'

संध्यावली

जेनां बेकी चरणोमां नव मात्रा छे अने एकी चरणोमां पंदर मात्रा छे ते संध्यावली छंदनुं उदाहरण :

सिंदूरिअ गुरु-कुंभ-त्थल, गय-घड तुह बलि ।
अगालि नराहिव उत्थरिअ, किर 'संझावलि' ॥ ८३

'जेमनां विशाळ कुंभस्थळ सिंदूरथी रंग्यां छे तेवी गजघटा तारी सेनामां छे। तेथी हे, नरपति, जाणे के अकाळे संध्यानी छाया ऊठी छे ।'

कुंजरललित

जेनां बेकी चरणोमां नव मात्रा छे अने एकी चरणोमां सोळ मात्रा छे ते कुंजरललिता छंदनुं उदाहरण :

तोडिअ-गुड-मुहवयऽ-संनाह, छड्डिअ-खग्गय ।
निंदहिं पहु कुंजर-ललिअ-गइ, तुह अरि भग्गय ॥ ८४

'हे राजा, जेमना हाथीनी अंबाडीओ अने हाथी अने घोडाना मोढा परनां आभरणो तूटी पड्यां छे अने जेमणे खड्ग नाखी दीधां छे तेवा भागी रहेला तारा शत्रुओ तेमना हाथीनी धीमी गतिने वखोडी रह्या छे ।'

कुसुमावली

जेनां बेकी चरणोमां नव मात्रा छे अने एकी चरणोमां सत्तर मात्रा छे ते कुसुमावली छंदनुं उदाहरण :

निच्छइं पिअ-सहि वम्महु-रायहु, आणु जु भंजइ ।
'कुसुमावलि'-किअ-छप्पय-सद्दिहिं, तं महु तज्जइ ॥ ८५

'हे प्रिय सखी, नक्की जे मदनराजानी आज्ञानो भंग करे छे तेने वसंत पुष्पो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पर रहेला भ्रमरोना गुंजारवथी धमकी आपे छे ।'

नोंध :- आ प्रमाणे जेनां बेकी चरणोमां नव मात्रा छे तेवा आठ पेटाप्रकारोनां उदाहरण थयां ।

हवे जेनां बेकी चरणोमां दस मात्रा छे तेवा पेटाप्रकारोनां उदाहरण ।

विद्युल्लता

जेनां बेकी चरणोमां दस मात्रा छे अने एकी चरणोमां अगियार मात्रा छे ते विद्युल्लता छंदनुं उदाहरण :

'विज्जुलय' मेह-मज्झि, अंधारइ गोरी ।
कवण स हत्थ-भल्लि, कुसुमाउह तोरी ॥ ८६

'मेघ मध्ये अंधारामां गोरी दीसती वीजळी होय पछी हे कामदेव, तारा हाथमां बीजुं क्युं बाण होवुं जरूरी ?'

पंचाननललिता

जेनां बेकी चरणोमां दस मात्रा छे अने एकी चरणोमां बार मात्रा छे ते पंचाननललिता छंदनुं उदाहरण :

संतट्ठहं मयगलहं, चिक्कारिहिं कलिअ ।
रण्णाइं वि वज्जरहिं, 'पंचाणण-ललिअ' ॥ ८७

'त्रासेला हाथीओना चित्कारवाळां अरण्यो सिंहोनी लीला सूचवे छे ।'

मरकतमाला

जेनां चरणोमां दस मात्रा छे अने एकी चरणोमां तेर मात्रा छे ते मरकतमाला छंदनुं उदाहरण :

फुल्लंधुअ-धोरणीउ, लया-वण-गोच्छिहिं ।
नव-'मरगय-मालि'आउ, नाइ महु-लच्छिहिं ॥ ८८

'लताओना पुष्पगुच्छो उपर रहेली भ्रमरावलिओ जाणे के वसंतलक्ष्मीनी नवी मरकतमाळाओ होय तेवी दीसे छे ।'

अभिनववसंतश्री

जेनां बेकी चरणोमां दस मात्रा छे अने एकी चरणोमां चौद मात्रा छे ते अभिनववसंतश्री छंदनुं उदाहरण :

कर असोअ-दल मुहु कमलु, हसिउ नवमल्लिअ ।
'अहिणव-वसंत-सिरि' एह, मोहण-छइल्लिअ ॥ ८९

'अशोकपर्ण जेनां हाथ छे, कमळ जेनुं मुख छे अने नवमल्लिका जेनुं हास्य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छे तेवी आ नवी वसंतलक्ष्मी संमोहन करवामां निपुण छे ।'

मनोहरा

जेनां बेकी चरणोमां दस मात्रा छे अने एकी चरणोमां पंदर मात्रा छे ते मनोहरा छंदनुं उदाहरण :

तुह गुण अणुदिणु सुमरंतिहि, विरह-करालिअहि ।
मयण-'मणोहर' तणु-अंगिहि, दय करि बालिअहि ॥ ९०

'जे प्रत्येक दिवसे तारा गुणोनुं स्मरण करी रही छे तेवी आ विरहथी पीडित कृशांगी बाळा उपर, हे मदनसुंदर, तुं दया कर ।'

आक्षिप्तिका

जेनां बेकी चरणोमां दस मात्रा छे अने एकी चरणोमां सोळ मात्रा छे ते आक्षिप्तिका छंदनुं उदाहरण :

हिंडइ सा धण जावँ गहिल्ली, विरहिण 'अक्खित्ती' ।
देक्खिवि वल्लहु ता आणंदी, जणु अमइण सित्ती ॥ ९१

'विहरथी व्यग्र ए प्रिया घेली बनीने भटकती हती । तेवामां पोताना प्रियतमने जोईने ते एवी आनंदित बनी गई, जाणे के तेना उपर अमृत छांट्युं होय !'

किन्नरलीला

जेनां बेकी चरणोमां दस मात्रा छे अने एकी चरणोमां सत्तर मात्रा छे ते किन्नरलीला छंदनुं उदाहरण :

ओ भड-कबंधु नच्चंतु समरि, असिपहर-तुट्टिण ।
'किन्नर-लील' कलइ तुरय-सिरिण, तक्खण-चहुट्टिण ॥ ९२

'जो तो, समरांगणमां नाचता आ सुभटना धड उपर तलवारना घाथी कपायेलुं घोडानुं माथुं चोंटी गयाथी ते सुभट किन्नरनी लीला दर्शावी रह्यो छे !'

नोंध :- आ प्रमाणे जेनां बेकी चरणोमां दस मात्रा छे तेवा सात पेटाप्रकारोनां उदाहरण थयां ।

हवे जेनां बेकी चरणोमां अगियार मात्रा छे तेवा पेटाप्रकारोनां उदाहरण ।

मकरध्वजहास

जेनां बेकी चरणोमां अगियार मात्रा छे अने एकी चरणोमां बार मात्रा छे ते मकरध्वजहास छंदनुं उदाहरण :

सो जलिअउ मयणग्गि, जु कुसुमिअउ पलासु ।
जा पप्फुल्लिअ मल्ली, सु 'मयरद्धय-हासु' ॥ ९३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'आ खीलेलो पलाश ते भडकी ऊठेलो मदनाग्नि छे, आ खीलेली मल्लिका ए कामदेवनुं हास्य छे ।'

कुसुमाकुलमधुकर

जेनां बेकी चरणोमां अगियार मात्रा छे अने एकी चरणोमां तेर मात्रा छे ते कुसुमाकुलमधुकर छंदनुं उदाहरण :

पत्तउ एहु वसंतउ, 'कुसुमाउल-महुअरु' ।
माणिणि माणु मलंतउ, कुसुमाउह-सहयरु ॥ ९४

'जेमां पुष्पो उपर भ्रमरो टोळे वळ्या छे, जे मानिनीओनुं मान मर्दन करी रह्यो छे तेवो आ कामदेवनो सहचर वसंत आवी पहोंच्यो छे ।'

भ्रमरविलास

जेनां बेकी चरणोमां अगियार मात्रा छे अने एकी चरणोमां चौद मात्रा छे ते भ्रमरविलास छंदनुं उदाहरण :

अलि मालइ-परिमल-लुद्ध, न अन्नहिं रइ करइ ।
सा 'भ्रमर-विलास'-विअड्ढ, न अन्नहिं मणु धरइ ॥ ९५

'मालतीनी सुगंधमां लुब्ध बनेलो भ्रमर बीजां पुष्पो उपर प्रेम करतो नथी अने ए भ्रमरविलासनी पारखु मालतीनुं मन पण बीजाओमां चोंटतुं नथी ।'

मदनविलास

जेनां बेकी चरणोमां अगियार मात्रा छे अने एकी चरणोमां पंदर मात्रा छे ते मदनविलास छंदनुं उदाहरण :

मयण-विलास-गिरि-व्व सहइ, मुद्धहि थण-मंडलु ।
तहिं रेहइ तरल-हार-लय, निज्झरु किर निम्मलु ॥ ९६

'ते मुग्धानुं स्तनमंडळ कामदेवना क्रीडागिरि जेवुं शोभे छे । एना पर रहेली झळकती हारलता पण निर्मळ झरणुं होय तेवी शोभे छे ।'

विद्याधरहास

जेनां बेकी चरणोमां अगियार मात्रा छे अने एकी चरणोमां सोळ मात्रा छे ते विद्याधरहास छंदनुं उदाहरण :

नासंतिहिं समरागम-समइ, परिचत्त-गइंदिहिं ।
दिवि 'विज्जाहर हासि'अ सयल, तुह वेरि-नरिंदिहिं ॥ ९७

'युद्धनो आरंभ थतां ज हाथीओ छोडी दईने नासी जता तारा शत्रुराजाओए अंतरीक्षमां रहेला बधा विद्याधरोने हसाव्या ।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुसुमायुधशेखर

जेनां बेकी चरणोमां अगियार मात्रा छे अने एकी चरणोमां सत्तर मात्रा छे ते कुसुमायुधशेखर छंदनुं उदाहरण :

घोलिर-नव-पल्लवु परिफुल्लिउ, रेहइ असोअ-तरु ।
विरइउ रम्मु नाइ महु-मासिण, 'कुसुमाउह-सेहरु' ॥ ९८

'जेनां ताजां पर्ण डोली रह्यां छे तेवुं आ विकसित अशोकवृक्ष एवुं शोभे छे, जाणे के वसंतमासे कामदेवना शिर पर रमणीय शेखर रच्यो होय !'

नोंध :- आ प्रमाणे जेनां बेकी चरणोमां अगियार मात्रा छे तेवा छ पेटा-प्रकारोनां उदाहरण थयां ।

हवे जेनां बेकी चरणोमां बार मात्रा छे तेवा पेटाप्रकारोनां उदाहरण :

उपदोहक

जेनां बेकी चरणोमां बार मात्रा छे अने एकी चरणोमां तेर मात्रा छे ते उपदोहक छंदनुं उदाहरण :

महु कंतिण रणि मुक्कउ, एक्कु पहारु अमोहु ।
'उअ दो हय' हय चूरिउ, संदणु सारहि जोहु ॥ ९९

'मारा प्रियतमे एवो एक अमोघ प्रहार कर्यो जेने लीधे, जो तो, बन्ने घोडा कपाई गया अने रथ, सारथि तथा योद्धाना चूरेचूरा थई गया !'

दोहक

जेनां बेकी चरणोमां बार मात्रा छे अने एकी चरणोमां चौद मात्रा छे ते दोहक छंदनुं उदाहरण :

पिअहु पहारिण इक्किण-वि, सहि 'दो हया' पडंति ।
संनद्धउ असवार-भडु, अन्नु तुरंगु न भंति ॥ १००

'मारा प्रियतमना एक ज प्रहारथी बंने ढळी पडे छे - जेणे कवच बांध्युं छे तेवो सुभट असवार, तेम ज तेनो घोडो : एमां कशो संदेह नथी ।'

नोंध :- सूत्रमां जे 'घणुं खरुं' एम कह्युं छे तेथी संस्कृतमां पण दोहक होय छे । जेम के :

मम तावन्मतमेतदिह, किमपि यदस्ति तदस्तु ।
रमणीभ्यो रमणीयतरं, अन्यत्किमपि न वस्तु ॥ १०१

'मारो तो आ बाबतमां आवो ज मत छे–बीजुं जे कांई होय के न होय पण रमणीओथी वधु रमणीय बीजी कोई पण वस्तु नथी ।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नोंध :- आ छंदमां समचरणोने अंते बे गुरु होवा जोईए एवी परंपरा छे।

चंद्रलेखा

जेनां बेकी चरणोमां बार मात्रा छे अने एकी चरणोमां पंदर मात्रा छे ते चंद्रलेखा छंदनुं उदाहरण :

तुह विरहिं सा अइ-दुब्बली, धण आवंडुर-देह ।
अहिमयर-किरणिहिं विक्खिविअ, 'चंदलेह' जिवँ एह ॥ १०२

'ए तारी प्रिया तारा विरहे अतिशय दूबळी थई गई छे अने तेनुं शरीर फिक्कुं पडी गयुं छे । सूर्यनां किरणो वडे क्षुब्ध चंद्रकळा जेवी ए लागे छे' ।

सुतालिंगन

जेनां बेकी चरणोमां बार मात्रा छे अने एकी चरणोमां सोळ मात्रा छे ते सुतालिंगन छंदनुं उदाहरण :

तुह चंडिण भुअ-दंडिण निवइ, धरमाणिण महि-वलउ ।
जलहि-सुआलिंगण-पहव-सुहु, देउ जणद्दणु कलउ ॥ १०३

'हे नरपति, तारो प्रचंड भुजदंड पृथ्वीमंडळने धरी रह्यो छे तेथी विष्णुदेव समुद्रकन्या लक्ष्मीना आलिंगननुं सुख भले माणे।'

कंकेल्लिलताभवन

जेनां बेकी चरणोमां बार मात्रा छे अने एकी चरणोमां सत्तर मात्रा छे ते कंकेल्लिलताभवन छंदनुं उदाहरण :

'कंकेल्लि-लया-भवण'ब्भंतरि, अलि-रिंछोलि सहंति ।
नावइ महुलच्छी-विणिवेसिअ, कज्जल-हत्थय-पंति ॥ १०४

'अशोकलतानी कुंजमां भ्रमरावलि एवी शोभे छे, जाणे के वसंतलक्ष्मीए दीधेला काजळना थापानी हार ।'

नोंध :- आ प्रमाणे जेनां बेकी चरणोमां बार मात्रा छे तेवा पांच पेटाप्रकारोनां उदाहरण थयां ।

हवे जेनां बेकी चरणोमां तेर मात्रा छे तेवा पेटाप्रकारनां उदाहरण ।

कुसुमितकेतकीहस्त

जेनां बेकी चरणोमां तेर मात्रा छे अने एकी चरणोमां चौद मात्रा छे ते कुसुमितकेतकीहस्त छंदनुं उदाहरण :

जगु नीसेसु वि निज्जिणिउ, निरु गव्विरु विसमत्थउ ।
उब्भइ सरल-दलंगुलिउ, 'कुसुमिअ-केअइ-हत्थउ' ॥ १०५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'समग्र जगतने में जीती लीधुं छे एम जाणी अत्यंत गर्विष्ठ बनेलो कामदेव, आंगळीओ जेवां सीधां पत्रवाळी विकसित केतकीरूपी हाथ ऊंचो करे छे ।'

कुंजरविलसित

जेनां बेकी चरणोमां तेर मात्रा छे अने एकी चरणोमां पंदर मात्रा छे ते कुंजरविलसित छंदनुं उदाहरण :

सल्लइ-पल्लव-कवलप्पणु, रेवा-नइ-जलि मज्जणु ।
तं 'कुंजर-विलसिउ' सुमरइ, गय-विरहिउ करेणु-गणु ॥ १०६

'हाथीना विरहमां हाथणीओ, सल्लकीनां पल्लवोनो कोळियो आपवो, रेवा नदीना जळमां (साथे) स्नान करवुं-एवा हाथीना विलासनुं स्मरण करी रही छे ।'

राजहंस

जेनां बेकी चरणोमां तेर मात्रा छे अने एकी चरणोमां सोळ मात्रा छे ते राजहंस छंदनुं उदाहरण :

जइ गंगाजलि धवलि कालइ, जउणा-जलि जइ खित्तउ ।
'रायहंसि' न हु वड्ढु न तुट्टु, सुब्भत्तणु तु-वि तेत्तउ ॥ १०७

'श्वेत गंगाजळमां नाखो के श्याम जमनाजळमां नाखो, तो पण राजहंसनी शुभ्रता नथी वधती नथी घटती : एटली ने एटली ज रहे छे ।'

अशोकपल्लवच्छाया

जेनां बेकी चरणोमां तेर मात्रा छे अने एकी चरणोमां सत्तर मात्रा छे ते अशोकपल्लवच्छाया छंदनुं उदाहरण :

वयणु सरोजु नयण कुवलय-दल, हासु नव-फुल्लिअ-मल्लि ।
कर-पाय 'असोअ-पल्लव-च्छाय', सइ जि कुसुमाउह भल्लि ॥ १०८

'वदन ए कमळ, नयन ए नीलकमळनी पांखडी, हास्य ए विकसेली नवमल्लिका, हाथपगनी अशोकपल्लवनी कांति— आम (आ सुंदरी) पोते ज कामदेवनुं बाण छे ।'

नोंध :- आ प्रमाणे जेनां बेकी चरणोमां तेर मात्रा छे तेवा चार पेटाप्रकारोनां उदाहरण थयां ।

हवे जेनां बेकी चरणोमां चौद मात्रा छे तेवा पेटाप्रकारोनां उदाहरण ।

अनंगललिता

जेनां बेकी चरणोमां चौद मात्रा छे अने एकी चरणोमां पंदर मात्रा छे ते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनंगललिता छंदनुं उदाहरण :

पलिअ केस चल दसणावलि, जर जज्जरइ सरीर-बलु ।
सव्वि वि गलहिं 'अणंग-ललिअ', किज्जउ धम्मु महंत-फलु ॥ १०९

'वाळ धोळा थया छे, दांत हले छे, घडपण शरीरबळने जर्जरित करे छे, बधो रमणीय प्रेमाचार गळी गयो छे, तो (पछी हवे तो) महान फळ आपनार धर्मनुं पालन करो ।'

मन्मथविलसित

जेनां बेकी चरणोमां चौद मात्रा छे अने एकी चरणोमां सोळ मात्रा छे ते मन्मथविलसित छंदनुं उदाहरण :

मय-वस-तरुणि-विलोअण-तरलु, कलेवरु संपइ जीविउ ।
मेल्हहु रमणीअणि सहु संगु, चयहु हय-'वम्मह-विलसिउ' ॥११०

'शरीर, संपत्ति अने जीवन मदिराथी मत्त तरुणीनी आंखो जेवां चंचळ छे, तो स्त्रीओनो संग छोडो अने दुष्ट मन्मथना विलासनो त्याग करो ।'

ओहुल्लणक

जेनां बेकी चरणोमां चौद मात्रा छे अने एकी चरणोमां सत्तर मात्रा छे ते ओहुल्लणक छंदनुं उदाहरण :

महु-रसु घुंटिउ जेहिं जहिच्छइ, ते अलि दीसंत भमंत ।
मालइ-ओहुल्लणउं करंतिण, किं साहिउ पइं हेमंत ॥ १११

'जेमणे यथेच्छ मधुपान कर्युं छे तेवा भ्रमरो (हवे) अहींतहीं भटकता देखाय छे । हे हेमन्त, मालतीने पुष्परहित करीने तें शुं साध्युं ?'

नोंध :- आ छंदनुं नाम केटलाकने मते 'वारंगडी' छे ।

आ प्रमाणे जेनां बेकी चरणोमां चौद मात्रा छे तेवा त्रण पेटाप्रकारोनां उदाहरण थयां ।

हवे जेनां बेकी चरणोमां पंदर मात्रा छे तेवा पेटाप्रकारनां उदाहरणो :

कज्जललेखा

जेनां बेकी चरणोमां पंदर मात्रा छे अने एकी चरणोमां सोळ मात्रा छे ते कज्जललेखा छंदनुं उदाहरण :

'कज्जल-लेहा'विल-लोअणहं, गलिअंसु-जलिण पम्हुट्ठउ ।
अहरालत्तय-रसु सामरिसु, तुह रिउ-वहु-नयणि पइट्ठउ ॥ ११२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'तारा शत्रुओनी स्त्रीओनी आंखोनी काजळरेखाथी मलिन बनेल, अने नींगळता आंसुजळे धोवाई गयेल एवा अधर उपरना अळताना रसे, क्रोधे भराईने, ए स्त्रीओनी आंखोमां प्रवेश कर्यो छे ।'

किलिकिंचित

जेनां बेकी चरणोमां पंदर मात्रा छे अने एकी चरणोमां सत्तर मात्रा छे ते किलिकिंचित छंदनुं उदाहरण :

तरुणी-'किलिकिंचिअ'इं विसट्टहिं, ससि-जोण्ह-समुज्जल रत्तडी ।
मल्लिअ-फुल्लइं परिमल-सारइं, जउ तउ गय सग्गहु वत्तडी ॥११३

'तरुणीओ हास्य, भय, रोष, गर्व वगेरे भावो प्रगट करी रही छे, रात्री चांदनी वडे उज्ज्वळ छे, मल्लिकानां फूलोनी सुंदर सुगंध प्रसरे छे : ज्यारे आवुं होय त्यारे स्वर्गनी वात ज निरर्थक छे ।'

नोंध :- आ प्रमाणे जेनां बेकी चरणोमां पंदर मात्रा छे तेवा पेटाप्रकारोनां बे उदाहरण थयां ।

हवे जेनां बेकी चरणोमां सोळ मात्रा छे तेवा पेटाप्रकारनुं उदाहरण :

शशिबिंबित

जेनां बेकी चरणोमां सोळ मात्रा छे अने एकी चरणोमां सत्तर मात्रा छे ते शशिबिंबित छंदनुं उदाहरण :

तुह मुहु लायण्ण-तरंगिणीए, झलकंतउ कंति-करंबिअउं ।
सोहइ निम्मल-वट्टुल-मंडलु, जल-मज्झि नाइ ससि बिंबिअउ ॥ ११८

'तारुं तेजे मढेलुं वदन लावण्यनी सरितामां झळहळतुं एवुं शोभे छे, जेवुं निर्मळ अने वर्तुळ चंद्रमंडळ जळमां प्रतिबिंबित थयुं होय ।'

नोंध :- आ प्रमाणे एक प्रकारनुं उदाहरण थयुं ।

आ रीते चतुष्पदीना पंचावन प्रकार छे ।

आ प्रमाणे बंने विभागो मळीने अंतरसमा चतुष्पदीना एक सो दस प्रकार छे । ते 'वस्तुक' पण कहेवाय छे ।

अर्धसमा चतुष्पदी

अंतरसमा चतुष्पदीना बीजा अने त्रीजा चरणने उलटाववाथी अर्धसमा चतुष्पदी बने छे । एना पण एक सो दस प्रकार छे अने तेमनां नाम पण 'चंपककुसुम' वगेरे छे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अर्धसम चंपककुसम

एकी चरणोमां सात मात्रा अने बेकी चरणोमां आठ मात्रा होय, त्यारे अंतरसम चंपककुसुम बने छे। ते प्रमाणे तेनां ज बीजा अने त्रीजा चरणने उलटावथी अर्धसम चंपककुसुम बने छे ।

अर्धसम चंपककुसुमनुं उदाहरण :

गोरी गोट्ठि, दर-फुरिउट्ठि
कलहंसी-गइ-, कलहे लग्गइ ॥ ११५

'जेना होठ सहेज धूजी रह्या छे तेवी गोरी गोष्ठमां कलहंसीनी साथे गतिनी बाबतमां कलह करवा लागी छे ।'

अर्धसम मुखपंक्ति

अर्धसम मुखपंक्तिनुं उदाहरण :

कृव-कण्ण-कलिंग परज्जिआ, ठिअ नरवइ माण-विज्जिअआ ।
न हु कोइ अभिट्टइ अणिअ-वहि, कहिं वइरि जयद्दहु कण्ह कहि ॥ ११६

'कृपाचार्य, कर्ण, अने कलिंगराजनो पराभव कर्यो, बीजा राजाओ पण मानरहित थई गया, रणमार्गमां कोई पण सामे भीडवा आवतुं नथी । हे कृष्ण, कहे, आपणो शत्रु जयद्रथ कये स्थाने छे ?'

नोंध :- आ प्रमाणे अर्धसमना बीजा प्रकारोनां उदाहरण पण जाणवां ।

संकीर्णा चतुष्पदी

जे चतुष्पदी ध्रुवामां, आ पहेलां जेमनुं निरूपण कर्युं छे तेमनां मापवाळां बे, त्रण के चार चरणो मिश्ररूपे एक साथे होय, ते चतुष्पदी 'संकीर्णा' कहेवाय छे।

जेमां बे चरणो जुदा जुदा मापनां छे तेवी संकीर्णा चतुष्पदीनुं उदाहरण :

चूडुल्लउ बाहोह-जलु, नयणा कंचुअ विसम-थण ।
इअ मुंजि रइआ दूहडा, पंच-वि कामहुं पंच सर ॥ ११७

' ''चूडुल्लउ'', ''बाहोह-जलु'', ''नयणा'', ''कंचुअ'', ''विसम-थण''- आ शब्दोवाळा पांच दोहा मुंजे कामदेवनां पांच बाण समा रच्या ।'

जुदा जुदा मापवाळां त्रण चरणोनी संकीर्णा चतुष्पदीनुं उदाहरण :

वायाला फरुसा विंधणा, गुणिहिं विमुक्का प्राणहर ।
जह दुज्जण सज्जण-जण-पउरि, तेवँ पसर न लहंति सर ॥ ११८

'पवनवेगी, कठोर, वींधी नाखे तेवां, पणछमांथी छोडायेलां अने प्राणने हरी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेनारां होवा छतां बाणोने, जेम वाचाळ, कठोर अने मर्म वींधती वाणीवाळा, निर्गुण अने प्राणने हरनारा दुर्जनोने सज्जनोनी वच्चे प्रवेश मळतो नथी, तेम प्रवेश मळतो न हतो ।'

अथवा तो आ प्रकारनुं बीजुं एक उदाहरण :

चूडुल्लउ चुण्णीहोइसइ, मुद्धि कओलि निहित्तउ ।
निद्दड्ढउ सासाणलिण, बाह-सलिल-संसित्तउ ॥ ११९

'हे मुग्धा, तें गाल नीचे राखेलो चूडलो, तारा निसासानी आगथी बळी जईने, तारा आंसुथी सींचाईने, चूरेचूरा थई जशे ।'

जेमां चारे चरणो जुदा मापनां छे तेवी संकीर्णा चतुष्पदीनुं उदाहरण :

तं तेत्तिउ बाहोहजलु, सिहिणंतरि-वि न पत्तु ।
छिमिछिमिवि गंड-त्थलिहिं, सिमिसिमिवि सिमिवि समत्तु ॥ १२०

'आंसुना प्रवाहनुं जळ एटलुं बधुं होवा छतां पण ते स्तनोना वचगाळा सुधी पहोंच्युं नहीं : गाल उपर छमछम थईने पडतुं ते समसम करतुं ऊडी गयु ।'

सर्वसमा चतुष्पदी

जे चतुष्पदीनां चारे चरणो एकसरखा मापनां होय तेनुं नाम 'सर्वसमा' चतुष्पदी ।

तेना केटलाक खास प्रकारो आ प्रमाणे छे । ध्रुवक जेनां प्रत्येक चरणमां एक पंचमात्र अने एक चतुर्मात्र होय, ते सर्वसमा चतुष्पदीनुं नाम ध्रुवक छे ।

ध्रुवकनुं उदाहरण :

जइ वि संखु न करि, तुहुं 'धुवु' मुणिउ हरि ।
जं विरह-भीअइ, अणुसरिउ सिरिअइ ॥ १२१

'जो के तारा हाथमां शंख नथी ते छतां तुं विष्णु होवानुं निश्चितपणे जणाय छे, कारण के जाणे के तारा विरहथी बीती होय तेम श्री तने अनुसरे छे ।'

शशांकवदना

जेना प्रत्येक चरणमां बे चतुर्मात्र अने एक द्विमात्र होय, ते सर्वसमा चतुष्पदीनुं नाम शशांकवदना छे ।

शशांकवदनानुं उदाहरण :

नव-कुवलय-नयण, 'ससंक-वयण' धण ।
कोमल-कमल-कर, उअ सरय-सिरि किर ॥ १२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'विकसेला नीलकमल जेवां नयनवाळी, चंद्र जेवा वदनवाळी, कमळ जेवा कोमळ हाथवाळी तारी प्रिया, जो तो, शरदऋतुनी लक्ष्मी जेवी लागे छे ।'

मारकृति

जेना प्रत्येक चरणमां कां तो एक चतुर्मात्र, एक पंचमात्र अने एक द्विमात्र होय, अथवा तो बे चतुर्मात्र अने एक त्रिमात्र होय, ते सर्वसमा चतुष्पदीनुं नाम मारकृति छे ।

मारकृतिनुं उदाहरण :

तुह मार 'मार-किदी', क-वि एह नवल्लिअ ।
दूरि स बाल-भल्लि, जं हिअडइ सल्लिअ ॥ १२३

'हे कामदेव, तारुं आ मारणकार्य अपूर्व छे : ए बाळारूपी बाण दूर होवा छतां हृदय वींधाई जाय छे ।'

महानुभावा

जेना प्रत्येक चरणमां एक षट्कल, एक चतुष्कल अने एक द्विकल होय, अथवा तो त्रण चतुष्कल होय, ते सर्वसमा चतुष्पदीनुं नाम महानुभावा छे ।

महानुभावानुं उदाहरण :

जे निअहिं न पर-दोस, गुणिहिं जि पयडिअ-तोस ।
ते जगि 'महाणुभावा', विरला सरल-सहावा ॥ १२४

'जेओ बीजानो दोष जोता नथी, बीजाना गुणो प्रत्ये संतोष प्रगट करे छे, जे सरळ स्वभावना छे, तेवा महानुभावो आ जगतमां विरल होय छे ।'

अप्सरोविलसित

जेना प्रत्येक चरणमां एक षट्कल, एक चतुष्कल, एक त्रिकल होय, अथवा बे चतुष्कल अने एक पंचकल होय, अथवा तो बे पंचकल अने एक त्रिकल होय, ते सर्वसमा चतुष्पदीनुं नाम अप्सरोविलसित छे ।

अप्सरोविलसितनुं उदाहरण :

पइं ससि-वयणिए विब्भमि, हसिअ 'अच्छर-विलसिअ'इं ।
भुमइहि किउ पाइक्कउ, मयणु मोहिअ-जण-मणइं ॥ १२५

'हे चंद्रवदना, तें प्रेमोपचारमां करेला हास्यथी, अप्सरा जेवा विलासथी अने लोकोना मनने मोहित करती तारी भमरथी कामदेवने पगपाळा सैनिक जेवो बनावी दीधो छे ।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गंधोदकधारा

जेना प्रत्येक चरणमां एक षट्कल अने बे चतुष्कल होय, अथवा तो त्रण चतुष्कल अने एक द्विकल होय, ते चतुष्पदीनुं नाम गंधोदकधारा ।

गंधोदकधारानुं उदाहरण :

रमणि-कवोल-कुरंगमय-, पत्त-लयाविल-अंसु-भवि ।
घण-'गंधोदय-धार'-भरि, वइरिअ तुह ण्हायंति सवि ॥ १२६

'तारा बधा शत्रुओ तेमनी स्त्रीओना गाल परनी कस्तूरीनी पत्रभंगीथी खरडायेलां आंसुमांथी प्रगटेली भरपूर सुगंधीजळनी धारामां नहाई रह्यां छे ।'

पारणक

जेना प्रत्येक चरणमां त्रण चतुष्कल अने एक त्रिकल होय, अथवा तो एक षट्कल, एक चतुष्कल अने एक पंचकल होय, ते चतुष्पदीनुं नाम पारणक छे ।

पारणकनुं उदाहरण :

कइअहिं होएसइ तं दिवसु, आणंद-सुहा-रस-पावणउं ।
होही प्रिय-मुह-ससि-चंदिमइ, जहिं नयण-चओरहं 'पारणउं' ॥ १२७

'आनंदरूपी अमृतरस प्राप्त करावतो एवो दिवस क्यारे आवशे, ज्यारे (मारां) नेत्ररूपी चकोर प्रियाना चंद्रवदननी चांदनीथी पारणुं करशे ?'

पद्धडिका

जेना प्रत्येक चरणमां चार चतुष्कल होय, ते चतुष्पदीनुं नाम पद्धडिका ।

पद्धडिकानुं उदाहरण :

पर-गुण-गहणु स-दोस-पयासणु, महु-महुरक्खर-हिअ-मिअ-भासणु ।
उवयारिण पडिकिउ वेरिअणहं, इअ 'पद्धडी' मणोहर सुअणहं ॥१२८

'पारकाना गुण लेवा, पोताना दोष प्रगट करवा, मधमीठां, हितकारी अने मापसरनां वचन बोलवां, शत्रुओनो उपकारथी प्रतिकार करवो—एवो सुंदर होय छे सज्जनोनो व्यवहार ।'

नोंध :- त्रीजा अध्यायमां (३,७३)जे 'पद्धति' नामना छंदनी व्याख्या आपी छे, ए पद्धतिमां पण प्रत्येक चरणमां चार चतुष्कल होय छे ए खरुं, पण त्यां एवो पण नियम छे के एकी स्थाने रहेला चतुष्कलमां जगण न आवी शके अने छेल्ला चतुष्कलनुं स्वरूप कां तो जगणनुं होय, अथवा तो चार लघुनुं होय, ज्यारे अहीं जे पद्धडिकानी व्याख्या आपी छे तेमां एवो कोई नियम लागु पडतो नथी ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रगडाध्रुवक

जेना प्रत्येक चरणमां त्रण चतुष्कल होय, एक पंचकल होय, अथवा तो एक षट्कल, बे चतुष्कल अने एक त्रिकल होय, ते चतुष्पदीनुं नाम रगडाध्रुवक।

रगडाध्रुवकनुं उदाहरण :

अइ-चंगंगइ मोरइ वल्लहिं, जइ तुम्ह रूव-मडप्फरु भग्गउ ।
काइं त एवँहिं तहु विरह-खणि, महु वम्महं 'रगडउ ध्रुवु' लग्गउ ॥ १२९

'हे कामदेव, अति सुंदर शरीरवाळा मारा वालमे तारा रूपना गर्वना चूरा करी नाख्या, तेथी करीने तुं शा माटे एना विरहकाळे आ रीते मन लगातार रगडवा मांड्यो छे ?'

★

हेमचंद्राचार्य-रचित वृत्तियुक्त छंदोनुशासननो
'षट्पदी-चतुष्पदी-वर्णन' नामनो
छठ्ठो अध्याय समाप्त थयो ।

★

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सातमो अध्याय
द्विपदी-वर्णन

द्विपदी ध्रुवा

हवे द्विपदी ध्रुवाओनुं निरूपण करवामां आवे छे ।

कर्पूर

जेना प्रत्येक चरणमां बे द्विकल, एक चतुष्कल, बे द्विकल, एक लघु, बे द्विकल, एक चतुष्कल, बे द्विकल अने त्रण लघु होय ते द्विपदीनुं नाम कर्पूर । तेमां पंदर मात्रा पछी यति होय छे । व्याख्यामां ज्यां द्विकल कह्यो छे ते जगणना निषेध माटे छे ।

कर्पूरनुं उदाहरण :

'कप्पूर'-धवल-गुण अज्जिणिअ, आजम्मु वि निव-चक्कवइ पइं ।
कित्ति काइं उल्लालि करि, घल्लिअ चउ-सायर परइ ॥ १

'हे चक्रवर्ती राजवी, तें जन्मथी मांडीने तारा कपूर जेवा उज्ज्वळ गुणो वडे जे कीर्तिने प्राप्त करी छे, तेने केम तें उछाळीने चार समुद्रोनी पेले पार फेंकी दीधी छे ?'

कुंकुम

उपर जेनी व्याख्या आपी छे ते कर्पूर छंदमां छेल्लो लघु ओछो होय तेवां चार चरणोनी बनेल द्विपदीनुं नाम कुंकुम छे ।

कुंकुम द्विपदीनुं उदाहरण :

घणसारु मेल्लि 'कुंकुम' चयहि, परइ करहि मयनाहि वि ।
विणु पिअयमिं इहु सवु निष्फलउं, मणु रइ करइ न कत्थ वि ॥ २

'तुं कपूर मूकी दे, केसर तजी दे, कस्तूरीने आघी कर । प्रियतम विना ए बधुं निरर्थक छे । मारा मनने कशुं ज गमतुं नथी ।'

नोंध :- मागधोनी परंपरामां कर्पूर अने कुंकुम ए बंने छंदोने उल्लालक कह्या छे । केटलाक छंद:शास्त्रीओए आठ लघुथी शरू करीने बब्बे लघुनी वृद्धि करतां जे उल्लालना प्रकारो बने छे तेमने वर्णव्या छे, परंतु ए छंदोना एक करोड जेटला प्रस्तारमां एमनो समावेश थई जतो होईने अमे एमनुं जुदुं निरूपण कर्युं नथी ।

लय

जेना प्रत्येक चरणमां सात चतुष्कल होय ते द्विपदीनुं नाम लय छे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लय द्विपदीनुं उदाहरण

किउ उरि लच्छिहिं नि लउ' करिण कलिउ चक्कु महिअलु धरिउ ।
बलि-नावुँ साहिउ न हु कह-वि हु पहु तुहुं पुरिसोत्तिम-चरिउ ॥ ३

'तारा वक्षःस्थळ पर लक्ष्मीए निवास कर्यो छे, तें हाथमां चक्र धारण कर्युं छे, तें पृथ्वी पर स्वामीत्व मेळव्युं छे, तें केमेय "बलिनुं" (१ । बळवान शत्रुओनुं, २ । बलिदानवनुं) नाम पण सह्युं नथी । हे स्वामी, तें पुरुषोत्तमनुं (विष्णुनुं) चरित्र प्रगट कर्युं छे ।'

भ्रमरपद

ज्यारे लय द्विपदीमां दस मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय त्यारे ते द्विपदीनुं नाम भ्रमरपद छे ।

भ्रमरपद द्विपदीनुं उदाहरण :

ललिअ-विलासोचिअ, तविण किलेसहि, सहि किं तणु अप्पणु ।
मालइ-कुसुमु सहइ, 'भमर-पउं', न उण, खर-सउणि-झडप्पणु ॥ ४

'हे सखी, तुं तो ललित विलासने योग्य छो, तो शा माटे तुं तप करीने पोताना देहने कष्ट आपे छे ? मालतीनुं पुष्प भ्रमरनो चरणपात सही शके, नहीं के कोई कठोर पक्षीनो झपाटो ।'

उपभ्रमरपद

जेना प्रत्येक चरणमां एक षट्कल, पांच चतुष्कल अने एक द्विकल होय अने दस मात्रा पछी तथा आठ मात्रा पछी यति होय ते द्विपदीनुं नाम उपभ्रमरपद।

उपभ्रमरपद द्विपदीनुं उदाहरण :

तहि मुद्धहि नेहंधहि किवँ किवणय तुह खलिउ पयट्टु ।
'उअ भमर-पएण' वि भज्जइ मालइ-नव-कुसुमु विसट्टु ॥ ५

'हे अजाण, ए प्रेमांध मुग्धानो तें केम अपराध कर्यो ? जो, मालतीनुं ताजुं विकसेलुं फूल भ्रमरना चरणप्रहारथी पण तूटी पडे छे ।'

गरुडपद

जेना प्रत्येक चरणमां छ चतुष्कल अने एक पंचकल होय, ते द्विपदीनुं नाम गरुडपद छे ।

गरुडपद द्विपदीनुं उदाहरण :

जसु पारु लहंति कया-वि न-वि सुर-गुरु-भिउ-नंदण-पमुह ।
अरि-पन्नग-'गरुड पयं 'पिअइ सयलु-वि गुण-गणु सु किवँ तुह ॥ ६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'हे शत्रुरूपी नाग प्रत्ये गरुड समा, बृहस्पति, शुक्राचार्य वगेरे पण जेनो कदी पार पामी शकता नथी तेवो तारो गुणसमूह समग्रपणे कई रीते वर्णवी शकाय ?'

उपगरुडपद

जेना प्रत्येक चरणमां एक षट्कल, पांच चतुष्कल अने एक त्रिकल होय ते द्विपदीनुं नाम उपगरुडपद । उपगरुडपद द्विपदीनुं उदाहरण :

हरिअ-दुजीह-प्पसरणु पिअ-पुरिसोत्तम विणयाणंदणु ।
'उअ गरुड-पय'म्मि निबद्ध-रइ नरवइ हरइ न कासु मणु ॥ ७

'जेम गरुड सर्पोनी गति रूंधे छे, तेम जे दुर्जनोनी गति रूंधे छे; जेम गरुडने विष्णु वहाला छे, तेम जेने उत्तम पुरुषो वहाला छे; जेम गरुड विनताने आनंद आपे छे (विनतापुत्र छे), तेम जे प्रणाम करनारने आनंद आपे छे—एम, गरुडना जेवा आचरणमां आसक्ति राखतो आ राजवी कोनुं मन न हरी ले' ।'

हरिणीकुल

जेना प्रत्येक चरणमां सात चतुष्कल अने एक द्विकल होय तथा बार मात्रा पछी अने आठ मात्र पछी यति होय ते द्विपदीनुं नाम हरिणीकुल ।

हरिणीकुल द्विपदीनुं उदाहरण :

तुहुं उज्जाणि म वच्चसु, जइ वि हु विलसइ, मयणूसवु पबलु ।
गइ-नयणिहिं लज्जीहइ, तुह हंसीउलु, सहि तह 'हरिणिउलु' ॥ ८

'उद्यानमां जोरशोरथी मदनोत्सव विलसी रह्यो होवा छतां तुं त्यां न जती, केम के हे सखी, तारी गतिथी हंसीओ लज्जित थशे अने आंखोथी हरणीओ लज्जित थशे ।'

गीतिसम

ज्यारे हरिणीकुल द्विपदीमां दस मात्रा पछी अने आठ मात्रा पछी यति होय, त्यारे ए द्विपदी गीतिने मळती होवाने कारणे तेनुं नाम गीतिसम छे ।

गीतिसम द्विपदीनुं उदाहरण :

नच्चिरु किसल-करिहिं, फुड-पयडिअ-, पुलउग्गमु मउलावलिहिं ।
उववणु नाइ मुइउ, कय-'गीइ समं', चिअ तरलिहिं अलि-उलिहिं ॥ ९

'कूंपळरूपी कर वडे नाचतुं, स्पष्टपणे कळीओना समूहथी रोमांच प्रगट करतुं, तो साथोसाथ चंचळ भ्रमरोना गुंजनथी गीत गातुं आ उपवन जाणे के आनंदित थई रह्युं छे ।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ्रमररुत

जेना प्रत्येक चरणमां पांच षट्कल होय तथा दस मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, ते द्विपदनुं नाम भ्रमररुत ।

भ्रमररुत द्विपदीनुं उदाहरण :

वर-जाइ सरंतहु, 'भमर रुअं'तहु तुहु, चिरु सुहु परिदीसइ ।
मायंगि मयंधइ, तुज्झु रमंतहु, कण्ण-चवेड जि होसइ ॥ १०

'हे भ्रमर, उत्तम चमेलीने संभारीने तुं लांबुं रुदन करतो होवा छतां ए तारा माटे सुखरूप छे । पण जो तुं मदांध मातंगनी पासे रमतो रहीश, तो तेना काननी झपट तुं खाईश ।'

हरिणीपद

जेना प्रत्येक चरणमां एक षट्कल होय अने छ चतुष्कल होय, ए द्विपदीनुं नाम हरिणीपद ।

हरिणीपद द्विपदीनुं उदाहरण :

एत्तहे गब्भ-भरालस 'हरिणी पउ' न हु एक्को-वि संचरइ ।
एत्तहे कण्णारोविअ-सरु हय-लुद्धउ भण मिउ किं करइ ॥ ११

'एक तरफ गर्भना भारना कारणे अशक्त हरणी एक पण पगलुं भरी शके तेम नथी । तो बीजी तरफ दुष्ट शिकारी धनुष्यनी दोरी पर बाण चडावीने ऊभो रह्यो छे । कहे, (आवी परिस्थितिमां) हरण (बिचारो) शुं करे ?'

कमलाकर

जेना प्रत्येक चरणमां चार षट्कल, एक चतुष्कल अने एक त्रिकल होय, ते द्विपदीनुं नाम कमलाकर ।

कमलाकर द्विपदीनुं उदाहरण :

सयलु वि दिणु संनिहिअहं खेल्लंतहं चक्कवाय-मिहुणहं निअवि ।
विरह-दुत्थ मित्तत्थवणि नाइ दुक्खिअ मउलिहिं 'कमलायर'-वि ॥ १२

'जेओ आखो दिवस एकबीजानी निकटमां रमतां हतां एवां चक्रवाकोनी जोडीने, सूर्य आथमतां विरहे दुःखी थयेली जोईने, कमळसरोवरनां कमळो पण जाणे के दुःखे बीडाई गयां ।'

कुंकुमतिलकावली

जेना प्रत्येक चरणमां सात चतुष्कल अने एक त्रिकल होय, ते द्विपदीनुं नाम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुंकुमतिलकावली ।

कुंकुमतिलकावली द्विपदीनुं उदाहरण :

महु दूसह-विरह-करालिअहि मयण मेलसु जणु मण-वंछिउ ।
पइं पडिम ठवेविणु करिसु सामि 'कुंकुमतिलयावलि' लंछिउ ॥ १३

'हे कामदेव, असह्य विरहदुःखे हुं त्रासेली छुं, तो तुं मने मारा मनवांछित जननो मेळाप करावे । हे स्वामी, हुं तारी प्रतिमा स्थापीने तेने कुंकुमतिलकावलीथी विभूषित करीश ।'

रत्नकंठिका

उपर्युक्त कमलाकर अने कुंकुमतिलकावलीना प्रत्येक चरणमां जो बार मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, तो ए बंने द्विपदीओनुं नाम रत्नकंठिका ।

रत्नकंठिकाना बंने प्रकारनां उदाहरण :

जइ न हससि न य कुप्पसि, न लवसि ता तुहु, सहइ 'रयण-कंठिअ' ।
अन्नह फुरिआहर-दर-, दीसंत णवर, सहइ दसण-पंतिआ ॥ १४

'जो तुं हसे नही, कोपे नहीं, बोले नहीं तो ज तारी रत्नकंठी शोभी ऊठे छे । नहीं तो फरकता होठो वच्चेथी सहेज देखाती तारी दंतपंक्तिनी ज शोभा विलसे छे' ।

पाडिअ-बहुविह-नरवइ-कुंजर-सइ पर-साहिज्ज-विवज्जिउ ।
महिअलि निरुवम-विक्कमु तुहुं राय-'रयण कंठी'-रवु निच्छिउ ॥ १५

'अनेक राजवीओना सेंकडो हाथीओने कोई बीजानी सहाय विना हणी नाखनार हे राजरत्न, नक्की तुं आ पृथ्वी पर अतुल्य पराक्रमी सिंह छे ।'

शिखा

जेना प्रत्येक चरणमां एक षट्कल, पांच चतुष्कल अने एक पंचकल होय तथा बार मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, ते द्विपदीनुं नाम शिखा ।

शिखा द्विपदीनुं उदाहरण :

जसु अतुलिअ-गय-बल-भरि कंपहिं कुल-महिहर सवि स-वसुंधर ॥
निअ-कुल-नहयल-ससहर वीर-'सिहा'-मणि जय-मज्झि तुहुं जि पर ॥ १६

'जेनी अतुल्य गजसेनाना भारथी पृथ्वी सहित बधा कुलपर्वतो कंपी ऊठे छे तेवा, पोताना कुळरूपी गगनमां चंद्रसमा (हे राजवी), जगतमां तुं एकमात्र वीरशिरोमणि छे ।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छड्डुणिका

जेना प्रत्येक चरणमां सात चतुष्कल अने एक त्रिकल होय तथा दस मात्रा पछी अने आठ मात्रा पछी यति होय, ते द्विपदीनुं नाम छड्डुणिका ।

छड्डुणिका द्विपदीनुं उदाहरण :

जा किन्नर-मिहुणिहिं, तुहु पुहइसर, पत्थुअ सुचरिअ-पद्धडिअ ।
ता गिरि-गुह-संधिहिं, कायर तक्खणि, हुअ रिउ-धोरणि 'छड्डुणिअ' ॥१७

'हे पृथ्वीपति, जेवुं किन्नरमिथुनोए तारा सुंदर चरितोनी श्रेणीनुं (गान) शरू कर्युं, ते ज क्षणे तारा शत्रुओनी टोळी जे गिरिगुफाओना सांधामां (संताई रहेती) ते स्थान छोडीने कायरताथी नासी गई ।'

स्कंधकसम

जेना प्रत्येक चरणमां आठ चतुष्कल होय तथा दस मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, ते द्विपदीनुं नाम स्कंधकसम ।

स्कंधकसम द्विपदीनुं उदाहरण :

नारिहुं वयणुवल्लइं, सर 'खंधय-सम'-, जलहिं मज्झि मज्जंतिअहं ।
ओ गिण्हहिं विब्भमु, मणहर-अहिणव-, विअसिअ-सररुह-पंतिअहं ॥१८

'सरोवरना जळमां खभा सुधी डूबीने नहाती रमणीओनां वदन, जो तो, ताजां ज खीलेलां रमणीय कमळोनी श्रेणीनी सुंदरता धरावे छे ।'

मौक्तिकदाम

ए स्कंधकसमना प्रत्येक चरणमां जो बार मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, तो ते द्विपदीनुं नाम मौक्तिकदाम ।

मौक्तिकदाम द्विपदीनुं उदाहरण :

जइ तुह पवयणु सामिअ, हिअइ ठविज्जइ, छण-ससहर-कर-निम्मलु ।
ता निच्छउ अहिरावँहुं, 'मुत्तिअ-दावँहुं', तरलहुं संगहु निप्फलु ॥ १९

'हे (तीर्थंकर) प्रभु, जो तारुं पूर्णिमाना चंद्रनां किरणो जेवुं निर्मळ प्रवचन हृदयमां (हृदय पर) स्थापित कराय पछी तो रमणीय झगमगती मोतीनी माळा पहेरवी निरर्थक छे ए वात नक्की ।'

नवकदलीपत्र

जो ए स्कंधक सम द्विपदीना प्रत्येक चरणमां चौद मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, तो ते द्विपदीनुं नाम नवकदलीपत्र ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवकदलीपत्र द्विपदीनुं उदाहरण :

'नवकयलीपत्ति'हिं वीअणु, पत्थुउ कमलिहिं, विरइउ सत्थरउ ।
तह-वि हु दाहु पवड्ढइ महु, सीउ उवयरणु, पिअ-सहि संवरउ ॥ २०

'हे वहाली सखी, तें लीलां केळनां पानथी पवन नाखवा मांड्यो, कमळोनी पथारी करी, तो पण मारा शरीरनी बळतरा वधती जाय छे । तो तुं हवे शीतोपचार करवा मांडी वाळ ।'

स्कंधकसमा, मौक्तिकदाम्नी, नवकदलीपत्रा

जो स्कंधकसम, मौक्तिकदाम अने नवकदलीपत्र ए द्विपदीओना प्रत्येक चरणमां एक षट्कल, छ चतुष्कल अने एक द्विकल ए प्रमाणे मात्रागणो होय तो ए द्विपदीओनां नाम अनुक्रमे स्कंधकसमा, मौक्तिकदाम्नी अने नवलदलीपत्रा छे । यतिनो नियम मूळ प्रमाणे ज छे ।

स्कंधकसमा द्विपदीनुं उदाहरण :

गय-पत्त-परिग्गह, सुमणस-विरहिअ, फल-वज्जिअ तरु-'खंध-सम' ।
कंटय-परिवारिअ, गिरि-कंदर-गय, तुह रिउ वसहिं विमुक्क-कम ॥२१.१॥

'हे राजवी, जेम वृक्षनुं ठूंठुं पत्रसमूह विनानुं, फळपुष्परहित अने कांटाथी घेरायेलुं होय छे, तेम तारा शत्रुओ हाथी, वाहनो अने अंतःपुर रहित, सज्जनोना साथ वगरना, सुखभोगे वर्जित अने दुष्टजनोथी वींटळायेला एवा, पर्वतोनी गुफामां वसे छे ।'

नोंध :- ए ज प्रमाणे बाकीना बे प्रकारनी द्विपदीओनां उदाहरणो जाणवां ।

आयामक

जो प्रत्येक चरणमां सात चतुष्कल होय अने एक पंचकल होय, तो ए द्विपदीनुं नाम आयामक ।

आयामक द्विपदीनुं उदाहरण :

'आयामय'-धवलत्तण-गुण-कलिए पेच्छिवि केअइ-दलि अलि विलसिरु ।
संभरि पिअ-नयणइं विरहज्जर-जज्जरिअ-गमणु मुज्झइ पहिउ चिरु ॥२२

'दीर्घ अने धवल एवा केतकीपत्र पर रहेला चंचळ भ्रमरने जोईने पोतानी प्रियानां नयन सांभरी आवतां विरहज्वरे जेनी गति अटकी पडी छे, तेवो प्रवासी ऊंडी मूर्छामां ढळी पडे छे ।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कांचीदाम

जो आयामकना प्रत्येक चरणमां दस मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय तो ते द्विपदीनुं नाम कांचीदाम ।

कांचीदाम द्विपदीनुं उदाहरण :

अंगय फुडिअ तुडिअ, नव-कंचुअ-गुण, दलिउ 'कंचि-दामु' स-निअंसणु ।
तहिं तुह गुण-सवणिण, ऊससिअंगिहिं, अप्पडिहय-सासणु हुअ मयणु ॥२३

'तेना अवयवो रोमांचित थया, नवी कंचुकीनी कस तूटी गई, कटिमेखला सहित तेनुं वस्त्र सरी पड्युं : तारा गुणोनुं वर्णन सांभळीने नि:श्वास नाखती एवी तारी प्रियाना देह पर, जेनो प्रतिकार न थई शके तेवुं कामदेवनुं शासन स्थपायुं ।'

रसनादाम

ते आयामक द्विपदीना प्रत्येक चरणमां जो बार मात्र अने आठ मात्रा पछी यति होय, तो ते द्विपदीनुं नाम रसनादम ।

रसनादाम द्विपदीनुं उदाहरण :

तुह दंसण-तूरंतिए, सुंदर मुद्धए, सुणि जं किउ पच्चलिउ ।
हारु निअंबि निवेसिउ, 'रसणा-दामु', वि-थण-सिहरोवरि घल्लिउ ॥ २४

'हे सुंदर, तने जोवाने उतावळी बनेली ते मुग्धाए केवुं ऊलटुंसुलटुं कर्युं ते तुं सांभळ : तेणे हार कटिप्रदेश पर पहेर्यो अने स्तनप्रदेश पर कटिमेखला !'

चूडामणि

ए आयामक द्विपदीना प्रत्येक चरणमां जो चौद मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, तो ते द्विपदीनुं नाम चूडामणि ।

चूडामणि द्विपदीनुं उदाहरण :

बहुविह-समरंगणि खग्गिण, नवनव जय-सिरि, जं पइं परिणिज्जइ ।
निव-'चूडामणि' तुह कित्तिहिं, मंगल-कारणि, तं जगु धवलिज्जइ ॥२५

'अनेक समरांगणोमां तारा खड्गबळे तुं नवी नवी विजयश्रीने वरे छे तेथी, हे नृपशिरोमणि, तारो मांगलिक उत्सव करवा माटे तारी कीर्तिथी जगतने धोळवामां आवी रह्युं छे ।'

उपायामक, उपकांचीदाम, उपरसनादाम, उपचूडामणि

उपर्युक्त आयामक वगेरे चारेय द्विपदीओना प्रत्येक चरणमां जो एक षट्कल, छ चतुष्कल अने एक त्रिकल होय, तो ते द्विपदीओनां नाम अनुक्रमे उपायामक,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपकांचीदाम, उपरसनादाम अने उपचूडामणि एवां छे । तेमां यतिनो नियम पण आगळ कह्या प्रमाणे छे ।

उपायामक द्विपदीनुं उदाहरण :

तणु-अंगिहिं लोअण-नलिणिहिं 'उअ आयामिण' केअइ-दलु निज्जिउ ।
वयणुल्लइं कंति-कडप्पिण तह मयलंछण-मंडलु अवहत्थिउ ॥ २६

'ए कृशांगीए पोतानां नेत्रकमळोनी दीर्घताथी केतकीपत्र उपर पण विजय मेळव्यो छे, अने तेना वदने पोतानी अतिशय कांतिथी चंद्रमंडळने पण अपमानित कर्युं छे ।'

नोंध :- ए प्रमाणे बाकीना प्रकारोनां पण उदाहरण समजवां ।

स्वप्नक

जेना प्रत्येक चरणमां आठ चतुष्कल अने एक द्विकल होय, ते द्विपदीनुं नाम स्वप्नक ।

स्वप्नक द्विपदीनुं उदाहरण :

पिउ आइउ निवडिउ पइहिं सपणय-वयणिहिं अणुणिवि माणु मुआविअ ।
इअ 'सिविणय'-भरि आलिंगिमि जावँहिं तावँहिं सहि हय-कुक्कुड रडिअ ॥ २७

'प्रिय आव्यो, पगमां पड्यो, प्रणयवचनथी मने मनावीने मान छोडाव्युं अने स्वप्नमां हुं ज्यां तेने आलिंगन आपुं छुं, त्यां तो, हे सखी, दुष्ट कूकडाओ बोली ऊठ्या ।'

भुजंगविक्रान्त

ए स्वप्नक द्विपदीना प्रत्येक चरणमां जो बार मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, तो ते द्विपदीनुं नाम भुजंगविक्रान्त ।

भुजंगविक्रान्त द्विपदीनुं उदाहरण :

तुह रणि नट्ठ रसायलि, गय अरि कारणि, इणि किर 'भुअंग विक्कंतय' ।
ताहं विलासभवणि पुरि, लीला-वणि परिअंचहिं निवसहिं चिरु गय-भय ॥२८

'तारा शत्रुओ रणसंग्राममांथी नासी जईने पाताळमां पहोंच्या लागे छे : ते कारणे तेमना नगरमां लीला माटेना उद्यानमां अने विलासभवनमां सर्पो निर्भय बनीने वसे छे अने बहादुरीथी हरेफरे छे ।

ताराध्रुवक

ए स्वप्नक द्विपदीना प्रत्येक चरणमां जो चौद मात्रा अने आठ मात्रा पछी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यति होय, तो ते द्विपदीनुं नाम ताराध्रुवक ।

ताराध्रुवक द्विपदीनुं उदाहरण :

तुह रिउ वण-गय दिसि-मोहिअ, 'ताराध्रुव' अवलोअहिं जावँहिं अवहिअ ।
बाह-जलाविल-नयण निअहिं, न हु तावँहिं हुअ, हिअडइ मरणासंकिअ॥२९

'वनोमां भागी गयेला तारा शत्रुओ दिग्मूढ बनीने ध्यानपूर्वक ध्रुवनो तारो जोवा मथे छे, परंतु आंसुथी डहोळायेली आंखोने लीधे ते जोई नथी शकता, तेथी तेमना हृदयमां मरणनो भय प्रगटे छे ।'

नवरंगक

ए स्वप्न द्विपदीना प्रत्येक चरणमां जो सोळ मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, तो ते द्विपदीनुं नाम नवरंगक ।

नवरंगक द्विपदीनुं उदाहरण :

दहिअ-अक्खय-घण-चंदण-मालिअ-, नव-'नव-रंगय'-वावड निअवि पिअ ।
गाढोक्कंठा-सरलिअ-भुअ-जुउ, अवरुंडइ रइ-रस-भर-कंदलिअ ॥ ३०

'प्रियतमाने दहीं अने अक्षतथी मंगळविधि करती, चंदननो गाढ अंगलेप करेली, पुष्पमाला धारण करेली अने नवो कसूंबो पहेरेली जोईने प्रियतम गाढ उत्कंठाथी बंने हाथो लंबावीने, भरपूर रतिरसे रोमांचित बनीने, तेने आलिंगन दे छे।'

स्थविरासनक

जेना प्रत्येक चरणमां त्रण षट्कल अने चार चतुष्कल होय तथा सोळ मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, ते द्विपदीनुं नाम स्थविरासनक ।

स्थविरासनक द्विपदीनुं उदाहरण :

दार-विवज्जिअ विसय-परम्मुह, खलिअ-गइ-क्कम, अइ-पसरिअ-वेविअ ।
वेरग्गिण तवसित्तु पवज्जिवि, ठिअ 'थेरासणि', तुह तरुण-वि वेरिअ ॥३१

'तारा शत्रुओ पत्नीरहित, विषयविमुख (बीजो अर्थ पोताना राज्यथी रहित), भ्रमणनी गति विनाना, अत्यंत कांपता अने वैराग्निथी तपता वैराग्यने लीधे, तेओ तरुण वयना होवा छतां पण, तापस बनीने स्थिर आसन लगावीने बेठा छे ।'

सुभग

जेना प्रत्येक चरणमां सात चतुष्कल अने एक षट्कल होय, ते द्विपदीनुं नाम सुभग ।

सुभग द्विपदीनुं उदाहरण :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जलइ सरोवरि नीलुप्पल-वणु वणि लय फुल्लिअ नहयलि हिम-किरणु ।
विरह-रह क्रूइं तुह तणु-अंगिहि 'सुहय' विणिम्मिउ जलु थलु नहु जलणु ।। ३२

'सरोवरमां नीलकमल धगधगी रह्यां छे, वनमां पुष्पित लता धगधगी रही छे अने आकाशमां चंद्र धगधगी रह्यो छे । हे सुंदर, तारा उत्कट विरहमां ए कृशांगीए जळ, स्थळ अने आकाशने धगधगतुं करी दीधुं छे ।'

पवनध्रुवक

जेना प्रत्येक चरणमां एक षट्कल, चार चतुष्कल, एक षट्कल, एक चतुष्कल अने एक द्विकल होय, तथा चौद मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, ते द्विपदीनुं नाम पवनध्रुवक ।

पवनध्रुवक द्विपदीनुं उदाहरण :

बहु-हय-खर-खुर-खंडिअ-महि-, उट्ठिअ-रइं रिउ-वहु-नीसास-'पवणधुइं' ।
जसु पयाण-छणि अच्छि-जुअल-अणिमिस-नयणत्तणु सुरसुंदरि निंदहिं ।। ३३

'ए (राजवी रणसंग्राम माटे) ज्यारे प्रयाण करे छे, त्यारे अनेक घोडाओनी कठण खरीओथी भोंय तूटी पडतां जे धूळ ऊडे छे अने ए शत्रुनी स्त्रीओना निश्वासना पवनथी आमतेम फंगोळाय छे तेथी, अप्सराओ पोतानी अनिमिष रहेती बंने आंखोने वखोडे छे ।'

कुमुद

जेना प्रत्येक चरणमां एक षट्कल, बे चतुष्कल, एक षट्कल, त्रण चतुष्कल अने एक द्विकल होय, तथा दस मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, ते द्विपदीनुं नाम कुमुद ।

कुमुद द्विपदीनुं उदाहरण :

नरु लच्छि-विवज्जिउ, मुच्चइ लोइण, सव्वु-वि ईसर-कय-अणुसरणु ।
मउलिअ कमलायर, निसि अलि मेल्लिवि, सेवहिं विअसंतउं 'कुमुअ'-वणु ।।३४

'जगतमां जे माणस लक्ष्मीरहित होय तेने सहु त्यजी दे छे अने जे श्रीमंत होय तेने अनुसरे छे । रात पडतां भ्रमरो बीडायेलां कमळोने छोडीने खीलतां कुमुदो सेवे छे ।'

भाराक्रान्त

जो ए कुमुद द्विपदीना प्रत्येक चरणमां बार मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, तो ते द्विपदीनुं नाम भाराक्रान्त ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भाराक्रान्त द्विपदीनुं उदाहरण :

कंचण-भूसण छड्डिअ, खंडिवि वसणु,-वि लहुइउ तुरिअ पलाइरिहिं ।
तु-वि किच्छिण रमण-त्थल-'भारक्कंति'हिं गम्मइ तुह रिउ-सुंदरिहिं ॥ ३५

'सोनानां आभूषण काढी नाखी अने वस्त्रो पण काढी नाखी हळवी बनीने, झडपथी पलायन करवा मथती तारा शत्रुनी स्त्रीओने, तो पण नासीने जतां मुश्केली पडे छे ।'

कंदोट्ट

जेना प्रत्येक चरणमां आठ चतुष्कल अने एक त्रिकल होय, ते द्विपदीनुं नाम कंदोट्ट ।

कंदोट्ट द्विपदीनुं उदाहरण :

किं झाइउ तिण अविचल-चित्तिण किं निम्मलु तवु किउ सम-रिउ मित्तिण ।
जं तुह मुह-विब्भम-हरु 'कंदोट्टु' विसट्टु तरुणि चुंबिज्जइ भमरिण ॥ ३६

'हे तरुणी, ते भ्रमरे एकाग्र चित्ते केवुं ध्यान कर्युं अने शत्रु तथा मित्र प्रत्ये समभाव राखीने केवुं निर्मळ तप कर्युं के जेथी तेने तारा मुखनी सुंदरताने धारण करतुं (अथवा तो, तेनुं हरण करतुं) विकसित कमळ चूमवा मळे छे ?'

भ्रमरद्रुत

जेना प्रत्येक चरणमां बे षट्कल, पांच चतुष्कल अने एक त्रिकल होय तथा दस मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, ते द्विपदीनुं नाम भ्रमरद्रुत ।

भ्रमरद्रुत द्विपदीनुं उदाहरण :

कुसुमुग्गमु अज्जुण-केअइ-कुडयहं, पेच्छिवि कह-वि न हु रइ मंडहिं ।
नव-पाउसि संपइ, पइसंतइ ओ, जाइ निअंत 'भमर द्रुउ' हिंडहिं ॥ ३७

'जुओ तो, अर्जुन, केतकी अने कुटजनां वृक्षोने फूल बेठेलां जोईने पण भ्रमर केमे करी तेमां रुचि धरतो नथी । हवे वर्षाऋतुनो प्रवेश थतां चमेलीनी तपासमां ते उतावळे भमी रह्यो छे ।'

सुरक्रीडित

जो ए भ्रमरद्रुत द्विपदीना प्रत्येक चरणमां बार मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, तो ते द्विपदीनुं नाम सुरक्रीडित ।

सुरक्रीडित द्विपदीनुं उदाहरण :

सग्गु पहुत्तिहिं तुह परिपंथिहिं किउ अइ-संकडु पुहईसर निच्छिउ ।
सच्छर-गण 'सुर-कीलिउं' सक्कहिं नाहिं ति, नंदण-वण-परिसरि इच्छिउ ॥३८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'हे पृथ्वीपति, स्वर्गमां पहोंचेला तारा शत्रुओए नक्की त्यां भारे भीड करी मूकी छे, जेने लीधे नंदनवननी समीपमां देवो अप्सराओनी साथे स्वेच्छाए क्रीडा करी शकता नथी ।'

सिंहविक्रान्त

जो ए भ्रमरद्रुत द्विपदीना प्रत्येक चरणमां चौद मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, तो ते द्विपदीनुं नाम सिंहविक्रान्त ।

सिंहविक्रान्त द्विपदीनुं उदाहरण :

अच्छउ ता उब्भड-भुअ-बलु, चक्खुक्खेविण, विहडयंतु रिउ-भड-हिअउ ।
सुर-नर-सीह-विक्कंत-चरिउ, लंघेविणु ठिउ, रेहइ पुहइसर-तिलउ ॥ ३९

'ए पृथ्वीपतिओना तिलकरूप (राजवी), प्रबळ भुजयुगल तो दूर रह्युं, मात्र पोताना दृष्टिपातथी ज शत्रुओना सुभटोनां हृदय विदारे छे : आ रीते नरसिंहना पराक्रमी चरित्रने पण अतिक्रमी जतो ते शोभे छे ।'

कुंकुमकेसर

जो भ्रमरद्रुतना प्रत्येक चरणमां सोळ मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, तो ते द्विपदीनुं नाम कुंकुमकेसर ।

कुंकुमकेसर द्विपदीनुं उदाहरण :

नयण-विलासिण निज्जिअ कुवलय, कंति-कडप्पिण, 'कुंकुम-केसर' निअरु'।
डसण-झलक्कइ हीरय विनडिअ ससहर, वयणिण कांइ न मुद्धिहि पवरु ॥४०

'ए मुग्धानुं शुं सुंदर नथी ? पोतानां नेत्रोनी सुंदरताथी तेणे नीलकमळने पराजित कर्यां छे, अतिशय कांतिथी केसरना तंतुओ पर विजय मेळव्यो छे, दांतनी उज्ज्वळताथी हीराने जीती लीधा छे अने वदनथी चंद्रने पाछो पाडी दीधो छे ।'

बालभुजंगमललित

जेना प्रत्येक चरणमां नव चतुष्कल होय, ते द्विपदीनुं नाम बालभुजंगमललित ।

बालभुजंगमललित द्विपदीनुं उदाहरण :

दुद्दम-रिउ-महि वाल-भुअंगम-ललिअ'-झडप्पणि तुहुं निच्छइ गरुडोवमु ।
जं पुण पुरिसोत्तिम-सिर-चूडामणि वुच्चसि पुहइ-वल्लह तं निरुवसु ॥ ४१

'वश करवा मुश्केल एवा शत्रुराजारूपी सर्पोनी क्रीडा नष्ट करवाने कारणे तने निश्चितपणे गरुडनी उपमा आपी शकाय । परंतु हे पृथ्वीवल्लभ, तारी पुरुषोत्तमना (१. उत्तम पुरुषोना २. विष्णुना) शिरोमणि तरीके जे ख्याति छे, तेथी तो तुं निरुपम ज छे' ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपगंधर्व

जेना प्रत्येक चरणमां त्रण षट्कल, चार चतुष्कल अने एक द्विकल होय तथा बार मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, ते द्विपदीनुं नाम उपगंधर्व ।

उपगंधर्व द्विपदीनुं उदाहरण :

गय-घड-तुरय-घट्ट-रहवूह-महा-भड-निवह-रयण-भंडार-समिद्ध-वि ।
'उव गंधव्व 'नयर-समु पुहइवइत्तणु तिणु जिवँ चयहिं विवेअवंत कि-वि ॥ ४२

'गजघटा, अश्वोनी श्रेणी, रथोनुं जूथ, सुभटोनो मोटो समूह अने रत्नभंडार ए बधाथी समृद्ध होवा छतां जुओ, जे केटलाक विवेकी छे तेओ नृपतिपणाने, गंधर्वनगर समुं, तृण जेवुं (तुच्छ) गणीने तेनो त्याग करे छे ।'

संगीत

जो ए उपगंधर्व द्विपदीना प्रत्येक चरणमां चौद मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, तो ते द्विपदीनुं नाम संगीत ।

संगीत द्विपदीनुं उदाहरण :

वज्जहिं गज्जिर-घण-मद्दल, नच्चहिं नहयण-अंगणि नव चंचल विज्जुल ।
गायहिं सिहि इअ 'संगीअउ', पाउस-लच्छिहिं, करइ जुआणह मण आउल ॥ ४३

'गर्जना करतां वादळोरूपी मृदंगो बजी रह्यां छे, आकाशप्रदेशमां चंचळ वीजळीओ नृत्य करी रही छे, मोर गान करी रह्या छे । वर्षालक्ष्मीनो आ संगीतसमारोह युवानोना मनने व्याकुळ करी रह्यो छे ।'

उपगीत

जो ए उपगंधर्व द्विपदीना प्रत्येक चरणमां सोळ मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, तो ते द्विपदीनुं नाम उपगीत ।

उपगीत द्विपदीनुं उदाहरण :

जसु भुअ-बलु हेलुद्धरिअ-धरणि, निसुणिवि वणयर-गण-'उवगीउ' सुविक्कमु।
अज्ज-वि हरिसिअ नवदब्भंकुर-दंभिण पयडहिं कुल-महिहर पुलउग्गमु ॥४४

' ''एना भुजबळे रमतमात्रमां भूमिनो उद्धार कर्यो छे''—ए प्रमाणे जेना पराक्रमनुं वनचरोथी थतुं महिमागान सांभळीने हर्ष पामेला कुलपर्वत हजी पण ताजा फूटेला दर्भांकुरने मिषे रोमांच प्रगट करी रह्या छे ।'

गोंदल

जेना प्रत्येक चरणमां आठ चतुष्कल अने एक पंचकल होय, ते द्विपदीनुं नाम गोंदल ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोंदल द्विपदीनुं उदाहरण :

सइं विज्जुल-अविउत्तउ तुहुं जलहर करि 'गुंदलु' निट्ठु न जाणसि विरहिअहं ।
इअ भणि चिंतिवि किंपि अमंगलु दइअहुं अंसु-पवाहु पलुट्टउ पंथिअहं ॥४५

' ''हे मेघ, तुं पोते वीजळीनो वियोग न अनुभवतो होवा छतां पण धमाल करी रह्यो छे । तुं विरही लोकोनी पीडा जाणतो नथी''—ए प्रमाणे बोलीने पोतानी प्रियाओनुं कशुंक अमंगल चिंतवता प्रवासीओनी अश्रुधारा वरसी रही छे।'

रथ्यावर्णक

जेना प्रत्येक चरणमां एक षट्कल, सात चतुष्कल अने एक त्रिकल होय तथा बार मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, ते द्विपदीनुं नाम रथ्यावर्णक ।

रथ्यावर्णक द्विपदीनुं उदाहरण :

विरह-रहक्कइ सुहय न, जंपइ न हसइ, जीवइ केवलु पिय-पच्चासइ ।
अहवा कित्तिउ 'रत्थावण्णणु' करिसहुं, निच्छइ स मरइ तुह जसु नासइ॥४६

'हे सुंदर, तारा उत्कट विरहमां नथी ते बोलती के नथी हसती । प्रियतमने मळवानी आशामां ते मात्र जीवी रही छे । अथवा तो अमे निरर्थक केटलुं वर्णन करीए ? तेनुं नक्की मरण थशे अने तारो अपजश थशे ।'

चर्चरी

जो ए रथ्यावर्णक द्विपदीना प्रत्येक चरणमां चौद मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, तो ते द्विपदीनुं नाम चर्चरी ।

चर्चरी द्विपदीनुं उदाहरण :

'चच्चरि' चारु चवहिं अच्छर, कि-वि रासउ, खेल्लहिं कि-वि कि-वि
गायहिं वरधवलुं ।
रयहिं रयण-सत्थिअ कि-वि दहि-अक्खय गिण्हहिं, कि-वि जम्मूसवि
तुह जिण-धवल ॥ ४७

'हे जिनवर, तारा जन्मोत्सवमां (जन्मकल्याणक समये) केटलीक अप्सराओ सुंदर चर्चरी खेले छे, केटलीक रास रमे छे, केटलीक धवलगीतो गाय छे, केटलीक रत्नना साथिया पूरे छे, तो केटलीक दहीं अने अक्षत ले छे ।'

अभिनव

जो ए रथ्यावर्णक द्विपदीना प्रत्येक चरणमां चौद मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, तो ते द्विपदीनुं नाम अभिनव ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिनव द्विपदीनुं उदाहरण :

किं अज्ज-वि माणंसिणि-, माणसि माणु विसट्टइ माणइ न पयाणउ रमणु ।
इअ संजाइण कोविण णावइ आरत्तय-तणु अहिणव-उग्गमि हिमकिरणु ॥ ४८

' ''हे मनस्विनी, हजी पण तारा मनमां मान केम प्रसरी रह्युं छे ? पगमां पडेला तारा प्रियतमने केम सन्मानती नथी?''— ए प्रमाणे जाणे के रोष उत्पन्न थयो होय तेथी चंद्रनुं बिंब उदयना आरंभे रताश पडतुं बन्युं छे ।'

चपल

जेना प्रत्येक चरणमां छ चतुष्कल, एक षट्कल, एक चतुष्कल अने एक त्रिकल होय तथा सोळ मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, ते द्विपदीनुं नाम चपल ।

चपल द्विपदीनुं उदाहरण :

सुरसरि-तुंग-तरंग-सहोअर कित्ति 'चवल' तुह ठाण-ट्ठिउ जगु धवलइ ।
पुट्ठि भमंतिहु रिउ-अवकित्तिहु कालत्तणु न हु निव-चूलामणि कवलइ ॥ ४९

'हे नृपशिरोमणि, गंगानदीना ऊंचे ऊछळता तरंगोना जेवी श्वेत अने चपळ तारी कीर्ति, पोताने स्थाने स्थिर रहेल होवा छतां जगतने धोळी दे छे । तेनी पाछळ पाछळ भमती शत्रुओनी अपकीर्तिनी काळाश तेने स्पर्शती नथी ।'

अमृत

जेना प्रत्येक चरणमां छ चतुष्कल, एक षट्कल अने बे चतुष्कल होय तथा सोळ मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, ते द्विपदीनुं नाम अमृत ।

अमृत द्विपदीनुं उदाहरण :

उण्हय 'अमय'मउह-मउह-वि दूसहु चंदण-पंकु-वि जलइ लयाहरु-वि ।
इअ तुह विरहिण तहि तणु-अंगिहि सुहय सुहाइ न किंपि वि पसिअहि दय करिवि ॥ ५०

'चंद्रनां अमृतशीतळ किरण तेने उष्ण लागे छे, चंदननो लेप दुःसह बन्यो छे, अने लताकुंज तेने बाळे छे । हे सुंदर, तारा विरहे कशुं पण ते कृशांगीने शाता आपतुं नथी । तुं दया करीने तेना पर कृपा कर ।'

सिंहपद

जेना प्रत्येक चरणमां नव चतुष्कल अने एक द्विकल होय, तथा सोळ मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, ते द्विपदीनुं नाम सिंहपद ।

सिंहपद द्विपदीनुं उदाहरण :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जावय-रस-रंजिअ-वर-कामिणि-पडिबिंबिहिं लंछिय जइ किर आसि सइ ।
संपइ हय-वण-गय-रुहिरारुण-'सीह-पयं'किअ तुह रिउ-घरइं
ति पिच्छिअहि ॥ ५१

'तारा शत्रुओना महेल, जे सदा उत्तम सुंदरीओनां अळताथी रंगेलां चरणोनां पगलांथी अंकित रहेता हता, ते हवे सिंहना, जंगली हाथीओ मारवाथी लोहीथी लाल बनेला पंजाओ वडे अंकित थयेला देखाय छे ।'

दीर्घक

जो सिंहपद द्विपदीना प्रत्येक चरणमां चौद मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, तो ते द्विपदीनुं नाम दीर्घक ।

दीर्घक द्विपदीनुं उदाहरण :

'दीहर'-भुअ-दंड-विडंबिअ-, सुर-सिंधुर-करु, उरयड-तुलिअ-विसाल-
सिलायलु ।
उब्भड-कोअंड-पयंडिम-, हसिअ-धणंजउ, पिउ एक्कंगिण जिणइ वेरि-
बलु ॥ ५२

'जेना दीर्घ भुजदंड ऐरावतनी सूंढ समा छे, जेनुं विशाळ वक्षस्थळ शिलापट्ट समुं छे, पोताना प्रबळ धनुष्यनी प्रचंडताने लीधे जे अर्जुन करतां पण चडी जाय छे, तेवो मारो प्रियतम एकले हाथे शत्रुसेनाने जीते छे ।'

कलकंठीरुत

जेना प्रत्येक चरणमां एक षट्कल अने आठ चतुष्कल होय तथा चौद मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, ते द्विपदीनुं नाम कलकंठीरुत ।

कलकंठीरुत द्विपदीनुं उदाहरण :

पिउ मलय-समीरणु अंगिहिं, अहिणव-पल्लव, दिट्ठिहिं 'कलयंठिरुउ' कण्णिहिं ।
विस-कंदलि-सन्निह मुद्धह, दूसह खणि खणि, पाणंतिउ मुच्छ-भरुअप्पहिं ॥५३

'अंगोने स्पर्श करतो कोमळ मलयानिल, दृष्टि सामे रहेलां ताजां लीलां पर्ण अने काने संभळातो कोयलनो टहूकार--ए मुग्धाने विषकंद समो दुःसह लागे छे । अने क्षणे क्षणे ते तेने प्राण ऊडी जाय तेवी मूर्छामां ढाळी दे छे ।'

शतपत्र

जेना प्रत्येक चरणमां बे षट्कल, छ चतुष्कल अने एक द्विकल होय तथा चौद मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, ते द्विपदीनुं नाम शतपत्र ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शतपत्र द्विपदीनुं उदाहरण :

एक्कु पसारइ जइ दिअवइ, करु तु-वि मउलइ, 'सयवत्तु' निरारिउ आउलउं ।
पहु तुह पुण कर-सरसीरुहु, दिअवइ-लक्खि-वि, दिट्ठइ फुडु विअसइ
अग्गलउं ।।५४

'हे महाराज, जो द्विजपति (= चंद्र) एक पण कर (=किरण) प्रसारे तो पण शतपत्र (= सो पांखडीवाळुं कमळ), व्याकुळ बनीने निश्चितपणे बीडाई जाय छे। परंतु लाख द्विजपति(= उत्तम ब्राह्मण)ने जोवा छतां तारुं करकमळ प्रगटपणे भरपूर विकसे छे ।'

अतिदीर्घ

जेना प्रत्येक चरणमां नव चतुष्कल अने एक त्रिकल होय तथा चौद मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, ते द्विपदीनुं नाम अतिदीर्घ ।

अतिदीर्घ द्विपदी उदाहरण :

जइ जाहिं सुरसरिअ जइ गिरि-, निज्झर सेवहिं जइ, पइसहिं काणण-
तरु-संडय ।
रिउ-निव तु-वि न-वि छुट्टहिं पहु, तुज्झ पयावहु, कालहु 'अइ-दीहर'
भुय-दंडय ।। ५५

'अतिदीर्घ भुजदंडवाळा हे महाराज, शत्रुराजाओ स्वर्गगंगा सुधी पहोंची जाय, पहाडी झरणांनें सेवे अथवा तो जंगलनी झाडीमां पेसी जाय, तो पण काळसमा तारा प्रतापथी तेओ छूटी शकता नथी ।

मत्तमातंगविजृंभित

जेना प्रत्येक चरणमां बे षट्कल, छ चतुष्कल अने एक त्रिकल होय तथा चौद मात्रा अने आठ मात्रा पछी यति होय, ते द्विपदीनुं नाम मत्तमातंगविजृंभित ।

मत्तमातंगविजृंभित द्विपदीनुं उदाहरण :

पयडिअ-लंछण-मय-लेहिण, उल्लसिअ-कर-, दंडिण
ताराहरणिण निसि-सरिण ।
उअ नीसंकिण भउ विरहिणि-, जणहु
जणिज्जइ, असमु 'मत्त-मायंग-विअंभिइण' ।। ५६

'विरहिणीओने माटे मदमत्त हाथीनी जेम चंद्र अतिशय भय प्रगटावे छे । तेनुं लांछन मदलेखा जेवुं, तेनां किरणो (कर) सूंढ समा अने तारा आभरण समा लागे छे ।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मालाध्रुवक

जे द्विपदीमां चाळीश, एकताळीश के बेताळीश मात्राओ होय, ते द्विपदीनुं नाम मालाध्रुवक ।

चाळीश मात्रानी मालाध्रुवक द्विपदीनुं उदाहरण :

तुह पुहइसर-सेहर कित्ति अकित्तिम
सुरहिअ-दिसि-मुह जावँहिं सग्गि पइट्ठिअ ।
तावँहिं तक्खणि सुरसुंदरि-लोअहु
सुरतरु-कुसम-'माल ध्रुवु' हुअ मण-उव्विट्ठिअ ॥ ५७

'हे नृपशिरोमणि, जेवी तारी अकृत्रिम कीर्ति दिशाओने सुगंधित करती स्वर्गमां पेठी, तेवी ज अप्सराओने मन कल्पवृक्षोनां पुष्पोनी माळा निश्चितपणे अकारी बनी गई ।'

आ ज प्रमाणे एकताळीश मात्रानी अने बेताळीश मात्रानी मालाध्रुवक द्विपदीनां उदाहरण समजवां ।

नोंध :- आ प्रमाणे चोसठ प्रकारनी द्विपदी ध्रुवा छे । ध्रुवा अने द्विपदी वच्चे भेद आ प्रमाणे छे :

सिंहावलोकितार्थेषु, विज्ञप्तौ संविधानके ।
मङ्गले च ध्रुवा प्रोक्ता, द्विपद्यन्यत्र कीर्त्यते ॥ ५७

'अर्थनुं सिंहावलोकन करवा माटे, विनंती माटे अने मंगळ विधि होय त्यां ध्रुवा कहेवाय छे, पण ते अन्यत्र द्विपदी कहेवाय छे ।'

अन्य प्रकारनी द्विपदी

द्विपदीओनो जे एक बीजो प्रकार छे, तेनी व्याख्या आ प्रमाणे छे :

विजया

जेना प्रत्येक चरणमां चार मात्रा होय, ते द्विपदीनुं नाम विजया ।

विजय द्विपदीनुं उदाहरण :

सजया, 'विजया' ॥ ५८

'विजयादेवी विजयी छे ।'

रेवका

जेना प्रत्येक चरणमां पांच मात्रा होय, ते द्विपदीनुं नाम रेवका ।

रेवका द्विपदीनुं उदाहरण :

बहुवया, 'रेवया' ॥ ५९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'रेवा नदीमा' घणुं जळ (अथवा तो 'घणां बगलां') छे ।'

गणद्विपदी

जेना प्रत्येक चरणमां छ मात्रा होय, ते द्विपदीनुं नाम गणद्विपदी ।

गणद्विपदीनुं उदाहरण :

निअ जुवइ, 'गणदु' वइ ॥ ६०

'पतिए पोतानी पत्नीनुं सन्मान करवुं ।'

स्वरद्विपदी

जेना प्रत्येक चरणमां एक चतुष्कल अने एक त्रिकल ए प्रमाणे सात मात्रा होय, तेनुं नाम स्वरद्विपदी ।

स्वरद्विपदीनुं उदाहरण :

'पसरदु वइ,' अखलिअ-गइ ॥ ६१

'पति अस्खलित गतिए आगळ वधो ।'

अप्सरा

जेना प्रत्येक चरणमां एक पंचकल अने एक द्विकल ए प्रमाणे सात मात्राओ होय, ते द्विपदीनुं नाम अप्सरा ।

अप्सरा द्विपदीनुं उदाहरण :

उअ 'अच्छरा', गय-मच्छरा ॥ ६२

'जो, अप्सरा द्वेषरहित होय छे ।'

वसुद्विपदी

जेना प्रत्येक चरणमां आठ मात्रा होय, तेनुं नाम वसुद्विपदी ।

वसुद्विपदीनुं उदाहरण :

सु त'व सुदु वइ', जयइ नरवइ ॥ ६३

'ए प्रख्यात नृपति के जे तारो पति छे, तेनो जय हो ।'

करिमकरभुजा

जेना प्रत्येक चरणमां बे चतुष्कलनी बनेली आठ मात्राओ होय, ते द्विपदीनुं नाम करिमकरभुजा ।

करिमकरभुजा द्विपदीनुं उदाहरण :

'करिमयरभुओ', उव्व-हुअभुओ ॥ ६४

'वडवानळ हाथीओ अने मगरोने भरखी जाय छे ।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चंद्रलेखा

जेना प्रत्येक चरणमां एक चतुष्कल, एक लघु, एक द्विकल अने एक लघु ए प्रमाणे आठ मात्रा होय, ते द्विपदीनुं नाम चंद्रलेखा ।

चंद्रलेखा द्विपदीनुं उदाहरण :

नव-'चंद लेह', जिवँ मुद्ध एह ॥ ६५

'ए मुग्धा, उदय पामेली चंद्रलेखा जेवी शोभे छे ।'

मदनविलसिता

जेना प्रत्येक चरणमां एक पंचकल अने एक त्रिकल ए प्रमाणे आठ मात्रा होय, ते द्विपदीनुं नाम मदनविलसिता ।

मदनविलसिता द्विपदीनुं उदाहरण :

'मयण-विलसिअं', पाव-ववसिअं ॥ ६६

'मदनने वश थईने विलास करवो ए पापमय व्यवहार छे ।'

जंभेट्टिका

जेना प्रत्येक चरणमां एक चतुष्कल अने एक पंचकल ए प्रमाणे नव मात्राओ होय, ते द्विपदीनुं नाम जंभेट्टिका ।

जंभेट्टिका द्विपदीनुं उदाहरण :

सा तसु बेट्टिआ, सुट्ठु 'जं भेट्टिआ' ॥ ६७

'जेने ते सारी रीते भेट्यो, ते तेनी बेटी छे ।'

लवली

जेना प्रत्येक चरणमां एक पंचकल अने एक चतुष्कल ए प्रमाणे नव मात्राओ होय, ते द्विपदीनुं नाम लवली ।

लवली द्विपदीनुं उदाहरण :

उअ वणावलिआ, फुल्लिअ-'लवलिआ' ॥ ६८

'जेमां लवली लता खीली छे, तेवी आ वनराजी तुं जो ।'

अमरपुरसुंदरी

जेना प्रत्येक चरणमां एक सप्तकल, एक द्विकल अने एक लघु ए प्रमाणे दस मात्राओ होय, ते द्विपदीनुं नाम अमरपुरसुंदरी ।

अमरपुरसुंदरी द्विपदीनुं उदाहरण :

'अमरपुर-सुंदरिहिं', भड वरिअ सयंवरिहिं ॥ ६९

'स्वर्गनी सुंदरीओए सुभटोने स्वयंवरमां वर्या ।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कांचनलेखा

जेना प्रत्येक चरणमां एक षट्कल अने एक चतुष्कल ए प्रमाणे दस मात्राओ होय, ते द्विपदीनुं नाम कांचनलेखा ।

कांचनलेखा द्विपदीनुं उदाहरण :

मणि-'कंचणरेहिअ', सुरसुंदरि जेहिअ ॥ ७०

'रत्न अने कांचनथी शोभती ए अप्सरा समी दीसे छे ।'

चारु

जेना प्रत्येक चरणमां बे पंचकलनी बनेली दस मात्राओ होय, ते द्विपदीनुं नाम चारु ।

चारु द्विपदीनुं उदाहरण :

'चारु' चंपय-रुइ, ऊअ सोहइ जुअइ ॥ ७१

'जो, सुंदर चंपकनी कांति धरावती ए युवती केवी शोभे छे !'

पुष्पमाला

जेना प्रत्येक चरणमां एक त्रिकल, एक षट्कल अने एक त्रिकल ए प्रमाणे बार मात्राओ होय, ते द्विपदीनुं नाम पुष्पमाला ।

पुष्पमाला द्विपदीनुं उदाहरण :

एह ललिअ-देह बाल, नाइ जाइ-'फुल्ल-माल' ॥ ७२

'ललित देह वाळी आ बाळा चमेलीनी पुष्पमाळा जेवी शोभे छे ।'

नोंध : आ द्विपदीनुं नाम केटलाकने मते 'तोमर' छे ।

अन्य द्विपदीओ

आ ज प्रमाणे बीजी केटलीक, प्रत्येक चरणमां त्रीश सुधीनी मात्राओ धरावती द्विपदीओ समजवी । तेमनां नामो जाणीतां होवाथी तेमनी व्याख्या आपी नथी। कह्युं छे के

'जेना प्रत्यैक चरणमां चारथी मांडीने त्रीश सुधीनी मात्राओ होय, अने जेमां एक के वधु वर्णना बनेला अंत्ययमक होय, तेवां बे चरणनां बनेला छंद द्विपदी नामे जाणीता छे ।'

चतुर्मात्रादिक-त्रिंशत्-प्रान्तैरंहियुगैः ॥
एकानेकैरन्तवर्णैर्यमके द्विपदीं विदुः ॥ ७२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गाथा

आ छंदशास्त्रमां आ उपरांत जे कोई छंद प्रचलित होय, पण तेनुं निरूपण न कर्युं होय तेनुं नाम गाथा समजवुं ।

गाथानुं उदाहरण :

दश धर्मं न जानन्ति, धृतराष्ट्र निबोधनात् ।
मत्तः प्रमत्त उन्मत्तः, क्रुद्धः श्रान्तो बुभुक्षितः
त्वरमाणश्च भीरुश्च, लुब्धः कामीति ते दश ॥ ७३

'हे धृतराष्ट्र, एवा दस प्रक[illegible] [illegible]कोको छे, जे उपदेश करवा छतां पण धर्म समजता नथी । ए दस आ प्रमाणे छे : मदमत्त, **प्रमादी,** उन्मत्त, क्रोधी, थाक्यो, भूख्यो, उतावळो, कायर, लोभी अने कामी ।'

नोंध :- गाथामां त्रण के छ चरणोनो श्लोक होय छे ।

हेमचंद्राचार्य-रचित वृत्तियुक्त छंदोनुशासननो
'द्विपदी वर्णन' नामनो सातमो अध्याय समाप्त ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूत्रपाठ

चोथो अध्याय

(आर्या-गलितक-खञ्जक-शीर्षक-वर्णन)

चृगौ षष्ठो जो न्लौ वा पूर्वेऽर्धेऽपरे षष्ठो लार्या गाथा ॥ १
षष्ठे न्ले लाद् द्वितीयात्सप्तमे त्वाद्यात्पदमन्यार्धे च पञ्चमे ॥२
आद्यचियतिः पथ्या ॥ ३
विपुलान्याद्यन्तसर्वभेदात् त्रेधा ॥ ४
ग्मध्ये द्वितीयतुर्यौ जौ चपला ॥ ५
द्विः पूर्वार्धं गीतिः ॥ ६
परार्धमुपगीतिः ॥ ७
द्वयोर्व्यत्यये उद्गीतिः ॥ ८
गीतिः सप्तमे पे रिपुच्छन्दाः ॥ ९
तृतीये ललिता ॥ १०
द्वाभ्यां भद्रिका ॥ ११
षष्ठं विनेष्टपैर्विचित्रा ॥ १२
चेऽष्टमे स्कन्धकम् ॥ १३
तत्षष्ठे ल्युपात् ॥ १४
आद्येऽर्धे उदः ॥ १५
अन्त्येऽवात् ॥ १६
गीतिस्कन्धके संकीर्णम् ॥ १७
गाथाद्यर्धेऽन्त्यगात्प्राक् चो वृद्धो जातीफलम् ॥ १८
चयोर्गाथः ॥ १९
क्रमवृद्ध्योद्व्यसमुपात् ॥ २०
गाथिनी ॥ २१
यथेष्टं मालागाथः ॥ २२
जातीफलाद्यर्धे गाथवद् दामादयः ॥ २३
मात्रा वर्णोना गो वर्णा गूना लः ॥ २४
पौ चौ तो गलितकं यमिर्तेऽह्नौ ॥ २५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृतिये षष्ठे ल्युपात् ॥ २६
समेऽन्तरात् ॥ २७
पौ चौ पो वेः ॥ २८
चौ पः समः ॥ २९
षतीगाः शुभात् ॥ ३०
चः पौ चौ तः समात् ॥ ३१
तदोजे चतौ मुखात् ॥ ३२
षाच्चृर्नौजे जः समे जो लीर्वा मालायाः ॥ ३३
चूर्गन्तो मुग्धात् ॥ ३४
चूरुग्रात् ॥ ३५
पौ तः सुन्दरा ॥ ३६
पौ तौ भूषणा ॥ ३७
चपचापचाल्गा मालागलिता ॥ ३८
षश्रीः समे जो लीर्वा विलम्बिता ॥ ३९
गन्तचः पचुपाः खण्डोद्गतम् ॥ ४०
चपाचीपाः प्रसृता ॥ ४१
चुर्दो नौजे जो लम्बिता ॥ ४२
सौजे पैर्विच्छित्तिः ॥ ४३
चापचपदा ललिता ॥ ४४
उभे विषमा ॥ ४५
तीचौ मुक्तावली ॥ ४६
पिचौ रतिवल्लभः ॥ ४७
पौ चषौ हीरावली ॥ ४८
गलितकमेवायमकं सानुप्रासं समांहि खञ्जकम् ॥ ४९
तौ चितगाः खञ्जकम् ॥ ५०
पचपचपा महातोणकः ॥ ५१
चीगौ सुमङ्गला ॥ ५२
चौ पः खण्डम् ॥ ५३
षचता उपात् ॥ ५४
षश्रौ खण्डिता ॥ ५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्रयोऽप्यवलम्बकः ॥ ५६
षश्रीर्युग्जो लीर्वा हेला ॥ ५७
सान्ते दोनावली ॥ ५८
चूपगा विनता ॥ ५९
तौ चस्तौ विलासिनी ॥ ६०
तौ चितौ मञ्जरी ॥ ६१
सा तान्ता शालभञ्जिका ॥ ६२
चादिः कुसुमिता ॥ ६३
षश्रुगौ द्वितीयषष्ठौ जो लीर्वा द्विपदी ॥ ६४
साद्ये न्ले छै रचिता ॥ ६५
गन्तारनालम् ॥ ६६
उपान्त्यलोना कामलेखा ॥ ६७
षचीदाश्चन्द्रलेखा ॥ ६८
चिपताः क्रीडनकं जैः ॥ ६९
षपचतदा अरविन्दकम् ॥ ७०
षलदलचदगाद्गौ मागधनर्कुटी ॥ ७१
सश्चेत्रर्कुटकम् ॥ ७२
षजौ सिः समात् ॥ ७३
त्रिष्वप्यन्त्यचस्य ते तरङ्गकम् ॥ ७४
गान्तं पवनोद्धुतम् ॥ ७५
चाभ्यां पाभ्यां पाद्वा तिर्निध्यायिका ॥ ७६
चुपौ युग्न जोऽधिकाक्षरा ॥ ७७
सा तुर्यया मुग्धिका ॥ ७८
आदौ पश्चित्रलेखा ॥ ७९
पौ माल्लिका ॥ ८०
सा तुर्यपा दीपिका ॥ ८१
ताभिर्लक्ष्मिका ॥ ८२
चतुष्पञ्चषट्सप्ताष्टनवपा मदनावतार-मधुकरी-
नवकोकिला-कामलीला-सुतारा-वसन्तोत्सवाः ॥ ८३
खञ्जकं दीर्घीकृतं शीर्षकम् ॥ ८४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गीत्यन्तावावलम्बकौ द्विपदीखण्डम् ॥ ८५
द्विपद्यन्ते गीतिर्द्विभङ्गिका ॥ ८६
अन्यथापि ॥ ८७
द्विपद्यवलम्बकान्ते गीतिस्त्रिभङ्गिका ॥ ८८
त्रिभिरन्यैरपि ॥ ८९
गाथस्याद्याद्धं समैश्चैर्गात् प्राग्वृद्धं गस्य ते पादः समशीर्षकम् ॥ ९०
मालागलितकपादान्ते विषमचावृद्धौ वेः ॥ ९१

पांचमो अध्याय

(उत्साहादि-वर्णन)

अथ प्रायोऽपभ्रंशे ॥ १
अजश्चूस्तृतीपञ्चमौ जो लीर्वोत्साहः ॥ २
दामात्रा नो रासको ढैः ॥ ३
चुल्गा वा ॥ ४
चपजाया अवतंसकः ॥ ५
चः पौ जो गौ कुन्दः ॥ ६
पाचाजगाः करभकः ॥ ७
चपाचागा इन्द्रगोपः ॥ ८
चपाचाल्गाः कोकिलः ॥ ९
चपाचल्गा दुर्दरः ॥ १०
चरजमगा आमोदः ॥ ११
म्रल्गपासा विद्रुमः ॥ १२
रो मीर्मेधः ॥ १३
त्रयल्गा विभ्रमः ॥ १४
चपजगगाः कुसुमः ॥ १५
ओजयुजोश्छडा रासः ॥ १६
पाचदाश्चिस्तृतीये पञ्चमे चो जो लीर्वा ।
पञ्चांद्रित्रिपात्पूर्वार्धा मात्रा ॥ १७
द्वितीये तुर्ये तयोर्वाद्यस्य चः स्थाने पो मत्तबालिका ॥ १८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृतीयस्य तो मत्तमधुकरी ॥ १९
तृतीये पञ्चमे तयोर्वा पोश्चौ मत्तविलासिनी ॥ २०
चस्य पो मत्तकारिणी ॥ २१
आभिर्बहुरूपा ॥ २२
आसां तृतीयस्य पञ्चमेनानुप्रासेऽन्ते
दोहकादि चेद्वस्तु रड्डा वा ॥ २३
चौ लान्ततौ चौ तो वस्तुकम् ॥ २४
षचिषा युज्यज ओजे जो लीर्वा वस्तुवदनकम् ॥ २५
षोऽजचः षपौ रासावलयम् ॥ २६
द्वयोरर्धसङ्करे सङ्कीर्णम् ॥ २७
षचचाद्यो वदनकम् ॥ २८
त उपवदनकम ॥ २९
ते यमितेऽन्तेऽडिला ॥ ३०
पिदावुत्थक्रः ॥ ३१
धवलमष्टषट्चतुष्पात् ॥ ३२
तत्राष्टांह्रावोजे चिदौ समे चौ श्रीधवलम् ॥ ३३
आद्ये तृतीये चिदौ द्वितीये तुर्ये चिः शेषे ।
त्वौजे चातौ समे चादौ चिर्वा यशोधवलम् ॥ ३४
षंडह्रावाद्ये तुर्ये षादौ द्वितीये पञ्चमे
चौ शेषे षाभ्यां चः पो वा कीर्तिधवलम् ॥ ३५
चतुरंह्रावोजे षश्चौ समे षचचाद्स्तो वा गुणधवलम् ॥ ३६
षचताः षचौ भ्रमरः ॥ ३७
षचताः षचचा अमरभ् ॥ ३८
आद्ययोः षची अन्त्ययोश्चुः सर्वत्रान्ते तो दो वा मङ्गलम् ॥ ३९
उत्साहादिना येनैव धवलमङ्गलभाषागाने तन्मामाद्ये धवलमङ्गले ॥ ४० ॥
देवगानं फुल्लडकम् ॥ ४१
गाने चिदौ झम्बटकम् ॥ ४२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छष्ठो अध्यायः
(षट्पदी-चतुष्पदी-वर्णन)

सन्ध्यादौ कडवकान्ते च ध्रुवं स्यादिति ध्रुवा ध्रुवकं घत्ता वा ॥ १
सा त्रेधा षट्पदी चतुष्पदी द्विपदी च ॥ २
कडवकान्ते प्रारब्धार्थोपसंहारे आद्ये छडुणिका च ॥ ३
ध्रुवायां छैः कलाभिः पादे चतौ पदौ वा ॥ ४
जैः पतौ षदौ चौ वा ॥ ५
झैः षतौ तिः पचौ वा ॥ ६
जैश्चादौ षचौ पौ वा ॥ ७
टैश्चपदं पचदं षदतं चातौ वा ॥ ८
ठैश्चपतं षचदं पादौ चिर्वा ॥ ९
डैः पातौ चापौ षचतं वा ॥ १०
ढैश्चिदौ षचचं वा ॥ ११
णैश्चितौ पिर्वा ॥ १२
तैः षचादं चीर्वा ॥ १३
थैः षचातं चिपौ वा ॥ १४
तृतीयष्ठ्योर्दशादिसप्तदशान्तां कलाः शेषेषु
सप्त षट्पदी षट्पदजातिरष्टधा ॥ १५
अष्टोपजाति : ॥ १६
नवावजातिः ॥ १७
चतुष्पदी वस्तुकं वान्तरसमार्धसमा संकीर्णा सर्वसमा च ॥ १८
तत्रान्तरसमाः प्राह-
चतुष्पदी कला ओजे सप्ताद्यां षोडशान्ताः समे प्रत्येकं सैकाः सप्तदशान्त 'चम्पककुसुम-सामुद्रक-सल्हणक-सुभगविलास-केसर-रावण-हस्तक-सिंहवजृम्भित-मकरन्दिका-मधुकरविलसित-चम्पककुसुमावर्त्ताः (१०)। मणिरत्नप्रभा-कुङ्कुमतिलक-चम्पकशेखर-क्रडनक-बकुलामोद-मन्मथतिलक-मालाविलसित-पुण्यामलक-नवकुसुमितपल्लवाः (९) । मलयमास्त-मदनावास-माङ्गलिका-अभिसारिका-कुसुमनिरन्तर-मदनोदक-चन्द्रोद्द्योत-रत्नावल्यः (८)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ्रूवक्रणक-मुक्ताफलमाला-कोकिलावली-मधुकरवृन्द-केतकीकुसुम-नवविद्युन्माला-त्रिवलीतरङ्गकाणि (७) । अरविन्दक-विभ्रमविलसितवदन-नवपुष्पन्धय-किन्नरमिथुनविलास-विद्याधरलीला-सारङ्गाः (६) । कामिनीहास-अपदोबक-प्रेमविलास-काञ्चनमाला-जलधरविलासिताः (५) । अभिनवमृगाङ्कलेखा-सहकारकुसुममञ्जरी-कामिनीक्रीडमनक-कामिनी-कङ्कणहस्तकाः (४) । मुखपालनतिलक-वसन्तलेखा-मधुरालापिनीहस्ताः (३) । मुखपङ्क्त-क्स्मलतागृहे (२)। रत्नमाला' (१) । इति पञ्चपञ्चाशद्भेदा ॥१९॥

व्यत्यये सुमनोरमा-पङ्कज-कुञ्जर-मदनातुर-भ्रमरावली-पङ्कजश्री-किङ्किणी-कुङ्कुमलता-शशिशेखर-लीलालयाः (१०) । चन्द्रहास-गोरोचना-कुसुमबाण-मालतीकुसुम-नागकेसर-नवचम्पकमाला-विद्याधर-कुब्जककुसुम-कुसुमास्तरणाः (९) । मधुकरीसंलाप-सुखावास-कुसुमलेखा-कुवलयदाम-कलहंस-सन्ध्यावली-कुञ्जरललिता-कुसुमावल्यः (८) । विद्याल्लता-पञ्चाननललिता-मरकतमाला-अभिनववसन्तश्री-मनोहरा-क्षिमिका-किन्नरलीलाः (७)। मकरध्वजहास-कुसुमाकुलमधुकर-भ्रमरविलास-मदनविलास-विद्याधरहास-कुसुमायुधशेखराः (६) । उपदोहक-दोहक-चन्द्रलेखिका-सुतालिङ्गन-कङ्केल्लिलताभवनानि (५) । कुसुमित-केतकीहस्त-कुञ्जरविलसित-राजहंस-अशोकपल्लवच्छायाः (४) । अनङ्गललिता-मन्मथविलसित-ओहुल्लणकानि (३) । कज्जललेखा-किलिकिञ्चिते (२) । शशिबिम्बितं चेति (१) । तावद्वा ॥२०॥

अन्तरसमा एव द्वितीयतृतीयांह्रिव्यत्ययेऽर्धसमाः ॥ २१

द्वित्रिचतुर्भिर्लक्षणैर्मिश्रा सङ्कीर्णा ॥ २२

समौः पादैः सर्वसमा ॥ २३

पचौ ध्रुवकम् ॥ २४

चौ दः शसाङ्कवदना ॥ २५

चपदाश्चातौ वा मारकृतिः ॥ २६

षचदाश्चिर्वा महानुभावा ॥ २७

षचताश्चापौ पातौ वाप्सरोविलसतम् ॥ २८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

षचचाश्चिदौ वा गन्धोदकधारा ॥ २९
चितौ षचपा वा पारणकम् ॥ ३०
चीः पद्धडिका ॥ ३१
चिपौ षचाता वा रगडाध्रुवकम् ॥ ३२

सातमो अध्याय
(द्विपदी-वर्णन)

द्विपदी ॥ १
दाचदालदाचदालि कर्पूरो णैः ॥ २
सोऽन्त्यलोनः कुङ्कमः ॥ ३
चृ लयः ॥ ४
स भ्रमरपदं जजैः ॥ ५
षचुदा उपात् ॥ ६
चूपौ गस्डपदम् ॥ ७
षचुता उपात् ॥ ८
चृदौ हरिणीकुलं ठजैः ॥ ९
तद्गीतिसमं जजैः ॥ १०
षुर्भ्रमररुतम् ॥ ११
षश्चूर्हरिणीपदम् ॥ १२
षीचताः कमलाकरम् ॥ १३
चृतौ कुङ्कमतिलकावली ॥ १४
ते रत्नकण्ठिके ठजैः ॥ १५
षचुपाः शिखा ॥ १६
चृतौ छडुणिका जजैः ॥ १७
चृः स्कन्दकसमम् ॥ १८
तत् मौक्तकदाम ठजैः ॥ १९
नवकदलीपत्रं ढजैः ॥ २०
षचूदैः कृतेष्वेषु स्त्रीत्वम् ॥ २१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चृपावामायकम् ॥ २२
तत्काञ्चीदाम ञजैः ॥ २३
रसनादाम ठजैः ॥ २४
चूडामणिर्ढजैः । २५
षचूतैः कृतान्यायामकादीन्युपात् ॥ २६
चृदौ स्वप्नकम् ॥ २७
तद् भुजङ्गविक्रान्तं ठजैः ॥ २८
ताराध्रुवकं ढजैः ॥ २९
नवरङ्गकं तजैः ॥ ३०
षिश्रीः स्थविरासनकम् ॥ ३१
चृषौ सुभगम् ॥ ३२
षचीषचदाः पवनध्रुवकं ढजैः ॥ ३३
षचाषचिदाः कुमुदं ञजै ॥ ३४
तद्भाराक्रान्तं ठजैः ॥ ३५
चृतौ कन्दोट्टम् ॥ ३६
षाचुता भ्रमरद्रुतं ञजैः ॥ ३७
तत्सुरक्रीडितं ठजैः ॥ ३८
सिंहविक्रान्तं ढजैः ॥ ३९
कुङ्कुमकेसरं तजैः ॥ ४०
च्लृ बालभुजङ्गमललितम् ॥ ४१
षिचीदा उपगन्धर्वं ठजैः ॥ ४२
तत्सङ्गीतं ढजैः ॥ ४३
उपगीतं तजैः ॥ ४४
चृपौ गोन्दलम् ॥ ४५
षचृता रथ्यावर्णकं ठजैः ॥ ४६
तच्चच्चरी ढजैः ॥ ४७
अभिनवं तजैः ॥ ४८
चूषचताश्चलम् ॥ ४९
चूषौ चावमृतम् ॥ ५०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

च्लृदौ सिंहपदम् ॥ ५१
तद्दीर्घकं ढजैः ॥ ५२
षच्ृः कलकण्ठीरुतम् ॥ ५३
षाचूदाः शतपत्रम् ॥ ५४
च्लृतावतिदीर्घं ढजैः ॥ ५५
षाचूता मत्तमातङ्गविजृम्भितम् ॥ ५६
चत्वारिंशत्कला एकद्व्यधिका वा मालाध्रुवकम् ॥ ६७
चौ विजया ॥ ५८
पो रेवका ॥ ५९
षो गणद्विपदी ॥ ६०
चतौ स्वराद्विपदी ॥ ६१
पदावप्सराः ॥ ६२
अष्टौ कला वसुद्विपदी ॥ ६३
चौ करिमकरभुजा ॥ ६४
चलदलाश्चन्द्रलेखा ॥ ६५
पतौ मदनविलसिता ॥ ६६
चपौ जम्भेट्टिका ॥ ६७
पचौ लवली ॥ ६८
सप्त कला दलौ चामरपुरसुन्दरी ॥ ६९
षचौ काञ्चनलेखा ॥ ७०
पौ चारुः ॥ ७१
तषताः पुष्पमाला ॥ ७२
गाथात्रानुक्तम् ॥ ७३

★

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

टिप्पण

प्रा. वेलणकरे घणा परिश्रमपूर्वक 'छंदोनुशासन'नो पाठ संपादित करेल छे। तो पण जे केटलेक स्थाने व्याकरण, अर्थ के छन्दनी दृष्टिए शुद्धि करवी मने जरूरी लागी छे तेवां स्थानो अने सुधाराओ टिप्पणमां आ दर्शाव्यां छे। क्वचित् साहित्यमांथी समान भाव के विचारवाळा, पद्य प्रत्ये, अथवा तो पुरोगामीमांथी अपनावेल उदाहरण प्रत्ये पण वाचकोनुं ध्यान खेंच्युं छे।

द्विभंगीनां उदाहरणोनी चर्चा

१. 'छंदोनुशासन'मां हेमचंद्राचार्ये सामान्य रीते स्वरचित उदाहरणो आप्यां छे। ज्यां कोई पूर्ववर्ती ग्रंथना उदाहरणनो उपयोग कर्यो छे, त्यां पण उदाहरणमां छंदनुं नाम गूंथवानुं होवाथी तेमणे जरू री फेरफार कर्या छे। पण केटलीक वार कोई पूर्ववर्ती स्रोतमांथी उदाहरण उद्धृत करेल छे। जेम के चोथा अध्यायना ८७मा सूत्र नीचे विविध छंदोना संयोजनथी थती द्विभंगीओ तरीके (१) गाथा + भद्रिका, (२) वस्तुवदनक + कर्पूर, (३) वस्तुवदनक + कुंकुम, (४) रासावलय + कर्पूर, (५) रासावलयक + कुंकुम, (६) वस्तुवदनक अने रासावलयनुं मिश्रण + कर्पूर, (७) वस्तुवदनक अने रासावलयनुं मिश्रण + कुंकुम, (८) रासावलय ने वस्तुवदनकनुं मिश्रण + कर्पूर, (९) रासावलय अने वस्तुवदनकनुं मिश्रण + कुंकुम, (१०) वदनक + कर्पूर, (११) वदनक + कुंकुम - एटला छंदप्रकारोनां उदाहरण संभवतः कोई पूर्ववर्ती छंदोग्रंथमांथी लीधेलां छे। अहीं आपेला क्रमांक प्रमाणे तेमनो क्रमांक ४.१२६ थी १३६ छे। ए उदाहरणोमांथी आठ उदाहरण 'कविदर्पण'मां पण मळे छे। कविदर्पणकारे 'छंदोनुशासन'मांथी ते लीधां होय एवो प्रबळ संभव छे, केम के केटलेक स्थळे तेणे 'सिद्धहेम'ना प्राकृत विभागमांथी प्रयोगना समर्थन माटे उद्धरण आप्यां छे। जो के थोडाक पाठ भिन्न छे। रासावलय अने कर्पूरनी द्विभंगीना उदाहरणनो (क्रमांक १२९) पाठ नीचे प्रमाणे छे :

परहुअ-पंचम-सवण-सभय मन्नउं स किर
तिंभणि भणइ न किं पि मुद्ध कलहंस-गिर।
चंदु न दिक्खण सक्कइ जं सा ससि-वयणि
दप्पणि मुहु न पलोअइ तिंभणि मय-नयणि॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वइरिउ मणि मन्नवि कुसुम-सरु, खणि खणि सा बहु उत्तसइ ।
अच्छरिउ रूव-निहि कुसुम-सरु, तुह दंसणु जं अहिलसइ ॥

('कविदर्पण'मां 'कलयंठि-गिर' अने 'मन्निवि' पाठ छे ते वधु सारा छे। छेल्ली पंक्तिमां 'कुसुम-सर' एवो पाठ जोईए, ते संबोधन होवाथी) ।

'हुं मानुं छुं के ते मुग्धा कोकिलनो पंचम सूर सांभळवाथी डरे छे, अने ते कारणे ज ते कोकिलकंठी पोते कशुं ज बोलती नथी । ए चंद्रवदना चंद्र जोई शकती नथी, ते कारणे ए दर्पणमां पोतानुं मुख जोती नथी । मनमां रहेला कंदर्पने शत्रु मानीने ते क्षणे क्षणे घणो त्रास पामी रही छे, ने तेम छतां ए एक अचरज छे के, हे रूपनिधि कंदर्प, ए तारुं दर्शन करवानी अबळखा सेवे छे ।'

उदा. ४.१२७ : मूळ पाठमां पांचमी पंक्तिमां 'सिसिरोवयारकिहिं' एवा शब्दो छे। तेमां 'किहिं' ए हिंदी, 'के' (= 'के लिये')नुं पूर्वरूप छे। सं. 'कृते' परथी, 'कएहिं', 'कइहिं', 'किहिं' एवो विकासक्रम होय ।

हवे दसमी शताब्दीमां रचायेली धनंजयना 'दशरूपक' उपरनी धनिकनी 'अवलोक' टीकानी एक हसतप्रतमां चोथा प्रकाशनी ६६मी कारिका उपरनो जे पाठ मळे छे तेमां प्रवासविप्रयोगमां प्रवासचर्चानुं नीचेनुं एक उदाहरण मळे छे। (ए ज पद्य ई.स. १२५८ मां रचेयाल जल्हणकृत 'सूक्तिमुक्तावलि'मां पण मळे छे) :

नीरागा शशलांछने मुखमपि स्वे नेक्षते दर्पणे
त्रस्ता कोकिलकूजितादपि गिरं नोन्मुद्रयत्यात्मनः ।
चित्रं दुःसह-दुःख-दायिनि कृत-द्वेषाऽपि पुष्पायुधे
मुग्धा सा सुभग ! त्वयि प्रतिकलं प्रेमाणमापुष्यति ॥

स्पष्टपणे आ बे अपभ्रंश अने संस्कृत पद्योमांनुं कोई एक बीजानो चोखखो अनुवाद ज छे । कयुं पूर्ववर्ती अने कयुं पश्चाद्वर्ती एनो निर्णय दुष्कर छे ।

उपर 'छंदोनुशासन'मां आपेलां जे द्विभंगीप्रकारोनां उदाहरणोनो निर्देश कर्यो छे तेना प्रा. वेलणकरना संपादनमां आपेला पाठमां केटलाक सुधारा करवा इष्ट छे । ते नीचे प्रमाणे छे :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उदा. ४.१२८ : पहेली पंक्तिमां 'किनरि विक्खरहि' ने बदले 'कि न रि विक्खिरहि' (पाठांतर) जोईए ।

उदा. ४.१२९ : उपर सूचव्युं छे तेम बीजी पंक्तिमां 'कलयंठि-गिर' ('कविदर्पण'नो पाठ) अने 'मन्निवि' (पाठांतर) जोईए, अने अर्थने अनुसरीने 'कुसुमसर' जोईए ।

उदा. ४.१३० : पहेली, त्रीजी अने पांचमी पंक्तिने आरंभे 'जइ अ' के 'जइ' छे त्यां 'जइअ' (= यदा) जोईए । आने एक पाठांतरनुं पण समर्थन छे। टीकाकारे पण संपादकनी जेम 'यदि' अर्थ कर्यो छे ते बराबर नथी । 'सिद्धहेम' ८-४-३६५ नीचे 'यदा'ना अर्थमां प्राकृतमां 'जाहे', 'जाला', 'जइआ'नो प्रयोग थतो होवानुं नोंध्युं छे।

बीजी पंक्तिमां कुसुमदलम्मि पाठ करतां ०दलग्गि पाठ वधु सारो छे। पांचमी पंक्तिमां 'वयणगुंफ'ने बदले उकार जाळवतो 'वयणगुंफु' पाठ वधु सारो छे।

उदा. ४.१३१ : (पहेली चार पंक्ति ५.२७मां पण) 'करिहि' ने बदले 'करहि', 'इच्छि मयच्छ इ पणयमुहुं'ने बदले 'इच्छि म इच्छिउ पणय-सुहु' ('कविदर्पण'नो पाठ), अने अंतिम पंक्ति 'माणिक्किमणंसिणि करिव वलु, हेल्लि खेल्लिता जूउ तुहुं'ने बदले 'माणिक्कि मणंसिणि करि ठवलु, हेल्लि खेल्लि ता जूउ तुहुं' जोईए । आ छेल्ली पंक्तिनो अर्थ टीकाकार पण खोटा पाठने कारणे समज्यो नथी । तेणे 'तदा हे हस्तिगमने प्रणतमुखं भर्तृमुखं 'इच्छि' दृट्वा हे मानैक-मनस्विनी हे सखि बलं अपि कृत्वा क्रीडितुं युक्तं तव ।' एवो अर्थ कर्यो छे, जे तद्दन भ्रान्त छे । साचो अर्थ छे 'मानम् एकं (श्लेषथी 'माणिक्यम्') हे मनस्विनि कृत्वा दायम्, हे सखि रमस्व तावत् द्यूतं त्वम् ।' अहीं 'ठवलु' एटले 'जुगारनी बाजीमां जे होडमां मुकाय ते, दाव ।' ए अर्थमां 'ठउलु' शब्दनो प्रयोग स्वयंभूकृत 'पउमचरिउ'मां पण मळे छे । त्यां पण रणभूमिने शारिपट्टनुं उपमान आपीने तेमां जीवनने होडमां मूकवानुं रूपक छे । 'तिंभणि' (चोथी पंक्तिमां)नो प्रयोग ए दृष्टिए रसप्रद छे के ते 'ते माटे'ना अर्थमां (सं. 'इति भाणित्वा') मराठी 'म्हणून'नो पुरोगामी छे ।

उदा. ४.१३२ : त्रीजी पंक्तिमां 'ल्हसडउ'ने बदले 'ल्हुसडउ' (=

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लुण्टकः) जोईए। छेल्ली पंक्तिमां 'झुलक्कइ' ने बदले 'झुलुक्कउ' जोईए। (आठमा उदाहरणनी बीजी पंक्तिमां ए ज पाठ छे।)

उदा. ४.१३३ : 'सहि इ'ने बदले 'सहिइ' जोईए। छेल्ली बे पंक्तिनो अर्थ टीकाकार समज्यो नथी। 'तुह'ने बदले 'तुहुं', 'मयणबाणवेयण कलह'ने बदले 'मयणबाण-वेयण-कलहि' अने 'तुलह'ने बदले 'तुलहि' पाठ जोईए। अर्थ : 'हे तन्वंगी, तुं जेमां मदनबाणनी वेदना छे तेवा प्रेमकलहमां लथडती पड नहीं। हे मानिनी, वल्लभ साथेनुं मान तजी दे, तारा प्राणनी संशयतुला उपर चड नहीं।'

उदा. ४.१३४ : पांचमी पंक्ति। 'पयड धाई'ने बदले 'पयडत्थय' ('कविदर्पण'नो पाठ) जोईए।

उदा. ४.१३५ : बीजी पंक्तिमां 'पहिल्लय'ने बदले 'पहल्लिय' (पाठांतर) अने छेल्ली पंक्तिमां 'जाइ० जाय०'ने बदले 'जाइजाय०' जोईए।

उदा. ४.१३६ : पांचमी पंक्तिमां 'संचह' (पाठा० 'संवह', 'संवहु')नो अर्थ स्पष्ट नथी। टीकाकारे 'संचयात् संचारात्, वा' एवो अर्थ अटकळे कर्यो लागे छे।

उदा. ४.१४० : पहेली पंक्तिमां 'बोल्लालयंमि' (= टीकाकार प्रमाणे 'बोल्लाः शब्दास्तद्वति') करतां 'वोलालयंमि' पाठ वधु सारो छे। 'वोल'/'बोल' = 'कोलाहल'। सरखावो 'हलबोल'।

पांचमो अध्याय

उदा. १४ : त्रीजी पंक्तिमां 'जे' ने बदले 'जा' (= 'यावत्') पाठ होवो जोईए।

उदा. १६ : एक वचन होवाथी ('पहिउ') 'हुउ' एम जोईए।

उदा. १९ : 'स्वयंभूच्छंद' ४.९ नीचे आपेल गोविन्द कविना उदाहरणमां थोडाक फेरफार करीने छंदना नामनो समावेश करतुं आ उदाहरण रचेल छे।

उदा. २५ : 'छेल्ली पंक्तिमां 'लल्लुर'ने बदले 'लल्लर' जोईए।

उदा. ३२ : सरखावो :

सन्तानक-वनेषु परिमुह्यति धावति बकुल-वृक्षके,
विकसित-माधवीषु धृतिमेति विलुभ्यति सिन्दुवारके।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाटल-पल्लवेषु न च तृप्यति नूनमशोक-पादपे,
चूत-वनेषु याति चन्दन-तरु-गहनमथावगाहते ।
इति मधु-मास-विकसिते रमणीयतरे द्विरेफ-मालिकेव,
एतेषां ननु दृष्टिका विलसति सुचिरं वरे तरु-प्रताने ॥

('उपमितिभवप्रपंचाकथा' प्रस्ताव चोथो, आना तरफ मारुं ध्यान खेंचवा माटे आचार्य शीलचन्द्रसूरिनो आभार)

उदा. ४२ : 'उअ थक्क' करतां 'ओ थक्क' पाठ वधु सारो छे । 'घंघल' शब्द अहीं 'संकट' (टीकाकार : 'दुःख')ना अर्थमां वपरायो छे, ते हकीकत सिहे. (४.४२२.२मां 'झकटस्य घंघलः' एने बदले 'संकटस्य घंघलः' एवो मूळ पाठ होवानी मारी अटकळने समर्थित करे छे ।

उदा. ४७ : 'जुज्झमणु' ने बदले 'जुज्झणमणु' एम पाठ सुधार्यो छे।

उदा. ४८ : 'वहु' ने बदले 'वह' पाठ लीधो छे । 'पिहुला' ए बहुवचनने अनुरूप ।

उदा. ५० : 'वाहिअउ' नहीं पण 'चाहिअउ' एम पाठ सुधार्यो छे । टीकाकारे 'दृष्टः' एवो अर्थ बराबर कर्यो छे ।

छठ्ठो अध्याय

पृ. ७९ : मूळ सूत्रपाठमां छे तेम 'सामुद्रक' नहीं पण 'सामुद्गक' एवुं नाम जोईए । 'स्वयंभूच्छन्द' १९.२ मां पण 'सामुग्गए' जोईए, 'सामुद्दए' नहीं । 'छंदःशेखर'मां (५.३९) 'सामुद्गके' ए प्रमाणे संस्कृत अनुवाद छे ।

उदा. १ : 'ढुरुढुल्लइ' एम 'ढुरुढोल्लइ'ने बदले सुधार्युं छे ।

उदा. ३५ : 'बिंबालिउ'ना मूळमां 'वमालिउ' (> वम्मालिउ) > वम्वालिउ > बिम्बालिउ) छे । 'वमाल' = संमर्द, समूह । 'वमालिय' = व्याप्त । सरखावो विजयसेनसूरिकृत 'रेवंतगिरि-रासु' वंवाले (२.३), वमालो (३.९), बंबालिउ (४.१) तथा रत्ना श्रीयन A Critical Study of Deśya Words (१९६९), क्रमांक १२३३ : वमाल ।

उदा. ३६ : आ 'स्वयम्भूच्छन्द'(१.२१.२)मांथी अपनावेल छे.

उदा. ४३ : आ 'स्वयम्बूच्छन्द'मांथी अपनावेल छे :

चंदम्मि ठिओ, अवर-भीरु-वि जहा मओ ।
ण-हु सूरो, केसरी मुणिअ-णामओ ॥ (६.३१.१)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उदा. ४५ : आ 'स्वयम्भूच्छंद'मांथी अपनावेल छे :

काइं करउं हउं माए, पिउ ण गणइ लग्गी पाए ।
मण्णु धरंतहो जाइ, कढिण उत्तरंग भणाइ ॥ (४.७.१)

उदा. ४९ : सरखावो : 'उअ हरइ मयंकलेहिउआ...णह-पलय-वराह दाढिआ ॥ ('स्वंभूच्छद', ६.२३.१)

उदा. ५२ : सरखावो सिहे. (४.४४४.३) : वलयावलि-निवडण-भएण, धण उद्धब्भुअ जाइ ।

उदा. ६० : सरखावो :

पंकज-पंकि वहेलिय, कुवलय खित्त दहि ।

उदा. ८३ : 'तुहुं'ने बदले 'तुह' (= तव) एम सुधार्युं छे ।

उदा. ८४ : 'कुंजर ललिअगइ' एम असमस्त पद गण्युं छे ।

उदा. १२१ : 'तुं' ने बदले 'तुहुं' एम सुधार्युं छे ।

सातमो अध्याय

उदा. १ : 'उल्लालिकरि' प्रयोग ए रीते रसप्रद छे के ते हिन्दी 'उछाल कर', गुज. 'उछाळी करी' जेवा प्रयोगोनो पुरोगामी छे।

उदा. १० : 'भमरु' ने बदले 'भमर' (संबोधन) एम सुधार्युं छे ।

उदा. २० : बीजी पंक्तिमां 'मज्झ' ने बदले 'महु' एम सुधार्युं छे ।

उदा. २४ : 'पञ्चल्लिउ' ने बदले 'पच्चल्लिउ' एम सुधार्युं छे ।

अहीं नायकने जोवानी उतावळमां आभूषणो पहेरवामां थतो संभ्रमनो जाणीतो वर्णनघटक प्रयोजेलो छे ।

उदा. २७ : बीजी पंक्तिमां 'कुक्कुडि'ने बदले 'कुक्कुड' (बहुवचन : 'रडिअ' ने अनुरूप) एम सुधार्युं छे ।

उदा. ५१ : आमां 'रघुवंश'ना सोळमा सर्गमां आपेला अयोध्यानी पडतीना वर्णनमां आवता एक चित्रनो ज आधार लीधो होवानुं जणाय छे । ते पद्य नीचे प्रमाणे छे :

'सोपानमार्गेषु च येषु रामा, निक्षिप्तवत्यश्चरणान् सरागान् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सद्योहत-न्यंकुभिरस्त्र-दिग्धं, व्याघ्रैः पदं तेषु निधीयते मे ॥

(१६, १५)

'(वैभवी आवासोनी) जे सोपानपंक्ति पर पहेलां रमणीओनां अळताभीनां चरणोनी रंगीन पगलीओ पडती हती, त्यां हवे हरणने मारीने आवेला वाघना रक्तरंग्या पंजा पडी रह्या छे' ।

बंने वच्चेनुं साम्य उघाडुं छे । 'सिंहपद' (सिंहपय) नाम गूंथाय ते रीतनुं उदाहरणपद्य रचवा माटे हेमचंद्राचार्यने 'रघुवंश'ना उपर्युक्त पद्यनुं अवलंबन लेवा माटे संस्मरण थयुं । तेने तेमना 'रघुवंश'ना अनुशीलननुं, काव्यरसना भावकत्वनुं अने तीक्ष्ण स्मृतिनुं सूचक गणी शकीए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंदनाम-सूचि

(पृष्ठांकना निर्देश साथे)

अडिला 68
अतिदीर्घ 130
अधिकाक्षरा 38
अनङ्गललिता 105
अन्तरगलितक 16
अन्तरसमा चतुष्पदी 77
अपदोहक 89
अप्सरा 1321
अप्सरोविलसित 110
अभिनव 127
अभिनवमृगाङ्कलेखा 90
अभिनववसन्तश्री 100
अभिसारिका 84
अमरघवल 72
अमरपुरसुन्दरी 133
अमृत 128
अरविन्दक-१ 34
अरविन्दक-२ 87
अर्धसमा चतुष्पदी 108
अवगाथ 11
अवतंसक 55
अवदाम 13
अवलम्बक 29
अवस्कन्धक 9
अवस्थितक = उत्थक्क 69
अशोकपल्लवच्छाया 105
आक्षिप्तिका 110
आमोद 57
आयामक 119
आरनाल 33
आवली 29
इन्द्रगोप 56
उग्रगलितक 20
उत्थक्क 69
उत्साह 54
उत्स्कन्धक 9
उद्गाथ 11
उद्गीति 6
उद्दाम 13
उपकाञ्चीदाम 120
उपखण्डक 28
उपगन्धर्व 126
उपगरुडपद 115
उपगलितक 16
उपगाथ 11
उपगीत 126
उपगीति 6
उपचूडामणि 120
उपदाम 13
उपदोहक 103
उपभ्रमपद 114
उपरसनादाम 120

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपवदनक 68
उपस्कन्धक 9
उपायामक 120
ओहुल्लणक 106
कङ्केल्लिलताभवन 104
कज्जललेखा 106
कन्द्रोट्ट 124
कमलाकर 116
करभक 56
करिमकरभुजा 132
कर्पूर 113
कलकण्ठीरुत-१ 99
कलकण्ठीरुत-२ 129
कलहंस 99
काञ्चनमाला 89
काञ्चनलेखा 134
काञ्चीदाम 120
कामलीला 40
कामलेखा 33
कामिनीकङ्कणहस्तक 89
कामिनीक्रीडनक 90
कामिनीहास 88
किङ्किणी 94
किन्नरमिथुनविलास 88
किन्नरलीला 101
किलिकिञ्चित 107
कीर्तिधवल 71
कुङ्कुम 113
कुङ्कुमकेसर 125
कुङ्कुमतिलक 81
कुङ्कुमतिलकावली 116
कुङ्कुमलता 95
कुङ्कुमलेखा 68
कुञ्जर 93
कुञ्जरललित 101 / 11
कुञ्जरविलसित 105
कुन्द 55
कुब्जककुसुम 97
कुमुद 123
कुसुम 59
कुसुमनिरन्तर 84
कुसुमबाण 96
कुसुमलतागृह 92
कुसुमाकुलमधुकर 102
कुसुमायुधशेखर 103
कुसुमावली 99
कुसुमास्तरण 97
कुसुमितकेतकीहस्त 104
कुसुमिता 31
केतकीकुसुम 86
केसर 79
कोकिल 56
कोकिलावली 86
क्रीडनक-१ 34
क्रीडनक-२ 82
खञ्जक 27
खण्ड 28
खण्डोद्गत 22

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खण्डिता 28
गणद्विपदी 132
गन्धोदकधारा 111
गरुडपद 114
गलितक 16
गाथ 10
गाथा 1
गाथा+भद्रिका 44
गाथिनी 2
गीति 5
गीतिसम 115
गुणधवल 71
गोन्दल 126
गोरोचना 96
चतुष्पदी ध्रुवा 76
चन्द्रलेखा-१ 33
चन्द्रलेखा-२ 104
चन्द्रहास 95
चन्दोद्योत 85
चपल 128
चपला 3
चम्पककुसुम 78
चम्पककुसुम(अर्धसम) 108
चम्पककुसुमावतं 81
चम्पकशेखर 81
चारु 134
चित्रलेखा 38
चूडामणि 120
छड्डुणिका 74, 118
जंभेट्टिका 133
जलधरविलसित 89
जातिफल 10
झम्बटक 73
तरङ्गक 36
ताराध्रुवक 121
त्रिभङ्गिका 49
त्रिवलीतरङ्गक 87
दर्दुर 57
दामिनी 13
दीपिका 39
दीर्घक 129
दोहक 103
द्विपदी 32
द्विपदी+अवलम्बक+गीति 49
द्विपदीखण्ड 43
द्विभङ्गिका 43
धवल 69
ध्रुवक 109
ध्रुवा 13
नर्कुटक 35
नवकदलीपत्रा 118
नवकुवलयदाम 98
नवकुसुमितपल्लव 83
नवकोकिला 40
नवचम्पकमाला 97
नवपुष्पंधय 87
नवरङ्गक 122
नवविद्युन्माला 96

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नागकेसर 96
निध्यायिका 37
पङ्कज 93
पङ्कजश्री 94
पञ्चाननललिता 100
पथ्या 2
पद्धडिका 11
पवनधुवक 123
पवनोद्धुत 36
पारणक 111
पुण्यामलक 83
पुष्पमाला 134
प्रसृतागलितक 23
प्रेमविलास 89
फुल्लडक 73
बकुलामोद 82
बहुरूपा मात्रा 64
बालभुजङ्गमललित 125
भद्रिका 8
भारक्रान्त 123
भुजङ्गविक्रान्त 121
भूषणागलितक 21
भ्रमरद्रुत 124
भ्रमरधवल 71
भ्रमरपद 114
भ्रमररुत 116
भ्रमरविलास 102
भ्रमरावली 94
भ्रूवक्रणक 85
मकरध्वजहास 101
मकरन्दिका 80
मङ्गल 72
मञ्जरी 31
मञ्जरी+खण्डिता+भद्रिका 50
मडिला 69
मणिरत्नप्रभा 81
मत्तकरिणी 63
मत्तबालिका 60
मत्तमधुकरी 61
मत्तमातङ्गविजृम्भित 130
मत्तविलासिनी 62
मदनविलास 102
मदनातुर 94
मदनावतार 40
मदनावास 83
मदनोदय 84
मधुकरविलसित 80
मधुकरवृन्द 86
मधुकरीसंलाप 98
मधुरालापिनीहस्त 91
मनोहरा 101
मन्मथतिलक 82
मन्मथविलसित 106
मरकतमाला 100
मलयभारुत 83
मल्लिका 39
मल्हणक 79
महातोणक 27

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महानुभावा 110
मागधनर्कुटी 35
माङ्गलिका 84
मात्रा 59
मारकृति 110
मालतीकुसुम 96
मालागलितक 19
मालागलिता 21
मालागाथ 12
मालादाम 13
मालाध्रुवक 131
मालाविलसित 82
मुक्ताफलमाला 85
मुक्तावलीगलितक 25
मुखगलितक 18
मुखपङ्क्ति 92
मुखपङ्क्ति(अर्धसमा) 108
मुखपालनतिलक 91
मुग्धगलितक 20
मुग्धिका 38
मेघ 58
मौक्तिकदाम 118
मौक्तिकदाम्नी 119
यशोधवल 70
रगडाध्रुवक 112
रचिता 32
रड्डा 64
रतिवल्लभगलितक 25
रत्नकण्ठिका 117
रत्नमाला 92
रत्नावली 85
रथ्यावर्णक 127
रसनादाम 120
राजहंस 105
रावणहस्तक 80
रासक-१ 54
रासक-२ 54
रासा 59
रासावलय 66
रासावलय+कर्पूर 45
रासावलय+कुङ्कुम 46
रासावलयार्ध+वस्तुवदनकार्ध+कर्पूर 47
रिपुच्छन्दा 7
रेवका 131
लक्ष्मिका 40
लघुद्विपदी 131
लम्बितागलितक 23
लय 113
ललिता 8
ललितागलितक 24
लवली 133
लीलालय 95
वदनक 68
वदनक+कर्पूर 48
वदनक+कुङ्कुम 48
वसन्तलेखा 91
वसन्तोत्सव 40
वसुद्विपदी 132

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वस्तु 64
वस्तुक 65
वस्तुवदनक 65
वस्तुवदनक+रासावलय 67
वस्तुवदनक+कर्पूर 45
वस्तुवदनक+रासावलयार्ध+कर्पूर 46
वस्तुवदनक+रासावलयार्ध+कुङ्कुम 47
विगलितक 117
विगाथ 11
विचित्रा 8
विजया 131
विदाम 13
विद्याधर 97
विद्याधरलीला 88
विद्याधरहास 102
विद्युल्लता 100
विद्रुम 57
विनता 30
विपुला 2
विभ्रम 58
विभ्रमविलसितवदन 87
विलम्बितागलितक 22
विलासिनी 30
विषमशीर्षक 52
विषमगलितक 24
शशाङ्कवदना 109
शशिबिम्बित 107
शशिशेखर 95
शालभञ्जिका 31
शिखा 117
शीर्षक 43
शुभगलित 18
श्रीधवल 69
षट्पद 49
षट्पदजाति-अवजाति 76
षट्पदजाति 75
संकीर्ण स्कन्धक 9
संकीर्णा चतुष्पदी 108
संकुलक 68
संगलितक 17
संगाथ 11
संगीत 126
संदानितक 13
संदाम 13
सन्ध्यावली 99
समगलितक 18
समनर्कुटक 35
समशीर्षक 5
सर्वसभाचतुष्पदी 109
सहकारकुसुम मञ्जरी 90
सामुद्गक 79
सारङ्ग 88
सार्धछन्द 49
सिंहपद 128
सिंहविक्रान्त 125
सिंहविजृम्भित 80
सुखावास 98
सुताग 40

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुतालिङ्गन 104
सुन्दरगलितक 21
सुभग 122
सुभगविलास 79
सुमङ्गला 27
सुमनोरमा 93
सुरक्रीडित 124
स्कन्धक 8
स्कन्धकसम 118
स्कन्धकसमा 119
स्थविरासनक 122
स्वप्नक 121
स्वरद्विपदी 132
हरिणीकुल 115
हरिणीपद 116
हीरावलीगलितक 26
हेला 29

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उदाहरण-सूचि

अइचंगइं मोरइं	६.१२९	उअ वणावलिआ	७.६८
अच्छउ ता उब्भड	७.३९	उअ वयंस वित्थ	४.६०
अज्जवि नयण न	५.३९	उअह तुज्झ	४.१०२
अणुरयणि चंदकिरण	४.५३	उक्करडा खवलउ	५.४७
अमरपुरसुंदरिहिं	७.६९	उच्छलंतछप्पय	४.१३९
अलिमालइपरि	६.९५	उज्जग्गरओ कवोल	४.११२
अलिरवगीई	६.१६	उज्जागरकसाय	४.८८
अवमन्निअदुट्ठ	५.१	उण्हय अमयमउह	७.५०
अविरलबाहवारि	४.९८	उद्दाम-मारुत	४.१३
अविरहिअहं	६.४२	उद्धाइअझंझानिल	४.१२६
अविहडअवरु	४.१३१; ५.३७	उपगीति कुरंग	४.२१
असोअमंजरी	५.१२	उपगीति गन्ध	४.२३
अहरुट्ठ दलइ	५.६	उब्भिज्जउ मायंद	४.११५
अंगचंगिम	६.१	उपदिश्यते तव	४.१
अंगय फुडिअ	७.२३	एकोऽपि बाल	४.९
अंगुलिआहिं ललिअं	४.३०	एक्कु पसारइ जइ	७.५४
आमूल वि बहु	५.४०	एत्तहे गब्भभरा	७.११
आयामयधवल	७.२२	एत्थु करिमि भणि	६.४५
इंदहु तुहुं गुणि	५.५०	एह ललिअदेह	७.७२
इअ उवजाइहिं	६.४	ओ चलचलंतिआ	६.३६
इअ नारिहिं	६.३	ओ दामाइं रयंतीइ	४.५२
इअ वणराइहिं	६.५	ओ भडकबंधु	६.९२
इह माला गाहाण व	४.४८	ओ रणझणंत	६.६३
इह माहवि वम्मह	६.५३	कइअहिं होएसइ	६.१२७
उअ अच्छरा	७.६२	कइलासतुलणपय	४.७६
उअ खंधाहइ	४.३४	कज्जललेहाविल	६.११२
उअ महुसमओ	४.६२	कद्दमभग्गा मग्गु	५.४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कप्पूरधवला गुण	७.१	कुसुमुग्गमु	७.३७
कमलिणिपासि	६.२०	कृव कण्ण कलिंग	६.११६
कर असोअदल	६.८९	केआरावु	६.५९
करवालपहारिण	६.५८	केलाससेल	४.२९
करहयथणहर	५.७	केसरकुरबय	४.११७
करिमयरभुओ	७.६४	कोअंडं पसूण	४.४९
कलसभवतवस्सि	४.२	कोइलकलरवु	६.२९
कवणु सु धन्नउ	६.५१	कोइलावलिकए	६.३३
कष्टां जनस्	४.२०	खलिअक्खरउं	६.६२
कस्य कृते	४.१४	खंडुग्गयमिंदु	४.७४
कहिं हंसिहिं	६.६	खीरसमुद्दिण	५.४५
कंकण किंकिणि	४.१०१	खेलिरकामिणी	४.६७
कंकेल्लिलयाभवण	६.१०४	गज्जइ धणमाला	६.६१
कंचणभूसण छड्डिअ	७.३५	गयधडतुरय	७.४२
कंपिअ निअवि	६.२२	गयणुप्परि कि न	४.१२८
कामिणिहिअअसरो	६.८२	गयपत्तपरिग्गह	७.२१
काली रत्तडी	६.२६	गलिअंजणधवले	४.५८
किउ उरि लच्छिहिं	७.३	गहिरु गज्जइ	५.२०
कित्तिउ वण्णउं	६.४६	गाविँ पट्टणि	५.३१
कित्ति तुहारी	५.४९	गिज्जंति गीइअ	४.११८
किं अज्जवि माणं	७.४८	गुणविवज्जिइ	५.२४
किं झाइउ तिण	७.३६	गोरडिअहिं उव	६.६६
कि न फुल्लइ	४.१३५	गोरीइ चिहुर	४.४०
कुइ धन्न जुआ	६.३९	गोरी गोट्ठी दर	६.११५
कुमुअकमलहं	५.१९	गोरोअणगोरी	६.७०
कुवलयदलनयणे	४.८२	गोवीअणदिज्जंत	५.४
कुविदो मयणो	६.५४	घणरवदूसहा	६.२८
कुसुमंतरि	६.११	घणसारु मेल्लि	७.२
कुसुमाउहपिअ	४.१२४	घोलिरनवपल्लवु	६.१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चच्चरि चारु	७.४७	जलइ सरोवरि	७.३२
चतुरम्बुराशि	४.४	जसु अतुलिअ गय	७.१६
चपलं न	४.१५	जसु पारु लहंति	७.६
चपले प्रयातु	४.२७	जासु भुअबलु	७.४४
चरणकमललग्गे	४.९४	जसु लोहचक्किण	६.७१
चरणेण वि नव	४.११९	जह जह तुह पहु	४.३७
चंदणयं पिहु	४.८०	जहिं घल्लिअ उप्फु	६.८१
चंदुज्जोओ	३.७०	जहिं छिज्जइ नर	५.४२
चारुचंपयरुइ	७.७१	जं किर मुद्धिआइ	४.७५
चीणं चएसु	४.८५	जं जाइहि	६.१२
चूअमंजरि मंजु	४.९३	जं धणलोअण	६.२४
चूडुल्लउ चुण्णी	६.११९	जं सहि कोइल	६.६८
चूडुल्लउ बाहोह	६.११७	जा किन्नरमिहुणि	७.१७
चूताङ्कुरा	४.२४	जा बलमडप्फरेणं	४.३५
चोलुक्क तुज्झ नयरी	४.५०	जावयरसरंजिअ	७.५१
छुहखामु वि	६.१०	जासु अंगहि घणु	५.२८
जइअ झल्लक्कहि	४.१३०	जीए लग्गेइ चंदणं	४.११३
जइगंगाजलि	६.१०५	जुवईण नयण	४.३१
जइ जाहिं सुरसरिअ	७.५५	जूहाउ व वूहाओ	४.४९
जइ तुह पवयणु	७.१९	जे तुह पिच्छहिं	५.४६
जइ तुहुं महु कर	४.१३६	जेत्थु गज्जहि	५.३०
जइ न हससि	७.१४	जे निअहिं न पर	६.१२४
जइ बोल्लइ धण	६.२	तणुअंगिहि लोअण	७.२६
जइ वम्महु गोरडी	६.७९	तणु नव चंपयमाल	६.७४
जइ वि संखु न	६.१२१	तरलं दीहत्तणेणं	४.७९
जगु नीसेसु वि	६.१०५	तरुणिहूणिगंड	४.१३३
जयति विजिता	४.५७	तरुणीकिलिकिंचि	६.११३
जलइ जइ वि	६.५७	तस्या नितान्त	४.१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तहि भुमयहि	६.६८	दीसइ सुरधणु	६.४७
तं तेत्तिउ बाहोह	६.११	दीसए एस तरुणि	४.८१
ताहि मुद्धिहिं नेहंधहिं	७.५	दीहरच्छिआए	६.३७
तारावलि मणि मा	६.३२	दीहरभुअदंड	७.५२
तुह असिलट्ठिहिं	५.५१	दुद्दमरिउमहि	७.४१
तुह गुण अणुदिणु	६.९०	दुद्धरवारिवुट्ठि	४.६५
तुह चंडिण मुअ	६.१०३	देक्खिवि वेल्लडी	६.२३
तुह दंसण तूरं	७.२४	द्वीपादन्य	४.१
तुह पयावेण	४.८४	नच्चाविअचंदण	४.८६
तुह पुहईसर	७.५७	नच्चिर कीरमिहुण	४.९७
तुह मार मारकिदी	६.१२३	नच्चिरु किसलकरि	७.९
तुह मुहलायण्ण	६.१२४	नमिरसुरासुरिंद	४.६८
तुह रणि नट्ठ	७.२८	न मुणिज्जइ गलाउ	४.७२
तुह रिउणो निवसंता	४.३९	नयणविलासिण	७.४०
तुह रिउराय	४.३३	नरवरिंद तुह	४.७०
तुह रिउ वणगय	७.२९	नरु लच्छिविव	७.३४
तुह विजयपयाण	४.५९	नवकयलीपत्तिहिं	७.२०
तुह विरहिं सा	६.१०२	नवकुवलयनयण	६.१२२
तुहुं उज्जाणि मा	७.८	नवकोइलरवा	४.१२०
ते ज्जि पंडिअ	५.२७	नवघणभमभमंत	५.४१
तोडिअगुडमुह	६.८४	नवधणमालिअत्ति	४.९०
दयितस्तव	४.११	नवचंदलेह	७.६५
दश धर्मं न	७.७४	नवमयरंदपाण	४.१०३
दहिअक्खयघण	७.३०	नहकोलस्स व	४.४४
दारविवज्जिआ विसय	७.३१	नहयलम्मि सयल	४.१२४
दारुणदेहदाहप	४.१२५	नहयलवराह	६.४९
दिव्व कहिं ते मत्त	५.२९	नहलच्छिमाल	६.५२
दीसइ उववणि	६.७३	नाभी-निम्ना	४.७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नारिहुं वयणुल्लइं	७.१८	पहु तुह वेरि	५.५४
नासंतिहिं समरा	६.९७	पंडिगंडयल	४.१३३
निअइ झुणइ	६.१३	पाडियबहुविह	७.१५
निअजुवई गणदु	७.६०	पिअयम कहं	४.१२२
निअवि वयणु	६.६०	पिअहु पहारिण	६.१००
निक्कंदल कय	४.१२७	पिउ आइउ निवडिउ	७.२७
निच्छइं पिअसहि	६.८५	पिच्छ पीवरमहा	४.७१
निच्छिवि करिवि	५.१५	पुणरवि निअ	४.६४
निज्झाइअइ जत्थ	४.१०९	पेक्खिउण गण	६.४८
निद्दड्ढ डड्ढ	५.४३	पेच्छंतहु नवमालिअ	६.७६
निब्भरदलिअ	४.१३८	पेच्छ पाउसलच्छि	५.२१
निम्मलनाणदिट्ठि	४.६९	प्रियमधुसंगमि	६.२५
निम्मलि गयणि	६.१९	प्रियहि मुहु अर	६.३८
निसुणिअ माई	६.७८	फुडिअकेसर	५.२३
नेपथ्यानि निरस्यति	४.५	फुल्लंधुअधोरणीउ	६.८८
पइं विणु तहि	६.७	फुल्लिअलय निअवि	६.३४
पइं ससिवयणिए	६.१२५	फुल्लिआणेअकंकेल्लि	४.१२३
पत्तउ एहु वसंतउ	६.९४	फेडवि कुंकुमलेह	६.८०
पत्तलच्छि सुहयं	४.६१	बहुवया रेवया	७.५९
पनमध पनयपकु	४.३	बहुविहभावमुद्ध	४.१०६
पयडिअलंछणमय	७.५६	बहुविहसमरंगणि	७.२५
परगुणगहणु	६.२२	बहुहयखरखुर	७.३३
परनरमुहपेच्छण	६.५६	बाला कुतोऽपि	४.२८
परहुअपंचम	४.१२९	बिंबालिउ भुवणु	६.३५
परिमललुद्ध	४.१०४	भसला दंसयंति	४.१०७
पलिअ केस	६.१०९	भासासु विचित्तासु	४.३२
पवणपहल्लिर	४.३६	भीरु वि चंदट्ठिओ	६.४३
पसरदु वई	७.६१	भ्रूवल्लि चावयं	५.१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मइं असरण तुहुं	६.२१	मा रे वच्च पहिअ	४.९६
मणहरु तुहु मुहु	६.४४	मालइकुसुम न	६.७२
मणिकंचणरेहिअ	७.७०	मालइमालहिं	६.३०
मणिरयणपहा	६.१४	मिउ मलयसमीरणु	७.५३
मत्तकोइलनाय	५.१७	मुख-विपुला	४.६
मत्तकोइलामहुर	४.९२	मुद्धइ गिज्जंतउ	६.४२
मत्तजलहर	५.२६	मुहसिरकलाव	४.९१
मत्तद्विरेफ	४.१८	मुहि करिवि मय	६.७५
मत्तपिअमाहवी	४.१२१	मृदु वाच्य	४.१०
मत्तमयरपुच्छ	४.७८	मेल्लि माणु	६.८
मत्तमहुअमंडल	४.८३	मेहयं नच्चंतं	५.१३
मत्तमहुअरितार	५.२२	यावल्लुनामि	४.१९
मत्तवारिहरपंति	४.११६	युगपत् - फुल्ल	४.१६
मत्तंबुवाह	५.१०	रणरणिंति जत्थ	४.७७
मन्नावि प्रिओ	६.२८	रमणिकवोलु कुरंग	६.१२६
मम सावन्	६.१०१	राइ चंदकिरण	४.९९
मयणविआरसमुद्द	४.१००	रेहइ तरुणिअणु	६.३१
मयणविलसिअं	७.६६	रेहइ तुह करि	६.६९
मयणविलासगिरि	६.९६	रेहहिं अरुणकंति	५.८
मयपरिपुट्ठघुट्ठ	४.९५	लंधइ सायर	६.६७
मयवसतरुणि	६.११०	ललिअविलासो	७.४
मलयानिलु मलय	६.७७	लायण्णविब्भमं	५.१४
मसिसब्बंभयारि	४.७३	लुढिदु चंदण	५.३२
महु कंतिण रणि	६.९९	लेहि वीण	६.९
महु दुसह विरह	७.१३	वज्जहिं गज्जिर	७.४३
महुरसु घुंटिउ	६.१११	वणफलमरसं	४.६३
माणु म मेल्हि	५.३६	वणलच्छिकणय	६.५०
मायाविअहं	५.३४	वम्मीसरकंचण	४.१११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वरजाइ सरंतहुं	७.१०	सा बाला तुह	४.३८
वायाला फरुसा	६.११८	सायरु रयणायरु	५.५
विज्जुलमेहमज्झि	६.८६	साहीणो चित्तण्णुओ	४.८७
विपुलोद्गीति	४.२६	सिद्धत्थपुलय	६.२७
विरचित-कुसुम	४.१७	सिरिकुमारवालभूवइ	४.४२
विरहरहक्कइं	७.४६	सिरिकुमरवाल मुच्चसि	४.५१
वीरवरेण्य	४.२५	सिरिमूलरायभूवइ...तिहुअण	४.४७
शस्त्राभ्यासे	४.८	सिरिमूलराय तुह दिस	४.५४
शुष्कशिखरिणि	५.१८	सिरिवद्धमाणजिण	४.४१
सग्गु पहुत्तिहिं	७.३८	सिरिसिद्धरायनंदण	४.५५
सजया विजया	७.५८	सिंदूरिअगुरुकुंभ	६.८३
समय मयगल	५.२५	सुणिवि वसंति	५.१६
समरमहोअहिमुत्भड	४.४५	सु तव सुदु	७.६३
सयलसुरासुरिंद	४.१०५	सुररमणीअण	५.२
सयलु वि दिणु	७.१२	सुरवहुमहुअरि	५.३३
सयवत्तयं	४.६६	सुरसरितुंग	७.४९
सरसयरसुरहि	४.१४०	सुंदरु तं किउ	६.५५
सल्लइपल्लव	६.१०६	सो जयइ अजल	४.४३
सवणनिहिअ	४.१३४; ५.३०	सो जलिअउ मय	६.९३
संतट्ठहं मय	६.२१	हणिअदुजीह	७.७
संप्रति शिली	४.२२	हयखुरखणि	४.१४१
ससिणा रयणीए	६.६५	हरइ जम्मसय	४.११०
सहि पंकोप्पन्नु वि	६.४०	हंसि तहारउ	५.९
सहि वद्दलओ	६.१७	हंहो जुआणय	४.५६
सहि विज्जुलअ	७.४५	हा खामोअरि	४.१०८
सा तसु बेट्टिआ	७.६७	हिंडइ सा धण	६.९१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुधारो

(पृ. ५४, पंक्ति १० पछी उमेरवुं)

संस्कृत अने प्राकृत छन्दोना निरूपण पछी हवे घणुंखरुं अपभ्रंशमां मळता छंदोनुं निरूपण करवामां आवे छे । 'घणुंखरुं' एम कह्युं छे तेथी एम समजवुं के ए छंदो बीजी भाषाओमां पण वपराता होय छे ।

उत्साह

(पृ. ५४, पंक्ति १७ पछी उमेरवुं)

जेमां प्रत्येक चरणमां छ चतुष्कल होय अने तेमांनो त्रीजो तथा पांचमो चतुष्कल जगण के चार लघुनो बनेलो होय ते छंदनुं नाम उत्साह ।

उत्साह छंदनुं उदाहरण :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हेमचंद्राचार्यनुं 'छंदोनुशासन' ए संस्कृत अने प्राकृत छंदोनुं आठ अध्यायो अने ७४६ सूत्रोमां निरूपण करतो, तथा स्वरचित वृत्ति अने १००० जेटलां उदाहरणो धरावतो, त्रण हजारथी पण वधारे श्लोकप्रमाण वाळो एक प्रमाणभूत अनन्य पिंगळग्रंथ छे ।

तेना प्राकृत-अपभ्रंश विभाग विशे ते विषयना सर्वाधिक निष्णात ह. दा. वेलणकरे कह्युं छे के हेमचंद्राचार्ये बधी महत्त्वनी पूर्ववर्ती सामग्री उपयोगमां लईने ए छंदोनुं प्रमाणभूत, अने सुव्यवस्थित निरूपण कर्युं छे ।

ए विषयनो एनी कक्षानो बीजो कोई ग्रंथ प्राप्त नथी. तेनां उदाहरणोनुं कवित्व पण नोंधपात्र छे ।

प्रस्तुत अनुवाद पहेली ज वार प्राकृत-अपभ्रंश छंदोनी जाणकारी गुजरातीमां सुलभ करी आपे छे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org